

# LECTURES ON PATAÑJALI'S MAHĀBHĀSYA

#### Volume IV

#### AHNIKAS 10 to 14

P. S. SUBRAHMANYA SASTRI, M.A., PH. D., (Vidyāratna, Vidyānidhi, Vidyābhāṣaṇa, Vāṇī-trivēṇī-prayāga)



TIRUCHIRAPALLI







For copies, apply to
THE AUTHOR,
23, Pandian Lane,
Ander Street, Toppakulam P. O.,
Tiruchizapalli, (S. India)

Price: Rs. Ten



#### ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अष्टाध्यायीमणेतारं दाक्षीपुत्रं सुपाणिनिम् । वाक्यकारं वरस्विं भाष्यकारं पतकारिम् ॥ चोकनाथं मस्तिवरं भाष्यरकावलीकृतम् । चेक्कटाध्वरिणारेशष्यं रामभद्रगुरुं वरम् ॥ नीलकण्ठं यतिवरं क्षेत्रपालिनवासिनम् । अद्वेतमार्गनिष्णातं शब्दशास्त्रमहोदिषम् ॥ वैद्यनाथं द्विजं मित्रं मस्त्रमामनिवासिनम् । शब्दशास्त्रमवकारं गीतास्त्रभेत्रसम्बद्धम् ॥ प्रवन्य तान् गुरुन् सर्वान् परायम्बद्धम्यः कुर्व लाक्कमारत्या महासाष्यविसर्थनम् ॥



. Printed at
The Trichinopoly United Printers Limited,
Timchirapalli—500 Copies.

# CONTENTS

#### TENTH ĀHNIKA

|             | $Sar{u}tra$                           |  |       | PAGE          |
|-------------|---------------------------------------|--|-------|---------------|
| 1.          | गाङ्कुटादिभ्योऽज्ञिणन्डित् (2 top     | ics)   | •••   | 19            |
| 2.          | सार्वधातुकमिपत् (2 topics)            | •••  | •••   | 9—12          |
| 3.          | असंयोगाह्विट् कित्                    | •••  | •••   | 12—13         |
| 4.          | इन्धिमवतिभ्यां च                      | ***  | •••   | 13—14         |
| <b>5.</b>   | मृडमृद्गुधकुषक्किशवद्वसः क्त्वा       |  |       | 14—15         |
| 6           | इको झल्                               | •••  | •••   | 16—20         |
| <b>7.</b>   | हलन्ताच                               | •••  | •••   | 2022          |
| 8.          | <b>ळिङ्सिचावात्मनेपदेषु</b>           | •••  |       | 22—24         |
| 9.          | स्थाघ्वोरिच                           | •••  | •••   | <b>24—25</b>  |
| 10.         | न क्त्वा सेट्                         | •••  | •••   | 25—30         |
| 11.         | उदुपधाद्                              |  | •••   | 30            |
| 12.         | पूङः क्त्वा च                         |  | • • • | 30—32         |
| 13.         | त्रिषमुषिकृषेः                        | •••  | •••   | 32            |
| 14.         | रळो व्युपघाद्रलादेः संश्च             | •••  | * • • | 32            |
| 15.         | ऊकालोऽज्झस्रदीर्घप्छुतः (4 topic      | s) ·   | ***   | 33—42         |
| 16.         | अचश्च (5 topics)                      | ***  | •••   | 42-47         |
| 17-1        | 8      उचेरदात्तः, नीचैरनुदात्तः (३ । | topics)  | ***   | 47—51         |
| 19.         | समाहारः खरितः                         | •••  | •••   | 5153          |
| <b>20</b> . | तस्यादित उदात्तमर्घहस्यम्             | • • •  | •••   | <b>54</b> —60 |
| 21.         | एकश्रुति दूरात्सम्बुद्धौ (3 topics)   | ***  | •••   | 60—63         |
| 22.         | सुब्रह्मण्यायाम्                      | ***  | • • • | 63-64         |
| 23.         | देवब्रह्मणोरनुदात्तः                  | •••  | ***   | 65            |
| 24.         | खरितात् संहितायाम्                    | •••  | •••   | 65—67         |
| <b>25.</b>  | अपृक्त एकाल्प्रत्ययः                  | ***  | ***   | 68-72         |
|             | तत्पुरुषः कर्मधारयः                   | · •• • • · · · · · · · · · · · · · · ·   |       | 72-73         |
| <b>27</b> . | प्रथमानिर्दिष्टं                      |  |       | 73-77         |
| <b>28</b> . | एकविभक्ति च                           | The state of the s |       | 77—79         |

# ELEVENTH ĀHNIKA

|                   | $Sar{u}tra$                      |                 |  | Page           |  |  |
|-------------------|----------------------------------|-----------------|--|----------------|--|--|
| 1.                | अर्थवद्धातुरप्रत्ययः (6 topic    | s)              | • • •,   | 80—98          |  |  |
| 2.                | कृतद्वितसमासाश्च                 | •••             | •••  | 98—99          |  |  |
| 3,                | हस्रो नपुंसके                    | •••             | • • •  | 99—102         |  |  |
| 4.                | गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य            | •••             | •••  | 103—108        |  |  |
| <b>5.</b>         | लुक् तद्धितलुकि                  | ***             |  | 109—110        |  |  |
| 6.                | इद्रोण्याः                       | ***             | • • •  | 110—111        |  |  |
| 7.                | लुपि युक्तवद्                    | • • •           | •••  | 111—116        |  |  |
| 8.                | विशेषणानां चाजातेः               | ***             | ***  | 116—119        |  |  |
| 9.                | तद्शिष्यं                        | •••             | •••  | 119            |  |  |
| 10.               | जात्याख्यायां                    | ***             | •••  | 119 - 123      |  |  |
| 11.               | असदो द्वयोश्च                    | ***             | , •••  | <b>123—124</b> |  |  |
| 12.               | फल्गुनी                          | •••             | •••  | 124—125        |  |  |
| 13-1              | 4. छन्द्सि विशाखयोश्च            | •••             | ***  | 125            |  |  |
| 15.               | तिष्यपुनर्वस्रोः                 | • • •           | •••  | 125—128        |  |  |
|                   | TWELFTH ÄHNIKA                   |                 |  |                |  |  |
| 1.                | सहताणामेकशेषः (7 topics)         | )               | •••  | 129—178        |  |  |
| 2.                | वृद्धो यूना                      | • • •           |  | 178—179        |  |  |
|                   | स्त्री पुंवच                     | •••             | •••  | 179—180        |  |  |
|                   | पुमान् स्त्रिया                  | •••             | ****,  | 180            |  |  |
|                   | भ्रातृपुत्रौ                     | • • •           | •••  | 180 - 184      |  |  |
|                   | नपुंसकम्                         | * * * *         |  | 184—185        |  |  |
| 7_8               | B. पिता मात्रा; श्वशुरः श्वश्रवा | •••             | ا<br>المعالمة المعالمة ا | 185—187        |  |  |
|                   | त्यदादीनि ···                    | ****            |  | 187—190        |  |  |
| 10.               | <b>ग्रा</b> म्यपशुसङ्गेषु ···    | •••             | 1 ( ) 🌉 🛊  | 190—192        |  |  |
| THIRTEENTH AHNIKA |                                  |                 |  |                |  |  |
| 1.                | भूवादयो घातवः (3 topics)         | •••             | •••  | 193—215        |  |  |
| 2.                |                                  | <b>•••</b> u° ; | · • • •  | 215—221        |  |  |
| 3.                | हलन्त्यम् (3 topics)             | •••             | • • • • • • • • • • • • • • • • • • •  | 221—226        |  |  |

|             | $Sar{u}tra$                | •             |  | PAGE    |
|-------------|----------------------------|---------------|--|---------|
| 4.          | न विभक्तौ तुस्माः          | •••           | 2  | 27—229  |
| <b>5</b> .  | चुटू                       | •••           | 2  | 29—232  |
| 6.          | तस्य लोपः (3 topics)       | •••           | 2  | 32-240  |
| 7.          | यथासङ्ख्यम्                | •••           | 2  | 40—252  |
| 8.          | <b>स्त्र</b> रितेनाधिकारः  | •••           | · <b></b> 2                                    | 52—258  |
|             | Four                       | TEENTH AHNIKA |  |         |
| 1.          | अनुदात्तङित आत्मनेपदम्     | (3 topics)    | 2  | 59-272  |
| 2.          | कर्तरि कर्मव्यतिहारे       | ***           | 2  | 72-276  |
| 3.          | न गतिहिंसार्थेभ्यः         | • • • •       | 2  | 76—277  |
| 4           | इतरेतरान्योन्योपपदाच       | . •••         | •••  | . 277   |
| 5.          | विपराभ्यां जेः             | •••           | 2  | 77—278  |
| 6.          | आङो दोनास्यविहरणे          | •••           | •••  | 278     |
| 7.          | क्रीडोऽनुसंप्रिभ्यश्च      | •••           | 2  | 79—281  |
| 8.          | समवप्रविभ्यः स्थः          | •••           | ***  | 281     |
| 9.          | <b>उदोनू</b> ध्वेकर्मणि    | • • •         | • • •  | 281     |
| 10.         | <b>उपान्मन्त्रकरणे</b>     | •••           | 2  | 81—283  |
| 11.         | उद्विभ्यां तपः             | ***           | 2  | 83—284  |
| 12.         | आङो यमहनः                  | •••           | •••  | 284     |
| 13.         | समो गम्यृच्छिभ्याम्        | ***           | 2  | 84—285  |
| 14.         | आङ उद्गमने                 | •••           | ( <b>*****</b> ******************************* | 285     |
| 15.         | व्यक्तवाचां समुचारणे       | •••           | 2  | 85—287  |
| 16.         | अकाइ:                      | •••           | •••  | . 287   |
| 17.         | समस्तृतीयायुक्तात्         | •••           |  | 87—288  |
| 18.         | दाणश्च सा चेचतुर्थ्यर्थे   | ***           | 2  | 88-289  |
| 19.         | उपाद्यमः स्वकरण            | <b>◆ ◆ *</b>  | •••  | 289     |
| <b>20</b> . | नानोर्श्वः                 | ***           |  | 89—290  |
| 21.         | शदेः शितः                  | •••           | 14.19  | 90—297  |
|             | पूर्ववस्तनः                | •••           | 2  | 97=306  |
| 23.         | आस्त्रत्ययचत्छ्ञोऽनुप्रयोग | •••           | 3  | 06=3.08 |
| 24.         | प्रोणियो                   |               |  | 308     |
|             |                            |               |  |         |

|             | $Sar{u}tra$            | ,                     |     | PAGE              |
|-------------|------------------------|-----------------------|-----|-------------------|
| <b>25.</b>  | समः क्ष्णुवः           | •••                   | ••• | 308               |
| <b>26</b> . | भुजोऽनवने              |                       |     | 309               |
| 27.         | णेरणौ यत्कर्म          | •••                   | ••• | 309-315           |
| 28.         | खरितञ्जितः             | •••                   | ••• | 315-317           |
| <b>2</b> 9. | शेषात् कर्तरि परसैपदम् | •••                   | ••• | 318-319           |
| 30.         | अनुपराभ्यां कृञः       | •••                   | ••• | 319—321           |
| 31.         | नुघयुधनश ···           | •••                   | ••• | 321—322           |
| 32.         | अणावकर्मकात्           | • • •                 | ••• | 322—323           |
| 33.         | न पादमि …              | 6+4                   | ••• | 323               |
| <b>34.</b>  | लुटि च क्लपः           | •••                   |     | 324               |
| (i)         | Index of Sūlras        | •••                   | ••• | $325 - 32\dot{6}$ |
| (ii)        | Index of Vārttikas     | •••                   | ••• | 326-331           |
| (iii)       | Index of Paribhāṣas,   | Nyāyas etc.           | ••• | 331-332           |
| (iv)        | Index of important w   | ords in the text      | ••• | 332—338           |
| (v)         | Index of important w   | ords in English scrip | t   | 338               |

# CORRIGENDA

| Page | Line       | ${\it For}$              | Read                      |
|------|------------|--------------------------|---------------------------|
| 8    | 27         | agnņa-                   | aguṇa-                    |
| 34   | 20         | निदेश-                   | निर्देश-                  |
| 35   | 8          | $\mathbf{them}$          | their                     |
| 40   | 12         | इात                      | इति                       |
| 115  | . <b>5</b> | asnkhyā                  | $sankhyar{a}$             |
| 150  | 22         | add to remain befo       | re since                  |
| 179  | 30         | $Gar{a}rgayan$ $nar{a}u$ | $Gar{a}rgyar{a}yanar{a}u$ |
| 253  | 10         | <b>लाकतः</b>             | <b>लोकंतः</b>             |
| 290  | 24         | terminations             | termination               |
| 292  | 15         | has                      | having                    |
| 299  | 19         | ma                       | mr                        |

# LECTURES ON PATAÑJALI'S MAHĀBHĀSYA

#### Vol. IV

#### Tenth Abnika

(First Ahnika in Pāda 2 of Adhyāya 1)

# गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङत् (1, 2, 1)

HERE are two topics dealt with here:—(1) whether an and nit after gān and kuṭādi are related to nit and similarly the lit after asamyōga is related to kit, or whether they transform themselves as nit and kit, or whether nit and kit are their samjñās or whether they are analogous to nit and kit and (2) the need for the mention of both nit and kit 2.

I

# ङित्किद्वचने तयोरभावादप्रसिद्धिः

With reference to the mention of *nit* and *kit*, there is appraxiddhi on account of their absence.

ङित्किद्वचने तयोरभावात् - ङकारककारयोरभावात् - ङित्विकित्वयोरप्रसिद्धिः । सता हि अभिसम्बन्धः शक्यते कर्तुम् । न चात्र ङकारककारावितौ पश्यामः ।

With reference to the mention of  $\dot{n}it$  and kit, there is a prasiddhi to  $\dot{n}itva$  and kitva on account of the absence of  $\dot{n}ak\bar{a}ra$  and  $kak\bar{a}ra$ ; for relationship can be assigned to one with another only when the latter exists; we do not see here  $\dot{n}ak\bar{a}ra$  and  $kak\bar{a}ra$  as it.

त्वथा— चित्रगुर्देवदत्तः इति ; यस्य ता गावी भवन्ति स एव ताभिः शक्यतेऽभिसम्बन्द्धम् ।

1. Kāiyata reads:—CatvārōStra pakṣā upakṣiptā bhāṣyē—nitvakitvasam-bandhapratipādanam, bhāvanam, samjñākaranam, atidēśaśca iti.

经工作支利的基础的证据 网络黄 经联络性产品的 计分类类型表示 人名伊伊尔斯特人名 医成体的 不足不足

2. Kāiyaja reads:—Kāryārthatvād anubhandhāsangasya ēkēnāiva anubandhēna guņanisēdhādēh siddhatvād anubandhabēdōSnarthaka in prasnan.

The expression 'Citraguḥ Dēvadattaḥ' may be given as an illustration. It is only he who has such cows may be associated with them.

भाव्येते तर्हि अनेन गाङ्कुटादिभ्योऽन्णिन् ङिद्भवतीति, असंयोँगात् छिट् किद्भवतीति ।

If so, they may be said to be so transformed from this (context) thus:— $G\bar{a}nkut\bar{a}dibhy\bar{o}s\tilde{n}nin\ \dot{n}id\ bhavati$ , asamy $\bar{o}g\bar{a}t\ lit\ kid\ bhavati$ .

#### भवतीति चेदादेशप्रतिषेधः

If bhavati is added, there is need to prohibit them from taking the role of  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$ .

भवतीति चेद् आदेशस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः । ङकारककारौ इतौ आदेशौ प्रामुतः ।

If bhavati is added, there is need to mention that they are prohibited from taking the role of  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$ ; (otherwise)  $\dot{n}ak\bar{a}ra$  and  $kak\bar{a}ra$  being it will appear as  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}as$ .

कथं पुनः इत्संज्ञो नामादेशः स्यात्?

How is it possible for itsamjñā to be ādēśa?

किं हि वचनान्न भवति ?

Is there anything which cannot spring through injunction?

एवं तर्हि षष्ठीनिर्दिष्टस्य आदेशा उच्यन्ते, न चात्र षष्ठीं पश्यामः ।

If so, the ādēśas are enjoined to those that are in the sixth case and we do not see the sixth case here.

गाङ्कुटादिभ्यः इत्येषा पञ्चमी अञ्णित् इति प्रथमायाः षष्ठीं प्रकल्पयिष्यति तस्मादित्युत्तरस्येति ।

The fifth case in  $g\bar{a}nkut\bar{a}dibhyah$ , through the  $paribh\bar{a}s\bar{a}$   $Tasm\bar{a}d$  ityuttarasya, creates a sixth case from the nominative  $a\bar{n}nit$ .

संज्ञाकरणं तहींदम्, गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्संज्ञो भवतीति, असंयोगाल्लिट् कित्संज्ञो भवतीति । If so, this sūtra is samijāavidhāyaka, so that it means that the nit and nit after gānkuṭādi are nit and similarly the lit after asamyōga is kit.

# संज्ञाकरणे क्िड्रहणेऽसम्प्रत्ययः शब्दभेदात्

It being taken a samjñāvidhi, this nit and kit cannot be referred to in the sūtra Kniti ca, both being different.

संज्ञाकरणे कि्ङद्रहणे असम्प्रत्ययः स्यात् ।

If it is taken as a samjñāvidhāyakasūtra, the nit and kit referred to here cannot be taken into account by nit and kit referred to in the sūtra Kniti ca.

किं कारणम् ? Why?

शब्दमेदात्; अन्यो हि शब्दः क्डित इति, अन्यः किति इति ङिति इति च On account of their being different words; that which is in the sūtra Kniti ca is different from that found in Gānkuṭādibhyōsñṇin nit and Asamyōgālliṭ kit, (the former being yāugika and the latter being rūḍhi).

तथा किद्रहणेषु डिद्रहणेषु च अनयोरेव सम्प्रत्ययः स्यात् ।

Hence in all  $s\bar{u}tras$  containing kit and  $\dot{n}it$ , only those which are  $y\bar{a}ugika$  kit and  $y\bar{a}ugika$   $\dot{n}it$  will be taken into account.

तद्भद् अतिदेशस्तर्हि अयम् - गाङ्कुटादिभ्योऽन्णिन् ङिद्वद्भवति इति, असंयोगालिट् किद्वद्भवति इति ।

If so, this is analogous to it, so that the  $s\bar{u}tras$  may mean that the  $a\tilde{n}$ -and nit after  $g\bar{a}\dot{n}kut\bar{a}di$  are analogous with  $\dot{n}it$  and lit after  $asa\dot{m}y\bar{o}ga$  is analogous with kit.

स तर्हि वतिनिर्देशः कर्तव्यः, न ह्यन्तरेण वतिमतिदेशो गम्यते ।

If so, the pratyaya vat should be read. For atidēśa is not suggested in the absence of vat.

न कर्तव्यः No, it need not.

अन्तरेणापि वतिमतिदेशो गम्यते ।

Even in the absence of vat, analogy is suggested.

तद्यथा - 'एष ब्रह्मदत्तः' अब्रह्मदत्तं ब्रह्मदत्त इत्याह । ते मन्यामहे, ब्रह्मदत्तवद् अयं भवतीति ।

The statement 'Ēṣa Brahmadattaḥ' serves as an illustration. One calls a person Brahmadatta though he is not Brahmadatta. From it we infer that he is like Brahmadatta.

एवमिहापि अङितं ङिदित्याह, ङिद्वद् इति गम्यते, अकितं किदित्याह, किद्वदिति गम्यते ।

So here also he calls as  $\dot{n}it$  that which is not  $\dot{n}it$  and from it, it is inferred that it is analogous to  $\dot{n}it$  and he calls as kit that which is not kit and from it, it is inferred that it is analogous to kit.

#### तद्वद्तिदेशे>िकद्विधिप्रसङ्गः

On taking it as analogy, there is chance for akidvidhi to operate.

तद्वदतिदेशे अकिद्विधिरिप प्रामोति । 'स्रजिद्दशोई ल्यमिकिति', सिस्रक्षति दिद्दक्षते, अकिल्लक्षणोऽमागमः प्रामोति ।

If it is taken as an analogy, there is chance for akidvidhi too to operate, so that the augment am depending upon akit may appear in sisrkṣati and didrkṣatē by the sūtra Srjidṛsōr jhalyam akiti.

Note:—  $K\bar{a}iya$ ta reads:— $yath\bar{a}$   $br\bar{a}hman$ avad atidēśah kṣatriyasya svāśrayam yuddhādi na nivartayati, akiti iti ca paryudāsāśrayanāt kitpratibaddhakāryābhāvāt svāśrayō amāgamah syāt.

#### सिद्धं तु प्रसज्यप्रतिषेधात्

The object is achieved by taking it as prasajyapratisēdha.

सिद्धमेतत् This is achieved.

कथम् ? How?

प्रसज्यप्रतिषेधात्; प्रसज्यायं प्रतिषेधः क्रियते, किति न इति

On account of its being prasajyapratisēdha; prohibition is enjoined to what would otherwise happen thus—Kiti na.

# सर्वत्र सन्नन्तादात्मनेपद्रप्रतिषेधः

Prohibition of ātmanēpada terminations after all sannanta (is necessary).

सर्वेषु पक्षेषु सन्नन्ताद् आत्मनेपदं प्राप्तीति - उच्चकुटिषति निचुकुटिषति - ङितः इत्यात्मनेपदं प्राप्तीति ; तस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः ।

The ālmanēpada terminations have a chance to come after sannanta in all cases, like uccukuṭiṣati and nicukuṭiṣati, since ātmanēpada terminations are enjoined by nitaḥ in the sūtra Anudāttanita ātmanēpadam (1, 3, 12) and prohibition has to be made.

# सिद्धन्तु पूर्वस्य कार्यातिदेशात्

The object is achieved, since the  $atid\bar{e}\hat{s}a$  is with reference to the  $k\bar{a}rya$  of what precedes.

सिद्धमेतत् This (the desired object) is achieved.

कथम् श How ?

पूर्वस्य यत्कार्यं तदतिदिश्यते

It is only the  $k\bar{a}rya$  to that which precedes which is taken here through analogy.

किं वक्तव्यमेतत्? Is it necessary that this should be stated? न हि No, it is not necessary.

कथमनुच्यमानं गंस्यते ?

How is it so understood without its being mentioned?

सप्तम्यर्थे वतिभवति

The particle vat is taken to have reference to the seventh case meaning.

तद्यथा मधुरायामिव मधुरावत् पाटलिपुत्र इव पाटलिपुत्रवत्, एवं िकतीव ङिद्वत् कितीव किद्वत् ।

Just as the expressions madhurāvat and pāṭaliputravat may mean "as in Madhurā" and "as in Pāṭaliputra," nidvat means "as when nit follows" and kidvat means "as when kit follows."

#### TT

अथ किमर्थ पृथङ्ङित्कितौ कियेते, न सर्व किदेव स्यात्, ङिदेव वा? What for are both nit and kit mentioned individually without all being read as kit or nit?

# पृथगतुबन्धत्वे प्रयोजनं विचखपियजादीनामसम्प्रसारणं सार्वधातुकचङादिषु

The benefit of reading the anubandhas separately is the absence of sampras $\bar{a}rana$  in vac, svap and  $yaj\bar{a}di$  when they are followed by  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tuka$  and  $can\bar{a}di$ .

पृथगनुबन्धत्वे प्रयोजनम् , विचलियजादीनामसम्प्रसारणं सार्वधातुके चङादिषु च The benefit of reading the anubandhas separately is the absence of samprasāraṇa in vac, svap and yajādi when they are followed by sārvadhātuka and can etc.

सार्वधातुके प्रयोजनम् - यथेह भवति सुप्तः सुप्तवान् इति, एवं स्विपतः स्विपिथः इत्यत्रापि प्राप्नोति

The benefit when  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tuka$  follows is seen here:—Otherwise (i.e.) if kit is read instead of  $\dot{n}it$  in this  $s\bar{u}tra$   $G\bar{a}\dot{n}\cdot kut\bar{a}dibhy\bar{o}s\tilde{n}\cdot nin$   $\dot{n}it$ , svap will take  $sampras\bar{a}rana$  in svapitah and svapithah also in the same way as it takes it in the forms suptah and  $suptav\bar{a}n$ .

चङादिषु च प्रयोजनम् The benefit when canādis follow.

के पुनश्चङाद्यः? What are canādis?

चङ्ङङ्नजिङ्ङ्वनिबशङ्नङः

Can, an, najin, nvanip, athan and nan.

चड़ - यथेह भवति शूनः शूनवान् इति एवम् अशिश्वियत् अत्रापि प्राप्तोति । The benefit with reference to can:—Otherwise the root śvi will take samprasāraṇa in the form aśiśviyat 2 also in the same way as it takes it in the forms śūnaḥ and śūnavān.

- 1. Yajādi is said to consist of nine roots:—Yajir-vapir-vahiścāiva vasir-vēñ-vyēña ityapi, Hvēñ-vadī-śvayatiś cāiva yajādyāh syur imē nava.
  - 2. The root śvi takes can by the sūtra Vibhāṣā dhēṭśvyōḥ (3, 1, 49)

अङ् - यथेह भवति शूनः उक्तः इति, एवं अश्वत् अवोचत् अत्रापि प्राप्तोति । The benefit with reference to  $a\dot{n}$ :—Otherwise the roots  $\dot{s}vi$  and vac will take  $sampras\bar{a}rana$  in the forms  $a\dot{s}vat$  and  $av\bar{o}cat$  in the same way as in  $\dot{s}\bar{u}nah$  and uktah.

नजिङ् - यथेह भवति सुप्तः सुप्तवान् इति, एवं स्वमग् इत्यत्रापि प्राप्तोति । The benefit with reference to najin: - Otherwise the root will take samprasāraņa in the form svapnak in the same way as in suptaḥ and suptavān.

ङ्वनिप् - यथेह भवति इष्टम् इष्टवान् इति एवं यज्वा अत्रापि प्राप्तोति
The benefit with reference to nvanip:—Otherwise the root yaj
will take samprasāraņa in the form yajvā in the same way
as in iṣṭam and iṣṭavān.

अथङ् - यथेह भवति उषित इति, एवम् आवसथः इत्यत्रापि प्राप्तोति

The benefit with reference to  $atha\dot{n}$ :—Otherwise the root vas will take  $sampras\bar{a}rana$  in the form  $\bar{a}vasatha\dot{h}^5$  in the same way as in  $usita\dot{h}$ .

नङ् - यथेह भवति इष्टम् इति, एवं यज्ञः अत्रापि प्रामोति

The benefit with reference to  $na\dot{n}$ :—Otherwise the root yaj will take  $sampras\bar{a}rana$  in the form  $yaj\tilde{n}ah^6$  in the same way as in the form istam.

#### जाग्रोऽगुणविधिः

The benefit of reading the anubandhas separately is to have agunavidhi in the root  $j\bar{a}gr$ .

जागर्तेरगुणविधिः प्रयोजनम् - यथेह भवति जागृतः जागृथ इति अनीति पर्युदासः, एवं जागरितो जागरितवान् इत्यत्रापि प्रामोति

- 1. The root  $\dot{s}vi$  takes  $a\dot{n}$  by the  $s\bar{u}tra$   $J\bar{r}$ ... $\dot{s}vibhya\dot{s}$  ca (3, 1, 58)
- 2. The root vac takes an by the sūtra Asyati-vakti-khyātibhyō5n) 3,1,52)
- 3. The root svap takes najin by the sūtra Svapitrsor najin (3, 2, 172).
- 4. The root yaj takes ivanip by the sūtra Suyajōr ivanip (3, 2, 103).
- 5. The root vas takes athan by the unādi sūtra Upasargē vasēh (403).
- 6. The root yaj takes nan by the sūtra yajayāca..rakṣō nan (3, 3, 90).

The benefit is with reference to non-guṇa-vidhi pertaining to the root  $j\bar{a}gr$ . Otherwise there will be absence of guṇa in  $j\bar{a}garitah$  and  $j\bar{a}garitav\bar{a}n$  in the same way as in  $j\bar{a}grtah$  and  $j\bar{a}grtha$  which is due to the  $paryud\bar{a}sa$  anani (found in the  $s\bar{u}tra-J\bar{a}gr\bar{o}svicin-nal-nitsu$  (7, 3, 85).

# अपर आह—जाग्रो गुणविधिः

Another reads— $J\bar{a}gr\bar{o}$  guṇavidhi $h^1$  which means "The benefit is to have guṇavidhi in the root  $j\bar{a}gr$ ."

जागर्तेः गुणविधिः प्रयोजनम् - यथेह भवति जागरितः जागरितवान् इति, एवं जागृतः जागृथ इत्यत्रापि प्राप्तोति

The benefit is with reference to gunavidhi in the root  $j\bar{a}gr:$ —Otherwise there will be guna in the forms  $j\bar{a}grtah$  and  $j\bar{a}grtha$  in the same way as in the forms  $j\bar{a}garitah$  and  $j\bar{a}garitav\bar{a}n$ .

# कुटादीनामिद्प्रतिषेधः Prohibition of it after kuṭādis.

कुटादीनामिट्प्रतिषेधः प्रयोजनम् । यथेह भवति छत्वा धृत्वा इति 'श्युकः किति ' इतीट्प्रतिषेधः, एवं नुविता धुविता इत्यत्रापि प्राप्नोति

Benefit is with reference to  $i \not\equiv prati \not\equiv \bar{e}dha$  after  $ku \not\equiv \bar{a}dis$ . There will be chance for  $i \not\equiv prati \not\equiv \bar{e}dha$  in  $nuvit\bar{a}$  and  $dhuvit\bar{a}$ , in the same way as in  $l\bar{u}tv\bar{a}$  and  $dh\bar{u}tv\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$  Śryuka $\dot{p}$  kiti (7, 2, 11).

# क्त्वायां कित्प्रतिषेधश्च $Kitpratisar{\epsilon}dha$ in $ktvar{a}$ too.

क्त्वायां कित्प्रतिषेधश्च प्रयोजनम्

Benefit is kitpratiṣēdha in ktvā too.

किं च इट्पतिषेधः ? Does ca denote ițpratișēdha ?

1. It seems that the two readings  $J\bar{a}gr\bar{o}Sgynavidhih$  and  $J\bar{a}gr\bar{o}gunavidhih$  may be explained thus. If all kits are read as nits, the former reading will hold good; and if all nits are read as kits, the latter reading will hold good.

नेत्याह । अदेशेऽयं चः पठितः - क्त्वायां च कित्प्रतिषेध इति । यथेह भवति देवित्वा सेवित्वा इति न क्त्वा सेट् इति कित्वप्रतिषेधः, एवं कुटित्वा पुटित्वा अत्रापि प्रामोति ।

"No," says he. The word ca is not read in its proper place. It should be read as  $Ktv\bar{a}y\bar{a}m$  ca  $\bar{k}itpratis\bar{e}dhah$ ,  $Kittvapratis\bar{e}dh$  may chance to happen in the forms  $kutiv\bar{a}$  and  $putitv\bar{a}$  in the same way as in the forms  $d\bar{e}vitv\bar{a}$  and  $s\bar{e}vitv\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$   $Naktv\bar{a}$   $s\bar{e}t$  (1, 2, 18).

अथवा देश एवायं चः पितः, क्त्वायां कित्पतिषेधश्च इट्पतिषेधश्च Or this ca is read in its proper place in the  $v\bar{a}rttika$ , so that both  $kitpratis\bar{e}dha$  and  $itpratis\bar{e}dha$  are conveyed in  $ktv\bar{a}$ .

कित्मतिषेध उदाहृतम् Example for kitpratiṣēdha has been given. इट्मतिषेधो यथेह भवति, छत्वा धूत्वा "श्युकः किति" इति, एवं नुवित्वा धुवित्वा अत्रापि प्रामोति

Itpratiṣēdha may chance to happen in the forms  $nuvitv\bar{a}$  and  $dhuvitv\bar{a}$  in the same way as in the forms  $l\bar{u}tv\bar{a}$  and  $dh\bar{u}tv\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$   $\acute{S}ryukah$  kiti.

स्थादेतत्त्रयोजनं यद्यस्य नियोगतः आतिदेशिकेन िक्त्वेन औपदेशिकं कित्त्वं बाध्येत । सत्यपि तु िक्त्वे किदेवेषः । तस्मान्नत्वा धूत्वा इत्येव भवितव्यम् । This may be taken as a benefit, only if the kittva mentioned is set at naught by the nittva which appears through analogy. This is evidently kit even though it is init. Hence nūtvā and dhūtvā alone should be taken as correct forms.

# सार्वधातुकमित् (1, 2, 4)

There are two topics dealt with here:—(1) The need for the mention of the word  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tukam$  and (2) Whether apit is  $paryud\bar{a}sa$  or  $prasajyapratis\bar{e}dha$ .

Ι

सार्वधातुकग्रहणं किमर्थम् ?

What for is the mention of sarvadhatuka?

अपिद् इति इयत्युच्यमाने आर्द्धधातुकस्याप्यनेन अपितो बित्तवं प्रसज्येत, कर्ता, हर्ता इति । If the word apit alone is read in the  $s\bar{u}tra$ , there is chance for the analogous  $\dot{n}itva$  to operate with reference to  $\bar{a}rddhadh\bar{a}tuka$  also, as in  $kart\bar{a}$ ,  $hart\bar{a}$ .

नैष दोषः This difficulty cannot arise.

आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति नानेन आर्धधातुकस्य अपितो ङित्त्वं भवतीति, यद्यमार्द्धधातुकीयान् कांश्चित् ङितः करोति चङङ्नजिङ्वनिवथङ्नङः ।

The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that this cannot comprehend that the  $\bar{a}rddhadh\bar{a}tukas$  which are apit have to be treated like  $\dot{n}its$ , since he reads, some  $\bar{a}rddhadh\bar{a}tukas$  like  $ca\dot{n}$ ,  $a\dot{n}$ ,  $naji\dot{n}$ ,  $\dot{n}vanip$ ,  $atha\dot{n}$  and  $na\dot{n}$  as  $\dot{n}it$ .

सार्वधातुकेऽप्येतज्ज्ञापकं स्यात् ।

This becomes a  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  even with reference to  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tuka$ .

नेत्याह, तुल्यजातीयस्य ज्ञापकम्

No, says he, since  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  has reference only to similar things.

कश्च तुरुयजातीयः? Which is similar to it?

यथाजातीयकाः चङङ्नजिङ्वनिबथङ्नङः ।

Those which belong to the class of can, an, najin, nvanip, athan and nan.

कथंजातीयकाश्चेते ? To which class do they belong?

आर्द्धधातुकीयाः They belong to the class of ārddhadhātukas.

यद्येतदस्ति तुल्यजातीयस्य ज्ञापकमिति चड्डो छङ्विकरणानां ज्ञापको स्यातां, निजङ् वर्तमानकालानां, ङ्विनिब् भूतकालानाम्, अथङ्शब्दो औणादिकानां, नङ्शब्दो घञर्थानाम् । तसात् सार्वधातुकप्रहणं कर्तव्यम् ।

If it is said that one becomes  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  to that which belongs to its class,  $ca\dot{n}$  and  $a\dot{n}$  may become  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  to lugvikaranas,  $\dot{n}ajin$  to those that denote present tense,  $\dot{n}vanip$  to those that denote past tense,  $atha\dot{n}$  to  $\bar{a}un\bar{a}dikapratyayas$  and  $na\dot{n}$  to those which have the meaning of  $gha\dot{n}$ . Hence there is need to mention the word  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tukam$  in the  $s\bar{u}tra$ .

II

किं पुनरयं पर्युदासः यदन्थत्पित इति, आहोस्वित् प्रसज्य अयं प्रतिषेधः पित्र इति?

Is this (apit) paryudāsa so that it may mean "that which is other than pit" or prasajyapratiṣēdha so that it may mean "that pit does not become so."

कश्चात्र विशेषः? What is the difference here?

# अपिन्ङिदिति चेच्छवेकादेशप्रतिषेधः आदिवस्वात्

If apit is  $\dot{n}it$ , (there is need for) the prohibition of  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of  $\hat{s}ap$ , since it may be taken to be the initial member.

अपिन्डिदिति चेत् शबेकादेशे प्रतिषेधो वक्तव्यः, च्यवन्ते स्वन्ते 1

If apit is taken to be  $\dot{n}it$ , there is need to prohibit the  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\dot{s}a$  of  $\dot{s}ap$ , before the final of the root in  $cyavant\bar{e}$  and  $plavant\bar{e}$  which takes guna.

किं कारणम्? Why?

आदिवत्त्वात् । पिदपितोरेकादेशोऽपित आदिवत् स्यात् । अस्यन्यत्पित इति कृत्वा ङित्वं प्राप्नोति ।

Since it may be taken to be the initial member. The  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of pit and apit may be taken to be the initial member of apit. It being taken to be one other than pit, it may chance to get initva.

अस्तु तर्हि प्रसज्यप्रतिषेधः पिन्न इति

If so, let it be prasajyapratisēdha that pit does not become so.

# न पिन्ङिदिति चेदुत्तमैकादेशप्रतिषेधः

It being taken that pit is not  $\dot{n}it$ , (there is chance for) the  $pratis\bar{e}dha$  in the  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}sa$  in the first person.

1. The roots here are cyu and plu. In the third person plural present we have cyu + a ( $\acute{s}ap$ ) +  $ant\bar{e}$ . Generally u first takes guna by  $S\bar{a}rvadh\bar{a}tuk$ - $\bar{a}rddhadh\bar{a}tukay\bar{o}h$  (7, 3, 84) and then  $\acute{s}ap$  takes  $parar\bar{u}pa$  by the  $s\bar{u}tra$   $At\bar{o}$   $gun\bar{e}$  (6, 1, 97).

न पिन्डिदिति चेदुत्तमैकादेशे प्रतिषेधः प्राप्तोति, तुदानि लिखानि 1

If it is taken that pit is not  $\dot{n}it$ , there is chance for  $prasajya-pratis\bar{e}dha$  in the  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  in the first person in  $tud\bar{a}ni$  and  $likh\bar{a}ni$ .

किं कारणम्? Why?

आदिवत्त्वादेव । पिदपितोरेकादेशः पित आदिवत् स्यात् । तत्र पित्र इति प्रतिषेधः प्राम्नोति ।

From the very reason of its being taken as the initial member The  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of pit and apit may be taken as the inital member of pit. If so, the  $prasajyapratis\bar{e}dha$  pit - na chances to appear.

यथेच्छिस तथास्त Let it be as you please.

ननु चोक्तम् उभयथापि दोषः १

Has it not been said that it is defective in both the ways?

उभयथापि न दोषः । एकादेशः पूर्वविधौ स्थानिवद् भवतीति स्थानिवद्भावाद् व्यवधानम्

It is not defective in both the cases. Let us take that there is  $sth\bar{a}nivadbh\bar{a}va$  in  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  with reference to  $p\bar{u}rvavidhi$  and consequently there is interception through  $sth\bar{a}nivadbh\bar{a}va$ .

# असंयोगाल्लिट् कित् (1, 2, 5)

# ऋदुपधेभ्यो लिटः किन्त्रं गुणाद्विप्रतिषेधेन

The kittva of lit after the roots having r for the penultimate in preference to guṇa by  $vipratis\bar{e}dha$ .

ऋदुपधेभ्यो लिटः कित्त्वं गुणाद् भवति विप्रतिषेधेन, ववृते ववृषे

Kittva operates in preference to guna in roots having r for the penultimate, as in the forms  $vavrt\bar{e}$ , and  $vavrdh\bar{e}$  through the principle  $Vipratis\bar{e}dh\bar{e}$  param  $k\bar{a}ryam$ .

<sup>1.</sup> In  $tud+a+\bar{a}ni$ , if a and  $\bar{a}$  take  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\leq a$ , it is taken to be pit since  $\bar{a}$  is pit and so it may not be considered to be nit and hence u may take guna.

उक्तं वा It has been answered.

किमुक्तम् ? How has it been answered?

न वा क्सस्यानवकाशत्वादपवादो गुणस्य इति

By the statement "Na vā ksasya anavakāśatvād apavādō guņasya" 1

विषम उपन्यासः । युक्तं तत्र यदनवकाशं कित्करणं गुणं बाधते । इह पुनरुभयं सावकाशम् - कित्करणस्य अवकाशः ईजतुः ईजुः, गुणस्य अवकाशः वर्तिता वर्द्धिता । इहोभयं प्राप्नोति ववृते ववृधे ; परत्वाद् गुणः प्राप्नोति ।

The argument is not sound. It is there proper that the kittva which is  $anavak\bar{a} \pm a$  sets at naught the guna. But here both are  $s\bar{a}vak\bar{a} \pm a$ ; kittva operates in the forms ijatuh and ijuh, and guna operates in the forms  $vartit\bar{a}$  and  $vardhit\bar{a}$ . Here both have a chance to operate, in  $vavrt\bar{e}$  and  $vavrdh\bar{e}$ ; guna has a chance to succeed since  $gunavidh\bar{a}yakas\bar{u}tra$  is read later than  $K\dot{n}iti$  ca.

इदं तर्हि उक्तम् इष्टवाची परशब्दः इति <sup>2</sup> । विप्रतिषेधे परं यदिष्टं तद्भवतीति If so, it has been said that para means iṣṭa and so, that which is iṣṭa operates in the case of vipratiṣēdha.

#### इन्धिभवतिभ्यां च (1, 2, 6)

किमर्थमिद्मुच्यते ? What for is this sūtra read?

# इन्धेः संयोगार्थं भवतेः पिद्र्थम्

For the sake of  $s\bar{a}my\bar{o}ga$  in indh and pit in  $bh\bar{u}$ .

अयं योगः शक्योऽनक्तुम् This sūtra may as well be omitted. कथम्? Why?

# इन्धेश्छन्दोविषयत्वाद् भ्रवो वुको नित्यत्वाद् ताभ्यां किद्वचनानर्थक्यम्

Nonpurposefulness of the mention of kit, indh (—followed by lit) being connected with  $V\bar{e}da$  and the vuk of  $bh\bar{u}$  being nitya.

- 1. This is a vārttika under the sūtra Śala igupadhād aniţaḥ ksaḥ (3, 1, 45).
- 2. This is said under 1, 4, 2.

इन्धेः छन्दोविषयो लिट्  $^1$  The lit of indh is found in the  $V\bar{e}das$ . = ह्यान्तरेण छन्द इन्धेरनन्तरो लिड् लभ्यः

Except in the  $V\bar{e}das$ , the lit-pratyaya is not found after the root indh.

आमा भाषायां भवितव्यम्

In classical Sanskrit it is followed by am.

भुवो वुको नित्यत्वात् - भवतेरिप नित्यो वुक्, कृते गुणे प्राप्नोति, अकृतेऽिप प्राप्नोति ।

On account of the nityatva of vuk after  $bh\bar{u}$ . The vuk after  $bh\bar{u}$  is nitya, since it appears whether guna has a chance to come or has no chance to come.

ताभ्यां किद्वचनानर्थक्यम् - ताभ्याम् इन्धिभवतिभ्यां किद्वचनमनर्थकम्

<sup>1</sup>Non-purposefulness of kidvacana after them both. The mention of kittva after them - indh and  $bh\bar{u}$ -serves no purpose.

#### मृडमृदगुभक्कषिक्कशवदवसः त्त्रा (1, 2, 7)

किमर्थं मृडादिभ्यः परस्य क्तवः कित्त्वमुच्यते ? न किदेव हि क्त्वा ?

Why is kittva enjoined to the  $ktv\bar{a}$  after mrda etc.? Is not  $ktv\bar{a}$  kit by itself?

न क्तवा सेट् इति प्रतिषेधः प्रामोति, तद्वाधनार्थम्

The pratisēdha (to kittva) may chance to come by the sūtra Na ktvā sēţ (1, 2, 18) and this is to prevent it.

यदि तर्हि मृडादिभ्यः परस्य क्त्वः कित्त्वमुच्यते, नार्थो न क्त्वा सेट् इत्यनेन कित्त्वप्रतिषेधेन

If kittva is enjoined to ktvā after mṛḍādis, no purpose is served by the kittvapratiṣēdha by the sūtra Na ktvā sēţ.

1. The form  $idh\bar{e}$  is found only in Vedas, where the elision of n can be accomplished through the  $s\bar{u}tra$  Chandsyubhayath $\bar{a}$  (3, 4, 117),  $S\bar{a}rvadh\bar{a}tukam$  apit etc.

इदं नियमार्थ भविष्यति - मृडादिभ्य एव परस्य क्तवः कित्त्वं भवति नान्यस्य इति This ( $s\bar{u}tra$ ) is for the sake of niyama. There is kittva to  $ktv\bar{a}$  only when it follows  $mrd\bar{a}dis$  and none else.

यदि नियमः क्रियते, इहापि तर्हि नियमान्न प्राप्तोति - खत्वा, पूत्वा, अत्रापि अंकित्त्वं प्राप्तोति ।

If niyama is done, it does not chance to happen here too, in  $l\bar{u}tv\bar{a}$  and  $p\bar{u}tv\bar{a}$  through the niyama, since otherwise there is chance for akittva here.

तुल्यजातीयस्य नियमः

Niyama holds good only with reference to those of the same class.

कश्च तुल्यजातीयः ! Which belongs to the same class?

यथाजातीयको मृडादिभ्यः परः कत्वा

The class to which ktvā after mṛḍādis belong.

कथञ्जातीयकश्च मृडादिभ्यः परः क्त्वा ?

To which class does ktvā after mṛḍādis belong?

सेट् Sēţ.

एवमप्यस्त्यत्र कश्चिद् विभाषितेर्, सोऽनिटां नियामकः स्यात्

Even then, there is here some which is  $v\bar{e}t$  and they may be  $niy\bar{a}maka$  to anit.

अस्तु तावचे <sup>1</sup> सेटस्तेषां ग्रहणं नियमार्थं, य इदानीं विभाषितेट् तस्य ग्रहणं विध्यर्थं भविष्यति ।

Let then the mention of those that are sēṭ be for the sake of niyama and the mention of vēṭ be for the sake of vidhi.

रद्विदमुषप्रहिस्विपिपच्छः संश्च, स्विपिपच्छयोः सन्नर्थं प्रहणम्। किदेव हि क्त्वा The mention of the roots svap and pracch in the sūtra Ruda - vida - muṣa - grahi - svapi - pracchaḥ saṁśca (1, 2, 8) is for the sake of san; for ktvā is evidently kit.

1. The roots mrd, mrd, vad and vas are  $s\bar{e}t$  and gudh, kus, and klis are  $v\bar{e}t$ .

# इको झल् (1, 2, 9)

The explanation of a  $\pm l\bar{o}kav\bar{a}rttika$  is done here part by part and the whole  $v\bar{a}rttika$  is read at the end.

किमर्थामेकः परस्य सनः कित्त्वमुच्यते ?

What for is kittva enjoined to san which follows ik?

इकः किन्त्रं गुणो मा भृत् Kittva to that following ik to prevent guṇa.

इकः कित्त्वं कियते Kittva is enjoined to that which follows ik.

किं प्रयोजनम्? Why?

गुणो माभूदिति, चिचीपति तुष्टूषति

So that gunz may not set in, in the forms like cicīṣati and tuṣṭūṣati.

नैतद्स्ति प्रयोजनम् This benefit does not arise.

दीर्घारम्भात् By the mention of the sūtra enjoining lengthening.

र्दार्घत्वमत्र बाधकं भविष्यति

Dīrghatva will here serve as bādhaka.

कृते भवेत् It (guna) will take place after it (dīrghatva) sets in.

कृते खळ दीर्घत्वे गुणः पामोति

Guna chances to appear only after the lengthening is done.

अनर्भकं तु It is then of no use.

अनर्थकमेवं सित दीर्घत्वं स्यात् If so, lengthening may be of no use. नानर्थकम् It is not anarthaka.

ह्सार्थम् For the sake of short vowels.

ह्रस्वानां दीर्घवचनसामर्थ्यात् गुणो न भविष्यति ।

Guṇa does not set in to short vowels on account of the force of the mention of  $d\bar{\imath}rghatva$  to them.

1. By the sūtra Aj-jhana-gamām sani 6-4-16.

# भवेद्धस्वानां दीधवचनसामध्यद्भिणो न स्यात्

The guna which would otherwise appear, does not make its appearance on account of the force of the mention of dirghatva.

# दीर्घाणां तु प्रसज्यते

It chances to appear with reference to long vowels.

दीर्घाणां तु खळु गुणः प्रासीति

There is evidently a chance for guna to replace the long vowels.

दीर्घाणामपि दीर्घवचनसामर्थ्याद्भुणो न भविष्यति

Why! Guṇa does not replace long vowels also on account of the  $s\bar{a}marthya$  of  $d\bar{i}rghavacana$ .

न दीर्घाणां दीर्घाः प्राप्नुवन्ति

The long vowels cannot have further lengthening.

किं कारणम्? Why?

न हि भुक्तवान् पुनर्भुङ्क्ते, कृतदमश्रुश्च पुनः दमश्रूणि कारयति ।

For one who has finished his food does not take it again, nor one who has just cut his beard repeats it.

ननु च पुनः प्रवृत्तिरिप दृष्टा, मुक्तवानिप पुनर्भुङ्क्ते, कृतरमश्रुश्च पुनः रमश्रूणि कारयति

Oh! repetition too is seen; one who has taken his food takes it again and one who has cut his beard does it once more.

सामध्योद्धि पुनर्भाव्यम् Repetition through special advantage.

सामर्थ्याद्धि पुनः प्रवृत्तिभैवति, भोजनविशेषात् शिल्पिविशेषाद्वा ।
Repetition takes place if there is special advantage like a new dish or a new barber.

दीर्घाणां पुनर्दीर्घत्ववचने न किञ्चित् प्रयोजनमस्ति

There is no special advantage by enjoining dirghatva to long vowels.

अकृतकारि खलु शास्त्रमिवत् - तद्यथा, अभिर्यदद्ग्धं तद् दहति ।

Śāstra does, like fire, what has not been done. This is thus illustrated:—Fire burns only that which has not been burnt.

दीर्घाणामपि दीघत्वचन एतत्प्रयोजनं गुणो मा भूदिति ।

This is the benefit that guna does not make its appearance for enjoining  $d\bar{\imath}rghatva$  to  $d\bar{\imath}rghas$ .

कृतकारि खल्पपि शास्त्रम् पर्जन्यवत् - तद्यथा, पर्जन्यो यावदूनं पूर्णं च सर्वमभिवर्षति ।

 $\hat{Sastra}$  sometimes does, like cloud, what has been done. This may thus be illustrated that cloud rains in places where water is scarce and also where water is full.

यथैव तर्हि दीर्घत्ववचनसामर्थ्याद् गुणो न भवति, एवम् ऋदित्त्वमपि न प्रामोति - चिकीर्षति, जिहीर्षति ।

Just as guna does not set in on account of the  $s\bar{a}marthya$  of  $d\bar{i}rghatva$ -vacana, so also  $\bar{i}ttva$  to the anga ending in  $\bar{r}$  in  $cik\bar{i}r\bar{s}ati$  and  $jih\bar{i}r\bar{s}ati$  may not make its appearance.

# ऋदित्वं दीर्घसंश्रयम्

Ittva to the  $a\dot{n}ga$  ending in  $\bar{r}$  depends upon its lengthened form.

नाकृते दीर्घे ऋदित्वं प्राप्नोति

If the vowel is not lengthened, ittva does not appear to rdanta.

किं कारणम्? Why?

ऋत इत्युच्यते

The word  $\bar{r}tah$  is read (in the sūtra  $\bar{R}ta$  id dhātāh (7, 1, 100).

भवेद्धस्वानां नाकृते दीर्घे ऋदित्त्वं स्यात्, दीर्घाणां तु खल्वकृतेऽपि दीर्घत्वे ऋदित्वं प्रामोति

Ittva to rdanta does not happen to short vowels before they are lengthened and it does happen to long vowels even when they are not lengthened.

#### दीर्घाणां नाकृते दीर्घे

(It does not happen) to long vowels when lengthening is not done.

दीर्घाणामि नाकृते दीर्घत्वे ऋदित्वं प्राप्तोति । यदा दीर्घत्वेन गुणो बाधितः, तत उत्तरकालमृदित्वं भवति ।

Ittva to  $\bar{r}danta$  does not happen even to long vowels before they are lengthened. Ittva to  $\bar{r}danta$  happens only after the guna is set at naught by  $d\bar{r}rghatva$ .

णिलोपस्तु प्रयोजनम् Elision of ni is the benefit.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - णिलोपो यथा स्थात्, ज्ञीप्सिति

This, then, is the benefit that the elision of ni may happen as in  $j\tilde{n}\tilde{i}psati$ .

कास्ताः क निपतिताः ? क कित्त्वं क णिलोपः ? को वा अभिसम्बन्धः-यत्सिति कित्त्वे णिलोपः स्यात् असित कित्त्वे न स्यात् ?

Where were (the arrows) shot? Where have they fallen? Where is kittva and where is  $nil\bar{o}pa$ ? Where is this relationship that there is  $nil\bar{o}pa$  when there is kittva and there is no  $nil\bar{o}pa$  when there is no kittva?

Note:—This question arises from the fact that kit is not the nimitta of nilōpa.

एषोऽभिसम्बन्धः - यत्सित कित्त्वे सावकाशं दीर्घत्वं परत्वाण्णिलोपो बाधते, असित पुनः कित्त्वे अनवकाशं दीर्घत्वं यथैव गुणं बाधते एवं णिलोपमि बाधेत

This is the relationship that, just as  $nil\bar{o}pa$  sets at naught  $d\bar{i}rghatva$  which is  $s\bar{a}vak\bar{a}sa$  where there is kittva,  $d\bar{i}rghatva$  which is  $anavak\bar{a}sa$  may set at naught  $nil\bar{o}pa$  too as it does guna when there is no kittva.

तत्र णिलोपस्य अवकाशः कारणा, हारणा; दीर्घत्वस्य अवकाशः चिचीषति तुष्टूषति । इहोभयं प्राप्नोति ज्ञीप्सितः; परत्वाण्णिलोपः

 $K\bar{a}ran\bar{a}$  and  $h\bar{a}ran\bar{a}$  are the instances where  $nil\bar{b}pa$  operates and  $cic\bar{i}sati$  and  $tust\bar{u}sati$  are the instances where  $d\bar{i}rghatva$  operates. Here in  $j\tilde{n}\bar{i}psati$  both have chances to operate and  $nil\bar{b}pa$  operates since the  $s\bar{u}tra$  enjoining it is para.

असत्यपि कित्त्वे सावकाशं दीर्घत्वम्

Even in the absence of kittva, dīrghatva is sāvakāša,

कोऽवकाशः ? Where is it sāvakāśa?

इस्भावः, निमित्सिति, प्रमित्सिति, मीनातिमिनोत्योदीं घत्वे कृते, मी अहणे यथा स्यात्

Where there is  $is \cdot bh\bar{a}va$ . The forms nimitsati and pramitsati may be taken to be derived both from the roots  $m\bar{\imath}$  and mi, since the latter may be taken to be  $m\bar{\imath}$  after the vowel is lengthened so that it may come under the purview of the  $s\bar{u}tra\ Sani\ m\bar{\imath} \cdot m\bar{a}$  ... is (7,4,54).

यथैव तर्ह्यसित किन्त्वे सावकाशं दीर्घत्वं परत्वाण्णिलोपो वाधते, एवं गुणोऽपि बाधते । तस्मात् किन्त्वं वक्तव्यम्

Just as  $nil\bar{o}pa$ , being para, sets at naught  $d\bar{i}rghatva$  which is  $s\bar{a}vak\bar{a}\dot{s}a$  even in the absence of kittva, so also guna too may set it at naught. Therefore there is need for the mention of kittva.

इकः किन्तं गुणो मा भूदीर्घारम्भात्कृते भवेत्। अनर्थकं तु इखार्थं दीर्घाणां तु प्रसज्यते ॥ सामर्थ्याद्धि पुनर्भाव्यमृदिन्तं दीर्घसंश्रयम् । दीर्घाणां नाकृते दीर्घे णिलोपस्तु प्रयोजनम् ॥

हलन्ताच (1, 2, 10)

अयुक्तोऽयं निर्देशः This sūtra does not read well.¹

कथं हि इको नाम हलन्तः स्यात्, अन्यस्यान्यः?

For how is it possible for ik to have hal which is entirely different from it for its part?

Note:—There is anuvrtti to ikah here from the previous sūtra.

कथं तर्हि निर्देशः कर्तव्यः? If so, how should it be read?

इग्वतो हरू इति It should be read igvato halahwhich means "after the hal which has ik."

यद्येवं यियक्षति अत्रापि प्रामोति

If so, it will operate with reference to yiyakṣati also.

1. He feels that the use of the word anta is not appropriate.

Note: Kāiyata reads—Atra samprasāraņaprasangah.

एवं तर्हि इगुपधात् हलन्तात् इति वक्ष्यामि

If so, I shall read igupadhāt halantāt which means "after halanta which has ik for its penultimate."

एवमपि दम्भेन प्राप्नोति, सूत्रं च भिद्यते

If so, the sūtra will not operate with reference to dambh, and the wording of the sūtra is changed.

यथान्यासमेवास्त Let the sūtra be as it is.

ननु चोक्तम् - अयुक्तोऽयं निर्देश इति

Oh! it has been said that the sūtra does not read well.

न अयुक्तः It cannot be said that it does not read well.

अयमन्तशब्दोऽस्त्येवावयववाची । तद्यथा वस्त्रान्तः वसनान्तः इति, वस्ता-वयवो वसनावयव इति गम्यते । अस्ति सामीप्ये वर्तते - तद्यथा उदकान्तं गतः इति, उदकसमीपं गत इति, गम्यते । तद्यः सामीप्ये वर्तते तस्येदं प्रहणम्

This word anta has evidently the meaning of avayava, as in vastrāntaḥ and vasanāntaḥ which convey the meaning of vastrā-vayavaḥ and vasanāvayavaḥ. It has also the meaning of sāmī-pya, as in "udakāntam gataḥ" which means "udakasamīpam gataḥ." Here the meaning of sāmīpya is taken to account.

Note:—1. Kāiyaṭa reads:—Ēvañ ca hal cāsāu antaścēti karmadhārayaḥ; nipātanācca viśēṣaṇasya paranipātaḥ.

एवमिप दम्भेन सिध्यति । यो ह्यत्र इक्समीपो हल् न तस्मादुत्तरः सन्, यसादुत्तरः सन् नासाविक्समीपे

Even then, it cannot be applied to the sannanta of dambh; for the hal which is close to ik is not followed by san and that which is followed by san is not close to ik.

# द्म्भेईल्ग्रहणस्य जातिवाचकत्वात् सिद्धम्

It applies to dambh by taking the word hal to refer to jāti.

-हल्जातिर्निर्दिश्यते, इक उत्तरा या हल्जातिरिति

 $Halj\bar{a}ti$  is referred to, so that it means 'the  $hali\bar{a}ti$  which follows ik.'

Note:—1. Kāiyaṭa reads here:-Varṇagrahaṇē jātigrahaṇam iti Nipāta ēkājanān (1, 1, 14) ityatra ēkagrahaṇēna jñāpitatvāt.... Yadāpi "Tyaktabhēdā vyaktaya ēva jātiḥ" iti pakṣaḥ tadā bhēdavyudāsād abhēdāśrayaṇād iṣṭasiddhiḥ.

Note:—2. Nāgēśabhaṭṭa reads:—Parē tu haljātir ityasya tajjātyāśrayahalsamudāya ityarthaḥ; tasya ca sākṣād ēva sāmī-pyam, tataḥ paratvam cōpapadyatē.

# लिङ्सिचावात्मनेपदेषु (1, 2, 11)

कथिमदं विज्ञायते, आत्मनेपदं यो लिङ्सिचा इति आहोस्विद् आत्मनेपदेषु परतो यो लिङ्सिचा इति

How is this interpreted, whether the  $li\dot{n}$  and sic which are  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  or the  $li\dot{n}$  and sic when followed by  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ ?

कि चातः? What if it is one or the other?

यदि विज्ञायते आत्मनेपदं यो लिङ्सिचो इति, लिङ् विशेषितः सिज् अविशेषितः; अथ विज्ञायते आत्मनेपदेषु परतो यो लिङ्सिचो इति, सिज् विशेषितः लिङ् अविशेषितः।

If it is interpreted " $\bar{a}tman\bar{e}padam$  yāu  $linsic\bar{a}u$ ", lin is restricted in its denotation and sic is not; and if it is interpreted " $\bar{a}tman\bar{e}pad\bar{e}su$   $parat\bar{o}$  yāu  $linsic\bar{a}u$ ", sic is restricted in its denotation and lin is not.

यथेच्छिस तथास्त Let it be as you please.

अस्तु तावत् आत्मनेपदं यौ लिङ्सिचौ इति Let it be ātmanēpadam yāu linsicāu.

ननु चोक्तम् - लिङ् विशेषितः सिज् अविशेषितः इति

Oh! it has been said that lin is viśēṣita and sic is aviśēṣita.

सिच विशेषितः Sic too is restricted in its denotation.

कथम् ! How !

आत्मनेपदं सिज् नास्तीति कृत्वा, आत्मनेपद्रपरे सिजि कार्य विज्ञास्यते Finding that sic is not ātmanēpada, operation on sic followed by ātmanēpada will take place (i.e.) ātmanēpadam is there taken to mean through gāunīvṛtti ātmanēpadaparakam.

अथ वा पुनरस्तु आत्मनेपदेषु परतो यौ लिङ्सिचौ इति

Or let it be "ātmanēpadēşu paratō yāu linsicāu."

ननु चोक्तम् सिज् विशेषितः लिङ् अविशेषितः इति

Oh! it has been said that sic is viśēṣita and lin is aviśēṣita.

लिङ् च विशेषितः Lin too is viśēṣita.

कथम् ? How?

आत्मनेपदेषु परतो लिङ् नास्तीति कृत्वा 1 आत्मनेपदे लिङि कार्य विज्ञास्यते Finding that there is no  $li\dot{n}$  followed by  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ , operation on  $li\dot{n}$  which is  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  will take place.

Note:  $-K\bar{a}iya$  ta reads here: -Avayavagatam  $p\bar{a}urv\bar{a}paryam$   $samud\bar{a}y\bar{e}$   $\bar{a}srayi$  syate iti  $bh\bar{a}vah$ .  $N\bar{a}g\bar{e}sbha$  ta adds  $vyapad\bar{e}sivadbh\bar{a}v\bar{e}na$  ityarthoh.

नैव पुनरर्थो लिङ्विशेषणेन आत्मनेपद्रग्रहणेन

Or there is no purpose served by taking ātmanēpada as the višēṣaṇa of lin.

किं कारणम् ? Why?

झिलति वर्तते, आत्मनेपदेषु चैव लिङ् झलादिः न परसमपदेषु

There is jhal (in the previous  $s\bar{u}tra$ ) and it has its anuvṛtti here; lin is  $jhal\bar{a}di$  only in  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  and not in  $parasm\bar{a}i$ -pada.

तदेतत् सिज्विशेषणम् आत्मनेपद्रग्रहणम्

Hence the word ātmanēpada is višēṣaṇa only to sic.

अथं सिज्विशेषणे आत्मनेपदग्रहणे सित किं प्रयोजनम्?

If then ātmanēpada is višēṣaṇa to sic, what is the benefit?

इह मा भूत् अपाक्षीत् अवाप्सीत्

So that the sūtra may not operate in apākṣīt and avāpsīt.

नैतद्स्ति, इक इति वर्तते

No, this cannot be, since there is anuvrtti for ikah.

1. The meaning of the root ky here deserves to be noted.

एवमपि अचैषीत् अनैषीत् अत्रापि प्रामोति

If so, it will operate in  $ac\bar{a}i\bar{s}it$  and  $an\bar{a}i\bar{s}it$ .

एतद्पि नास्ति प्रयोजनम्, हलन्तादिति वर्तते

This too is not the benefit, since there is anuvṛtti for halantāt.

एवमपि अकोषीत् अमोषीत् अत्रापि प्राप्तोति

If so, it will operate in akōṣīt and amōṣīt.

नैतद्स्ति, झलिति वर्तते

This too is not, since there is anuvrtti for jhal.

एवमपि अमैत्सीत् अच्छैत्सीत्, अत्रापि प्रामोति

If so, it will operate in abhāitsīt and acchāitsīt.

नैतदस्ति, इंग्लक्षणयोर्गुणवृद्धयोः प्रतिषेधः, न चैषा इंग्लक्षणा वृद्धिः

This too cannot be, since  $pratis\bar{e}dha$  is to guṇa and vrddhi based on ik-paribh $\bar{a}s\bar{a}$  and this vrddhi is not  $iglaksan\bar{a}$ .

इदं तर्हि प्रयोजनम् इह मा भूत् अस्राक्षीत् अद्राक्षीत् इति

This, then, is the  $pray\bar{o}jana$ , that the  $s\bar{u}tra$  may not operate in  $asr\bar{a}k\bar{s}\bar{t}t$  and  $adr\bar{a}k\bar{s}\bar{t}t$ .

किं च स्थात्? What will happen if it operates?

अकिल्रक्षणोऽमागमो न स्यात्

The agama am which is based on akit will not appear.

# स्थाघ्वोरिच (1, 2, 17)

इच कस्य तकारेन्त्रम्? Why is icca read with takāra as it?

कस्य हेतोरिकारस्तपरः क्रियते

For what reason is ikāra read tapara?

# दीघीं मा भृत्

So that dīrgha (ikāra) may not be the ādēśa.

दीर्घो मा भूदिति

So that  $d\bar{\imath}rgha$  ( $ik\bar{a}ra$ ) may not be the  $\bar{a}d\bar{e}sa$  (in the place of  $\bar{a}k\bar{a}ra$  through  $\bar{a}ntaratamya$ ).

ऋतेऽपि सः Even without it, it appears.

#### अन्तरेणाप्यारमभं सिद्धोऽत्र दीघी घुमास्थागापाजहातिसां हलीति

Even without its mention here, the  $d\bar{\imath}rgha$  is accomplished here by the  $s\bar{u}tra$   $Ghu-m\bar{a}-sth\bar{a}-g\bar{a}-p\bar{a}-jah\bar{a}tis\bar{a}m$  hali (6, 4, 66).

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:— $Antar\bar{e}n\bar{a}pi-ik\bar{a}ravidh\bar{a}n\bar{e}na$   $vin\bar{a}p\bar{i}tyarthah$ ; kittvam tu kartavyam  $\bar{e}va$ ,  $t\bar{e}na$   $vin\bar{a}$   $\bar{i}ttvasya$   $pr\bar{a}ptyabh\bar{a}v\bar{a}t$ .

# अनन्तरे प्छतो मा भृत्

So that pluta may not set in, if a dissimilar ādēśa has a chance to come.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - अनन्तरे प्छतो मा भूदिति

This, then, is the benefit, that pluta may not take its place when a dissimilar  $\bar{a}d\bar{e}\acute{s}a$  has a chance to come.

क़तों नु खल्वेतत् अनन्तरार्थे आरम्मे हस्वो भविष्यति न पुनः प्छत इति? How is it then that, if a dissimilar ādēśa has a chance to come, it should be hrasva and not pluta?

प्छतश्च विषये स्मृतः Pluta is read wherever necessary.

विषये प्लुत उच्यते । यदा च स विषयो भवितव्यमेव तदा प्लुतेन

Pluta is read in places where it is necessary. Wherever such a place arises, there evidently comes the pluta.

इच कस्य तकारेत्त्वं दीघीं मा भूदतेऽपि सः । अनन्तरे प्छतो मा भूत प्छतश्च विषये स्मृतः ॥

न क्तवा सेट् (1, 2, 18)

न सेडिति कृते Sिकच्चे What if akittva is enjoined by 'Na sēṭ'

न सेट् इत्येव सिद्धं, नार्थः त्तराग्रहणेन

It will do that the  $s\bar{u}tra$  is read 'Na  $s\bar{e}t$ '; the mention of  $ktv\bar{a}$  in the  $s\bar{u}tra$  is unnecessary.

निष्ठायामपि तर्हि प्रामोति, गुधितः गुधितवान् इति

If so, it chances to come to the pratyayas kta and ktavat, as in gudhitah and gudhitavān.

#### निष्ठायामवधारणात्

By the specific mention with reference to  $nisth\bar{a}$ .

निष्ठायामवधारणान्न भविष्यति

Kittvanişēdha does not reach  $nisth\bar{a}$ , since there is specific mention there.

किमवधारणम्? What is the specific mention?

निष्ठा शिङ्खिदिमिदिक्षिवदिधृषः इति

The sūtra Niṣṭhā śīn - svidi - midi - kṣvidi - dhṛṣaḥ (1, 2, 19).

परोक्षायां तर्हि प्राप्तोति It then chances to come in lit.

Note.— $K\bar{a}iyața$  reads:—  $P\bar{u}rv\bar{a}c\bar{a}ryaprasiddhy\bar{a}$  parōkṣ $\bar{a}$  liḍ ucyatē.

किं च स्थात्?

What is the harm if it chances to come in lit?

पिव पिम, विङ्तीत्याकारलोपो न स्यात् 1

There will be no elision of  $\bar{a}$  (in the root  $p\bar{a}$ ) in the forms papiva and papima by the reason of its being followed by kit or  $\dot{n}it$ .

मा भूदेवम् इटीत्येवं भविष्यति

Let it not be for this reason. It happens since it is followed by it.

इदं तर्हि जग्मिव जिन्नव विङतीत्युपधालोपो न स्यात् 2

If so, there will be no elision of the penultimate in jagmiva and jaghniva by the reason of having kit or nit following it.

ज्ञापकान परोक्षायाम् It is not so in lit through jñāpaka.

ज्ञापकात् परोक्षायां न भविष्यति

It does not happen in lit through  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ .

कि ज्ञापकम्? What is the jñāpaka?

- 1. The ākāralopa is by the sūtra Ātō lopa iti ca (6, 4, 64).
- 2. The upadhālōpa is by the sūtra Gama hana jana khana ghasām lōpaḥ knityanani (6, 4, 98).

#### सनि झल्प्रहणं विदुः

They think that the mention of jhal in san-prakaraṇa (is the  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ ).

यदयम् इको झल् इति झल्प्रहणं करोति तद् ज्ञापयत्याचार्यः औपदेशिकस्य कित्त्वस्य प्रतिषेधो नातिदेशिकस्य इति ।

Since the  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$  reads jhal in the  $s\bar{u}tra$   $Ik\bar{o}$  jhal (1, 2, 9), he suggests that there is  $pratis\bar{e}dha$  for the kittva that is read as such and not for the kittva that is secured through analogy.

कथं कृत्वा ज्ञापकम्? How is it interpreted to be jñāpaka?

झल्प्रहणस्येतत्प्रयोजनम्, झलादौ यथा स्याद् इह मा भूत् शिशयिषत इति । यदि चात्र आतिदेशिकस्यापि कित्त्वस्य प्रतिषेधः स्यात् झल्प्रहणमनर्थकं स्यात्

This is the prayojana of the mention of jhal, that it may occur in the place like śiśayiṣata. If there is here pratiṣēdha for the ātidēśika-kittva too, the mention of jhal will be of no use.

अस्त्वत्र कित्त्वं, न सेट् इति प्रतिषेधो भविष्यति

Let there be kittva here and it will be set at naught by " $Na s\bar{e}t$ "

पश्यति तु आचार्यः औपदेशिकस्य कित्त्वस्य प्रतिषेधः नातिदेशिकस्य इति, ततो झल्प्रहणं करोति

 $\bar{A}c\bar{a}rya$  sees that there is  $pratis\bar{e}dha$  only to  $\bar{a}upad\bar{e}sika$  . kittva and not to  $\bar{a}tid\bar{e}sika$ -kittva and hence reads jhal.

नैतदस्ति ज्ञापकम् ; उत्तरार्थमेतत् स्यात् स्थाघ्वोरिच, झलादौ यथा स्यात्, इह मा भूत् उपास्थायिषाताम् , उपास्थायिषत

This is not a jñāpaka; it is intended for the sūtra Sthāghvōr icca which follows, so that it may happen when jhalādi follows and it may not happen here in upāsthāyiṣātām and upāsthāyiṣata. इन्वं कित्सिन्योगेन Ittva in association with kittva.

कित्त्वसन्नियोगेन इत्त्वमुच्यते, तेनासित कित्त्वे इत्त्वं न भविष्यति । Ittva is enjoined in association with kittva and hence there will be no ittva where there is no kittva.

रेण तुल्यं सुधीवनि It is similar to r in sudhīvan.

Note.—The sūtra Vanōra ca (4, 1, 7) enjoins both  $\dot{n}\bar{\imath}p$  and antādēśa r after stems ending in van and  $An\bar{o}$  bahuvr $\bar{\imath}h\bar{e}h$  (4, 1, 12) serves as its  $apav\bar{a}da$ .

तद्यथा, सुधीवा सुपीवा इति ङीप्सिन्नयोगेन र उच्यमानोऽसति ङीपि न भवति It is thus:-With reference to  $sudh\bar{\imath}v\bar{a}$  and  $sup\bar{\imath}v\bar{a}$ , the r enjoined along with  $n\bar{\imath}p$  does not appear in its absence.

Note.—Here is an instance where the nyāya suggested by the mention of cha in the sūtra Bilvakādibhyaśchasya luk (6, 4, 154). "Sanniyōgaśiṣṭānām anyatarāpāyē ubhayōrapi apāyaḥ" is applied.

अथवा अस्त्वत्र इत्त्वम् । का रूपसिद्धिः?

Or let there be ittva. What will be the form of the word?

वृद्धौ कृतायामायादेशो भविष्यति

If i takes vrddhi, there will be  $\bar{a}y\bar{a}d\bar{e}\dot{s}a$ .

वस्वर्थम् For the sake of vasu.

वस्वर्थं तर्हि त्तनाग्रहणं कर्तव्यम् । वसोह्याँपदेशिकं कित्त्वम्

If so, ktvā should be read for the sake of vasvanta; for vasu has only āupadēśika-kittva.

किं च स्यात्? What will happen then?

पपिवान्, तस्थिवान्, कितीत्याकारलोपो न स्यात्

There will be no elision of  $\bar{a}k\bar{a}ra$  in  $papiv\bar{a}n$  and  $tasthiv\bar{a}n$  on account of kit, following it.

मा भ्देवम्, इटीत्येवं भविष्यति

Let it not be so; it will take place on account of it following it (by the  $s\bar{u}tra$   $\bar{A}t\bar{o}$   $l\bar{o}pa$  iti ca).

इदं तर्हि जिमवान् जिन्नवान्, विङ्तीत्युपधारुोपो न स्यात्

Here then, in  $jagmiv\bar{a}n$  and  $jaghniv\bar{a}n$ , there will be no elision of the penultimate on account of its being followed by kit or  $\dot{n}it$ .

किद्तिदेशात् On account of the atidēśa of kittva.

अस्त्वत्र औपदेशिकस्य कित्त्वस्य प्रतिषेधः ; आतिदेशिकमत्र कित्त्वं भविष्यति

Let there be pratiṣēdha for āupadēśika-kittīa; here will stand the ātidēśika-kittīa.

यत्र तर्हि तत्प्रतिषिध्यते अञ्जेः आजिवान् इति

Where it is set at naught as in  $\bar{a}jiv\bar{a}n$  derived from the root  $a\tilde{n}j$ .

एवं तर्हि च्छान्दसः कसुः । लिट् च छन्दिस सार्वधातुक्रमि भवति । तत्र सार्वधातुकमिषिन्डद्भवतीति ङित्युपधालोपो भविष्यति

If so, we take it to be krasu found in  $V\bar{e}das$ . Lit in  $V\bar{e}das$  is taken to be  $s\bar{a}rvadh\bar{a}tuka$  also. Since the  $s\bar{a}rvadh\bar{a}taka$  that is apit does the office of  $\dot{n}it$ , there is the  $upadh\bar{a}l\bar{o}pa$  on account of  $\dot{n}it$ , following it.

(नि)गृहीतिः Nigrhītiḥ.

इदं तर्हि प्रयोजनम्; इह मा भूत् निगृहीतिः, उपिस्तिहितिः, निकुचितिः This, then, is the prayojana that it may not happen in nigrhītiḥ, upsnihitiḥ and nikucitiḥ.

तत्तर्हि त्तवाग्रहणं कर्तव्यम्

In that case mention of  $ktv\bar{a}$  is necessary.

न कर्तव्यम् No, it need not be mentioned.

#### क्त्वा च विग्रहात्

Through splitting  $ktv\bar{a}$  ca (in  $P\bar{u}\dot{n}a\dot{h}$   $ktv\bar{a}$  ca) as a separate  $s\bar{u}tra$ .

उपरिष्टाचोगविभागः करिष्यते न सेट्, निष्ठा शीङ्खिदिमिदिक्ष्विदृष्टः, मृषितिक्षियाम्, उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्; ततः पूङः, पूङश्च निष्ठा सेट् किन्न भवति । ततः त्त्रा च, त्त्रा च सेट् किन्न भवति, पूङः इति निवृत्तम्

A  $s\bar{u}tra$  below is to be split into two. The  $s\bar{u}tras$  are read thus:— $Na\ s\bar{e}t$ ;  $Ni\ s\bar{e}t$   $s\bar{i}n$  - svidi - midi - ksvidi - dhr sah;  $Ud-upadh\bar{a}d\ bh\bar{a}v\bar{a}dikarman or\ any at arasy am$ . Then  $p\bar{u}nah$  alone is taken as one  $s\bar{u}tra$  meaning the  $s\bar{e}t$ - $nisth\bar{a}$  of  $p\bar{u}n$  is not kit. Then  $ktv\bar{a}$  ca is taken as a separate  $s\bar{u}tra$  meaning that  $s\bar{e}t$ - $ktv\bar{a}$  is not kit. The word  $p\bar{u}nah$  recedes.

न सेडिति कृतेऽिकत्ते निष्ठायामवधारणात् । ज्ञापकान्न परोक्षायां सनि झल्ग्रहणं विदुः ॥

# इन्वं कित्सिन्नयोगेन रेण तुल्यं सुधीविन । वस्वर्थं किद्तीदेशाद् गृहीतिः क्तवा च विग्रहात् ॥

From this it is clear that, in the opinion of the  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$ ,  $ktv\bar{a}$  in this  $s\bar{u}tra$  is unnecessary.

# उदुपधाद्भावादिकर्मणोरन्यतरस्थाम् (1, 2, 21)

इह कस्मान्न भवति गुधितः गुधितवान्

Why does it (the optional  $kittv\bar{a}bh\bar{a}va$ ) operate here, in gudhitah and  $gudhitav\bar{a}n$ ?

#### उदुपधाच्छपः

It is only with reference to roots which are ud-upadha and which belong to śabvikarana (first conjugation).

शब्विकरणेभ्य इष्यते

It is desired only with reference to those which belong to sabvikarana.

#### पूङ: क्त्वा च (1, 2, 22)

# पूङः क्त्वानिष्ठयोरिटि वाप्रसङ्गः सेट्प्रकरणात्

There is chance for optional (kittva) when  $p\bar{u}\dot{n}$  is followed by it before  $ktv\bar{a}$  and  $nisth\bar{a}pratyayas$  on account of  $s\bar{e}t$ -prakarana.

पूङः कत्वानिष्ठयोरिटि विभाषा कित्त्वं प्राप्नोति

There is chance for optional kittva when  $p\bar{u}\dot{n}$  is followed by it before  $ktv\bar{a}$ , kta and ktavat.

किं कारणम्? Why?

सेट्पकरणात् । सेडिति वर्तते

On account of the prakaraṇa relating to  $s\bar{e}t$ . There is mention of  $s\bar{e}t$ .

# न वा सेट्त्वस्याकिदाश्रयत्वादनिटि वा किन्वम्

No, since sēṭtva is akidāśraya; optional kittva is only with reference to aniţ.

न वैष दोषः This difficulty does not arise.

किं कारणम् Why?

सेट्त्वस्य अकिदाश्रयत्वात्

Since sēṭtva is concomittant with akittva.

अकिदाश्रयं सेट्त्वम् । यदा अकित्त्वं तदेटा भिवतन्यम् Sēṭtva is concomittant with akittva. Where there is akittva, there iţ should appear..

सेट्त्वस्य अकिदाश्रयत्वात् अनिट्येव विभाषा कित्त्वं भविष्यति Since sēṭtva is concomittant with akittva, the optional kittva takes place only in aniţ.

इड्विघो पूङो प्रहणं कियते । तेन वचनादिट् । सेट्पकरणाच इट्येव विभाषा किन्तं प्राप्तति ।

 $P\bar{u}\dot{n}$  is read with reference to it; hence it takes it after it. Since it is  $s\bar{e}tprakarana$ , the optional kittva will arise only when there is it.

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:— $Tata\acute{s}$  ca  $puvitv\bar{a}$ , puvitah,  $iti\ paks\bar{e}\ sy\bar{a}t$ .

इड्डिधौ ह्यग्रहणम् Non-grahaņa in idvidhi.

इड्डिधौ हि पूड़ो ग्रहणं न कर्तव्यम् भवति

 $P\bar{u}\dot{n}$  need not be read in idvidhi.

भारद्वाजीयाः पठन्ति Bhāradvājīyas read:—

# नित्यमकिन्वमिडाद्योः क्तवाग्रहणग्रुत्तरार्थम्

Akittva is nitya for  $id\bar{a}di$  and mention of  $ktv\bar{a}$  is for the later  $s\bar{u}tras$ .

नित्यमिकत्त्वमिडाचोः क्त्वानिष्ठयोः सिद्धम्

Akittva is nitya with reference to  $ktv\bar{a}$ , kta and ktavat when they are preceded by it.

#### कथम् ? How?

विभाषामध्येऽयं योगः क्रियते । विभाषामध्ये च ये विधयः ते नित्या भवन्ति This  $s\bar{u}tra$  is read between the  $s\bar{u}tras$  which enjoin  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  (i. e. between  $Udupadh\bar{a}d\ bh\bar{a}v\bar{a}dikarman\bar{o}r\ anyatarasy\bar{a}m$  and

 $N\bar{o}padh\bar{a}t\ thaph\bar{a}nt\bar{a}d\ v\bar{a}$ ). The  $vidhis\ read\ between\ vibh\bar{a}s\bar{a}-s\bar{u}tras\ are\ nitya$ .

किमथे तर्हि त्राग्रहणम्?

What for is, then, ktvā read in the satra?

त्त्राग्रहणमुत्तरार्थम्

Mention of  $ktv\bar{a}$  is intended for later sūtras.

उत्तरार्ध तमाप्रहणं कियते - नोपधात् थफान्ताद्वा, विश्वलुञ्च्यृतश्च इति । Ktvā is read to be of use in the later sūtras—Nō-padhāt thaphān-tād vā, Vañciluñcyrtas ca.

# तृषिमृषिकृषेः काश्यपस्य (1, 2, 25)

काश्यपग्रहणं किमर्थम्?

What is the need for the mention of Kāśyapa?

<sup>1</sup> काश्यपग्रहणं पूजार्थम् , वेत्येव हि वर्तते

Mention of  $Ka\acute{s}yapa$  is to show reverence, since there is anuvrtti for  $v\bar{a}$  here (from the  $s\bar{u}tra$   $N\bar{o}padh\bar{a}t$   $thaph\bar{a}nt\bar{a}d$   $v\bar{a}$  - 1, 2, 23).

# रलो व्युपधाद्धलादेः संश्व (1, 2, 26)

किमिदं रलः क्तवासनोः कित्तं विधीयते आहोस्वित् प्रतिषिध्यते?

Is kittva to ktvā and san after ral enjoined here or prohibited?
কি चাत:?

What does it matter whether it is enjoined or prohibited?

यदि विधीयते, त्त्राग्रहणमनर्थकम्, किदेव हि त्त्रा । अथ प्रतिषिध्यते सन्ग्रहणमनर्थकम्, अकिदेव हि सन् ।

If it is enjoined,  $ktv\bar{a}$  need not be referred to (by ca in the  $s\bar{u}tra$ ) since  $ktv\bar{a}$  is evidently kit. If it is prohibited, mention of san is of no use, since san is evidently akit.

अत उत्तरं पठति The answer, he thus gives.

<sup>1. &#</sup>x27;Kāśyapagrahaṇam pūjārtham' is read as a vārttika in Guruprasadaśāstri edition.

#### रलः त्त्वासनोः कित्वारम्भः 1

Injunction of kittva to ktvā and san after ral.

रलः त्त्वासनोः कित्त्वं विधीयते

Kittva is enjoined to  $ktv\bar{a}$  and san after ral.

ननु चोक्तम् सग्राग्रहणमनर्थकामिति

Oh! it has been said that, in that case, mention of  $ktv\bar{a}$  is of no use.

नानर्थकम्, न त्ता सेट् इति प्रतिषेधः प्राप्तोति, तद्वाधनार्थम् It is not anarthaka, since it is intended to set at naught the pratisēdha obtained by the sūtra "Na ktvā sēţ."

# ऊकालोऽज्झखदीर्घप्छतः (1, 2, 27)

There are four topics dealt with here:—(1) The appropriateness or otherwise of the expression  $\bar{u}k\bar{a}lah$ ; (2) whether the samijnin is one or three (3) the need to take the samijnins and  $samijn\bar{a}s$  in their respective order and (4) the chance for  $d\bar{i}rghas$  and plutas to take  $hrasva-samijn\bar{a}$  too.

Ι

अयुक्तोऽयं निर्देशः; ऊ इत्यनेन कालः प्रतिनिर्दिश्यते; ऊ इत्ययं च वर्णः; तत्रायुक्तं वर्णस्य कालेन सह सामानाधिकरण्यम् <sup>2</sup>

This expression  $(\bar{u}k\bar{a}lah)$  is inappropriate; the word  $k\bar{a}la$  is qualified by  $\bar{u}$ ;  $\bar{u}$  is a letter and it is inappropriate there to take varna be in apposition with  $k\bar{a}la$ .

कथं तर्हि निर्देशः कर्तव्यः? How then is it to be expressed? ऊंकालकालः इति It is to be expressed thus:—ūkālakālaḥ. किमिदम् ऊकालकाल इति What is it, ūkālakālaḥ?

ऊ इत्येतस्य काल ऊकालः, ऊकालः कालो यस्य स ऊकालकाल इति  $\overline{U}k\bar{a}lak\bar{a}lah$  is a bahuvrīhi compound of  $\bar{u}k\bar{a}lah$  and  $k\bar{a}lah$ , where  $\bar{u}k\bar{a}lah$  means the  $k\bar{a}la$  (the duration of pronunciation) of  $\bar{u}$ .

- 1. Kittvam is another reading,
- 2. See similar discussion in Vol. III pp. 247 & 248.

स तर्हि तथानिर्देशः कर्तव्यः It should be thus read then.

न कर्तव्यः No, it need not be thus read.

उत्तरपदलोपोऽत्र द्रष्टव्यः 1

It is to be taken that the final member of that compound is dropped.

तद्यथा — उष्ट्रमुखिमव मुखमस्य उष्ट्रमुखः, खरमुखः । एवम् ऊकालकालः ऊकालः इति

This may be illustrated thus:—ustramukha is the bahuvr $\bar{i}$ hi compound of ustramukham and mukham in the sense of ustramukham iva mukham asya; so also is the word kharamukhah. Similarly the word  $\bar{u}$ k $\bar{a}$ lah is obtained by eliding the final member of  $\bar{u}$ k $\bar{a}$ lah.

अथ वा साहचर्यात् ताच्छड्यं भविष्यति । कालसहचरितो वर्णोऽपि काल एव  $^2$  । Or it  $(k\bar{a}la)$  is denoted by that letter  $(\bar{u})$  through association. The letter too associated with  $k\bar{a}la$  may denote  $k\bar{a}la$ .

Note.—It may be noted that  $K\bar{a}iyata$  reads under Taparas tatkālasya (1, 1, 70) thus:—  $Varņasahacarit\bar{a}y\bar{a}m$  kriyāyām tacchabdō vartatē, sa kālō yasya iti.

II

# हृस्वादिषु समसङ्ख्याप्रसिद्धिनिदेशवैषम्यात्

Difficulty of taking the respective order with reference to hrasva etc. on account of uneven enumeration.

ह्स्वादिषु समसङ्ख्यत्वस्य अप्रसिद्धिः

Difficulty in taking the respective order with reference to hrasva etc.

### किं कारणम्? Why?

- 1, This is taken as a vārttika in Guruprasadaśāstri's edition; but it is not so taken in Vol. I of the same edition under the sūtra Hayavaraṭ in the second āhnika.
- 2. कालसहचारतो वर्ण: । वर्णोऽपि काल एव । The word varṇah is found in addition after kālasahacaritō in Panduranga Javaji edition.

निर्देशवैषम्यात् । तिस्रः सञ्ज्ञाः, एकः सञ्ज्ञी ; वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्रामोति

On account of dissimilarity in enumeration. There are three  $samj\tilde{n}as$  and one  $samj\tilde{n}in$ . It is not possible to take them in the respective order, since their numbers are not the same.

#### सिद्धं तु समसङ्ख्यत्वात्

The object is accomplished, on account of them being of the same number.

सिद्धमेतत् This is accomplished.

कथम्? How?

समसङ्ख्यत्वात् Since they are of the same number.

कथं समसङ्ख्यत्वम्? How are they of the same number?

### त्रयाणां हि विकारनिर्देशः

Mention of three with modification.

त्रयाणामयं प्रश्चिष्टनिर्देशः

This is the mention of three in a combined form.

कथं पुनर्ज्ञायते त्रयाणामयं प्रश्लिष्टनिर्देश इति ?

How is it known that this is the praślistanirdeśa of three?

### तिसृणां संज्ञानां करणसामध्यति

On account of the sāmarthya of three samjñas being made.

#### TTT

यद्यपि तावत्तिसृणां संज्ञानां करणसामंध्याद् ज्ञायते त्रयाणामयं प्रश्लिष्टनिर्देश इति, कुतस्त्वेतद् एतेन आनुपूर्वेण सन्निविष्टानां संज्ञा भविष्यतीति आदौ मात्रिकः ततो द्विमात्रः ततस्त्रिमात्र इति, न पुनर्मात्रिको मध्ये वा अन्ते वा स्यात्, तथा द्विमात्र आदौ वा स्यादन्ते वा, तथा त्रिमात्र आदौ वा मध्ये वा स्यात्?

Even though it may be known, from the mention of three  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}s$ , that it is a  $pra\dot{s}listanird\bar{e}\dot{s}a$  of three, how is it known that it refers to the three in the order - letter of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  at the beginning, letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  at the middle and letter of three  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  at the end and not to the letter of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  at

the middle or at the end, the letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  at the beginning or at the end or the letter of three  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  at the beginning or at the middle?

अयं तावत् त्रिमात्रोऽशक्य आदौ वा मध्ये वा कर्तुम्
Firstly it is not possible to take the letter of three mātrās

either at the beginning or at the middle.

कुतः? Why?

प्छताश्रयो हि प्रकृतिभावः प्रसज्येत

For prakrtibhāva based on pluta may chance to appear.

मान्निकद्विमान्निकयोरिप ध्यन्तं पूर्वं निपततीति मान्निकस्य पूर्वनिपातो भविष्यति With reference to letters of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  and two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  too, the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  becomes the first member of the compound, since it is said (in the  $s\bar{u}tra$   $Dvandv\bar{e}$  ghi 2, 2, 32) that the word ending in ghi becomes the first member.

यत्तावदुच्यते - अयं तावत् त्रिमालोऽशक्य आदौ मध्ये वा कर्तुं, प्छताश्रयो हि प्रकृतिभावः प्रसच्येत इति, प्छताश्रयः प्रकृतिभावः, प्छतसंज्ञा चानेनेव, यदि च त्रिमात्र आदौ वा मध्ये वा स्यात् प्छतसंज्ञेवास्य न स्यात्, कृतः प्रकृतिभावः ? Firstly with reference to the statement that it is not possible to take the letter of three mātrās either at the beginning or at the middle since prakṛtibhāva based on pluta may chance to appear, prakṛtibhāva depends upon pluta, the designation pluta is got from this sūtra and if the letter with three mātrās is taken at the beginning or at the middle, it cannot secure the designation of pluta. Consequently where is the room for prakṛtibhāva?

यदप्युच्यते मातिकद्विमातिकयोरिष ध्यन्तं पूर्वं निपततीति मात्रिकस्य पूर्विनिपातो मिविष्यतीति, हस्वाश्रया हि घिसंज्ञा, हस्वसंज्ञा चानेनैव । यदि च मात्रिको मध्ये वा अन्ते वा स्यात् हस्वसंज्ञीवा अस्य न स्यात्; कुतो घिसंज्ञा, कुतः पूर्विनिपातः !

With reference to the other statement that, in a compound of a letter of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  and a letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$ , the former takes the first place since that which ends in ghi is enjoined the first place, the designation ghi depends upon hrasva and

the designation of hrasva is secured by this  $s\bar{u}tra$ . If the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  is taken at the middle or at the end, it cannot at all get  $hrasvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  or  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$ ?

एवमेषा व्यवस्था न प्रकल्पते

Hence this line of argument does not well fit in.

एवं तर्हि आचार्यप्रवृत्तिज्ञापयित, न मात्रिकोन्ते भवतीति यदयं "विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः" इति मात्रिकस्य प्छतं शास्ति ।

If so, procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$   $P\bar{a}nini$  suggests that the vowel of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  cannot be at the end here, since he enjoins plutatva to a letter of one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  in the  $s\bar{u}tra$  "  $Vibh\bar{a}s\bar{a}$   $prsta-prativacan\bar{e}$   $h\bar{e}h$ " (8, 2. 93).

कथं कृत्वा ज्ञापकम् ! How does it become jñāpaka?

योऽन्ते स प्लुतसंज्ञः । यदि च मात्रिकोऽन्ते स्यात् प्लुतसंज्ञा अस्य स्यात् । तत्र हि मात्राकालस्य मात्राकालवचनमनर्थकं स्यात् ।

That which is at the end gets the  $plutasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . If the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  is at the end, it gets the  $plutasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . In that case the statement that the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  replaces the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  will become unnecessary.

मध्ये तर्हि स्यादिति, अन्नाप्याचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति न मात्रिको मध्ये भवतीति, यद्यम् 'अतो दीर्घो यञि,' 'सुपि च ' इति दीर्घत्वं शास्ति ।

If it is said that it may be at the middle, here too the procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  does not come in the middle, since he enjoins  $d\bar{\imath}rghatva$  to letters with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  in the  $s\bar{\imath}utras$  " $At\bar{o}$   $d\bar{\imath}rgh\bar{o}$   $ya\tilde{n}i$ " (7, 1, 3) and "Supi ca" (7, 3, 102).

कथं कृत्वा ज्ञापकम् ? How does it become jñapaka?

यो मध्ये स दीर्घसंज्ञकः । यदि च मात्रिको मध्ये स्याद् दीर्धसंज्ञा अस्य स्यात् । तत्र मात्राकालस्य मात्राकालवचनमनर्थकं स्यात् ।

That which is at the middle gets the  $d\bar{\imath}rghasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . If the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  is at the middle, it will get the  $d\bar{\imath}rghasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . In that case the statement that a letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  replaces the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$  will become unnecessary.

द्विमात्रस्तर्हि अन्ते स्यादिति, अत्राप्याचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित न द्विमात्रोऽन्ते भवतीति, यदयम् ओमभ्यादाने इति द्विमात्रिकस्य प्छतं शास्ति

If it is said that, then, the letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  may be at the end, even here the procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that the letter with two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  does not come at the end, since he enjoins plutatva to the letter with two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  in the  $s\bar{u}tra$  " $\bar{O}m$   $abhy\bar{a}d\bar{a}n\bar{e}$ " (8, 2, 87).

कथं कृत्वा ज्ञापकम् ? How does it become jñāpaka?

योऽन्ते स प्छतसंज्ञः । यदि च द्विमात्रोऽन्ते स्यात् प्छतसंज्ञा अस्य स्यात् तत्र द्विमात्राकालस्य द्विमात्राकालवचनमनर्थकं स्यात् ।

That which is at the end gets the  $plutasamj\tilde{n}\bar{a}$ . If the letter with two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  is at the end, it will get the  $plutasamj\tilde{n}\bar{a}$ . In that case the statement that a letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  replaces a letter of two  $m\bar{a}tr\bar{a}s$  will become unnecessary.

मात्रिकेण चास्य पूर्वनिपातो बाधित इति कृत्वा कान्यत्न उत्सहते भवितुम् अन्यदतो मध्यात् ।

Since its  $p\bar{u}rvanip\bar{a}tatva$  is set at naught by the letter with one  $m\bar{a}tr\bar{a}$ , where can it be except in the middle?

एवमेषां व्यवस्था प्रक्लप्ता

Hence their relative position is well settled.

IV

भवेद् व्यवस्था च प्रक्रुप्ता

Yes, their relative position may be settled.

# दीर्घप्छतयोस्त पूर्वसंज्ञाप्रसङ्गः

But there is chance for  $d\bar{\imath}rgha$  and pluta to get the  $p\bar{\imath}rva-sa\dot{n}j\tilde{n}\bar{a}$  (i. e.)  $hrasvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

दीघप्छतयोरिप पूर्वसंज्ञा प्रामोति

There is chance for dīrgha and pluta to get the pūrvasamjñā too.

का? What?

इस्वसंज्ञा - Hrasvasamjñā.

किं कारणम्? Why?

अण् सवर्णान् गृह्णाति इति

From the fact that an comprehends like letters.

# सिद्धं तु तपरनिर्देशात्

Achievement of the object through taparanirdēśa.

सिद्धमेतत् This (object) is achieved.

कथम्? How?

तपरनिर्देशः कर्तव्यः उद्काल इति

There is need to read taparatva as ud-ūkālah.

यद्येवम् If so

# द्रुतायां तपरकरणे मध्यमित्रलिम्बतयोरुपसङ्ख्यानं कालभेदात्

Taparakarana being made to drutāvrtti, need to add the same to madhyamāvrtti and vilambitāvrtti on account of the difference in the duration of pronunciation.

Note:—Vṛtti is the mode of pronouncing a letter. It may be quickly pronounced, moderately pronounced and slowly pronounced. They are respectively called drutāvṛtti, madhyamāvṛtti and vilambitāvṛtti.

् द्रुतायां तपरकरणे मध्यमविलम्बितयोरुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम्; तथा मध्यमायां तपरकरणे द्रुतविलम्बितयोरुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम्; तथा विलम्बितायां तपरकरणे द्रुतमध्य-मयोरुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् ।

If taparakaraṇa is made in  $drut\bar{a}vrtti$ , there is need for the  $upasankhyan\bar{a}$  of  $madhyam\bar{a}$  and  $vilambit\bar{a}$ ; if taparakaraṇa is made in  $madhyam\bar{a}$ , there is need for the  $upasankhy\bar{a}na$  of  $drut\bar{a}$  and  $vilambit\bar{a}$ ; if taparakaraṇa is made in  $vilambit\bar{a}$ , there is need for the  $upasankhy\bar{a}na$  of  $drut\bar{a}$  and  $madhyam\bar{a}$ .

किं पुनः कारणं न सिध्यति ?

Why is not accomplished without upasankhyana?

1. This  $bh\bar{a}sya$  which serves as the explanation of the  $v\bar{a}rttika$  is not found in editions.

### कालभेदात्

On account of the difference in the duration of pronunciation.

ये हि द्रुतायां वृत्तौ वर्णाः त्रिभागाधिकास्ते मध्यमायाम्; ये मध्यमायां वर्णाः त्रिभागाधिकास्ते विलम्बितायाम् ।

The letters in madhyamāvrtti have thrice the duration of those in drutāvrtti and those in vilambitāvrtti have thrice the duration of those in madhyamāvrtti.

# द्रुतादिपु चोक्तम्

It has been said with reference to drutādis

किमुक्तम्? What has been said?

" सिद्धं त्ववस्थिता वर्णा वक्तुश्चिराचिरवचनाद् वृत्तयो विशिष्यन्ते ' इात 1

Siddham tu avasthitā varņā vaktuś cirāciravacanād vṛttayō viśiṣyantē" iti.

स तर्हि तपरनिर्देशः कर्तव्यः

If so, ūkālah should be read as ud-ūkālah.

न कर्तव्यः । इह कालप्रहणं क्रियते । यावच तपरकरणं तावच कालप्रहणम् । प्रत्येकं च कालशब्दः परिसमाप्यते - उकाल ऊकाल ऊ२काल इति

No, it need not. The word  $k\bar{a}la$  is read here in the  $s\bar{u}tra$ . Mention of  $k\bar{a}la$  comprehends to the same excent as that of taparatva. The word  $k\bar{a}la$  is taken with each of the three thus:— $uk\bar{a}la\dot{h}$ ,  $\bar{u}k\bar{a}la\dot{h}$  and  $\bar{u}3k\bar{a}la\dot{h}$ .

अथ वा एकसंज्ञाधिकारेऽयं योगः कर्तव्यः । तत्रैका संज्ञा भविष्यति या परा अनवकाशा चेति । एवं हि दीर्घप्छतयोः पूर्वसंज्ञा न भविष्यति ।

Or this  $s\bar{u}tra$  should be read in the place where there is  $adhik\bar{a}ra$  for  $\bar{e}k\bar{a}$   $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . In that case only one  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  has opportunity to be applied, that which is  $par\bar{a}$  and  $anavak\bar{a}\pm a$ . Then  $d\bar{v}rgha$  and pluta cannot take the  $hrasvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  which is  $p\bar{u}rva$ .

1. Under तपरस्तत्कालस्य (1, 1, 70). Cf. Vol. III pp 250, 251.

अथ वा 'स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा ' इत्ययं योगः प्रत्याख्यायते । तत्र यदेतत् 'अशब्दसंज्ञा इति, एतद् यया विभक्त्या निर्दिश्यमानमर्थवद्भवति तया निर्दिष्टमुत्तरत्रानुवर्तिष्यते अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः अशब्दसंज्ञायाम् इति

Or the  $s\bar{u}tra$  'Svam  $r\bar{u}pam$  śabdas $y\bar{a}$ śabdas $a\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ ' is taken to be unnecessary and the word aśabdas $a\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  is taken with the next  $s\bar{u}tra$ , it being so modified as to fit in there thus:— An udit savarnasya  $c\bar{a}pratyayah$  aśabdas $a\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}y\bar{a}m$ .

अथ वा हस्वसंज्ञावचनसामर्थ्याद् दीर्घप्छतयोः पूर्वसंज्ञा न भविष्यति

Or  $d\bar{\imath}rgha$  and pluta do not take the  $p\bar{\imath}rvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  on account of the  $s\bar{a}marthya$  of the mention of  $hrasvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

ननु चेदं प्रयोजनं स्यात् संज्ञया विधाने नियमं वक्ष्यामीति, हस्वसंज्ञया यदुच्यते तदचः स्थाने यथा स्याद् इति ।

Oh, this may be the  $pray\bar{o}jana$  that, if  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  is enjoined, there is room for me to mention the niyama that, whichever is said through hrasva, it comes in the place of ac.

स्यादेतत् प्रयोजनं यदि किञ्चित्कराणि हस्वशासनानि स्यः, यतस्तु खल्ल यावदज्यहणं तावदृ हस्वप्रहणम् अतः अकिञ्चित्कराणि हस्वशासनानि ।

This may be the benefit, if the  $s\bar{u}tras$  enjoining hrasva are capable of doing any special function; but they do no special function, since the duration of pronouncing hrasva is identical with that of pronouncing ac.

इदं तर्हि प्रयोजनम् एच इग्रस्तादेशे इति वक्ष्यामीति This, then, is the prayojana that I may say Eca ik hrasvādēšē.

अनुच्यमाने ह्येतस्मिन् त्रिईस्वप्रदेशेषु एच इग्भवति इति वक्तव्यं स्यात् - इस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य, एच इग्भवतीति; णौ चङ्युपधाया हस्वः, एच इग्भवतीति; हस्वो हस्रादिः शेषः, एच इग्भवतीति ।

If this is not said, there is need to read 'Eca ig bhavati' in three places where hrasva is enjoined. "Eca ig bhavati" should be read after "Hrasvō napumsakē prātipadikasya" (1, 2, 47); "Eca ig bhavati" should be read after "Nāu canyupadhāyā hrasvaḥ" (7, 4, 1); "Eca ig bhavati" should be

read after "Hrasvah" (7, 4, 59) which is before the  $s\bar{u}tra$   $Hal\bar{a}dih$   $\hat{s}e\hat{s}ah$  (7, 4, 60).

संज्ञा च नाम यतो न लघीयः

Samjñā is that than which nothing is lighter.

कुत एतत्? Wherefrom is this? लघ्नर्थ हि संज्ञाकरणम्

Making samjñās is to lighten the work.

लघीयश्च त्रिर्हस्वप्रदेशेषु एच इग्भवतीति, न पुनः संज्ञाकरणम्

It is lighter to read " $\overline{E}ca$  ig bhavati" in three places where hrasva is enjoined and not the making of the  $sa\dot{m}j\tilde{n}a$  hrasva.

त्रिहंस्वप्रदेशेषु एच इग्भवतीति षड् प्रहणाणि; संज्ञाकरणे पुनरष्टौ - हस्वसंज्ञा कर्तव्या, त्रिहंस्वप्रदेशेषु हस्वप्रहणं कर्तव्यं हस्वो हस्वो हस्व इति, एच इग्रस्वादेश इति If '  $Eca\ ik$ ' is read in three places where hrasva is enjoined, there are only six words; If  $samij\tilde{n}a$  is made, there are eight words—( $two\ words$ ) in the  $hrasva-vidh\bar{a}yaka-s\bar{u}tra$  and the word hrasva is to be read in the three places where hrasva is enjoined and (three words in) the  $s\bar{u}tra\ Eca\ ig\ ghrsvadēśē$ .

सोऽयमेवं लघीयसा न्यासेन सिद्धे सित यद् गरीयांसं यत्नमारभते तस्यैतत् प्रयोजनं दीर्घण्छतयोस्तु पूर्वसंज्ञा मा भूद् इति

Since he makes a heavier attempt when there is chance to accomplish it in a lighter way, it has this  $pray\bar{o}jana$  that  $d\bar{i}rgha$  and pluta do not adopt the  $p\bar{u}rvasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

#### अचश्च (1, 2, 28)

Five topics are dealt with in this  $s\bar{u}tra:$ —(1) whether this  $s\bar{u}tra$  and  $Al\bar{o}sntyasya$  have the relationship of  $s\bar{e}sas\bar{e}sitva$  (2) whether this  $s\bar{u}tra$  and  $Al\bar{o}ntyasya$  are in the relation of  $utsarg\bar{a}pav\bar{a}da$  (3) whether wherever hrasvatva,  $d\bar{i}rghatva$  and plutatva are enjoined, the word acah appears (4) that this  $s\bar{u}tra$  is suggested to be a  $paribh\bar{a}s\bar{a}$  and (5) why the word ac is read in the previous  $s\bar{u}tra$ .

#### I & II

किमयमलो उन्त्यशेषः, आहोस्विद् अलो उन्त्यापवादः

Is this sūtra alontyaśēṣa or alontyāpavāda (i.e.) Do this sūtra and the sūtra "Alontyasya" form a whole sentence, one serving as part of another or are they antagonistic to each other?

कथं चायं तच्छेषः स्यात्, कथं वा तद्पवादः ? How is this tac-chēṣa or how is it tad-apavāda?

यद्येकं वाक्यं - तच्चेदं च, अलोन्त्यस्य विधयो भवन्ति, अचो ह्स्वदीर्घप्लुता अन्त्यस्येति, ततोऽयं तच्छेषः । अथ नानावाक्यम् - अलोन्त्यस्य विधयो भवन्ति, अचो ह्स्वदीर्घप्लुता अन्त्यस्यानन्त्यस्य चेति ततोऽयं तद्यवादः ।

If they form one sentence that vidhis happen to the final al and the hrasvatva,  $d\bar{\imath}rghatva$  and pluta/va happen to the ac which is final, this  $s\bar{\imath}tra$  is  $tacch\bar{\imath}sa$ . If they form different sentences that vidhis happen to the final al and the hrasvatva,  $d\bar{\imath}rghatva$  and plutatva happen to ac which is both final and non-final, it is  $tadapav\bar{a}da$ .

कश्चात्र विशेषः ? What is the difference here?

ह्खादिविधिरलोन्त्यसेति चेद् वचिप्रच्छिशमादिप्रभृतिहनिगमिदीर्घेष्वज्यहणम्

If vidhi relating to  $hrasv\bar{a}di$  is taken to happen to the final al, the word ac has to be read in connection with the  $d\bar{\imath}rgha$  in vac, pracch,  $\acute{s}am$  etc., han and gam.

ह्रस्वादिविधिरलोन्त्यस्येति चेद् वचिप्रच्छिशमादिप्रमृतिहिनगिमदीर्घेष्वज्यहणं कर्तव्यम् । किब् व विचप्रच्छ्योदीर्घः, अचः इति वक्तव्यम्, अनन्त्यत्वाद्धि न प्राप्तोति । शमादीनां दीर्घः, अचः इति वक्तव्यम्, अनन्त्यत्वाद्धि न प्राप्तोति । हिनगम्योदीर्घः, अचः इति वक्तव्यम्, अनन्त्यत्विद्धि प्राप्तोति ।

If it is taken that the vidhi relating to hrasva etc. operate only to the final al, the word dīrghaḥ has to be read where dīrghaḥ is enjoined to vac, pracch, śam etc., han and gam. In the sūtra Kvib vaci-pracchi...dīrghōsasamprasāraṇam ca (Uṇādi, 225), the word acaḥ has to be read; for the dīrghatva cannot appear

<sup>1.</sup> किपि (Guruprasada edn.); it is omitted in Bombay edn.

since the vowel in vac and pracch is not final. In the sūtra Śamām aṣṭānām dīrghaḥ śyani (7, 3, 74), the word acaḥ has to be read; for the dīrghatva cannot appear since the vowel in śam etc. is not final. In the sūtra Aj-jhana-gamām sani (6, 4, 16) enjoining dīrghaḥ to han and gam, the word acaḥ has to be read, for the dīrghatva cannot appear since the vowel in han and gam is not final.

अस्तु तर्हि तद्पवादः If so, let it be tad-apavāda.

# अचश्रेन्नपुंमकदृ स्वाकृत्सार्वधातुकनामिदीर्घेष्वनन्त्यप्रतिषेधः

If it is for all ac, prohibition of hrasvatva to the ac that is not final enjoined in the  $s\bar{u}tra$   $Hrasv\bar{o}$   $napumsak\bar{e}$   $pr\bar{a}tipadikasya$  (1, 2, 47), prohibition of  $d\bar{i}rghatva$  to the ac that is not final enjoined in the  $s\bar{u}tra$   $Akrts\bar{a}rvadh\bar{a}tukay\bar{o}r$   $d\bar{i}rghah$  (7, 4. 25), and prohibition of  $d\bar{i}rghatva$  to the ac that is not final enjoined in the  $s\bar{u}tra$   $N\bar{a}mi$  (6, 4, 3) need be made.

अचक्षेत् नपुंसकह्स्वाकृत्सार्वधातुकनाभिद्धिषु अनन्त्यस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः If it is for all ac, mention of prohibition to that which is not final with reference to the napumsaka-hrasvatva and akrtsārvadhātuka-nāmi-dirghatva need be made.

ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपादिकस्य, यथेह भवति रै, अतिरि, नौ, अतिनु एवं सुवाग् ब्राह्मणकुलम् इत्यत्रापि प्रामोति

By the application of the  $s\bar{u}tra$  ' $Hrasv\bar{o}$  napumsak $\bar{e}$  pr $\bar{a}tipadi-kasya$ ', the hrasvatva chances to appear in  $suv\bar{a}g$  in  $suv\bar{a}g$   $br\bar{a}hmanakulam$  as in atiri (from the stem  $r\bar{a}i$ ) and atinu (from the stem  $n\bar{a}u$ ).

अकृत्सार्वधातुकयोदीर्घः, यथेह भवति चीयते सूयते, एवं छिद्यते भिद्यते अत्रापि प्राप्तोति ।

The dīrghatva enjoined by the sūtra "Akrtsārvadhātukayōr dīrghah" chances to appear in chidyatē and bhidyatē, as in cīyatē and sūyatē.

नामि दीर्घ:, यथेह भवति अमीनां वायूनाम्, एवं षण्णाम् इत्यत्रापि प्रामोति The  $d\bar{\imath} r ghatva$  enjoined by the  $s\bar{\imath} t r a$  " $N\bar{a}mi$ " chances to appear in  $sann\bar{a}m$ , as in  $agn\bar{\imath} n\bar{a}m$  and  $v\bar{a}y\bar{\imath} n\bar{a}m$ .

नैष दोषः, नोपधायाः इत्येतन्नियमार्थं भविष्यति

This difficulty does not arise; the  $s\bar{u}tra$   $N\bar{o}padh\bar{a}y\bar{a}h$  (6, 4, 7) is intended to restrict its application.

प्रकृतस्यैष नियमः स्यात्

This restricts the application of what is found in the context.

किं च प्रकृतम्? What is in the context?

नामि इति The sūtra Nāmi (6, 4, 3).

तेन भवेदिह नियमान्न स्यात् षण्णामिति

Then it does not happen here in sannām through the niyama.

अन्यते तन्यते इत्यत्रापि प्रामोति

It (lengthening) will happen, then, in anyatē and tanyatē.

अथाप्येवं नियमः स्यात् नोपधाया नाम्येवेति

If so,  $N\bar{a}mi$  is taken as the  $niyamas\bar{u}tra$  and  $N\bar{o}padh\bar{a}y\bar{a}h$  as vidhi- $s\bar{u}tra$ .

एवमपि भवेदिह नियमान्न स्यात् अन्यते तन्यते इति ; षण्णाम् इत्यत्र प्राप्नोति । If so, it may not happen here in anyatē and tanyatē; but it will happen here in  $sann\bar{a}m$ .

अथाप्युभयतोऽयं नियमः स्यात् - नोपधाया एव नामि, नाम्येव नोपधायाः इति If so, niyama may play in both ways:— $N\bar{a}mi$  as  $vidhis\bar{u}tra$  and  $N\bar{o}p\bar{a}dh\bar{a}y\bar{a}h$  as  $niyamas\bar{u}tra$  and  $N\bar{o}padh\bar{a}y\bar{a}h$  as  $vidhis\bar{u}tra$  and  $N\bar{a}mi$  as  $niyamas\bar{u}tra$ .

एवमपि भिद्यते छिद्यते, सुवाग् ब्राह्मणकुरुम् इत्यत्रापि प्राप्तोति Still dīrghatva may appear in bhidyatē and chidyatē and hrasvatva in suvāg brāhmaņakulam.

#### III

एवं तर्हि इस्वो दीर्घः प्छत इति यत्र ब्रूयात्, अचः इत्येतत् तत्रोपस्थितं द्रष्टव्यम् ।

If so, wherever it is said that hrasvatva occurs, dīrghatva occurs and plutatva occurs, one should understand that the word acah presents itself there.

किं कृतं भवति? What happens then?

द्वितीया षष्ठी प्रादुर्भाञ्यते । तत्र कामचारः - गृह्यमाणेन वा अचं विशेषयितुम् अचा वा गृह्यमाणम् । यावता कामचारः, इह तावत् विचपिच्छशमादिप्रभृतिहिनि-गिमिदीर्घेषु गृह्यमाणेन अचं विशेषयिष्यामः, एतेषां दीर्घो भवति अच इति । इहेदानीं नपुंसकहस्वाकृत्सार्वधातुकनामिदीर्घेष्वचा गृह्यमाणं विशेषयिष्यामः । नपुंसकस्य हस्वो भवति, अचः अजन्तस्येति । अकृत्सार्वधातुकयोदीर्घो भवति, अचः अजन्तस्येति । नामि दीर्घो भवति, अचः अजन्तस्येति ।

Another word in the genetive case appears. It is our pleasure to take it as an adjunct to the already existing word in the genetive case or to take the latter qualifying acah. Since it is our pleasure, we take the word in the genetive case to qualify acah in the case of vaci-pracchi-samādiprabhṛti-hani-gamidīrgha and in the case of napumsakahrasva - akṛṭṣārvadhātuka - nāmi dīrgha, we allow the word to be qualified by acaḥ—hrasva replacing napumsaka which is ajanta, dīrgha replacing akṛṭṣārvadhātuka which is ajanta and dīrgha replacing the aṅga which is ajanta when followed by nām.

#### IV

इह कसान्न भवति द्यौः, पन्थाः, सः इति

How is it that the word acah does not appear (in the  $s\bar{u}tras$  Diva  $\bar{a}ut$ , Pathimathyrbhukṣ $\bar{a}m$   $\bar{a}t$  and  $Tyad\bar{a}d\bar{i}n\bar{a}m$  ah) which bring about the form  $dy\bar{a}uh$ , panth $\bar{a}h$  and sah.

संज्ञया विधान नियमः Restriction on the injunction with samijñā. संज्ञया ये विधीयन्ते तेषु नियमः

Only those which are enjoined with the appellation hrasva,  $d\bar{\imath}rgha$  and pluta come under this  $s\bar{u}tra$ .

किं वक्तव्यमेतत्? Is there any need for this to be said?

न हि No, certainly not.

कथमनुच्यमानं गंस्यते

How can it be understood if it is not so said?

TENTH AHNIKA-UCCAIR UDATTAH, NĪCAIR ANUDĀTTAH 47

अजिति हि वर्तते । तत्नैवमिसम्बन्धः करिष्यते — अचः अज् भवति हस्वः, दीर्घः प्छत इत्यवं भाव्यमान इति ।

For there is the word ac. It is associated thus:—The ac which is considered hrasva,  $d\bar{\imath}rgha$  or pluta replaces the ac.

 $\nabla$ 

अथ पूर्वसिन् योगे अज्यहणे सति किं प्रयोजनम्?

Now what is the benefit of the mention of ac in the preceding sūtra.

# अज्राहणं संयोगाच्समुदायनिवृत्त्यर्थम्

For the sake of avoiding the  $samj\tilde{n}\tilde{a}$  to  $samy\tilde{o}ga$  and ac-samu- $d\tilde{a}ya$ .

अज्यहणं क्रियते, संयोगनिवृत्त्यर्थम् अच्समुदायनिवृत्त्यर्थं च ।

The word ac is read there so that  $sa\dot{m}y\bar{o}ga$  may be warded off from getting the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  (hrasva) and ac-samudāya (collection of vowels without intervening consonants) may be warded off from getting the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  ( $d\bar{i}rgha$ ).

संयोगिनवृत्त्यर्थं तावत्, प्रतक्ष्य प्ररक्ष्य, ह्स्वस्य पिति कृति तुक् इति तुक् मा भूदिति ।

Firstly with reference to samyōga-nivṛtti, so that the āgama tuk enjoined by Hrasvasya piti kṛti tuk may not appear in the words pratakṣya and prarakṣya.

अच्समुदायनिवृत्त्यर्थम् तितउच्छतं तितउच्छाया, दीर्घात्पदान्ताद्वा इति विभाषा तुङ् मा भूदिति ।

With reference to ac-samudāya-nivrtti, so that the optional tuk may not appear in the forms titau-c-chatram and titau-c-chāyā by the  $s\bar{u}tra$   $D\bar{v}rgh\bar{a}t$   $pad\bar{a}nt\bar{a}d$   $v\bar{a}$ .

# उचैरुदात्तः (1, 2, 29) : नीचैरनुदात्तः (1, 2, 30)

There are three topics which are dealt with here:—(1) Is there anuvrtti to the genetive acah or (2) Is there anuvrtti to the nominative ac? (3) The non-possibility of the accomplishment of the  $samj\tilde{n}a$ -udatta etc. or otherwise.

I

किं षष्ठीनिर्दिष्टमज्यहणमनुवर्तते उताहो न ?

Is acah, the genetive singular of ac, taken here by anuvrtti or no?

Note:  $-K\bar{a}iyata$  reads here:  $-Ucc\bar{a}ih$  sthānē upalabhyamāna udāttasamjñah, sa ca acah sthānē iti.

किं चातः ? What does it matter if it is done or not ?

यद्यनुवर्तते "हल्स्वरप्राप्ती व्यञ्जनमविद्यमानवद् भवति" इत्येषा परिभाषा न प्रकल्पते । कथं हलो नाम स्वरप्राप्तिः स्यात् ?

If it is taken here by anuvṛtti, the paribhāṣā 'Halsvara-prāptāu vyañjanam avidyamānavad bhavati' does not fit in. Where is the chance for hal to get svara (the high tone, the low tone etc.)?

एवं तर्हि निवृत्तम् । बहून्येतस्याः परिभाषायाः प्रयोजनानि । If so, it is not taken here. There are many benefits reaped by adopting this  $paribh\bar{a}$ s $\bar{a}$ .

II

अथ प्रथमानिर्दिष्टमज्यहणमनुवर्तते, उताहो न ?

Then, is there anuvrtti to ac, the nominative singular, or no?

किं चार्थोऽनुवृत्त्या?

Is there any advantage if there is anuvṛtti?

बाढमर्थः, यद्येते व्यञ्जनस्यापि गुणा लक्ष्यन्ते ।

Certainly, there is advantage if these guṇas udāttatva etc. are seen in vyañjanas (consonants) also.

ननु च प्रत्यक्षमुपलभ्यन्ते - इषे त्वोर्जे त्वा

Oh, it is seen definitely in the expression  $I \not= \bar{e} t v \bar{o} r j \bar{e} t v \bar{a}$  (the commencing expression of the  $Yajurv\bar{e}da$ ).

नैते व्यञ्जनस्य गुणाः, किं त्वच एव । तत्सामीप्यात्तु व्यञ्जनमपि तद्भुणमुप-रुभ्यते । तद्यथा - द्वयोः रक्तयोर्वस्त्रयोर्भध्ये शुक्कं वस्त्रं तद्भुणमुपरुभ्यते । बदरपिटके रिक्तको स्रोहकंसः तद्भुण उपरुभ्यते । These are not the qualities of consonants, but only of vowels. Through their proximity of the latter, the consonant too appears to have it. This may be illustrated thus:—The white cloth pressed between two red cloths gets their colour. Well polished mirror kept in a box containing badara fruits seems to get their colour.

कुतो नु खल्वेतत्, अच एते गुणाः स्युः तत्सामीप्यात्तु व्यञ्जनमपि तद्गुणमुप- रूभ्यते, न पुनर्व्यञ्जनस्यते गुणाः स्युस्तत्सामीप्यात्त्रजपि तद्गुण उपरुभ्येत इति । How is it that these are the guṇas of vowels and through their proximity consonant too gets them and not that they are the guṇas of consonants and vowel gets them through its proximity with them?

अन्तरेणापि व्यञ्जनम् अच एवैते गुणा लक्ष्यन्ते, न पुनरन्तरेणाचं व्यञ्जनस्यो-चारणमपि भवति

These qualities are seen independently only in vowel even without its association with a consonant and without the help of a vowel, the pronunciation too of a consonant is not possible.

अन्वर्थ खल्विप निर्वचनम्, स्वयं राजन्त इति स्वराः, अन्वर्भविति ज्यञ्जनम् इति The derivation too (of the two words) is significant of the meaning:—The word  $svar\bar{a}s$  is derived thus, svayam  $r\bar{a}jant\bar{e}$  (those which shine by themselves) and  $vya\tilde{n}jana$  is derived from the root  $a\tilde{n}j$  with vi which means that which follows.

Note:—It is worthy of note that the words vyañjana and consonant are semantically similar.

#### III

# उचनीचस्यानवस्थितत्वात् संज्ञाप्रसिद्धिः

The non-accomplishment of the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}s$  on account of the non-definiteness of uccatva and  $n\bar{\imath}catva$ .

इदमुचनीचमनवस्थितपदार्थकम्, तदेव हि कञ्चित् प्रति उच्चैभवति, कञ्चित् प्रति नीचैः । एवं हि कश्चित् कञ्चिद् अधीयानभाह 'किमुचैः रोरूयसे शनैर्वर्तताम्'; तमेव तथाधीयानमपर आह 'किमन्तर्दन्तकेनाधीषे उच्चैर्वर्तताम्' इति । The words  $ucc\bar{a}ih$  and  $n\bar{i}c\bar{a}ih$  are not definite in their connotation; the same is considered  $ucc\bar{a}ih$  by one and  $n\bar{i}c\bar{a}ih$  by another. One tells another who is studying, "Why are you rattling? Read slowly" and another tells the same person reading in the same way, "Why are you swallowing words? Read loudly"

एवम् उच्चनीचमनवस्थितपदार्थकम्, तस्यानवस्थितत्वात् संज्ञाया अप्रसिद्धिः

It is thus that the words  $ucc\bar{a}ih$  and  $n\bar{i}c\bar{a}ih$  are not definite in their connotation. Since it is not definite, there is the non-accomplishment of the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

एवं तर्हि लक्षणं करिष्यते - आयामो दारुण्यम् अणुता खस्येति उच्चैःकराणि शब्दस्य - आयामो गात्राणां निम्रहः, दारुण्यं स्वरस्य दारुणता रूक्षता, अणुता खस्य कण्ठस्य संवृतता, उच्चैःकराणि शब्दस्य । अन्ववसर्गो मार्दवमुरुता खस्येति नीचैः-कराणि शब्दस्य - अन्ववसर्गो गात्राणां शिथिलता, मार्दवं स्वरस्य मृदुता स्निग्धता, उरुता खस्य महत्ता कण्ठस्येति नीचैःकराणि शब्दस्य ।

If so, the definition is made in the following manner—the factors which produce  $ucc\bar{a}istva$  to  $\pm sabda$  are  $\bar{a}y\bar{a}ma$ ,  $d\bar{a}runyam$  and  $anut\bar{a}$  of kha, where  $\bar{a}y\bar{a}ma$  means contraction of limbs,  $d\bar{a}runya$  of svara means harshness and khasya  $anut\bar{a}$  means the narrowness of the opening through which air passes and the factors which produce  $n\bar{c}aistva$  to  $\pm sabda$  are anvavasarga,  $m\bar{a}rdavam$  and  $urut\bar{a}$  of kha, where anvavasarga means the relaxation of limbs,  $m\bar{a}rdavam$  of svara means sweetness and khasya  $urut\bar{a}$  means width of opening of the air passage.

एतदप्यनैकान्तिकम, यद्धि अल्पप्राणस्य सर्वोच्चैः तद्धि महाप्राणस्य सर्वनीचैः This too is not of steady nature, since what is considered to be very loud from the standpoint of a weak man may be considered to be very low from the standpoint of a strong man.

### सिद्धं तु समानप्रक्रमवचनात्

It is achieved on account of having the articulation in the same place of the vocal organs.

सिद्धमेतत् It is achieved.

कथम्? How?

समाने प्रक्रमे इति वक्तव्यम्

It is to be said that articulation is in the same place of the vocal organ.

कः पुनः प्रक्रमः ? What is, then, prakrama?

डरः, कण्ठः, शिरः इति Chest, neck, head etc.

Note:—1.  $K\bar{a}iyața$  reads here:— $\bar{E}va\tilde{n}$  ca uccāir ityanēna  $\bar{u}rdhvabh\bar{a}g\bar{o}$   $grhyat\bar{e}$ ,  $n\bar{\imath}c\bar{a}ir$  iti  $adharabh\bar{a}gah$ .

Note:—2.  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  explains  $\bar{u}rdhvabh\bar{a}g\bar{e}na$  by  $\bar{u}rdhva-bh\bar{a}gh\bar{a}vacchinna-v\bar{a}yusamy\bar{o}g\bar{e}na$  and adds  $\dot{s}irahpadam$   $t\bar{a}lv\bar{a}-d\bar{u}n\bar{a}m$  upalaksanam.

### समाहारः खरितः (1, 2, 31)

समाहारः स्वरित इत्युच्यते ; कस्य समाहारः स्वरितसंज्ञो भवति ?

The sūtra is read Samāhāraḥ svaritaḥ; whose samāhāra (assemblage) takes svaritasamjñā?

अचोरित्याह "Of vowels," says he.

### समाहारोऽचोश्चेन्नाभावात्

If it is taken to be the samāhāra of two vowels, it cannot be, since it does not exist.

समाहारोऽचोश्चेत् तन्न

If it is the samāhāra of two vowels, it cannot be.

किं कारणम्? Why?

अभावात् ; न ह्यचोः समाहारोऽस्ति

Since it does not exist; for there is no samāhāra of two vowels.

¹ नन्वयमस्ति गाङ्गेनूप इति ?

Oh! there is this  $(\bar{e})$  in  $G\bar{a}ng\bar{e}n\bar{u}pah$ .

Note:— $\overline{E}$  in  $g\bar{a}\dot{n}g\bar{e}$  is  $ud\bar{a}tta$  and a of  $an\bar{u}pa$  is  $anud\bar{a}tta$  and the  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\acute{s}a$   $\bar{e}$  is svarita.

1. ननु चायमस्ति is another reading.

नैषः अचोः समाहारः, अन्योऽयमुदात्तानुदात्तयोः स्थाने एक आदिश्यते This is not the  $sam\bar{a}h\bar{a}ra$  of two vowels, but a svarita  $\bar{e}$  comes as  $\bar{a}d\bar{e}sa$  in the place of  $ud\bar{a}tta$   $\bar{e}$  and  $anud\bar{a}tta$  a.

एवं तर्हि गुणयोः

If so, the samāhāra of two guṇas takes the svarita-samjña.

### गुणयोश्चेनाच्प्रकरणात्

If it is of two gunas, it is not since the prakarana deals with ac.

गुणयोः समाहार इति चेत्, तन्न

If it is said that it is the samāhāra of two guṇas, it is not.

किं कारणम्? Why?

अच्प्रकरणात् Since the prakarana deals with ac.

अजिति वर्तते

The word ac is taken here by anuvṛtti (with its  $lak imes y \overline{a} r t h a$   $ud \overline{a} t t \overline{a} n u d \overline{a} t t \overline{a} u d$ .

### सिद्धं त्वच्समुदायस्याभावात्तद्गुणसम्प्रत्ययः

This is achieved, combination of gunas being taken into account on account of the non-existence of the assemblage of vowels.

सिद्धमेतत् This (the desired object) is achieved.

कथम्? How?

अच्समुदायो नास्तीति कृत्वा तद्भुणस्याचः समाहारगुणस्य सम्प्रत्ययो भविष्यति Taking that there is no ac-samudāya, there is the pralīti of the samāhāra-guņa of the vowel which has both.

कथं पुनः समाहार इत्यनेन अच् शक्यः प्रतिनिर्देष्ट्रम्?

How is it possible for samāhāra to take ac for its višēṣya?

मतुब्लोपोऽत्र द्रष्टव्यः । तद्यथा - पुष्पका एषां ते पुष्पकाः, कालका एषां ते कालकाः इति ; एवं समाहारवान् समाहारः

It should be taken that the suffix matup has elided here. Just as the words  $puspak\bar{a}h$  and  $k\bar{a}lak\bar{a}h$  are used to denote

those having them, so also the word  $sam\bar{a}h\bar{a}ra$  is used to denote that which possesses  $sam\bar{a}h\bar{a}ra$ .

अथ वा अकारा मत्वर्थीयः, तद्यथा तुन्दः घाटः इति

Or the final a (in  $sam\bar{a}h\bar{a}ra$ ) has the meaning of matup, as in tundah (one having tundi or pot-belly) and  $gh\bar{a}tah$  (one having  $gh\bar{a}t\bar{a}$  or the back of the neck).

यद्येवं त्रैस्वयं न प्रकल्पते

In that case the word  $tr\bar{a}isvaryam$  cannot have a suitable connotation.

तत्र को दोषः ? What is the difficulty there?

त्रैस्वर्येणाधीमहे इत्येतन्नोपपद्यते

The sentence ' $Tr\bar{a}isvary\bar{e}na\ adh\bar{\imath}mah\bar{e}$ ' (we read with  $tr\bar{a}isvarya$ ) does not have proper meaning.

नैतद् गुणापेक्षम् This does not refer to the gunas.

कि तर्हि? To what does it then refer?

अजपेक्षमेतत् It refers to ac.

त्रैस्वर्येणाधीमहे - त्रिप्रकारैरिज्मरधीमहे, कैश्चिदुदात्तगुणेः कैश्चिद्नुदात्तगुणेः कैश्चिद्मयगुणेः । तद्यथा - शुक्कगुणः शुक्कः, कृष्णगुणः कृष्णः, य इदानीमुभयगुणः स तृतीयामाख्यां लभते कल्माष इति वा, सारङ्ग इति वा। एविमहापि उदात्त उदात्तगुणः, अनुदात्तोऽनुदात्तगुणः, य इदानीमुभयगुणः स तृतीयामाख्यां लभते स्वरित इति ।

The sentence—We read with  $tr\bar{a}isvarya$ — means we read with three kinds of vowels, some with  $ud\bar{a}ttaguṇa$  some with  $anud\bar{a}ttaguṇa$  and some with ubhayaguṇa. This may be illustrated thus:—Śuklaguṇaḥ is denoted by śukla, krṣṇaguṇaḥ by krṣṇa and that which is ubhayaguṇaḥ gets the name of  $kalm\bar{a}ṣa$  or  $s\bar{a}ranga$ . So also  $ud\bar{a}tta$  is here the name of that which has  $ud\bar{a}ttaguṇa$ ,  $anud\bar{a}tta$  is the name of that which has  $anud\bar{a}ttaguṇa$  and that which has both the guṇas gets the third name of svarita.

1. This is by the sūtra Arśa ādibhyōSc (5, 2, 127).

# तसादित उदात्तमधहस्वम् (1, 2, 32)

There are three topics dealt with here:—(1) The meaning of the word ardhahrasvam (2) The need of this sūtra (3) Which is better, to have the nine sūtras commencing with this sūtra and ending with Udāttasvaritaparasya sannatarah here or after the sūtra Udāttād anudāttasya svaritah (8, 9, 30) at the end of the book?

Ι

अर्घह्स्विमत्युच्यते, तल दीर्घण्छतयोर्न प्राप्नोति - कन्या शक्तिके शक्तिके The word ardhahrasvam is used and hence svaritatva has no chance in dīrgha and pluta, as in the words kanyā, śaktikē ईaktikē.

नैष दोष:, मात्रचोऽत्र लोपो द्रष्टव्य:, अर्घह्ह्यमात्रम् अर्घह्ह्यम् इति
This difficulty does not arise; it should be considered that the pratyaya mātrac (which denotes pramāṇa) is elided here and hence ardhahrasvam means the quantity of the half of a short vowel.

NCTE:—Kāiyaṭa says here:—Arddhahrasvaśabdaḥ pramāṇavācī rūḍhiśabdaḥ; vyutpattyartham tu hrasvasya upādānam;
ardhamātrā tu anēna abhidhīyatē. Haradatta in his Padamañjarī
says, "Arddhahrasvagrahaṇēna arddhamātrā upolakṣyatē...
hrasvagrahaṇam atantram iti, apradhānam upalakṣaṇatvād
yathā kākēbhyō dadhi rakṣyatām ityatra kākāḥ" Bhattōjidīkṣita,
in his Śabdākāustubha says, "Arddhahrasvaśabdēna arddhamātrā lakṣyatē".... yad vā, hrasvagrahaṇam avivakṣitam, tēna
svaritasyādāu arddhamātrā arddham vā udāttam bōdhyam.
Śrīnivāsayajvan, the disciple of Rāmabhadra Dīkṣita, has
elaborately discussed these views in his Svarasiddhāntacandrikā.

II

किमर्थं पुनरिदमुच्यते ? What is the need for this sūtra?

आमिश्रीमृतिमेवेदं भवति । तद्यथा - क्षिरोदके सम्प्रक्ते आमिश्रीभृतत्वान्न
ज्ञायते कियत् क्षीरं, कियदुदकं, कसिन्नवकाशे क्षीरं, कसिन्नवकाशे व उदकमिति,

1. कस्मिन् वा is another reading.

एविभिहापि आमिश्रीमूतत्वान्न ज्ञायते कियद् उदात्तं, कियद् अनुदात्तं, किस्मिन् अवकाशे उदात्तं, किस्मिन् अवकाशे अनुदात्ति । तदाचार्यः सुहृद् मूत्वा अन्वाचष्टे, इयदुदात्तम् इयदनुदात्तम् अस्मिन्नवकाशे उदात्तम् अस्मिन्नवकाशे अनुदात्ति ।

This plays the role of a mixture. Just as it is not known in the mixture of milk and water, how much is milk and how much is water and in which portion it is milk and in which portion it is water, so also it is not known here on account of their being mixed up with, how much is  $ud\bar{a}tta$ , how much is  $anud\bar{a}tta$ , which portion is  $ud\bar{a}tta$  and which portion is  $anud\bar{a}tta$ . Hence  $Ac\bar{a}rya$  acting as our friend has stated this much is  $ud\bar{a}tta$ , this much is  $anud\bar{a}tta$ , this much is  $anud\bar{a}tta$ .

यद्ययमेवं सहत् किमन्यान्यपि एवञ्जातीयकानि नोपदिशति?

If so, why has not the friend dealt with similar topics in the same manner?

कानि पुनस्तानि ? What are they?

स्थानकरणानुप्रदानानि

The place of articulation, the  $\bar{a}bhyantara$ -prayatna and the  $b\bar{a}hyaprayatna$ .

व्याकरणं नामेयमुत्तरा विद्या । सोऽसौ छन्दःशास्त्रेष्वभिविनीत उपलब्ध्याधि-गन्तुमुत्सहते ।

 $Vy\bar{a}karana$  is the  $vidy\bar{a}$  studied later on. He who has been instructed in Chandas,  $\acute{S}iks\bar{a}$  and  $Pr\bar{a}tis\bar{a}khya$  is able to understand them from experience.

यद्येवं नार्थोऽनेन । इदमप्युपलब्ध्या अधिगमिष्यति

If so, this too is unnecessary. This, too, he will learn through experience.

संज्ञाकरणं तहींदम् । तस्य स्वरितस्य आदितोर्द्धह्नमुदात्तसंज्ञं भवतीति । This, then, is a  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  -  $vidh\bar{a}yaka$  -  $s\bar{u}tra$ . It says that half the  $m\bar{a}tr\bar{a}$  at the beginning of the  $sva\dot{r}ita$  gets the  $ud\bar{a}ttasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

किं कृतं भवति? What is the advantage of it?

त्रिरुदात्तप्रदेशेषु स्वरितप्रहणं न कर्तव्यं भवति - " उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः," " उदात्तस्वरितयोर्थणः स्वरितोऽनुदात्तस्य," नोदात्तस्वरितोदयमगार्थकात्र्यपगालवानाम् इति ।

The word svarita need not be read in the three sūtras where the word udātta is found:—"Udātta-svaritaparasya sannataraḥ," "Udātta-svaritayōr yaṇaḥ svaritōsnudāttasya" and "Nōdātta-svaritōdayam agārgya-kāṣyapa-gālavānām.

एतदिप नास्ति प्रयोजनम् । संज्ञाकरणं हि नाम यतो न रुघीयः । This too is not an advantage; for  $samj\tilde{n}a$  is that than which nothing else is lighter.

कुत एतत्? What is the authority for this? छध्वर्थे हि संज्ञाकरणम्

For recourse to  $sa\dot{n}j\tilde{n}a$  is taken for the sake of brevity.

लघीयश्च त्रिरुदात्तपदेशेषु स्वरितप्रहणं न पुनः संज्ञाकरणम्, त्रिरुदात्तपदेशेषु स्वरितप्रहणे नवाक्षराणि, संज्ञाकरणे पुनरेकादश

It is lighter to read the word svarita in the three sūtras where the word udātta is found than to read this samjñāsūtra; for there are nine syllables if the word svarita is read, thrice in the sūtras where the word udātta is found and there are eleven syllables if this samjñāsūtra is read.

एवं तर्हि उभयमनेन क्रियते, अन्वाख्यानं च संज्ञा च If so, both are done by this, anvākhyāna and samjñā,

कथं पुनरेकेंन यत्नेनोभयं लभ्यम् ?

How is it possible for one effort to reap both?

लभ्यमित्याह "It is possible to reap," says he.

कथम् ! How?

अन्वर्थप्रहणात्

By the use of the word suggestive of the meaning.

अन्वर्थप्रहणं विज्ञास्यते । तस्य स्वरितस्यादितोर्धहस्वमुदात्तसंज्ञं भवति । ऊर्ध्व-मात्तमिति चात उदात्तम् । The word will be taken to signify the sense. The word udātta in tasya svaritasya āditā ardhahrasvam udāttasamjñam bhavati is derived thus:—ūrdhvam āttam.

Note.—The meaning of  $\bar{u}rdhvam\ \bar{a}ttam$  is given by  $N\bar{a}g\bar{o}ji$ -bhatta thus:—  $t\bar{a}lv\bar{a}di$ su  $\bar{u}rdhvad\bar{e}$ se  $ucc\bar{a}ran\bar{e}na\ grh\bar{t}tam$  (that
which is secured by the pronunciation at the topmost part
of palate etc.)

यदि तर्हि संज्ञाकरणम्, उदात्तादेर्यदुच्यते तत् स्वरितादेरपि प्रामोति

If it is taken as a  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  -  $vidh\bar{a}yaka$  -  $s\bar{u}tra$ , that which is said to the initial  $ud\bar{a}tta$  may chance to happen to the initial svarita.

अन्वाख्यानमेव तर्हि इदं मन्दबुद्धेः

If so, it is only anvākhyāna intended for dullards.

#### TII

# खरितस्यार्द्धह्स्वोदात्तादोदात्तस्य स्वित्परस्य सन्नतराद्ध्वेमुदात्ताद्वुदात्तस्य स्वरितात् कार्यं, स्वरितादिति सिद्धचर्थम्

The section from the sūtra "Tasyādita udāttam ardhahrasvam" to the sūtra "Udāttasvaritaparasya sannatarah" is to be read after the sūtra Udāttād anudāttasya svaritah for the siddhatva of svarita in the sūtra "Svaritāt samhitāyām anudāttānām."

स्वरितस्य आ अर्घह्रस्वोदात्ताद् आ उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः इत्येतसात्सूत्रा-दिदं सूत्रकाण्डम् ऊर्ध्वम् उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः इत्यतः कर्तव्यम् ।

The section of  $s\bar{u}tras$  commencing with "Tasyādita udāttam ardhahrasvam" and ending with "Udātta-svaritaparasya-sannatarah" should be read after the  $s\bar{u}tra$  "Udāttād anudāttasya svaritah" found later on (in the fourth  $p\bar{a}da$  of the eighth adhyāya).

किं प्रयोजनम् श Why?

स्वरितादिति सिद्धग्रथम् - स्वरितादिति सिद्धियथा स्यात्, स्वरितात्संहिताया-मनुदात्तानाम् इति - इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति ग्रुतुद्रि ।

So that svarita of the word svaritād may not become asiddha. So that svarita mentioned in the sūtra "Svaritād samhitāyām

anudāttānām" may not become asiddha resulting in the absence of ēkašruti of syllables following the svarita ē in the Rgvēdic line.

इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि

Note.—On account of the operation of the  $s\bar{u}tra$   $P\bar{u}r$ - $vatr\bar{a}siddham$  (8, 2, 1), the  $s\bar{u}tra$  "  $Ud\bar{a}tt\bar{a}d$  anud $\bar{a}ttasya$  svaritah"
(8, 4, 66) will be considered non-existent when the above  $s\bar{u}tras$ of the second  $p\bar{a}da$  of the first  $adhy\bar{a}ya$  begin to operate.
When svaritatva itself is non-existent, how can the syllables which follow svarita be of  $\bar{e}ka\bar{s}ruti$ ?

क तर्हि स्यात्? Where then will it be?

यः सिद्धः स्वरितः, कार्य देवदत्तयज्ञदत्तौ

Where the svarita is siddha as in kāryam Dēvadattayajñadattāu.

Note—The ya in  $k\bar{a}rya$  is nyat and hence tit; it becomes svarita by the  $s\bar{u}tra$  " Tit svaritam" (6, 1, 185) and hence the vocative  $D\bar{e}vadattayaj\tilde{n}adatt\bar{a}u$  which is  $sarv\bar{a}nud\bar{a}tta$  by the  $s\bar{u}tra$  " Amantritasya ca" (8, 1, 19) gets the  $\bar{e}ka\acute{s}ruti$ .

# खरितोदात्तार्थं च

For the sake of svarita to become udātta also.

स्वरितोदात्तार्थं च तत्रैव कर्तव्यम् - न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः, इन्द्र आगच्छ

These sūtras should be read there, so that the svarita may become udātta in subrahmaṇya - nigada by the sūtra "Na subrahmaṇyāyām svaritasya tūdāttaḥ". In Indra āgaccha, a after g is svarita since it follows the udātta a by the sūtra "Udāttād anudāttaḥ svaritaḥ". It becomes udātta by the sūtra "Na subrahmaṇyāyām...". Since it is asiddha before any sūtra of sapāda-saptādhyāyī, a following a after g cannot become svarita.

क तर्हि स्यात्? Where will it then be?

यः सिद्धः स्वरितः - सुब्रह्मण्योमिन्द्रागच्छ

It will be where the svarita is svarita as in a after y in subrahmanyōm indrāgaccha (by the sūtra Tit svaritam 6, 1, 185).

# खरितोदाचाचाखरितार्थम्

So that the syllable following the udātta which replaced svarita may not become svarita.

स्वरितोदात्ताच अस्वरितार्थं तत्रैव कर्तव्यम् - इन्द्रागच्छ, हरिवागच्छ
They should be read there so that the syllable following the udātta which replaced svarita may not become svarita, as a following ch in the expressions Indrāgaccha, Harivāgaccha.

#### खरितपरसन्नतरार्थं च

So that the anudātta preceding a svarita may become anudāt-tatara.

स्वरितपरसन्नतरार्थं च तत्रैव कर्तव्यम् उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः, माणवक-जाटिलकाध्यापक न्यङ् ।

They should be read there so that the anudātta preceding a svarita may become anudāttatara, to allow the final a in the expression  $m\bar{a}navaka$  jaṭilakādhyāpaka become anudāttatara before the svarita a in nyan.

Note.—When the root anc is followed by kvip and is preceded by the preposition ni, i takes its original svara by the sūtra "Nyadhīca" (6, 3, 53) and a after y in nyan takes svarita-svara by the sūtra "Udātta-svaritayōr yaṇaḥ svaritōs-nudāttasya" (8, 2, 4). Since this sūtra is in tripādī, the svaritu enjoined by it is asiddha, when the sūtra "Udātta-svaritaparasya sannataraḥ" (1, 2, 40) operates. Hence is the necessity to read the latter sūtra after the sūtra Udāttād anudāttaḥ svaritaḥ.

क तहिं स्यात् ? Where, then, will it be?

यः सिद्धः स्वरितः । माणवकजटिलकाभिरूपक क

Where svarita is siddha as in kva in the expression  $m\bar{a}navaka$  jaţilak $\bar{a}bhir\bar{u}paka$  kva.

NOTE.—Kva takes svarita by the sūtra "Tit svaritam" (6, 1, 185) and it is tit from the sūtras  $Kim \ \bar{o}t$  (5, 3, 12) and  $Kv\bar{a}ti$  (7, 2, 105).

तत्ति वक्तत्र्यम् It, then, should be read there.

न वक्तव्यम् No, it need not be.

# देवब्रह्मणोरनुदाचवचनं ज्ञापकं खरितादिति सिद्धत्वस्य

Mention of anudātta to dēva and brahma is  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  to the siddhatva of svarita in Svaritad...(1, 2, 39).

देवब्रह्मणोरनुदात्तवचनं ज्ञापकं सिद्ध इह स्वरित इति

The mention of anudatta with reference to  $d\bar{e}va$  and brahma suggests that svarita here is siddha.

यद्येतद् ज्ञाप्यते स्वरितोदात्तात्परस्यानुदात्तस्य स्वरितत्वं प्रामोति

If this is suggested, there is chance for the anudātta following svarita and udātta to become svarita.

न ब्रूमः देवब्रह्मणोरनुदात्तवचनं ज्ञापकं सिद्ध इह स्वरित इति

We do not say that the mention of  $anud\bar{a}tta$  with reference to  $d\bar{e}va$  and brahman suggests that svarita here is siddha.

किं तर्हि? What then?

परमेतत्सूत्रकाण्डमिति

But, on the other hand, it suggests that this section of sūtras is siddha.

Note.—The above arguments are based on the nyāya Lingam pāṭhakramād balīyaḥ.

# एकश्रुति द्रात्सम्बुद्धौ (1, 2, 33)

There are two topics here:—(1) Whether sambuddhi refers to vocative singular alone or the whole vocative and (2) Is ēkašruti udātta or anudātta?

I

किमिदं पारिभाषिक्याः सम्बुद्धेर्प्रहणम् " एकवचनं सम्बुद्धिः" इति, आहोस्विद् अन्वर्थप्रहणम् सम्बोधनं सम्बुद्धिरिति?

Does the word sambuddhi refer to the technical term sambuddhi mentioned in the sūtra "Ēkavacanam sambuddhiḥ" (2, 3, 49) or sambūdhana which means "the word used to call a person"?

किं चातः? What if it is either?

यदि पारिभाषिक्याः सम्बुद्धेर्प्रहणं देवाः ब्रह्माणः अत्र न प्राप्नोति । अथान्वर्थ-म्रहणं न दोषो भवति ।

If it refers to the sambuddhi which is  $p\bar{a}ribh\bar{a}sik\bar{i}$ , the samij $n\bar{a}$  cannot comprehend  $d\bar{e}v\bar{a}h$  brahmanah (which are plural in form); if it is anvarthagrahana, there is no defect.

यथा न दोषः, तथास्तु

Let it be taken in such a manner as will allow no defect.

II

किं पुनरियमेकश्रुतिरुदात्ता आहोस्विदनुदात्ता?

Is this ēkašruti udāttā or anudāttā?

नोदाचा It is not udāttā.

कथं ज्ञायते ! How is it known?

यदयम् "उच्चेस्तरां वा वषट्कारः" इत्याह

Since he (Sūtrakāra) has read "Uccāistarām vā vaṣaṭkāraḥ"

Note.—The word  $vaṣaṭk\bar{a}ra$  refers to the word  $v\bar{a}uṣaṭ$  used in  $yaj\~nas$ .

कथं कृत्वा ज्ञापकम्? How does it become jñāpaka?

अतन्त्रं तरनिर्देशः 1; यावदुचैः, तावदुचैस्तराम्

The use of the comparative suffix tara is not appropriate in the  $s\bar{u}tra$ , since it is possible only when it is compared with one which is of high tone.

यदि तर्हि नोदात्ता, अनुदात्ता

If it is not, then,  $ud\bar{a}tt\bar{a}$ , it is  $anud\bar{a}tt\bar{a}$ .

अनुदाता च न It is not anudāttā either.

कथं ज्ञायते? How is it known?

यद्यम् " उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः " इत्याह

Since he  $(S\bar{u}trak\bar{a}ra)$  has read the  $s\bar{u}tra$  '  $Ud\bar{a}ttasvaritaparasya$  sannatarah' (1, 2, 40).

1. This is read as a vārttika in Guruprasādaśastri's edition.

कथं कृत्वा ज्ञापकम्? How does it become jñāpaka?

अतन्त्रं तरनिर्देशः; यावत्सन्नः, तावत् सन्नतरः

The use of the comparative suffix tara is not appropriate in the sūtra, since it is possible only when it is compared with one which is of low tone.

सेषा ज्ञापकाभ्यामुदात्तानुदात्तयोर्भध्यमेकश्रुतिरन्तरार्छं ह्वियते

This  $\bar{e}ka\dot{s}ruti$  assumes a tone intermediate between  $ud\bar{a}tta$  and  $anud\bar{a}tta$  through these two  $j\tilde{n}\bar{a}pakas$ .

अपर आह Another says:

किमियमेकश्रुतिरुदात्ता आहोस्विदनुदात्ता ?

Is this ēkaśruti udāttā or anudāttā?

उदाता It is udāttā.

कथं ज्ञायते! How is it known?

यदयम् " उच्चैस्तरां वा वषट्कारः" इत्याह

Since he reads the sūtra "Uccāistarām vā vasatkārah,

कथं कृत्वा ज्ञापकम्? How does it become jñāpaka?

तन्त्रं तर निर्देशः, उचैर्द्धा उचैस्तरामित्येतद्भवति ।

There is the use of tara, which is  $\pm \bar{a}straic$  and  $ucc\bar{a}istar\bar{a}m$  is used only on seeing that which is  $ucc\bar{a}ih$ .

यदि तर्द्धादात्ता नानुदात्ता If it is  $ud\bar{a}t/\bar{a}$ , it cannot be  $anud\bar{a}tt\bar{a}$ .

अनुदात्ता च It is anudāttā too.

कथं ज्ञायते How is it known?

यद्यम् उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः इत्याह

Since he has read "Udāttasvarītaparasya sannatarah".

कथं कृत्वा ज्ञापकम्? How does it become jñāpaka?

तन्त्रं तरिनदेशः; सन्नं दृष्ट्वा सन्नतर इत्येतद् भवति ।

There is the use of tara which is  $\delta \bar{a}straic$  and sannatara is used only on seeing that which is sanna.

त एते तन्त्रे तरनिर्देशे

The mention of two sūtras with tara is śāstraic.

सप्त स्वरा भवन्ति उदात्तः, उदात्ततरः, अनुदात्तः, अनुदात्तः, स्वरितः, स्वरिते य उदात्तः सोऽन्येन विशिष्टः, एकश्रुतिः सप्तमः

There are seven kinds of svaras:—udātta, udāttatara, anudātta, anudāttatara, svarita, the udatta in svarita mixed with another and ēkaśruti which is the seventh.

### न सुब्रह्मण्यायां खरितस्य तूदात्तः (1, 2, 37)

सुत्रक्षण्यायामोकार उदात्तः Tokāra in subrahmaņyōm is udātta.

सुब्रह्मण्यायामोकार उदात्तो भवति, सुब्रह्मण्योम्

 $\overline{o}k\overline{a}ra$  in subrhmaņy $\overline{o}m$  in the nigada named subrahmaņya is ud $\overline{a}tta$ .

Note:—The vārttika serves only as an explanation of the sūtra and not as a supplement.

#### आकार आख्याते परादिश्र

The initial syllable of a verb followed by the upasarga  $\bar{a}$ .

आकार आख्याते परादिश्चोदाचो भवति, इन्द्र आगच्छ, हरिव आगच्छ The initial syllable of a verb followed by the preposition  $\bar{a}$  is  $ud\bar{a}tta$ , as a following g in  $Indra\ \bar{a}gaccha$ ,  $Hariva\ \bar{a}gaccha$ .

### वाक्यादै। च हे हे

Two syllables are udātta at the commencement of a sentence.

वाक्यादौ च द्वे द्वे उदाचे भवतः, इन्द्र आगच्छ हरिव आगच्छ

At the commencement of a sentence two syllables become  $ud\bar{a}tta$ . Hence i and a after r in indra in the sentence indra  $\bar{a}gaccha$  and a after h and i after r in hariva in the sentence hariva  $\bar{a}gaccha$  are  $ud\bar{a}tta$ .

मध्यन्वर्जम् Except in the word maghavan.

आगच्छ गघवन्

The word maghavan in āgaccha maghavan is sarvānudātta.

#### सुत्यापराणामन्तः

The final syllable of those which are followed by  $suty\bar{a}$  is  $ud\bar{a}tta$ .

सुत्यापराणामन्त उदाचा भवति - द्याहे सुत्याम्, ज्यहे सुत्याम्

The final syllable of those which are followed by  $suty\bar{a}$  is  $ud\bar{a}tta$  as  $\bar{e}$  after h in  $dvyah\bar{e}$   $suty\bar{a}m$  and  $tryah\bar{e}$   $suty\bar{a}m$ .

### अमावित्यन्तः

The final syllable of the noun in the nominative case (is  $ud\bar{a}tta$ ).

असावित्यन्त उदात्तो भवति, गाग्यों यजते, वात्स्यो यजते

The final syllable of the noun in the nominative case is  $ud\bar{a}tta$ , as  $\bar{o}$  in  $G\bar{a}rgy\bar{o}$  and  $V\bar{a}tsy\bar{o}$ .

### अमुष्यत्यन्तः

The final syllable of the noun in the genetive case (is  $ud\bar{a}tta$ ).

अमुष्येत्यन्त उदात्तो भवति, दाक्षेः पिता यजते

The final syllable of the noun in the genetive case is  $ud\bar{a}tta$ , as  $\bar{e}$  in  $d\bar{a}k\bar{s}\bar{e}h$  in  $d\bar{a}k\bar{s}\bar{e}h$  pitā yajatē.

### स्यान्तस्योपोत्तमं च

The penultimate too of the noun in the genetive case ending in sya (is udātta).

स्थान्तस्योपोत्तममुदात्तं भवति, अन्त्यश्च । गार्ग्यस्य पिता यजते, वात्स्यस्य पिता यजते

The penultimate of the noun in the genetive case ending in sya and the final are  $ud\bar{a}tta$  as a after y's in  $G\bar{a}rgyasya$  and  $V\bar{a}tsyasya$ .

### वा नामधेयस्य

(The penultimate) of the name is optionally udātta.

वा नामधेयस्य स्थान्तस्योपोत्तममनुदात्तं भवति, देवदत्तस्य पिता यजते देवदत्तस्य पिता यजते

The penultimate of the name in the genetive case ending in sya is optionally udātta and a after t in Dēvadattasya pitā yajatē.

### देवब्रह्मणोरनुदात्तः (1, 2, 38)

देवब्रह्मणोरनुदात्तत्वमेके Optional anudāttatva in dēva and brahman.

देवब्रह्मणोरनुदात्तत्वमेक इच्छन्ति देवा ब्रह्माणः देवा ब्रह्माणः

Some desire to have anudātta in  $d\bar{e}va$  and brahman as in  $d\bar{e}va$   $brahm\bar{a}nah$ .

## खरितात् संहितायामनुदात्तानाम् (1, 2, 39)

## स्वरितात् संहितायामनुदात्तानामिति चेद् द्येकयोरैकश्रुत्यवचनम्

If the sūtra is read "Svaritāt samhitāyām anudāttānām", mention of the āikaśrutya of one and two.

स्वरितात् संहितायामनुदात्तानामिति चेद् द्येकयोरैकश्चर्यं वक्तव्यम्, आर्मिवेश्यः, पर्चति इति

If the  $s\bar{u}tra$  is read "Svaritāt samhitāyām anudāttānām", there is need for the mention of  $\bar{a}ika\acute{s}rutya$  of one or two syllables, so that the syllables  $v\bar{e}$  and  $\acute{s}ya$ , following the svarita i in the word  $\bar{a}gniv\bar{e}\acute{s}ya$  and the syllable ti following the svarita a after c in pacati may have  $\bar{a}ika\acute{s}rutya$ .

किं पुनः कारणं न सिध्यति ? Why is it not accomplished?

बहुवचननिर्देशात् On account of the use of the plural number.

बहुवचनेनायं निर्देशः कियते । तेन बहूनामेवैकश्रुत्यं स्याद् द्येकयोर्न स्यात् ।

There is the use of the plural number; hence there is chance only for three or more to get  $\bar{a}ika\acute{s}rutya$  and not for one or two.

नैष दोषः, नात्र बहुवचनेन निर्देशस्तन्त्रम्

This defect does not arise; the use of the plural number does not warrant that only three or more are intended.

Note.—Kāiyaṭa reads:-"Tantraśabdaḥ atra pradhānavācī" and Nāgēśabhaṭṭa adds "Tantraśabda iti - vivakṣitatvalakṣaṇam prādhānyam."

कथं पुनस्तेनैव च नाम निर्देशः कियते, तचातन्त्रं स्यात्? तत्कारी च भवान्, तद्द्वेषी च ।

How is it that mention is made through it (plural number) and is said to be unimportant? You do it and cancel it.

नान्तरीयकत्वाद् अत्र बहुवचनेन निर्देशः कियते – अवश्यं कयाचिद् विभक्त्या केनचिद्वचनेन निर्देशः कर्तव्य इति । तद्यथा - कश्चिद् अन्नार्थी शालिकलापं सपलालं सतुषम् आहरति नान्तरीयकत्वात् । स यावदादेयं तावदादाय तुषपलालान्युत्स्जति । तथा कश्चित् मांसार्थी मत्स्यान् सकण्टकान् सशकलान् आहरति नान्तरीयकत्वात् । स यावद् आदेयं तावद् आदाय शकलकण्टकान्युत्स्जति । एविमहापि नान्तरीयकत्वाद् बहुवचननिर्देशः कियते । अविशेषेणैकश्चत्यं भवति ।

It is expressed here in plural number, since there is no other go. Mention has to be made through some case and some number. This may be illustrated as follows:—One eager of getting food procures  $\hat{s}amb\bar{a}$  paddy with chaff and husk, since there is no other go. He takes in whatever is necessary and throws away chaff and husk. Similarly one who is desirous of fish procures fish with fins and scales, since there is no other go. He takes in whatever is necessary and throws away fins and scales. So also mention is made in plural number, since there is no other go. Aikaśrutya happens whether the syllable which follows svarita is one, two or many.

Note.—Kāiyaṭa reads here:—Śabdasamskārārtham ēva atra bahutvam vivakṣyatē, na tu kāryasiddhyartham.

### अविशेषेणैकश्रुत्यमिति चेद् व्यवहितानामप्रसिद्धिः

If  $\bar{a}ika\acute{s}rutya$  is admitted for all, there is no chance for those which do not immediately follow the svarita.

अविशेषेणैकश्रुत्यमिति चेद् व्यवहितानामैकश्रुत्यं न प्राप्नोति 'इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि'

If  $\bar{a}ika\dot{s}rutya$  is admitted for all, there is no chance for those which are remote from svarita as the syllable  $g\bar{e}$  and those that follow it in

इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि

### अनेकमपीति तु वचनात्सिद्धप

The object is accomplished by reading anekam api in the sūtra.

अनेकमप्येकमपि स्वरितात्परं संहितायामेकश्चिति भवतीति वक्तव्यम्
The sūtra should be read "Anēkamapyēkum api svaritāt param samhitāyām ēkasruti bhavati."

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते

It is accomplished; but the sūtra has to be changed.

यथान्यासमेवास्त Let the sūtra be as it is.

ननु चोक्तम् - स्वरितात्संहितायामनुदात्तानामिति चेद् द्येकयोरैकश्रुत्यवचनम्, अविशेषेणेति चेद् व्यवहितानामप्रसिद्धिः इति ।

Oh it has been said that, if the  $s\bar{u}tra$  is read " $Svarit\bar{a}t$   $sa\dot{m}hit\bar{a}y\bar{a}m$   $anud\bar{a}tt\bar{a}n\bar{a}m$ ", mention should be made of  $\bar{a}ika\dot{s}rutya$  of one or two and if it is taken to apply to all, there is no chance for  $\bar{a}ika\dot{s}rutya$  for those which are remote from svarita.

नैष दोषः This defect does not arise.

कथम्? How?

एकशेषनिर्देशोऽयम् - अनुदात्तस्य च अनुदात्तयोश्च अनुदात्तानां च अनुदात्तानां इति

Anudāttānām is to be taken as an ēkaśēṣadvandva whose vigrahavākya is 'anudāttasya ca anudāttayōś ca anudāttānām ca.'

एवमि षट्प्रभृतीनामेव प्राप्तोति; षट्प्रभृतिषु ह्येकशेषः परिसमाप्यते Even then, it will hold good only for six and more, since the ēkaśēṣa completes only with six and more.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  reads here:  $-Sahavivak \bar{s}\bar{a}y\bar{a}m$   $\bar{e}ka \hat{s}\bar{e}\bar{s}a$ - $vidh \bar{a}n\bar{a}t \ samudit \bar{a}n\bar{a}m \ k\bar{a}ryaprasa\dot{n}ga\dot{h}$ .

### प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिर्दृष्टेति द्येकयोरिप भविष्यति ।

It chances to come for one or two also on the basis of the fact that the fruit of the meaning of the sentence is seen individually.

Note.—There is reference to this in the seventh topic under the  $s\bar{u}tra$  Vrddhir  $\bar{a}d\bar{a}ic$  in the third  $\bar{a}hnika$ . (Vol. I. pp. 195 & 196)

### अपृक्त एकाल्प्रत्ययः (1, 2, 41)

Which is better to be used in the  $s\bar{u}tra$  al or hal and whether there is need for the mention of  $\bar{e}ka$  in the  $s\bar{u}tra$  are the topics that are dealt with here.

# अपृक्तसंज्ञायां हल्ग्रहणं स्वादिलोपे हलोऽग्रहणार्थम्

Mention of the word hal in apṛkta-samjñā-vidhāyaka-sūtra is for the dropping of the word hal in the sūtra enjoining  $sv\bar{a}di$ - $l\bar{o}pa$ .

अप्रक्तसंज्ञायां हल्प्रहणं कर्तव्यम् । एकहल्प्रत्ययो अप्रक्तसंज्ञो भवतीति वक्तव्यम् ।

The word hal is to be read in the aprkta-samj $n\bar{a}$ -vidh $\bar{a}yaka$ -s $\bar{u}tra$ . It should be said that the pratyaya which consists of a single consonant takes the aprkta-samj $n\bar{a}$ .

किं प्रयोजनम्? What is the benefit?

स्वादिलोपे हलोऽप्रहणार्थम् । एवं हि स्वादिलोपे हलो प्रहणं न कर्तव्यं भवति, "हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् स्वातिस्यप्टक्तं हल्" इति, अप्टक्तस्येत्येव सिद्धम्

For the dropping of the word hal in the  $s\bar{u}tra$  dealing with  $sv\bar{a}dil\bar{o}pa$ . If so, the word hal need not be read in the  $s\bar{u}tra$  "Halnyābhyō dīrghāt sutisyaprktam hal" (6, 1, 68) which deals with the elision of su etc., since the purpose is served by the word aprkta in the  $s\bar{u}tra$ .

# अणिनोर्छगर्थमल्प्रहणम्

The word al is for the sake of the luk of an and  $i\tilde{n}$ .

### अणिनोर्छगर्थमल्यहणं कर्तव्यम्

The word al has to be read for the sake of luk of an and iñ.

किं प्रयोजनम्? What is the benefit?

अणि जोर्छिक प्रहणं न कर्तव्यं भवति, "ण्यक्षत्रियार्षिनितो यूनि छुगिणजोः" इति; अप्रक्तस्येत्येव सिद्धम्

The expression aniñōh need not be read in the sūtra "Nyakṣa-triyārṣañitō yūni lug aṇiñōh" (2, 4, 58) which deals with the luk of aṇiñōh, since its purpose is served by the samjñā aprkta.

### अणिबोळुगर्थमिति चेण्णेऽतिप्रसङ्गः

If it is said for the luk of aniñōḥ, there will be ativyāpti in na.

अणिञोळुगर्थमिति चेण्णेऽतित्रसङ्गो भवति । इहापि प्राप्नोति - फाण्टाह्रते-रपत्यं माणवकः फाण्टाह्रत इति ।

If it is said for the luk of  $ani\tilde{n}\tilde{o}h$ , there will be  $ativy\bar{a}pti$  in the pratyaya na, so that the luk of na may happen in the word  $Ph\bar{a}nt\bar{a}hrta$  which means the son or the disciple of  $Ph\bar{a}nt\bar{a}hrti$  (which is enjoined by the  $s\bar{u}tra$  " $Ph\bar{a}nt\bar{a}hrti$ - $mimat\bar{a}bhy\bar{a}m$   $naphi\tilde{n}au$ " (4, 1, 150).

#### णवचनसामर्थ्यात्र भविष्यति

It does not take place on account of the  $s\bar{a}marthya$  of the mention of na.

## वचनश्रामाण्यादिति चेत् फङ्निवृत्त्यर्थे वचनम्

If it is said that it is on account of  $vacanapr\bar{a}m\bar{a}nya$ , the mention is to prohibit phak.

वचनप्रामाण्यादिति चेत् फङ्निवृत्त्यर्थमेतत् स्यात्, फगतो भा भूद् इति If it is said that there is no luk to na on account of its mention, it may be to prohibit pha and its effect.

Note.— Kāiyaṭa reads here:— Yañ-iñōśca iti prāptasya phakō bādhanārtham navacanam syāt tasya ca luk syād ēva ityarthaḥ.

## पैलादिषु वचनात् सिद्धम्

It will be accomplished by reading it in pāilādi-gaņa.

यद्येतावत्प्रयोजनं स्यात् पैलादिष्वेवास्य पाठं कुर्वीत । तत्र पाठादन्येषामपि फको निवृत्तिर्भवति ।

If the  $pray\bar{o}jana$  is only so far, it may as well be read in the  $p\bar{a}il\bar{a}digana$ . Through reading it there, there will be nivrti of phak (by the  $s\bar{u}tra$  " $P\bar{a}il\bar{a}dibhyas$  ca" 2, 4, 59).

एवं सिद्धे सित यदयं णं शास्ति तद् ज्ञापयत्याचार्यो नास्य छुग् मवतीति Since he ( $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ ) reads na in the  $s\bar{u}tra$  when the result can thus be achieved,  $Ac\bar{a}rya$  suggests that it is not elided.

तान्येतानि लीणि ग्रहणानि भवन्ति - अप्टक्तसंज्ञायां हल्प्रहणं कर्तव्यम्; स्वादिलोपे हलो ग्रहणं न कर्तव्यम्; अणिञोर्छिकि ग्रहणं कर्तव्यम् । अल्प्रहणेऽपि वै कियमाणे तान्येव त्रीणि ग्रहणानि भवन्ति - अप्टक्तसंज्ञायाम् अल्प्रहणं कर्तव्यम्; स्वादिलोपे हलो ग्रहणं कर्तव्यम्; अणिञोर्छिकि ग्रहणं न कर्तव्यम् भवति, अप्टक्तग्रहणं कर्तव्यम् । तत्र नास्ति लाघवकृतो विशेषः ।

(If hal is read in this sūtra) there are three factors to be noted:—(1) hal should be read in the apṛkta-samjñā-vidhāyaka-sūtra (2) hal need not be read in the sūtra "Halnyābhō dīrghāt sutisyapṛktam hal" and (3) aṇiñōḥ has to be read in the sūtra "Nyakṣatriyārṣañitō yūni lug aṇiñōḥ". Even when al is read, there are evidently three similar factors to be noted:—(1) al should be read in the apṛkta-samjñā-vidhāyāka-sūtra (2) hal has to be read in the sūtra "Halnyābhyō ... hal" and (3) aṇiñōh need not be read and apṛkta has to be read. (Hence) replacing al by hal has no advantage of being lighter.

अयमस्ति विशेषः, अल्प्रहणे कियमाणे एकप्रहणं न करिष्यते । There is this advantage that, if al is read, there is no need for the word  $\bar{e}ka$  in the  $s\bar{u}tra$ .

कसान्न भवति दर्विः, जागृविः?

How is it that the  $s\bar{u}ira$  " $V\bar{e}r$  aprktasya" (6, 1, 57) does not operate in darvih and  $j\bar{a}grvih$ ?

अलेव यः प्रत्ययः

Al is in apposition with pratyaya (and not its viśēṣaṇa)

किं वक्त अमेतत् ? Is this to be so stated?

न हि Certainly not.

कथमनुच्यमानं गंस्यते ?

How is it so understood without such a mention?

अल्प्रहणसामध्यति By the capacity of the mention of al.

यदि च योऽल् चान्यश्च तल स्यात्, अल्प्रहणमनर्थकं स्यात् If there is one al and another at the end, mention of al will be of no use. हल्प्रहणेऽपि वै क्रियमाणे एकप्रहणं न करिष्यते

Even if hal is read in place of al, the word  $\bar{e}ka$  need not be read.

कस्मान्न भवति द्विः जागृविः ?

How is it that "Vēr aprktasya" will not operate there?

हरेव यः प्रत्ययः

Hal is taken in apposition with pratyaya (and not as its viśēṣaṇa allowing tadantavidhi).

किं वक्तव्यमेतत् ? Is this to be stated?

न हि Certainly not.

कथमरुच्यमानं गंस्यते ?

How is it so understood without such a mention?

हल्प्रहणसामध्यति

Through the capacity of the mention of hal.

यदि च यो हल् चान्यश्च तत्र स्यात् हल्प्रहणमनर्थकं स्यात्

If there is one hal and another at the end, mention of hal will be of no use.

अस्त्यन्यद् हल्प्रहणस्य प्रयोजनम्

There is another purpose served by the mention of hal.

किम्? What?

हलन्तस्य यथा स्यादजन्तस्य मा भूदिति

So that it may operate to halanta and not to ajanta.

एवं तर्हि सिद्धे सित यदल्प्रहणे कियमाणे एकप्रहणं करोति, तद्ं ज्ञापय-त्याचार्यः 'अन्यत्र वर्णप्रहणे जातिप्रहणं भवति ' इति ।

If so, since  $Ac\bar{a}rya$  has made mention of  $\bar{e}ka$  in the  $s\bar{u}tra$  when the desired purpose can be achieved without it, he suggests the  $paribh\bar{a}s\bar{a}$  'Anyatra varnagrahanē jātigrahanam bhavati' (Mention of a letter elsewhere refers to genus).

किमेतस्य ज्ञापने प्रयोजनम् ?

What is the benefit of this  $j\tilde{n}\bar{a}pana$ ?

दम्भेई ल्यहणस्य जातिवाचकत्वात् सिद्धमित्युक्तं तद् उपपन्नं भवति
The statement 'Dambhēr halgrahaṇasya jativācakatvāt siddham' mentioned (at the end of "Halantāc ca" (1, 2, 10) becomes appropriate.

तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः (1, 2, 42)

# तत्पुरुषस्समानाधिकरणः कर्मधारय इति चेत् समासैकार्थत्वादप्रसिद्धिः

If it is said that tatpuruṣa which is  $sam\bar{a}n\bar{a}dhi$ -karaṇa is called  $karmadh\bar{a}raya$ , the  $samj\tilde{n}\bar{a}$  cannot be accomplished on account of  $\bar{e}k\bar{a}rthatva$  of the  $sam\bar{a}sa$ .

तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय इति चेत्, समासैकार्थत्वात् संज्ञाया अप्रसिद्धिः । एकोऽयमर्थस्तत्पुरुषो नाम ; अनेकार्थाश्रयं च सामानाधिकरण्यम् । If it is said that the tatpuruṣa which is  $sam\bar{a}n\bar{a}dhikaraṇa$  takes the  $samij\bar{n}\bar{a}$   $karmadh\bar{a}raya$ , it is not possible to reach at the  $samij\bar{n}\bar{a}$ , since the compound word connotes only one object and  $s\bar{a}m\bar{a}n\bar{a}dhikaraṇya$  is with reference to two objects.

Note:—The existence of words of different connotation in one place is called  $s\bar{a}m\bar{a}nadhikaranya$ .

### सिद्धं तु पदसामानाधिकरण्यात्

The object is achieved on account of the  $s\bar{a}m\bar{a}n\bar{a}dhikaranya$  of the words (of the  $sam\bar{a}sa$ ).

सिद्धमेतत् This is accomplished.

कथम् ! How ?

तत्पुरुषः समानाधिकरणपदः कर्मधारयसंज्ञो भवतीति वक्तव्यम्
The sūtra has to be read " Tatpuruṣaḥ samānidhikaraṇapadaḥ karmadhārayaḥ".

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते

It is accomplished; but the sūtra, then, has to be modified. यथान्यासमेवास्त्र Let the sūtra remain as it is.

ननु चोक्तं तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय इति चेत्, समासैकार्थत्वा-दप्रसिद्धिः इति Oh! it has been said "Tatpuruṣaḥ samānādhikaraṇaḥ karma-dhāraya iti cēt, samāsāikārthatvād aprasiddhiḥ."

नैष दोष: This difficulty does not arise.

अयं तत्पुरुषोऽस्त्येव प्राथमकिल्पको यिसान् ऐकपद्यमकस्वर्यमेकविभक्तित्वं च । अस्ति ताद्रथ्यत् ताच्छब्यं तत्पुरुषार्थानि पदानि तत्पुरुप इति । तद्यस्ताद्रथ्या- त्ताच्छब्यं तस्येदं प्रहणम् ।

Primarily should tatpuruṣa refer to that which has one meaning, one udātta syllable and one case-suffix after it. Secondarily the word tatpuruṣa may refer to the words which are intended to form the compound, since a word sometimes denotes that which is responsible for its formation. The word tatpuruṣa in this sūtra belongs to the second category.

Note:—Kāiyaṭa reads here: - Sāmarthyāt tatpuruṣaśabdaḥ gāuṇārthavṛttiḥ parigṛhyatē. Samāsāvayavānām ēva padānām karmadhāraya-saṁjñā vidhīyatē, samudāyē ca vākyaparisamāptyā padasamudāyasya ēkāiva karmadhāraya-saṁjñā, na tu pratyēkam.

# प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् (1, 2, 43)

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनिमिति चेदिनिर्देशात् प्रथमायाः समासे संज्ञाप्रसिद्धिः If it is read "Prathamānirdiṣṭam samāsa upasarjanam," non-attainment of the samjñā on account of the non-mention of prathamā in samāsa.

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनिमिति चेदनिर्देशात् प्रथमायाः समासे उपसर्जन-संज्ञाया अप्रसिद्धिः । न हि कष्टादीनां समासे प्रथमां पश्यामः ।

If the  $s\bar{u}tra$  is read:— $Pratham\bar{a}nirdistam$   $sam\bar{a}sa$  upasar-janam," it is not possible to achieve the  $samjn\bar{a}$  (upasarjanam) on account of the non-mention of  $pratham\bar{a}$  in  $sam\bar{a}sa$ ; for we do not see any  $pratham\bar{a}$  after kasta etc. in the  $sam\bar{a}sa$ .

Note:— $Pratham\bar{a}$ -vibhakti has a chance to be affixed only after the stem of the compound is formed; if it is taken to refer to the case-suffix affixed to the words before they became  $sam\bar{a}sa$ , there is  $pratham\bar{a}$  only after  $\acute{s}rita$  in the words kastam and  $\acute{s}ritah$  and not after kasta and hence the word  $\acute{s}rita$  will have a chance to get the  $samj\tilde{n}\tilde{a}$ , but we want kasta to get it.

### सिद्धं तु समासविधाने वचनात

It is accomplished by reading  $sam\bar{a}sa\text{-}vidh\bar{a}n\bar{e}$  in the  $s\bar{u}tra$  (in place of  $sam\bar{a}s\bar{e}$ ).

सिद्धमेतत् This (object) is accomplished.

कथम्! How?

समासविधाने प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं भवतीति वक्तव्यम्

The  $s\bar{u}tra$  should be read thus:—" $Sam\bar{a}sa$ - $vidh\bar{a}n\bar{e}$  prathamā-nirdistam upasarjanam".

तत्ति वक्तन्यम् It, then, should be so read.

## न वा ताद्थ्यीत्ताच्छब्द्यम्

No, it need not; mention of that word to connote that which has it for its prayojana.

न वा वक्तव्यम् Or it need not be so read.

किं कारणम्? Why?

ताद्रथ्यात्ताच्छ इयं भविष्यति । समासार्थं शास्त्रं समास इति

That word  $(sam\bar{a}s\bar{e})$  has the connotation of that for which it is intended and it is taken to mean (through  $g\bar{a}un\bar{i}-vrtti$ ) the  $s\bar{a}stra$  intended to explain  $sam\bar{a}sa$ .

# यस विधौ प्रथमानिर्देशस्ततोऽन्यत्रोपसर्जनसंज्ञाप्रसङ्गः

Chance for upasarjana-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  for that even in places other than where  $pratham\bar{a}$  is mentioned for its  $vidh\bar{a}na$ .

यस्य विधौ प्रथमानिर्देशः क्रियते, ततोऽन्यत्रापि तस्योपसर्जनसंज्ञा प्रामोति । राज्ञः कुमारीं राजकुमारीं श्रितः । श्रितादिसमासे द्वितीयान्तं प्रथमानिर्दिष्टम्, तस्य षष्ठीसमासेऽप्युपसर्जनसंज्ञा प्रामोति ।

The upasarjana-samj $n\bar{a}$  chances to be applied to a word even in places other than where pratham $\bar{a}$  is mentioned for its vidh $\bar{a}$ na. In the sam $\bar{a}$ sa kum $\bar{a}$ r $\bar{i}$ -śritah the pratham $\bar{a}$  after śritah makes kumar $\bar{i}$  take the upasarjana-samj $n\bar{a}$  and the same samj $n\bar{a}$  may be applied to kum $\bar{a}$ r $\bar{i}$  in r $\bar{a}$ jakum $\bar{a}$ r $\bar{i}$ m which is ṣaṣṭh $\bar{i}$ -tatpuruṣa in the expression  $r\bar{a}$ jakum $\bar{a}$ r $\bar{i}$ m śritah.

Note:—In rājakumārīśritaḥ, which is dvitīya-tatpuruṣa-samāsa of rājakumārīm and ṣritaḥ, rājakumārī takes upasarjana-samjñā and in kumārīśritaḥ, kumārī takes upasarjanasamjñā; but kumārī in rājakumārī cannot take the same samjñā.

## सिद्धं तु यस्य विधी तं प्रतीति वचनात्

The object is accomplished since it is mentioned that it alone takes it where mention is made for its  $vidh\bar{a}na$ .

सिद्धमेतत् This (object) is accomplished.

कथम् ? How?

यस्य विधौ यत्प्रथमानिर्दिष्टं तं प्रति तद्पसर्जनसंज्ञं भवतीति वक्तव्यम्

It should be stated that it alone takes  $upasarjanasamj\tilde{n}\bar{a}$  with reference to that which is provided with  $pratham\bar{a}$  to determine its relation.

तत्ति वक्तव्यम् It should, then, be stated.

न वक्तव्यम् । उपसर्जनम् इति महती संज्ञा क्रियते । संज्ञा च नाम यतो न रुघीयः ।

No, it need not. A long  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  in the form of upasarjanam is made and  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  should be of such a form as none else is shorter than it.

कृत एतत् ? On what authority is this view taken? रुव्हर्थं हि संज्ञाकरणम्

Making of  $samj\tilde{n}as$  is evidently for the sake of brevity.

तत्र महत्याः संज्ञायाः करणे एतत् प्रयोजनम् अन्वर्थसंज्ञा यथा विज्ञायेत, अप्रधानमुपसर्जनिति । प्रधानम् उपसर्जनम् इति सम्बन्धिशब्दावेतौ । तत्र सम्बन्धा-देतद् गन्तव्यम् - यं प्रति यद् अप्रधानं तं प्रति तद् उपसर्जनसंज्ञं भवति इति । This is the prayojana of making a long samijñā that it is anvartha, and hence it means apradhāna. The words pradhānam and upasarjanam are related words. From the relationship this is to be understood that one which is apradhāna in its relation to another gets the upasarjanasamijñā with reference to it.

अथ यत्र द्वे षष्ठयन्ते कस्मात् तत्र प्रधानस्योपसर्जनसंज्ञा न भवति, राज्ञः पुरुषस्य राजपुरुषस्य इति ?

Then, why does not the  $pradh\bar{a}na$  get the  $upasarjanasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  where there are two words ending in sixth case-suffix as in  $r\bar{a}japurusasya$  which is the  $sam\bar{a}sa$  of  $r\bar{a}j\tilde{n}ah$  and purusasya?

# षष्ट्रयन्तयोश्रोपसर्जनत्वे उक्तम्

It has been said with reference to upasarjanatva when two sasthyantas form a compound.

किमुक्तम ? What has been said?

षष्ठग्रन्तयोः समासेऽर्थाभेदात् प्रधानस्यापूर्वनिपातः इति । एवं न चेदमकृतं भवति 'उपसर्जनं पूर्वम् ' इति । अर्थश्चामित्र इति कृत्वा प्रधानस्य पूर्वनिपातो न भविष्यति ।

With reference to the  $sam\bar{a}sa$  of two sasthyantas there is no chance for the  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$  of the  $pradh\bar{a}na$ . Hence the rule  $Upasarjanam\ p\bar{u}rvam$  does not operate there. On taking the meanings conveyed by the two words to be indentical, there is no  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$  to the  $pradh\bar{a}na$ .

Note:—1. The lines "Ṣaṣṭhyantayōḥ ... na bhaviṣyati" are found under the sūtra 2, 2, 30.

Note:—2. Since "Ṣaṣṭhyantayōḥ samāsē arthābhēdāt pradhānasya apūrvanipātaḥ" is found as a vārttika under the sūtra "Upasarjanam pūrvam" (2, 2, 30), there is reason to think that the statement "Ṣaṣṭhyantayōṣcōpasarjanatvē uktam may not be a vārttika, but bhāṣya. But the editions of Pānduranga Javaji and Guruprasādaśāstrī read it as a vārttika.

यद्यपि तावदेतदुपसर्जनकायँ परिहृतम्, इदमपरं प्राप्नोति राज्ञः कुमार्याः राज-कुमार्याः, 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ' इति हुस्वत्वं प्राप्नोति

Even though  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$ , which is  $upasarjanak\bar{a}rya$  is thus avoided, this another—the shortening of i  $r\bar{a}jakum\bar{a}ry\bar{a}h$ , the compound of  $r\bar{a}j\tilde{n}ah$  and  $kum\bar{a}ry\bar{a}h$ —takes place on the strength of the  $s\bar{u}tra$  "Göstriyör upasarjanasya".

उक्तं वा 1 It has been answered.

किमक्तम् ? How has it been answered?

परविष्ठिक्गिमिति शब्दशब्दार्थों <sup>2</sup> इति । तत्रौपदेशिकस्य हस्वत्वम्, आतिदेशिकस्य श्रवणं भविष्यति ।

The vārttika Paravallingam iti śabdaśabdārthāu. From it, it is understood that shortening is only to āupadēśika and not to ātidēśika.

### एकविभक्ति चापूर्वनिपाते (1, 2, 44)

द्वितीयादीनामप्यनेनोपसर्जनसंज्ञा प्रामोति

There is chance for the nouns in the accusative case etc. (as Krsnam in Krsnasritah) to take  $upasarjana-samjn\bar{a}$ .

तत्र को दोष:? What is the harm there?

तत्रापूर्वनिपात इति प्रतिषेधः प्रसज्येत

In that case the  $p\bar{u}rvanip\bar{a}tatva$  (of krsna etc.) will be prohibited on the strength of  $ap\bar{u}rvanip\bar{a}t\bar{e}$  in the  $s\bar{u}tra$ .

नाप्रतिषेधात् No, on account of its not being pratisēdha.

नायं प्रसज्यप्रतिषेधः पूर्वनिपाते न इति

It is not prasajyapratiṣēdha, so that it may mean that it is not so when there is pūrvanipāta.

किं तर्हि? What then?

पर्युदासोऽयम्, यदन्यत् पूर्वनिपातादिति

It is  $paryud\bar{a}sa$ , so that it means 'one other then  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$ .

पूर्वनिपाते अव्यापारः । यदि केनचित् प्राप्तोति तेन भविष्यति । पूर्वेण च प्राप्तोति, तेन भविष्यति ।

This  $s\bar{u}tra$  has no hold on  $p\bar{u}rvanip\bar{a}ta$ . If it chances to come through some other rule, it shall come. It chances to come by the previous rule and it shall come.

- 1. This is read as a vārttika in some editions.
- 2. This is a vārttika under 2-4-26.

अप्राप्तेर्या Or on account of its being not operated upon.

अथवा अनन्तरा या प्राप्तिः सा प्रतिषिध्यते

Or the chance enjoined by the sūtra that follows is prohibited.

कृत एतत् ? On what authority is it so stated?

अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा इति

Vidhi or pratisēdha is only with reference to what follows.

पूर्वा प्राप्तिरप्रतिषिद्धा तया भविष्यति

The chance from the previous  $s\bar{u}tra$  is not prohibited and it shall come on the strength of it.

ननु चेयं प्राप्तिः पूर्वां प्राप्तिं बाधते

Oh, does not the  $pr\bar{a}pti$  by the rule here set at naught the  $pr\bar{a}pti$  by the rule before.

नोत्सहते प्रतिषिद्धा सती बाधितुम्

It, being prohibited, has no capacity to set the other at naught• एकविभक्तावषष्ट्रचन्तवचनम्

Mention of aṣaṣṭhyanta with reference to ēkavibhakti (is necessary).

एकविभक्तावषष्ठयन्तानामिति वक्तव्यम्, इह मा भूत् अर्धे पिप्पल्याः अर्ध-पिप्पली इति

There is the need to read as a sthyanta with reference to  $\bar{\epsilon}kavibhakti$ , so that it may not happen in  $ardhapippal\bar{\iota}$  which is the  $sam\bar{a}sa$  of  $pippaly\bar{a}h$  ardham.

उक्तं वा It has been answered.

किमुक्तम् ? How has it been answered?

परविष्ठङ्गिमिति शब्दशब्दार्थी <sup>1</sup> इति ; तत्रौपदेशिकस्य ह्रस्वत्वम् , आतिदेशिकस्य श्रवणं भविष्यति

1. This vārttika is under 2-4-26.

Paravallingam iti śabdaśabdārthāu. This suggests that shortening is for that for which there is  $upad\bar{e}$ śa and not for that which is atidiṣṭa.

कानि पुनरस्य योगस्य प्रयोजनानि ?

What are the benefits accrued from this sūtra?

# प्रयोजनं द्विगुप्राप्तापनालंपूर्वोपसर्गाः

Prayōjana is with reference to dvigu, prāpta, āpanna, alampūrva and upasarga.

क्तार्थे द्विगुः, पञ्चभिगोंभिः क्रीतः पञ्चगुः, दशगुः

Dvigu in ktārtha; pañcaguḥ which means cow brought for five; daśaguḥ.

प्राप्तापन्न - प्राप्तो जीविकां प्राप्तजीविकः, आपन्नो जीविकाम् आपन्नजीविकः

 $Pr\bar{a}ptaj\bar{i}vikah$  and  $\bar{a}pannaj\bar{i}vikah$ , the  $sam\bar{a}sas$  of praptah and  $j\bar{i}vik\bar{a}m$  and  $\bar{a}pannah$  and  $j\bar{i}vik\bar{a}m$ .

अलंपूर्व - अलं कुमार्ये अलङ्कमारिः ।

Alankumārih is the samāsa of alam and kumāryāi.

उपसर्गाः क्तार्थे, निष्कौशाम्बः, निर्वाराणसिः

Upasarga in having ktārtha: -Niṣkāuśāmbiḥ, Nirvārāṇasiḥ.

TENTH AHNIKA ENDS

(First  $adhy\bar{a}ya$ , second  $p\bar{a}da$ , first  $\bar{a}hnika$  ends)

### Eleventh Ahnika

(First adhyāya, second  $p\bar{a}da$ , second  $\bar{a}hnika$ )

# अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1, 2, 45)

There are six topics dealt with here:—(1) The prayōjana of the use of the words arthavat, adhātuḥ and apratyayaḥ; (2) The difficulties arising from the use of arthavat and their solution; (3) The impropriety of assigning meaning to the stem of a noun; (4) Whether letters have meaning or not: (5) Need for the mention of the prātipadikasamjñā to nipātana and (6) Whether apratyayaḥ is paryudāsa or prasajyapratiṣēdha.

I

अर्थवद्गहणं किमर्थम्?

What for is the mention of the word arthavat?

अर्थविदति व्यपदेशाय । वर्णानां मा भूदिति

The word arthavat is to show explicitly (the samij $\tilde{n}in$ ), so that the samij $\tilde{n}a$  may not operate to varnas.

किं च स्यात्?

What will happen, if varnas get the samj $\tilde{n}a$ ?

वनं धनमिति नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य इति नलोपः प्रसज्येत

There may be chance for the elision of n in the words vana and dhana on the strength of the  $s\bar{u}tra$   $Nal\bar{o}pah$   $pr\bar{a}tipadik\bar{a}n$ -tasya (8, 2, 7).

अधातुरिति किमर्थम्? What for is the word adhātuḥ?

अहन् वृत्रम्

So that the word ahan in ahan Vrtram may not take the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  (in which case there may be elision to n).

अधातुरिति शक्यमवक्तुम्

It is possible to dispense with the word adhātuh.

कसान्न भवति अहन् वृत्रम् इति

How is it to avoid the samjñā to ahan in ahan Vrtram?

आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित न धातोः प्रातिपदिकसंज्ञा भवतीति, यदयं सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इति धातुग्रहणं करोति

The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  ( $P\bar{a}nini$ ) suggests that root does not take  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$ , since he reads the word  $dh\bar{a}tu$  in the  $s\bar{u}tra\ Sup\bar{o}\ dh\bar{a}tupr\bar{a}tipadikay\bar{o}h$  (2, 4, 71).

नैतदिस्त ज्ञापकम् । प्रतिषिद्धार्थमेतत् स्यात्, अपि काकः इयेनायत इति No, this is not a  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ , since it is necessary for the sake of that which is prohibited, as in the word  $\dot{s}y\bar{e}n\bar{a}yat\bar{e}$  in the sentence ' $Api\ k\bar{a}kah\ \dot{s}y\bar{e}n\bar{a}yat\bar{e}$ ?'

Note:—The sup after  $\acute{s}y\bar{e}na$  is dropped in the word  $\acute{s}y\bar{e}n\bar{a}yat\bar{e}$ , considering  $\acute{s}y\bar{e}na$  to be  $dh\bar{a}tvayava$  and the word  $dh\bar{a}tu$  in the  $s\bar{u}tra$   $Sup\bar{o}$   $dh\bar{a}tupr\bar{a}tipadikay\bar{o}h$  becomes  $carit\bar{a}rtha$  there.

अप्रत्यय इति किम्! What for is the word apralyaya? काण्डे, कुड्ये

So that  $\bar{e}$  in  $k\bar{a}nd\bar{e}$  and  $kudy\bar{e}$  may not take the  $samj\tilde{n}\bar{a}$ , through the dictum  $par\bar{a}divadbh\bar{a}v\bar{e}na$  pratyay $\bar{a}ntatvam$ .

अप्रत्यय इति शक्यमवक्तुम्

It is possible to dispense with the word apratyayah.

कसान्न भवति काण्डे कुड्ये इति

How does it  $(sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a})$  not operate with reference to  $\tilde{e}$  in  $k\tilde{a}nd\tilde{e}$ , and  $kudy\tilde{e}$ ?

कृत्तद्धितग्रहणं नियमार्थं भविष्यति, कृत्तद्धितान्तस्यैव प्रत्ययान्तस्य प्रातिपदिक-संज्ञा भवति नान्यस्य इति

Mention of krt and taddhita (in the following  $s\bar{u}tra$ ) is for the sake of niyama, so that  $pr\bar{a}tipadikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  comes within the purview of only those which have at their end krt-pratyaya or taddhita-pratyaya and none else.

Note:  $K\bar{a}iyata$  reads here: Taddhitagrahanam atra niyamārtham, krdgrahanam tu pratisiddhārtham, bhit, chid iti; atra hi adhātuh iti pratisēdhaprasangah.

#### II

### अर्थवत्यनेकपदप्रसङ्गः

Chance for a collection of words to take the  $samj\tilde{n}\bar{a}$  if arthavat takes it.

अर्थविति प्रातिपिदकसंज्ञायामनेकस्यापि पदस्य प्रातिपिदकसंज्ञा प्रामोति -दश दाडिमानि, षडपूपाः, कुण्डमजाजिनं पललपिण्डः अधरोरुकमेतत्कुमार्याः स्फैयकृतस्य पिता प्रतिशीन इति ।

If the prātipadikasamjāā is enjoined to that which has meaning, a collection of words like daśa dāḍimāni ṣad apūpāḥ kuṇḍam ajājinam palalapiṇḍaḥ adharōrukam ētat kumāryāḥ Sphāiyakrtasya pitā Prātiśīnaḥ as a whole may chance to take prātipadikasamjāā.

### समुदायोऽत्रानर्थकः

The collection of words here as a whole has no meaning.

# सम्रदायोऽनर्थक इति चेदवयवार्थवन्वात्सम्रदायार्थवन्वं यथा लोके

If it is said that samudāya is anarthaka, (it is not): samudāya has meaning since its parts have meaning, as is in the world.

समुदायोऽनर्थक इति चेद् अवयवार्थवत्त्वात् समुदायार्थवत्त्वम् ; अवयवैरर्थवद्भिः समुदाया अर्थवन्तो भवन्ति ।

If it is said that samudāya is anarthaka, (it is not); samudāya has meaning since avayavas have meaning. The collections of words do possess meaning, since their parts have meaning.

यथा लोके - तद्यथा लोके - आट्यमिदं नगरं, गोमदिदं नगरम् इत्युच्यते ; न च सर्वे तत्राट्या भवन्ति, सर्वे वा गोमन्तः

As is in the world. It may be illustrated from what is seen in the world. It is said "This city is rich", "This city has wealth of cows." Neither are all residents of the city rich, nor do all possess the wealth of cows.

यथा लोके इत्युच्यते; लोके च अवयवा एव अर्थवन्तः, न समुदायाः। आतश्च अवयवा एवार्थवन्तो न समुदायाः, यस्य हि यद् द्रव्यं भवति स तेन कार्यं करोति; यस्य च या गावो भवन्ति स तासां क्षीरं घृतमुपभुङ्क्ते; अन्यः एतद् द्रष्ट्रमप्यशक्यम्।

It is said "Yathā lōkē"; it is only the limbs of the world that have artha and not the collections of the limbs; hence it is only the avayavas that possess artha and not samudāyas; he who has money makes use of it; he who has cows drinks their milk and ghee; others cannot even look at it.

का तहींयं वाचोयुक्तिः 'आड्यमिदं नगरम्', गोमद् इदं नगरम्' इति ? How then has the statement "The city is rich", "This city possesses the wealth of cows", to be explained?

एषेषा वाचोयुक्तिः, इह तावद् आढ्यमिदं नगरमिति अकारो मत्वर्थीयः, आढ्या अस्मिन् सन्ति तदिदम् आढ्यम् इति; गोमदिदं नगरम् इति, मत्वन्तात् मत्वर्थीयो छुप्यते ।

This statement may have this explanation. Firstly here in the statement " $\bar{a}dhyam$  idam nagaram", a is matvarthīya, so that  $\bar{a}dhyam$  means  $\bar{a}dhy\bar{a}h$  asmin santi and in the statement " $g\bar{o}mad$  idam nagaram", the pratyaya having matvartha is dropped after matvartha.

Note:  $-K\bar{a}iyaļa$  explains  $\bar{e}$ \$ $\bar{a}i$ \$ $\bar{a}$ \$ $\bar{v}$ \$ $\bar{a}$ c $\bar{o}yuktih$ \$ thus:  $-\bar{e}$ \$ $\bar{a}$ \$ $\bar{v}$ \$ $\bar{a}$ \$ $\bar{e}$ 

एवमपि - Even then.

# वाक्यप्रतिषेधोऽर्थवन्त्रात्

Prohibition of a sentence, it having meaning.

वाक्यस्य प्रातिपदिकसंज्ञायाः प्रतिषेधो वक्तव्यः, देवदत्त गामभ्याज शुक्काम्, देवदत्त गामभ्याज कृष्णाम् इति ।

There is need to prohibit the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$  to a sentence like " $D\bar{e}vadatta$   $g\bar{a}m$   $abhy\bar{a}ja$  śu $kl\bar{a}m$ " (Oh  $D\bar{e}vadattah$ , drive the white cows), " $D\bar{e}vadatta$   $g\bar{a}m$   $abhy\bar{a}ja$   $krsn\bar{a}m$ " (Oh  $D\bar{e}vadatta$  drive the black cows).

किं कारणम् ? Why?

अर्थवत्त्वात्; अर्थवद्धि एतद् वाक्यम्

On account of its having meaning; for this sentence has meaning.

न वै पदार्थादन्यस्यार्थस्योपलब्धिर्भवति वाक्ये

Nothing is found in the meaning of the sentence other than the meaning of the words.

# पदार्थाद्रन्यस्यानुपलिब्धिरिति चेत् पदार्थाभिसम्बन्धस्योपलिब्धस्तस्मात्प्रतिषेधः

If it is said that there is nothing in the meaning of a sentence other than that of words, (it is not); there is the comprehension of the relation of the meanings of words; hence there is need for pratisēdha.

पदार्थादन्यस्यानुपलिबधिरिति चेत्, इदमुच्यते पदार्थाभिसम्बन्धस्योपलिबधिभविति वाक्ये

If it is said that there is nothing in the meaning of a sentence other than that of words, this has to be said that there is comprehension of the relation of the meanings of the words in a sentence.

इह देवदत्त इत्युक्ते कर्ता निर्दिष्टः, कर्म क्रियागुणौ चानिर्दिष्टौ

Here, if the word  $D\bar{e}vadattah$  alone is read, the agent is expressed, and the object, the action, and the quality are not expressed.

गामित्युक्ते कर्म निर्दिष्टम्, कर्ता कियागुणौ चानिर्दिष्टौ

If the word  $g\bar{a}m$  alone is read, the object is expressed and the agent, the action and the quality are not expressed.

अभ्याज इत्युक्ते किया निर्दिष्टा, कर्तृकर्मणी गुणश्चानिर्दिष्टः

If the word  $abhy\bar{a}ja$  alone is read, the action is expressed and the agent, the object and the quality are not expressed.

शुक्काम् इत्युक्ते गुणा निर्दिष्टः, कर्तृकर्मणी किया चानिर्दिष्टा

If the word  $\dot{s}ukl\bar{a}m$  alone is read, the quality is expressed and the agent, the object and the action are not expressed.

इहेदानीं देवदत्त गामभ्याज शुक्काम् इत्युक्ते सर्वं निर्दिष्टम् - देवदत्त एव कर्ता नान्यः, गामेव कर्म नान्यत्, अभ्याजैव क्रिया नान्या, शुक्कामेव न कृष्णाम् इति । एषां पदानां सामान्ये वर्तमानानां यद्विशेषेऽवस्थानं स वाक्यार्थः ।

If, then, the sentence  $D\bar{e}vadatta~g\bar{a}m~abhy\bar{a}ja~\acute{s}ukl\bar{a}m$  is here read, everything is expressed;  $D\bar{e}vadatta$  alone is the agent

and none else, cow alone is the object and none else, driving alone is the action and none else and the white cow alone and not the black one. The meaning of the sentence consists in connecting together the meanings of the words with the due relationship of one to another (both expressed and suggested).

Note:—The words  $s\bar{a}m\bar{a}nya$  and  $vi\dot{s}\bar{e}sa$  here refer to the state of relation not being expressed and to the state of relation being expressed.

तसात्वतिषेधः । तसात्वतिषेधो वक्तव्यः

Hence is the need for the pratisēdha (i. e.) hence the pratisēdha has to be mentioned.

न वक्तव्यः No, it need not

## अर्थवत्समुदायानां समासग्रहणं नियमार्थम्

Reading of  $sam\bar{a}sa$  is to restrict with reference to arthavat- $samud\bar{a}ya$ .

अर्थवत्समुदायानां समासत्रहणं नियमार्थं भविष्यति, समास एवार्थवतां समुदा-यानां प्रातिपादिकसंज्ञो भवति नान्य इति ।

The mention of the word  $sam\bar{a}sa$  in the following  $s\bar{u}/ra$  is to restrict the application of the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  to the groups of words which have meaning thus:—Among the groups of words which possess meaning, compound word alone gets the  $pr\hat{a}tipadika-sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  and none else.

यदि नियमः कियते प्रकृतिप्रत्ययसमुदायस्य प्रातिपदिकसंज्ञा न प्रामोति -बहुपटवः, उच्चकैः, नीचकैः इति

If the niyama is done, there is no chance for the stem in the words bahupaṭavaḥ,  $uccak\bar{a}ih$  and  $n\bar{\imath}cak\bar{a}ih$  which consist of a stem and a suffix to get the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$ .

Note:—The word bahupaṭavaḥ has for its stem bahupaṭu which is formed with the stem paṭu with the taddhita suffix bahu being prefixed to it by the sūtra Vibhāṣā supō bahuc purastāt tu (5, 3, 68) and the words uccakāiḥ and nīcakāiḥ have for their stems uccaka and nīcaka which are formed from the

stems ucca and nīca by the addition of the taddhita suffix akac by the sūtra Avyayasarvanāmnām akac prāk ca tēķ.

किं पुनरत्र प्रातिपदिकसंज्ञ्या प्रार्थ्यते ?

What is needed here through the pratipadikasamj $\tilde{n}a$ ?

पातिपदिकादिति खाद्यत्पत्तिर्यथा स्याद् इति

So that the case-suffix may be suffixed by the  $s\bar{u}tra\ S \iota \bar{a}ujas$  ...  $sup\ (4,1,2)$  where there is  $adhik\bar{a}ra$  to  $pr\bar{a}tipadik\bar{a}t$  from the  $s\bar{u}tra\ Ny\bar{a}p\ pr\bar{a}tipadik\bar{a}t$  (4, 1, 1).

नेष दोषः ; यथेवात्राप्रातिपदिकत्वात् सुबुत्पत्तिनं भवति एवं छगपि न भविष्यति । तस्र यैवासावन्तर्वर्तिनी विभक्तिः तस्या एव श्रवणं भविष्यति ।

There is no harm here; just as there is no chance for the case-suffix to be suffixed on account of its not being a  $pr\bar{a}tipadika$ , so also the case-suffix is not dropped (by the  $s\bar{u}tra~Avyay\bar{a}d$   $\bar{a}psupah~2, 4, 32$ ). The case-suffix that existed before the whole word was formed is heard.

Note:— $\bar{I}$  şad  $\bar{u}$ nah paṭavah becomes bahupaṭavah and  $ucc\bar{a}ir\ \bar{e}va$  becomes  $uccak\bar{a}ih$ .

नैवं शक्यम् ; स्वरे दोषः स्थात् - बहुपटव इत्येवं स्वरः स्थात् ; बहुपटवं इति च इष्यते ।

This is not possible; in that case the syllable va will become  $ud\bar{a}tta$ ; but it is ta that is  $ud\bar{a}tta$  in the word.

पठिष्यति ह्याचार्यः 'चितः सपक्कतेर्वह्वकजर्थम् ' इति । तस्यां पुनर्छप्तायां यान्या विभक्तिरुत्पचते तस्याः प्रकृत्यनेकदेशत्वाद् अन्तोदात्तत्वं न भविष्यति

Acārya (Vārttikakāra) is going to read the vārttika Citaḥ saprakrtēr bahvajartham under the sūtra Citaḥ 6, 1, 163). There is no chance for the final syllable to become udātta, since the vibhakti that comes after the original vibhakti is dropped does not form a part of the prakrti.

एवं तर्हि आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित, भवति प्रकृतिप्रत्ययसमुदायस्य प्रातिपदिकसंज्ञा इति, यदयम् अपत्यय इति प्रतिषेधं शास्ति, स च तदन्तप्रतिषेधः ।

If so, the procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that the  $samud\bar{a}ya$  of prakrti and pratyaya gets the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$ , since he reads

in the  $s\bar{u}tra$  the word of prohibition apratyaya; and apratyaya means that the  $pratyay\bar{a}nta$  does not get the  $sa\bar{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

Note:—Since the pratyaya bahuc is prefixed, the samudāya has the prakrti at its end and hence it is apratyayānta. So also uccakaih and nīcakaih are apratyayānta, since the pratyaya akac is infixed in the prakrti.

स तर्हि ज्ञापकार्थः प्रत्ययप्रतिषेधो वक्तव्यः

Then the  $pratyayapratis\bar{e}dha$  has to be read (in the form of apratyayah) in the  $s\bar{u}tra$  for the sake of  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ .

ननु चायं प्राप्त्यथींऽपि वक्तव्यः

Oh! it has to be said even for the sake of  $pr\bar{a}pti$  (to those other than  $prayay\bar{a}ntas$ ).

नार्थः प्राप्त्यर्थेन । कृत्तिद्धतम्रहणं नियमार्थं भविष्यति कृत्तिद्धितान्तस्यैव प्रत्यया-न्तस्य प्रातिपदिकसंज्ञा भविष्यति नान्यस्य प्रत्ययान्तस्य इति ।

It is not necessary for the sake of  $pr\bar{a}pti$ . The mention of krt and taddhita is for the sake of niyama, so that  $pr\bar{a}tipadika-samj n\bar{a}$  may happen only to krdanta and  $taddhit\bar{a}nta$  and not to one that ends in any other pratyaya.

स एषोऽनन्यार्थः प्रत्ययप्रतिषेधो वक्तव्यः, प्रकृतिप्रत्ययसमुदायस्य वा प्राति-पदिकसंज्ञा वक्तव्या

Hence the word apratyayah is to be read for the sake of the one purpose of acting as  $j\tilde{n}\tilde{a}paka$  or the  $pr\bar{a}tipadikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  has to be enjoined to the  $samud\bar{a}ya$  of prakrti and pratyaya.

उभयं न वक्तत्र्यम् । तुल्यजातीयस्य नियमः

Both need not be mentioned. The niyama applies only to that which belongs to the same class.

कश्च तुल्यजातीयः? What belongs to the same class? यथाजातीयकानां समासः

That which belongs to those that samāsa takes for its components.

कथंजातीयकानां समासः ?

Which does samāsa take for its components?

#### सुबन्तानाम्

Samāsa is formed of those that end in case-suffixes.

सुप्तिङ्समुदायस्य तर्हि प्रातिपदिकसंज्ञा प्रामोति

If so, prātipadikasamjāā chances to happen to the samudāya of subanta and tinanta.

सुप्तिङ्समुदायस्यापि पातिपदिक संज्ञा आरभ्यते ' जिह कर्मणा बहुलमाभीक्ष्ण्ये कर्तारं चाभिद्धाति <sup>1</sup> ' इति । तित्रयमार्थं भविष्यति एतस्यैव सुप्तिङ्समुदायस्य प्राति-पदिक संज्ञा भवति, नान्यस्य इति

The  $pr\bar{a}tipadikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  is enjoined to the  $samud\bar{a}ya$  of subanta and  $ti\dot{n}anta$  in the supplement Jahi  $karman\bar{a}$  bahulam  $\bar{a}bh\bar{i}ksny\bar{e}$   $kart\bar{a}ram$  ca  $abhidadh\bar{i}ta$ . It serves to restrict that the  $pr\bar{a}ti-padikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  holds good only to that  $samud\bar{a}ya$  of subanta and  $ti\dot{n}anta$  as is mentioned there and to none else.

Note:  $-N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads thus:  $-Bh\bar{a}sy\bar{e}$   $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$   $\bar{a}rabhyat\bar{e}$  ityasya  $tanm\bar{u}labh\bar{u}t\bar{a}$   $sam\bar{a}sasamj\tilde{n}\bar{a}$   $\bar{a}rabhyat\bar{e}$  ityarthah.

ति इसमुदायस्य तिहं प्रातिपदिकसंज्ञा प्रामोति

If so,  $pr\bar{a}tipadikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  chances to happen to the  $samud\bar{a}ya$  of  $ti\dot{n}anta$ .

तिङ्समुदायस्यापि प्रातिपदिकसंज्ञा आरभ्यते 'आख्यातमाख्यातेन कियासातत्ये इति <sup>2</sup> । तिश्वयमार्थे भविष्यति एतस्यैव तिङ्समुदायस्य प्रातिपदिकसंज्ञा भवति नान्यस्य इति ।

The  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$  is enjoined to the  $samud\bar{a}ya$  of tinantas in the supplement  $\bar{A}khy\bar{a}tam\ \bar{a}khy\bar{a}t\bar{e}na\ kriy\bar{a}s\bar{a}t$  ty $\bar{e}$ . It serves to restrict the application of the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$  only to those  $samud\bar{a}yas$  of tinantas that are mentioned there and to none else.

#### III

### अर्थवत्ता नोपपद्यते, केवलेनावचनात्

Arthavattvam is not plausible on account of the incapacity to denote anything by itself.

1. & 2. In the ganapātha under Mayūravyamsakādayaśca (2, 1, 72).

अर्थवत्ता नोपपद्यते वृक्षशब्दस्य

The capacity of having a meaning is not plausible with reference to the stem  $v_1 k_2 a$ .

किं कारणम्? Why?

केवलेन अवचनात् । न केवलेन वृक्षशब्देन अर्थो गम्यते ।

On account of the incapacity to denote anything by itself. No meaning is discerned from the bare stem vrksa.

केन ताहें ? By what then?

सप्रत्ययकेन By that which has a pratyaya attached to it.

## न वा प्रत्ययेन नित्यसम्बन्धात् केवलसाप्रयोगः

No; the non-use of the stem alone on account of its perpetual relationship with pratyaya.

न वैष दोष: This defect does not arise.

किं कारणम्? Why?

प्रत्ययेन नित्यसम्बन्धात् । नित्यसम्बन्धौ एतावर्थौ प्रकृतिः प्रत्यय इति । प्रत्ययेन नित्यसम्बन्धात् केवलस्य प्रयोगो न भविष्यति ।

On account of the perpetual relationship with the pratyaya. The two things—stem and suffix—are perpetually related to each other. Since the stem is perpetually related to the pratyaya, the stem alone can never be used.

अन्यद् भवान् पृष्टोऽन्यद् आचष्टे । आम्रान् पृष्टः कोविदारान् आचष्टे । अर्थवत्ता नोपपद्यते केवलेनावचनाद् इति भवान् अस्माभिश्चोदितः, केवलस्यापयोगे हेतु-माह । एवं च किल नाम कृत्वा चोद्यते समुदायस्यार्थे प्रयोगादवयवानामप्रसिद्धिरिति । You are asked of one and you answer about kōvidāra trees. The objection that arthavattvam is not plausible on account of the incapacity to denote anything by itself is raised by us before you and you give out why it is not used alone. The objection is based on the fact that, since the whole is considered to have meaning, the part is not known to have any meaning.

सिद्धं त्वन्वयव्यतिरेकाभ्याम् It is achieved from anvaya and vyatirēka.

सिद्धमेतत् The object is achieved.

कथम्? How?

अन्वयाद् व्यतिरेकाच From anvaya and vyatirēka.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  explains them thus: -Anvayah=anu-gamah=sati śabdē arthāvagamah. Vyatirēkah= śabdābhāvē tadarthānavagamah.

कोऽसी अन्वयो व्यतिरेको वा ? What is it - anvaya or vyatirēka?

इह वृक्षः इत्युक्ते कश्चिच्छव्दः श्रूयते वृक्षशब्दः अकारान्तः, सकारश्च प्रत्ययः । अर्थोऽपि कश्चिद् गम्यते मूलस्कन्धफलपलाशवान्, एकत्वं च । वृक्षो इत्युक्ते कश्चि-च्छब्दो हीयते, कश्चिदुपजायते, कश्चिद्नवयी - सकारो हीयते, औकार उपजायते, वृक्षशब्द अकारान्तोऽन्वयी । अर्थोऽपि कश्चिद्धीयते, कश्चिदुपजायते, कश्चिदन्वयी - एकत्वं हीयते, द्वित्वमुपजायते, मूलस्कन्धफलपलाशवान् अन्वयी ।

When the word vrksah is read, the stem vrksa ending in a is heard and also the pratyaya s. Certain meaning too is conveyed - one having roots, branches, fruits and leaves—and the idea of being one. When the word vrksau is read, a portion of the original word is omitted, something new is added and the stem remains as it was—s is dropped,  $\bar{a}u$  is added and the stem vrksa ending in a is intact. A portion of the meaning too is discarded, something is newly brought in and a portion remains as it was—The idea of being one is discarded, the idea of being two is newly brought in, and the idea of one having roots, branches, fruits and leaves remains undisturbed.

तेन मन्यामहे, यः शब्दो हीयते तस्यासावर्शो यो हीयते, यः शब्द उपजायते तस्यासावर्शो योर्थ उपजायते, यः शब्दोऽन्वयी तस्यासावर्शो योऽर्थोऽन्वयी इति
From this we infer that the portion of the word which is dropped has for it the meaning which has been discarded, that the newly added portion in the word has for it the meaning which is newly introduced and the portion of the word which remains intact has for it the meaning which remains unchanged.

विषम उपन्यासः । बहवो हि शब्दा एकार्था भवन्ति, तद्यथा - इन्द्रः शकः पुरुहृतः पुरन्दरः, कन्दुः कोष्ठः कुसूल इति । एकश्च शब्दो बह्वर्थः, तद्यथा - अक्षाः पादा माषा इति ।

The argument is not sound. For there are many words which serve as synonyms:—viz. indrah, śakrah, puruhūtah and purandarah; kanduh,  $k\bar{o}$ ṣṭhah and  $kus\bar{u}lah$ . The same word too has many meanings:—viz.  $akṣ\bar{a}h$ ,  $p\bar{a}d\bar{a}h$  and  $m\bar{a}ṣ\bar{a}h$ .

Note:—Indra and the following three words denote the lord of Svarga; kanduh and the following two words denote granary; the word  $ak \dot{s} \bar{a} h$  means axles, dice. etc.; the word  $p\bar{a}d\bar{a}h$  means feet, rays etc.; and  $m\bar{a}\dot{s}ah$  means a bean, a particular weight of gold etc.

अतः किम् १ न साधीयोऽर्थवत्ता सिद्धा भवति ?

What is gained from it? Is not the arthavattā well established?

न ब्र्मः अर्थवत्ता न सिध्यतीति, वर्णिता अर्थवत्ता अन्वयन्थतिरेकाभ्यामेव We do not say that arthavattā is not established; (but we question) whether the arthavattā explained above is only through anvaya and vytirēka.

तत्र कुत एतद्यं प्रकृत्यर्थः, अयं प्रत्ययार्थ इति, न पुनः प्रकृतिरेवं उभावर्थी ब्रूयात्, प्रत्यय एव वा?

What is the authority, then, to decide that this is the meaning of the stem and this is the meaning of the suffix and not to decide that both are the meanings of the stem or the suffix?

सामान्यशब्दा एते एवं स्युः । सामान्यशब्दाश्च नान्तरेण विशेषं प्रकरणं वा विशेषेष्वविद्याने । यतस्तु खल्ल नियोगतो वृक्ष इत्युक्ते स्वभावतः कसिंश्चिद्धे प्रतीति-रुपजायते, अतो मन्यामहे नेमे सामान्यशब्दा इति ; न चेत् सामान्यशब्दाः, प्रकृतिः प्रकृत्यर्थे वर्तते, प्रत्ययः प्रत्ययार्थे ।

In that case these will become  $s\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$ .  $S\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$  cannot have a particular meaning unless it is decided through adjunct or context. Because, on the very mention of the word vrksa, cognition of a certain meaning is naturally

produced in the mind, we think that these are not  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ - $\pm sabdas$ . If they are not  $s\bar{a}m\bar{a}nya\pm abdas$ , stem has its own
meaning and pratyaya has its own.

#### IV

किं पुनरिमे वर्णा अर्थवन्तः, आहोस्विद् अनर्थकाः?

Do, then, these letters have meaning or no?

## वर्णस्यार्थवद्नर्थकत्वे उक्तम्

It has been decided whether letters have meaning or no.

किमुक्तम्? What is the decision?

अर्थवन्तो वर्णा धातुप्रातिपदिकप्रत्ययनिपातानामेकवर्णानामर्थदर्शनाद्, वर्णव्यत्यये चार्थान्तरगमनाद्, वर्णानुपलब्धा चानर्थगतेः, सङ्घातार्थवत्त्वाच, सङ्घातस्यैकार्थत्वात् सुबभावो वर्णात् । अनर्थकास्तु प्रतिवर्णमर्थानुपलब्धेर्वर्णव्यत्ययापायोपजनविकारेप्वर्थ-दर्शनाद् इति ।

Letters have meaning, since there is meaning in one-lettered roots, stems, affixes and  $nip\bar{a}tas$ , since there is change in meaning by the change in letters, since there is absence of that meaning in the absence of one letter, since the collection of letters has meaning and since the collection has one meaning so that case-suffixes are not used after each letter. Letters, on the other hand, have no meaning, since meaning is not had for every letter and the same meaning is present though there is metathesis, elision, augment or substitution of letters.

तत्रेदमपरिहृतं सङ्घातार्थवत्त्वाच ।

There this—Sanghātārthavattvāc ca was left unanswered.

तस्य परिहारः Answer to it.

# सङ्घातार्थवन्त्राचेति चेद् दृष्टो ह्यतदर्थेन गुणेन गुणिनोऽर्थभावः

If it is said that letters have meaning on account of the collection having meaning, it is seen that the whole has meaning unconnected with that of the parts.

सङ्घातार्थवत्त्वाचेति चेद् दृश्यते हि पुनरतदर्थेन गुणेन गुणिनोऽर्थभावः

If it is said that letters have meaning on account of the collection having meaning, it is seen that the whole has meaning not connected with that of the parts.

तद्यथा - एकस्तन्तुः त्वक्त्राणेऽसमर्थः तत्समुदायश्च कम्बलः समर्थः । एकश्च तण्डुलः क्षुत्प्रतिघातेऽसमर्थः तत्समुदायश्च वर्द्धितकं समर्थम् । एकश्च बल्वजो बन्धनेऽ- समर्थः, तत्समुदायश्च रज्जुः समर्था भवति

It is illustrated thus:—One thread is not capable of warding off the cold from the skin, while a woollen cloth made up of many threads is capable of doing it; one particle of rice cannot remove hunger and a varddhitaka which is a collection of the particles of rice can do it. One grass-stem cannot bind (an object), while the rope, which is a collection of grass-stems, can do it.

विषम उपन्यासः The argument is not sound.

भवति हि तत्र या च यावती चार्थमाला; भवति हि कञ्चित् प्रत्येकस्तन्तुः त्वक्त्राणे समर्थः, एकश्च तण्डुलः क्षुत्प्रतिघाते समर्थः, एकश्च बल्वजो बन्धने समर्थः। Sometimes objects serve the purpose singly. Even a thread can ward off the cold from the skin of a certain person, one particle of rice can remove the hunger of a particular person or thing and even a grass-stem can bind certain things.

इमे पुनर्वणाः अत्यन्तमेवानर्थकाः

But these letters have absolutely no meaning.

यथा तर्हि रथाङ्गानि विह्नतानि प्रत्येकं व्रजिकियां प्रत्यसमर्थानि भवन्ति, तत्समुद्रायश्च रथः समर्थः, एवमेषां वर्णानां समुद्राया अर्थवन्तः अवयवा अनर्थका इति । Just as the parts of a chariot when disconnected cannot go from place to place and they, when connected, can go, so also the collections of words have meaning and the parts have no meaning.

Note:—The above topic is dealt with as the fourth topic under the sūtra Hayavarat in the second āhnika in pp. 148—156 of Vol. I.

V

# निपातस्थानर्थकस्य प्रातिपदिकत्वस्

Injunction of prātipadikatva to meaningless nipātas.

निपातस्यानर्थकस्य प्रातिपदिकसंज्ञा वक्तन्या, खञ्जति निखञ्जति, लम्बते प्रलम्बते There is need to enjoin the prātipadikasamijnā to meaningless nipātas like khañjati, nikhañjati, lambatē and pralambatē.

किं पुनरत्र प्रातिपदिकसंज्ञ्या प्रार्थ्यते ?

What is it that is wanted here through prātipadikasamjñā?

प्रातिपदिकाद् इति स्वायुत्पत्तिः, सुबन्तं पदम् इति पदसंज्ञा, पदस्य, पदाद् इति निघातो यथा स्यात्

The possibility of adding the case-suffixes by the  $s\bar{u}tra$   $Sv\bar{a}ujas...(4, 1, 2)$  where there is  $adhik\bar{a}ra$  for  $pr\bar{a}tipadik\bar{a}t$ , of securing  $padasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$  Subantam padam (1, 4, 14) and of securing  $sarv\bar{a}nud\bar{a}ttatva$  through the  $s\bar{u}tras$  where there is  $adhik\bar{a}ra$  to padasya and  $pad\bar{a}t$ .

नैतदस्ति प्रयोजनम् No, this is not the benefit.

सत्यामपि प्रातिपदिकसंज्ञायां स्वाद्यत्पत्तिन प्रामोति

Even though there is  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$ , there is no chance for case-suffixes to be suffixed to them.

किं कारणम्? Why?

न हि प्रातिपदिकसंज्ञायामेव स्वाचुत्पत्तिः प्रतिबद्धा

The appearance of case-suffixes is not restricted only with reference to the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$ .

कि तर्हि ? With reference to what then?

एकत्वादिष्वप्यर्थेषु स्वादयो विधीयन्ते, न चैषामेकत्वादयः सन्ति

The case-suffixes are enjoined even with reference to the meaning of oneness etc. and the numbers have nothing to do with them.

नैष दोषः । अविशेषेणोत्पद्यन्ते ; उत्पन्नानां नियमः क्रियते

This difficulty does not arise. They are attached to the stems irrespective of their giving the meaning of oneness etc. Restriction in their meaning is done after they are attached.

### अथ वा प्रकृतानर्थानपेक्ष्य नियमः

Or the niyama in the choice of case-suffixes is adopted according to the contextual meaning.

के च प्रकृताः? What do come under contextual meaning?

एकत्वादयः । एकसिन्नेवार्थ एकवचनं, न द्वयोनं बहुषु ; द्वयोरेवार्थयोद्विवचनं, नैकसिन्न बहुषु ; वहुष्वेवार्थेषु बहुवचनं, नैकसिन्न द्वयोरिति ।

Oneness etc. Singular-number-suffix is used only to denote oneness and not to denote twoness or manyness; dual-number-suffix is used only to denote twoness and not oneness or manyness; and plural-number-suffix is used to denote manyness and not oneness or twoness.

अथ वा आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित अनर्थकानामप्येतेषां भवत्यर्थवत्कृतिमिति, यद्यं "अधिपरी अनर्थको " इत्यन्थकयोगित्युपसर्गसंज्ञाबाधिकां कर्मप्रवचनीयसंज्ञां शास्ति Or the procedure of  $Ac\bar{a}rya$  ( $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ ) suggests that even these nirarthakas may behave like  $s\bar{a}rthakas$ , since he reads the  $s\bar{u}tra$   $Adhipar\bar{\iota}$  anarthak $\bar{a}u$  (1, 4, 93) enjoining  $karma_{\bar{\iota}}$  ravacan $\bar{\iota}$  ravacaniyasamij $\bar{n}\bar{a}$  setting at naught the  $samij\bar{n}\bar{a}s$  of gati and upasarga.

Note:—Mahābhāṣyakāra tells us in the bhāṣya under the sūtra Adhiparī anarthakāu that these nipātas are dhātvarthā-nuvādakas.¹ Hence Kāiyaṭa here says 'Na tu sarvātmanā arthābhāvāt.' Nāgōjibhaṭṭa adds 'Anēna ca jñāpakēna vārttikam pratyākhyāyatē.

#### VI

किं पुनरयं पर्युदासो यदन्यत् प्रत्ययादिति, आहोस्वित् प्रसज्यायं प्रतिषेधः प्रत्ययो न इति ?

Is this (apratyayah) paryudāsa so that it may mean one other than pratyaya or prasajyapratiṣēdha so that it may mean pratyaya is not?

कश्चात विशेषः ? What will be the difference here? अप्रत्यय इति चेत्तिवकादेशे प्रतिपेधोऽन्तवन्वात्

#### 1. धातुना उक्तां कियामाहतु:

(Need for)  $pratis\bar{e}dha$  in places where there is  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of tip, it being considered to be the end, if it is taken as  $paryud\bar{a}sa$ .

अप्रत्यय इति चेत् तिबेकादेशे प्रतिषेधो वक्तव्यः, काण्डे कुड्ये

If it is taken as  $paryud\bar{a}sa$ , there is need to prohibit the  $pr\bar{a}tipadikasamj\tilde{n}\bar{a}$  when tip takes  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}sa$  with the preceding letter, as in the words  $k\bar{a}nd\bar{e}$  and  $kudy\bar{e}$ .

Note:—Tip is the  $praty\bar{a}h\bar{a}ra$  from ti of the  $s\bar{u}tra$  Tiptas-jhi...(3, 4, 78) to p of the  $s\bar{u}tra$   $Sv\bar{a}ujas...(4, 1, 2)$ ; (i. e.) it means verbal terminations and case-suffixes.

किं कारणम् ? Why?

अन्तवत्त्वात् - तिबतिपोरेकादेशोऽतिपोऽन्तवत्स्यात् । अस्त्यन्यत्तिप इति कृत्वा प्रातिपदिकसंज्ञा प्रामोति

On account of its being the final—The  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of tip and atip may be considered the final letter of the atip. Considering it to be one other than tip, there is chance for  $pr\bar{a}tipadika-sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  to appear there.

अस्तु तर्हि प्रसज्यप्रतिषेधः, प्रत्ययो न इति

Then let it be prasajyapratiṣēdha in the sense pratyaya is not.

### न प्रत्यय इति चेद्ङेकादेशे प्रतिषेध आदिवन्वात

If it is taken in the sense of 'pratyaya is not', the pratisēdha operates when there is  $\bar{\epsilon}k\bar{a}d\bar{\epsilon}\dot{s}a$  of  $\bar{u}\dot{n}$ , it being considered to be the initial.

न प्रत्यय इति चेदूङेकादेशे प्रतिषेधः प्रामोति, ब्रह्मबन्धूः

If it is taken in the sense of 'pratyaya is not', the pratiṣēdha chances to operate where the pratyaya ūn takes ēkādēśa with the preceding letter, as in the word brahmabandhūh.

Note:—The strīpratyaya  $\bar{u}\dot{n}$  is added to the word brahmabandhu by the sūtra  $\bar{U}\dot{n}$  utah (4, 1, 66).

किं कारणम्? Why?

आदिवत्त्वात् - प्रत्ययाप्रत्ययोरेकादेशः प्रत्ययस्यादिवत्स्यात् । तत्र प्रत्ययो न इति प्रतिषेधः प्रामोति । On account of its being the initial—The  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}sa$  between pratyaya and apratyaya may be considered the  $\bar{a}di$  of the pratyaya. The pratisedha chances to operate there by taking it to mean 'pratyaya is not.

किं पुनरत्र प्रातिपदिकसंज्ञया प्रार्थ्यते ?

What is desired here through prātil adikasamjñā?

प्रातिपदिकाद् इति स्वाद्यस्पत्तिर्यथा स्यात्

So that the case-suffixes may be added by the  $s\bar{u}tra\ Sv\bar{a}ujas ...$  where there is  $adhik\bar{a}ra$  for  $pr\bar{a}ti_kadik\bar{a}t$ .

नैष दोषः । आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित उत्पद्यन्ते ऊङन्तात् स्वादय इति, यदयं नोङ्धात्वोः इति विभक्तिस्वरस्य प्रतिषेधं शास्ति

This difficulty does not arise. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  ( $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ ) suggests that case-suffixes come after  $\bar{u}nanta$ , since he prohibits the vibhaktisvura ( $ud\bar{a}ttatva$ ) by the  $s\bar{u}tra$   $N\bar{o}ndh\bar{a}tv\bar{o}h$  (6, 1, 175).

अथ वा द्वे ह्यत्र प्रातिपदिकसंज्ञे, अवयवस्यापि समुदायस्यापि । तत्रावयवस्य या प्रातिपदिकसंज्ञा तया अन्तवद्भावात् स्वाद्युत्पत्तिभविष्यति ।

Or there are two  $pr\bar{a}ti_{k}$  adikasa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}s$  here, one to the part and one to the whole. Case-suffixes are added here on the strength of the  $pr\bar{a}tipadikasa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  of the avayava through  $antavadbh\bar{a}va$ .

### सुब्लोपे च प्रत्ययलक्षणत्वात्

On account of pratyayalakṣaṇatva when there is elision of sup too.

सुब्लोपे च प्रत्ययलक्षणेन प्रतिषेधः प्रामोति - राजा, तक्षा । प्रत्ययलक्षणेन प्रत्ययो न इति प्रतिषेधः प्रामोति ।

When there is elision of case-suffix, there is chance for the  $pratis\bar{e}dha$  through the dictum  $Pratyayal\bar{o}p\bar{e}$  pratyayalakṣaṇam as in  $r\bar{a}j\bar{a}$  and  $takṣ\bar{a}$ . The  $prasajyapratis\bar{e}dha$ —that pratyaya is not—chances to operate through pratyayalakṣaṇa.

नैष दोषः । आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति न प्रत्ययलक्षणेन प्रतिषेधो भवति इति, यद्यं न डिसम्बुद्धयोः इति प्रतिषेधं शास्ति । This difficulty does not arise. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  ( $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ ) suggests that the  $pratis\bar{e}dha$  through pratyayalak-sana does not operate, since he enjoins  $pratis\bar{e}dha$  in the  $s\bar{u}tra$  Na  $nisambuddhy\bar{o}h$  (8, 2, 8).

अथ वा पुनरस्तु पर्युदासः Or let it be paryudāsa itself.

ननु चोक्तम् "अवत्यय इति चेतिनेकादेशे प्रतिषेधोऽन्तवत्त्वाद् इति Oh it has been said that, if it is taken as  $paryud\bar{a}sa$ , there is need for the mention of the  $pratis\bar{e}dha$  with reference to the  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}sa$  of tip, it being considered final.

प्रसज्यप्रतिषेधेऽप्येष दोषः । द्वे ह्यत प्रातिपदिकसंज्ञे अवयवस्थापि समुदाय-स्थापि । गृह्यते च प्रातिपदिकाप्रातिपदिकयोः एकादेशः प्रातिपदिकप्रहणेन The same difficulty arises in prasajyapratisēdha also. There are two here which have the prātipadikasamijnā, the avayava and the samudāya. Ēkādēśa of prātipadika and aprātipadika is taken into account through the mention of prātipadika.

तसादुभाभ्यामपि वक्तव्यं स्यात् इस्वो नपुंसके यत्तस्य इति
Hence this is to be said that what holds good with reference
to the hrasvatva in napuinsaka holds good in the two cases here.

Note:—Just as the mention of the word prātipadikasya in the sūira Hrasvō napumsakē prātipadikasya (1, 2, 47) suggests that one should take the mukhya-prātipadika, so also here mukhya-prātipadika alone should be taken into account.

किं च नपुंसके?

What is here referred to by the expression—like the napumsa-kalinga?

नपुंसकं यस्य गुणः That whose guṇa is napumsakatvam. कस्य च नपुंसकं गुणः Whose guṇa is then napumsakatvam? प्रातिपदिकस्य Of prātipadika.

### कृत्तद्धितसमासाश्च (1, 2, 46)

समासत्रहणं किमर्थम्? What for is the mention of samāsa? समासत्रहण उक्तम्

It has been said with reference to the mention of samāsa.

किमुक्तम? What has been said?

अर्थवत्समुदायानां समासग्रहणं नियमार्थमिति

Mention of  $sam\bar{a}sa$  is to restrict the application of the  $sam\tilde{n}j\bar{a}$  among collection of words having meaning (p 85).

## हस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य (1, 2, 47)

प्रातिपदिकग्रहणं किमर्थम् ?

What for is the mention of prātipadikasya in the sūtra?

# नपुंसकहस्वत्वे प्रातिपदिकग्रहणं तिब्निवृत्त्यर्थम्

Mention of  $pr\bar{a}tipadikasya$  in the  $s\bar{u}tra\ Hrasv\bar{o}$  ... (1, 2, 47) is to preclude tip from its application.

नपुंसकहस्वत्वे प्रातिपदिकग्रहणं कियते

Mention is made of the word prātipadikasya in the sūtra Hrasvō... prātipadikasya.

तिबिनवृत्त्यर्थम् - तिबन्तस्य हस्वत्वं मा मूत्, काण्डे, कुड्ये, रमते ब्राह्मणकुरुम् इति

For the sake of precluding tip—so that shortening may not happen to that which ends in tip, as  $k\bar{a}nd\bar{e}$ ,  $kudy\bar{e}$  and  $ramat\bar{e}$  in  $ramat\bar{e}$   $br\bar{a}hmanakulam$ .

अव्ययप्रतिषेधः Prohibition in avyayas.

अव्ययानां प्रतिषेधो वक्तव्यः

Prohibition has to be done with reference to avyayas.

इह मा भूत् - दोषा ब्राह्मणकुलम्, दिवा ब्राह्मणकुलम् इति

So that shortening may not take place in the words  $d\bar{o}s\bar{a}$  and  $div\bar{a}$  in  $d\bar{o}s\bar{a}$   $br\bar{a}hmanakulam$  and  $div\bar{a}$   $br\bar{a}hmanakulam$  (since  $d\bar{o}s\bar{a}$  and  $div\bar{a}$  are in apposition with  $br\bar{a}hmanakulam$ ).

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads thus:— $D\bar{o}$ ṣ $\bar{a}$ sahacaritatv $\bar{a}d$  br $\bar{a}$ hmanakulam  $\bar{e}$ va d $\bar{o}$ ṣ $\bar{a}$ śabd $\bar{e}$ na ucyat $\bar{e}$  iti hrasvaprasangah.

स तर्हि वक्तव्यः It then has to be read.

न वक्तव्यः । नात्र अव्ययं नपुंसके वर्तते

No, it need not; avyaya, here, is not in apposition with  $napu\dot{m}$ - $sak\bar{a}nta$ .

किं तर्हि? What then?

अधिकरणमत्र अन्ययं नपुंसकस्य

Avyaya here is the adhikarana of napumsakānta.

Note: Kāiyaṭa reads thus: Dōṣāśabdō rātrāvityarthē vartatē; divāśabdōspi ahanītyatra iti brāhmaṇakulasādhanānām kriyāṇām adhikaraṇam kālō bhavan brāhmaṇakulasya adhikaranam bhavati.

इह तर्हि प्राप्नोति काण्डीभूतं वृषलकुलं, कुड्यीभूतं वृषलकुलम् इति

Here, then, it (shortening) chances to come—in  $k\bar{a}nd\bar{i}bh\bar{u}tam$  and  $kudy\bar{i}bh\bar{u}tam$  in the expressions  $k\bar{a}nd\bar{i}bh\bar{u}tam$  vrsalakulam and  $kudy\bar{i}bh\bar{u}tam$  vrsalakulam.

न वा लिङ्गाभावात् No, on account of the absence of linga.

न वा वक्तव्यम् No, it need not be mentioned.

किं कारणम्? Why?

लिङ्गाभावात् - On account of the absence of linga.

अलिङ्गम् अन्ययम् Avyaya has no linga.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  reads:  $-Asattvav\bar{a}citv\bar{a}d$  avyayasya na tēna lingam pratipādyatē.

किं पुनरयम् अव्ययस्यैव परिहारः आहोस्वित् तिबन्स्यापि परिहारः ?

Does this serve as parihāra to avyaya alone or to tibanta also? तिबन्तस्यापि इत्याह "To tibanta also", says he.

कथम् ! How?

अन्ययं हि किञ्चिह्रिभक्तयर्थप्रधानं किञ्चित्कियाप्रधानम् । उचैः नीचैः इति विभक्तयर्थप्रधानम् ; हिरुक् पृथग् इति क्रियाप्रधानम् । तिबन्तं चापि किञ्चिद् विभक्तयर्थप्रधानं किञ्चित् कियाप्रधानम् । काण्डे कुड्ये इति विभक्तयर्थप्रधानं, रमते ब्राह्मणकुरुमिति कियाप्रधानम् ।

1. The prkrti of kāndī is akāndam and kāndam and both are napumsaka.

For some avyayas prominently express the meaning of cases and some, the action. The words  $ucc\bar{a}ih$  and  $n\bar{i}c\bar{a}ih$  are vibhaktyarthapradhāna and the words hiruk and prihak are kriyāpradhāna. Some tibantas too are vibhaktyarthapradhāna and some are kriyāpradhāna. The words  $k\bar{a}nd\bar{e}$  and  $kudy\bar{e}$  are vibhaktyarthapradhāna and the word ramatē in ramatē brāhmaņa-kulam is  $kriy\bar{a}pradh\bar{a}na$ .

#### न चैतयोरर्थयोर्छिङ्गसङ्ख्याभ्यां योगोऽस्ति

These two things (avyaya and tibanta) have no sambandha with linga and  $sankhy\bar{a}$  (number).

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads here thus:— $Pr\bar{a}y\bar{e}na$  iti śeṣah• Tatra avyayārthasya kānḍē ityādēś ca ubhayāyōgah, ramatē ityādēh liṅgāyōga iti bōdhyam.

अवश्यं चैतदेवं विज्ञेयम्

This is necessarily to be so understood.

क्रियमाणेऽपि हि प्रातिपदिकप्रहणे इह प्रसज्येत, काण्डे कुड्ये। द्वे ह्यत्र प्रातिपदिकसंज्ञे, अवयवस्यापि समुदायस्यापि। गृह्यते च प्रातिपदिकाप्रातिपदिकयोरेका-देशः प्रातिपदिकप्रहणेन। तसादुभाभ्यामिति वक्तव्यं स्यात्, हस्वो नपुंसके यत्तस्य इति Even though the word prātipadikasya is read in the sūtra, it chances to come in kāṇḍē and kuḍyē; for there are two which get the prātipadikasaṁjñā, the avayava and the samudāya and the ēkādēśa between prātipadika and aprātipadika is taken into account through the mention of prātipadika. Hence it should be said that what holds good with reference to hrasvatva in napumsaka holds good in the two cases here.

किं च नपुंसके?

What is here referred to by the expression—like the napumsa-kalinga?

नपुंसकं यस्य गुणः That whose guṇa is napumsakatvam. कस्य च नपुंसकं गुणः Whose guṇa is then napumsakatvam? प्रातिपदिकस्य Of prātipadika.

Note:  $-K\bar{a}iyața$  reads here thus:  $-S\bar{u}trak\bar{a}r\bar{e}na$  tu pratipadikagrahanam mukhyapratipadikaparigrahartham kṛtam.

### यञेकादेशद्धिंन्वेषु प्रतिषेधः

(Need for) the pratisēdha with reference to the dīrgha and ētva of  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}sa$  before sup beginning with any letter of the pratyāhāra yañ.

यञेकादेशदीर्धेत्त्वेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः, युगवरत्राय युगवरत्रार्थं युगवरत्रेभ्यः

Prohibition should be stated with reference to the  $d\bar{\imath}rgha$  and  $\bar{\imath}tva$  of  $\bar{\imath}k\bar{a}d\bar{\imath}sa$  before sup beginning with any letter of the  $praty\bar{a}h\bar{a}ra$   $ya\tilde{n}$ , as in  $yugavaratr\bar{a}ya$ ,  $yugavaratr\bar{a}rtham$  and  $yugavaratr\bar{\imath}bhyah$ .

### यञेकादेशदीर्वैत्त्वेषु बहिरङ्गलक्षणत्वातिसद्धम्

It is achieved on account of the  $d\bar{\imath}rgha$  and  $\bar{\imath}tva$  of  $\bar{\imath}k\bar{a}d\bar{\imath}sa$  before  $ya\tilde{n}$  being bahiranga.

बहिरङ्गा एते विधयः, अन्तरङ्गं हस्वत्वम् । असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे

These vidhis (enjoining dīrgha and ētva) are bahiranga and the sūtra enjoining hrasvatva is antaranga and bahiranga is considered to be non-existent when antarangasūtra operates.

#### उपसर्जनहरूवत्वे च

With reference to the hrasvatva of upasarjana also.

किम्? What?

यञेकादेशदीर्घेत्त्वेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः अतिखद्वाय, अतिखद्वार्थम्, अतिखट्वेभ्यः

Prohibition should be stated with reference to the  $d\bar{\imath}rgha$  and  $\bar{e}tva$  of  $\bar{e}k\bar{a}d\bar{e}\acute{s}a$  of the upasarjanahrasva before sup commencing with any letter of the  $praty\bar{a}h\bar{a}ra$   $ya\tilde{n}$ .

उपसर्जनहस्वत्वे च Even with reference to upasarjanahrasva.

किम्? What?

बहिरङ्गलक्षणत्वात् सिद्धमित्येव । बहिरङ्गा एते विधयः, अन्तरङ्गं हस्वत्वम् । असिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे

It is achieved of their being bahiranga. These vidhis are bahiranga and hrasvatvam is antaranga and bahiranga is asiddha before antaranga sāstra.

# गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य (1, 2, 48)

 $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  suggests one alteration in the  $s\bar{u}tra$  and four additions to it and  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  opines that all but the first addition suggested are unnecessary and arrives at their result in other ways.

### गोटाङ्ग्रहणं कुन्निवृत्यर्थम्

Mention of gōṭān in the sūtra is to avoid krtpratyaya.

गोटाङ्ग्रहणं कर्तव्यम्

It is necessary to read goṭānoḥ in the sūtra in place of gostriyoḥ.

किमिदं टाङ् इति? What is this—ṭān?

प्रत्याहारप्रहणम् It is a pratyāhāra.

क सन्निविष्टानां प्रत्याहारः? Of whose pratyāhāra is it?

टापः प्रभृति आ प्यङो ङकारात्

From  $t\bar{a}$  in  $t\bar{a}p$  (in the  $s\bar{u}tra$   $Aj\bar{a}dyatas$   $t\bar{a}p$  4, 1, 4) to  $\dot{n}$  in  $sya\dot{n}$  (in the  $s\bar{u}tra$   $Ani\tilde{n}\bar{o}h$  ...  $sya\dot{n}$   $g\bar{o}tr\bar{e}$  4, 1, 78).

किं प्रयोजनम्? What is the use of the alteration?

कृत्निवृत्त्यर्थम् - कृत्स्त्रिया धातुस्त्रियाश्च हस्वत्वं मा भूत् इति अतितन्त्रीः, अतिश्रीः, अतिलक्ष्मीः इति

So that the kṛtpratyayas denoting strītva may be avoided—So that the kṛtpratyayas and dhātupratyayas which denote strītva need not be shortened, in atitantrīḥ, atiśrīḥ and atilakṣmīḥ.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says that, since  $dh\bar{a}tustr\bar{\imath}pratyayas$  too are krtpratyayas,  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  mentioned only krt in the  $v\bar{a}rttika$  and  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  explains it as  $krtstriy\bar{a}h$  and  $dh\bar{a}tustriy\bar{a}h$ .

. तत्ति वक्तव्यम् It, then, should be read.

न वक्तव्यम् No, it need not.

स्त्रीग्रहणं स्वरियण्यते । तत्र स्वरितेनाधिकारगतिर्भवति । स्त्रियाम् इत्येवं प्रकृत्य ये विहिताः तेषां ग्रहणं विज्ञास्यते ।

The word  $str\bar{\imath}$  in the  $s\bar{\imath}tra$  is read with svaritasvara. Through svarita, it will be suggested that there is  $adhik\bar{a}ra$ . From it, it will be understood that only those pratyayas are taken into account which are read after the  $adhik\bar{a}ras\bar{\imath}tra$   $Striy\bar{a}m$  (6, 1, 3).

स्वरितेनाधिकारगतिर्भवतीति न दोषो भवति । यद्येवं प्रत्ययग्रहणिनदं भवति ; तत्र प्रत्ययग्रहणे यस्मात् स तदादेर्प्रहणं भवतीति इह न प्राप्नोति, अतिराजकुमारिः अतिसेनानीकुमारिः इति ।

It will be free from defect when the pratyayas are taken into account which are read after the adhikārasūtra Striyām through svaritatva. But if it is taken in that manner, it will come under the adhikāra of the sūtra Pratyayaḥ (3, 1, 1); consequently on the strength of the dictum 'Pratyayagrahaṇē yasmāt sa tadādēr grahaṇam bhavati' shortening will not take place in the words ati-rāja-kumāriḥ and ati-sēnānīkumāriḥ.

#### अस्त्रीप्रत्ययेन इत्येवं तत्

Shortening takes place since that dictum is concerned only with pratyayas other than strīpratyaya.

# ईयसो बहुत्रीहौ पुंबद्धचनम्

Need for pumvadbhāva with reference to īyas in bahuvrīhi.

ईयसो बहुत्रीहो पुंवद्भाबो वक्तव्यः - बह्वयः श्रेयस्यः अस्य बहुश्रेयसी, विद्यमान-श्रेयसी ।

There is need for pumvadbhāva with reference to īyas in bahuvrīhi, so that shortening may not take place in bahuśrēyasī whose vigrahavākya is bahvyaḥ śrēyasyaḥ asya and in vidyamānaśrēyasī.

# पूर्वपदस्य च प्रतिषेघो गोसमासनिवृत्त्यर्थम्

Pratisēdha of  $p\bar{u}rvapada$  too for the sake of avoiding the operation of the rule in  $g\bar{o}$  and  $sam\bar{a}sa$ .

#### पूर्वपदस्य च प्रतिषेधो वक्तव्यः

There is need to prohibit the operation of the rule with reference to  $p\bar{u}rvapada$ .

कि प्रयोजनम् ? Why?

गोसमासानिवृत्त्यर्थम्, गोनिवृत्त्यर्थं समासनिवृत्त्यर्थं च For the sake of avoiding the operation in gō and samāsa.

गोनिवृत्त्यर्थ तावत् - गोकुलं; गोक्षीरं, गोपालक इति Firstly for the sake of avoiding the shortening in  $g\bar{o}$  in the words  $g\bar{o}kulam$ ,  $g\bar{o}k\bar{s}\bar{i}ram$  and  $g\bar{o}p\bar{a}lakah$ .

समासनिवृत्त्यर्थम् - राजकुमारीपुत्रः, सेनानीकुमारीपुत्र इति
For the sake of avoiding the shortening in samāsa in the words
rāja-kumārī-putraḥ and sēnānī-kumārī-putraḥ.

किमुच्यते समासनिवृत्त्यर्थिमिति, न पुनरसमासोऽपि किञ्चित्पूर्वपदं यदर्थः प्रतिषेधः स्थात् ?

Why is it said samāsanivrttyartham? Is there not pūrvapada in asamāsa which should be free from the operation of this rule?

स्त्रयन्तस्य प्रातिपदिकस्योपसर्जनस्य ह्रस्वो भवतीत्युच्यते । न चान्तरेण समासं स्त्रयन्तं प्रातिपदिकमुपसर्जनमस्ति ।

It is said that shortening takes place to the prātipadika which has at its end strīpratyaya which is upasarjana and stryanta-prātipadika is not upasarjana unless it is in samāsa.

ननु चेदमस्ति खट्टापादो मालापाद इति । एकादेशे कृते अन्तादिवद्भावात् प्राम्नोति

Oh! there is this—khaṭvāpādaḥ and mālāpādaḥ. After ēkādēśa is done, it chances to come through antādivadbhāva.

उभयत आश्रयणे नान्तादिवत्

 $Ant\bar{a}divadbh\bar{a}va$  cannot be resorted to, since both ( $pr\bar{a}tipadikam$  and  $str\bar{i}pratyaya$ ) are taken into account.

Note:  $K\bar{a}iyaṭa$  reads: Yadi  $pr\bar{a}tipadikasya$  antavat tadā  $str\bar{i}pratyayaḥ$   $par\bar{o}$   $n\bar{a}sti$ ; atha  $str\bar{i}pratyayasya$   $\bar{a}divat$  tadā  $pr\bar{a}ti$ - $padikatv\bar{a}bh\bar{a}vaḥ$ .

गोनिवृत्त्यर्थेन तावात्रार्थः, गोन्तस्य पातिपदिकस्योपसर्जनस्य हस्वो भवतीत्युच्यते, न चैतदु गोन्तम्

Firstly there is no use of saying gonivrttyartha; for it is said that shortening takes place to the prātipadika which is upasarjana and which is gonta and this is not gonta.

ननु चैतदपि व्यपदेशिवद्भावेन गोन्तम्

Oh! this too may be gonta through vyapadēśivadbhāva.

व्यपदेशिवद्भावोऽपातिपदिकेन

Vyapadēśivadbhāva is not with reference to prātipadika.

समासनिवृत्त्यर्थेन चापि नार्थः

There is no use of saying samāsanivrttyartha too.

स्त्रयन्तस्य प्रातिपदिकस्योपसर्जनस्य इस्वो भवतीत्युच्यते । प्रधानमुपसर्जनमिति च सम्बन्धिशब्दावेतौ । तत् सम्बन्धादेतद् गन्तव्यं 'यं प्रति यदप्रधानं तस्य चेत् सोऽन्तो भवतीति ।

It is said that shortening takes place to the  $pr\bar{a}tipadika$  which is upasarjana and stryanta. The words  $pradh\bar{a}nam$  and upasarjanam are related ones. Hence this is to be understood through sambandha that it takes place if it becomes the anta of that in relation to which it is  $apradh\bar{a}na$ .

अवश्यं चैतदेवं विज्ञेयम्

This is to be necessarily so understood.

उच्यमानेऽपि हि प्रतिषेध इह प्रसज्येत पञ्च कुमार्यः पिया अस्य पञ्चकुमारी-प्रियः, दशकुमारीपियः

Even if pratiṣēdha is mentioned, it chances to come in pañca-kumārī-priyaḥ whose vigrahavākya is pañca kumāryaḥ priyā asya and daśakumārīpriyaḥ.

कपि च With reference to the pratyaya kap too.

कपि च प्रतिषेधो वक्तव्यः - बहुकुमारीकः, बहुवृषलीकः

There is need for prohibition with reference to kap, so that shortening may not take place in bahukumārīkaḥ and bahuvrṣalīkaḥ.

इन्द्रे च With reference to dvandva too.

द्वन्द्वे च प्रतिषेधो वक्तव्यः, कुवकुटमयूर्यी

There is need for prohibition with reference to dvandva so that shortening may not take place in  $kukkutamay\bar{u}ry\bar{a}u$ .

¹ उक्तं वा It has been answered.

किमुक्तम्? How has it been answered?

किप तावदुक्तं 'न किप ' इति प्रतिषेधः इति

It has been said with reference to kap that pratiṣēdha is mentioned in the  $s\bar{u}tra\ Na\ kapi$  (7, 4, 14).

नैतदस्त्युक्तम्  $^2$  । केऽणः इति या ह्रस्वप्राप्तिः तस्याः प्रतिषेध इति । It cannot be said that it has been answered. The  $s\bar{u}tra$  Na kapi (7, 4, 14) prohibits the shortening enjoined in the  $s\bar{u}tra$   $K\bar{e}snah$  7, 4, 13).

कुत एतत्? On what authority is it so taken? अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा इति

By the dictum which says that vidhi or pratisēdha has reference only to that which is in the immediate neighbourhood.

अवश्यं चैतदेवं विज्ञेयम् । यो हि मन्यते या च यावती च हत्वप्राप्तिस्तस्याः सर्वस्याः प्रतिषेध इति, इहापि तस्य प्रतिषेधः प्रसज्येत - प्रियं प्रामणि ब्राह्मणकुलम् अस्य प्रियग्रामणिकः, प्रियसेन।निकः

It is necessarily to be so understood. If one thinks that the sūtra Na kapi operates to prohibit the shortening which takes place through the influence of all sūtras which enjoin it, it chances to operate even here in priya-grāmaṇikaḥ whose vigrahavākya is priyam grāmaṇi brāhmaṇakulam asya and in priyasēnānikaḥ.

इदं तर्हि उक्तम्, किप कृते अनन्त्यत्वात् ह्रस्वत्वं न भविष्यति
This is then said that after kap comes in (by the sūtra

Nadyrtaś ca (5, 4, 153), there is no chance for the shortening, since it is not final.

इदिमिह सम्प्रधार्यम् - कप् क्रियतां, हस्वत्वम् इति

This is, here, to be decided, whether kap first comes in or shortening.

किमत्र कर्तव्यम् ? Which is to precede here?

- 1. This is a vārttika in the Bombay edition.
- 2. एतद् उक्तम् इति नास्ति is the anvaya.

परवात् ऋष् Kap comes in since the sūtra enjoining it is para.

अन्तरक्षं हस्वत्वम्

Shortening is antaranga (and hence the  $s\bar{u}tra$  enjoining it should have precedence in operation).

अन्तरङ्गतरः कप्

The  $s\bar{u}tra$  enjoining kap is antarangatara (and hence the  $s\bar{u}tra$  enjoining it should have precedence in operation).

Note: Kāiyaṭa here says: Avayavāpēkṣatvāt kapaḥ samudāyāpēkṣō hrasvō bahiraṅgaḥ Nagōjibhaṭṭu supplements it thus: Avayavāpēkṣatvāt ityasya avayavagataprātipadikasaṅjñā-pēkṣatvād ityarthaḥ... Samudāyāpēkṣa ityasya samudāyagata-prātipadikatvāpēkṣa ityarthaḥ. Ēvañ ca samāsasaṅjñāpēkṣasamu-dāyagataprātipadikāt pūrvam ēva samāsānta iti antaraṅgatara iti bhāvah.

¹ ननु चायं कप् समासान्त इत्युच्यते

Oh, this kap is said to be the avayava of samāsa.

तादर्थात् ताच्छब्धं भविष्यति

It is so said since it is intended for it.

येषां पदानां समासः न तावत्तेष।मन्यद् भवति, कपं तावत् प्रतीक्षते Nothing else comes in to the words which compound into a samāsa and it expects kap.

द्वन्द्वेऽप्युक्तम्

It has been answered even with reference to dvandva.

किमक्तम ? How has it been answered?

परविश्वक्षिक्षमिति शब्दशब्दार्थौ <sup>2</sup> इति । तत्र औपदेशिकस्य ह्रस्वत्वम् आति-देशिकस्य श्रवणं भविष्यति ।

It has been said—paravat lingam śabdaśabdārthāu and hence shortening takes place to upadiṣṭa (what is read) and the same form remains without its being shortened to atidiṣṭa (what is got through analogy).

- 1. न चायं कप् is another reading.
- 2. This is a vārttika under 2-4-26.

# खक्तद्वितखिक (1, 2, 49)

#### ताद्वितळुक्यवन्त्यादीनां प्रतिषेधः

(Need for) the pratisēdha of avantī etc. at taddhita-luk.

तद्धितल्लक्यवन्त्यादीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः, अवन्ती, कुन्ती, कुरूः

There is need to enjoin the pratisēdha when there is elision of taddhita-pratyaya with reference to avantī, kuntī, kurūḥ.

Note:—The words avantī and kuntī take  $\tilde{n}ya\dot{n}$  by the  $s\bar{u}tra\ Vrddhēt$ - $k\bar{o}sal\bar{a}j\bar{a}d\bar{a}\tilde{n}\ \tilde{n}ya\dot{n}$  (4, 1, 171) and kuru takes  $\dot{n}ya$  by the  $s\bar{u}tra\ Kurun\bar{a}dibhy\bar{o}\ nya\dot{n}$  (4, 1, 172) and both  $\tilde{n}ya\dot{n}$  and nya are dropped by the  $s\bar{u}tra\ Striy\bar{a}m\ avanti-kunti-kurubhyaś ca$  (4, 1, 176) and they take  $\dot{n}\bar{\imath}s$  by the  $s\bar{u}tra\ It\bar{o}\ manusyaj\bar{a}t\bar{e}h$  (4, 1, 65) and  $\bar{u}\dot{n}$  by the  $s\bar{u}tra\ \bar{U}\dot{n}\ utah$  (4, 1, 66).

#### तद्धितळुक्यवन्त्यादीनामप्रतिषेधोऽळुक्परत्वात्

Non-need of pratisēdha of avantī etc. with reference to taddhitaluk, on account of their not being followed by luk.

तद्धितल्लिक अवन्त्यादीनाम् अप्रतिषेधः

Non-need of pratisēdha of avantī etc. at taddhita-luk.

अनर्थकः प्रतिषेधः अप्रतिषेधः

The word apratisēdha means non-need of pratisēdha.

छुक् कसान्न भवति ? Why does not luk set in?

अलुक्परत्वात् । लुकि इत्युच्यते, न चात्र लुकं पश्यामः

On account of its not being followed by luk. There is the word luki in the  $s\bar{u}tra$  and we do not see any luk here.

Note:—The strīpratyayas have come here only after the elision of taddhitapratyaya and not before it.

लुकि इति नेषा परसप्तमी शक्या विज्ञातुम् । न हि लुका पौर्वापर्यमस्ति । The word luki need not be interpreted to be parasaptamī; for there is no pāurvāparya in association with luk.

का तर्हि ? What then ?

सत्सप्तमी, छुकि सति इति

It is sat-saptamī in the sense of luki sati.

सत्सप्तमी चेत् प्रामोति

If it is sat-saptamī, there is need for pratiṣēdha.

एवं तर्हि इदिमह व्यपदेश्यं सद् आचार्यो न व्यपदिशति

When there is thus need for the mention of it,  $\bar{A}c\bar{a}rya$  does not mention it.

किम् श Why?

उपसर्जनस्येति वर्तते इति । न च जातिरुपसर्जनम्

There is anuvriti for upasarjanasya in the sūtra (where it is a višeṣaṇa to the strīpratyaya). Here the strīpratyaya used to denote jāti is not upasarjana.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  reads here:  $-Apradh\bar{a}nam$  ca iha upasarjanam grhyatē, na šāstrīyam, asambhavāt.

इद्गोण्याः (1, 2, 50)

#### इद्गोण्या नेति वक्तव्यम्

'Gōnyā na' is to be read in place of 'Id gōnyāḥ'.

गोण्या न इत्येव सिद्धम्, नार्थ इत्त्वेन

The object is accomplished by reading the  $s\bar{u}tra$  thus— $G\bar{o}ny\bar{a}$  na; no purpose is seved by the mention of it.

का रूपसिद्धिः, पञ्चगोणिः दशगोणिः ?

How can the forms pañcagōṇiḥ and daśagōṇiḥ be secured?

हस्तता हि विधीयते For shortening is enjoined.

ह्स्वत्वमत्र विधीयते गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य इति

Shortening is enjoined here in the sūtra Gōstriyōr upasarjanasya.

#### इति वा वचने तावत

What is the difference even when it is mentioned?

इद् इत्येवोच्येत नेति वा को न्वत्र विशेषः

Let the  $s\bar{u}tra$  be read  $Id\ g\bar{o}ny\bar{a}h$  or  $G\bar{o}ny\bar{a}$  na. What will be the difference?

# मात्रार्थं वा कृतं भवेत्

The sūtra may have been read only when mātrac is dropped.

अथ वा मात्रार्थिमदं वक्तव्यम् - गोणीमात्रमिदं गोणिः

Or this  $s\bar{u}tra$  is to be read only for the sake of  $m\bar{a}trac$ , so that  $g\bar{o}nih$  may mean  $g\bar{o}n\bar{i}m\bar{a}tram$ .

अपर आह Another says:

गोण्या इन्तं प्रकरणात् Ittva of gönī from the context.

अशिष्यं गोण्या इत्त्वम् Ittva of gōṇī need not be enjoined.

कि कारणम्? Why?

प्रकरणात् । प्रकृतं इस्वत्वम् । इस्व इति वर्तते

From the context. Shortening is secured from the context. There is anuvrtti for the word hrasva.

न तु सूच्याः

There is no chance for ittva with reference to sūcī.

स्च्याद्यर्थमथापि वा Or for the sake of sūcī.

सूच्याद्यर्थमिदं द्रष्टव्यम् - पञ्चसूचिः, दशसूचिः

This is to be said for the sake of  $s\bar{u}c\bar{i}$  etc. so that the forms  $pa\tilde{n}cas\bar{u}cih$  and  $da\hat{s}as\bar{u}cih$  can be secured.

इद्गोण्या नेति वक्तव्यं हस्वता हि विधीयते । इति वा वचने तावन्मात्रार्थं वा कृतं भवेत् । गोण्या इन्त्रं प्रकरणात् सच्याद्यर्थमथापि वा ॥

छपि युक्तवद्यक्तिवचने <sup>1</sup> (1, 2, 51)

व्यक्तिवचने इति किमर्थम्?

What for is the expression vyaktivacanë?

Note:—The words yukta, vyakti and vacana are the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\ddot{a}s$  of  $P\bar{a}nini's$  predecessors for prakrti (stem), linga (gender) and  $s\bar{a}nkhy\bar{a}$  (number).

1. Pawate considers this to be a sūtra of an ācārya anterier to Pāṇini and Pāṇini expresses it to be unnecessary by his sūtrā Tad aśiṣyam Saṃjñā-pramāṇatvāt (1-2-50). Cf. Vol. I p. XX.

शिरीषाणामदूरभवो प्रामः शिरीषाः, तस्य प्रामस्य वनं शिरीषवनम्

The word śirīṣavanam is the samāsa of śirīṣasya vanam, where śirīṣāḥ means the village close to śirīṣa creepers.

किं च स्यात्? What too will happen?

विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः इति णत्वं प्रसज्येत

There is chance for n to change to n in the word  $\sin i \sin a v = a n$  on the strength of the  $\sin i v = v = a v =$ 

Note:—The mention of vyaktivacanē suggests that the word where lup is dropped takes only the gender and the number of the prakṛti and none else.

अपर आह कटुकबदर्या अदूरभवो श्रामः कटुकबदरी, षष्ठी युक्तवद्भावेन मा भूद् इति ।

Another says that the sixth case may not be taken through atidēśa of that of the prakrti in kaţukabadarī which means the village not far from the place where kaţuka and badarī are found.

अथ व्यक्तिवचने इत्यप्युच्यमाने कसादेवात्र न भवति, षष्ठ्यपि हि वचनम्? Even when vyaktivacanē is mentioned, how is it that it does not happen here, şaṣṭhī too being vacana?

नेदं पारिभाषिकस्य वचनस्य ग्रहणम् ।

The pāribhāṣika-vacana is not referred to here.

Note:— $K\bar{a}iyaţa$  reads here:- $\bar{E}kavacan\bar{a}di$ -sa $mij\bar{n}\bar{a}$ -vidh $\bar{a}na-k\bar{a}l\bar{e}$  anu-niṣp $\bar{a}d\bar{\imath}$  vacanasabd $\bar{o}$ spi sa $mij\bar{n}\bar{a}tv\bar{e}na$  niyukta iti pratyayaḥ p $\bar{a}$ ribhaṣikam vacanam ucyat $\bar{e}$ .

किं तर्हि? What then?

अन्वर्थप्रहणम् - उच्यते वचनामिति

It is used in its derivative sense and the derivation of vacanam is ucyatē iti.

एवमपि षष्ठी प्रामोति, षष्ठयपि ह्युच्यते

Even under this criterion there is chance for sasthī, since sasthī too is read.

### छुपोक्तत्वात् तस्यार्थस्य द्वितीयस्य प्रयोगेण न भवितव्यम्

Since that meaning has been expressed by that which was in association with lup, it cannot be repeated.

किं कारणम् श Why?

उक्तार्थानामप्रयोग इति

From the dictum that there is no repetition of those which have already been expressed.

आतिदेशिकी तर्हि प्रामोति

Ṣaṣṭhī through atidēśa has, then, a chance to appear.

एवं तर्हि If so,

# 

Prakrti has its artha both before it is associated with pratyaya and after it is associated with it. Hence it is left to the sweet will of the user to take by atidēśa the linga and sankhyā that existed before the prakrti is associated with pratyaya or after it is associated with it.

### प्रागि वृत्तेर्युक्तं वनस्पतिभिनगरम् , वृत्तञ्चापि युक्तं वनस्पतिभिनगरम् ।

Nagara is associated with vanaspati even before the prakṛti became associated with pratyaya and nagara is associated with vanaspati even after the prakṛti became associated with pratyaya.

#### वृत्ते च युक्तवद्भावो विधीयते

The  $prakrtivadbh\bar{a}va$  is enjoined after the prakrti became associated with pratyaya.

कामचारश्च प्रयोक्तुः - प्राग्वत्तेर्ये लिङ्गसङ्ख्ये ते अतिदेष्टुम्, वृत्तस्य वा ये लिङ्गसङ्ख्यो ते

It is left to the sweet will of the  $pray\bar{o}kt\bar{a}$  to take by  $alid\bar{e}\hat{s}a$  the linga and the  $sankhy\bar{a}$  which existed before the stem was associated with pratyaya or after it is associated with it.

यावता कामचारः, वृत्तस्य ये लिङ्गसङ्ख्ये ते अतिदेक्ष्येते, न प्राग् वृत्तेर्ये Since it is  $k\bar{a}mac\bar{a}ra$ , there is  $atid\bar{e}sa$  for the linga and the  $sankhy\bar{a}$  which existed after the prakrti was associated with the pratyaya and not with those which existed before the prakrti was associated with the pratyaya.

अथ वा प्राग्वृत्तेर्ये लिङ्गसङ्ख्ये ते अतिदेक्ष्येते

Or there is  $atid\bar{e}\acute{s}a$  for the linga and the  $sankhy\bar{a}$  which existed before the prakrti was associated with the pratyaya.

षष्ठी कसान्न भवति Why is there no atidēśa for the ṣaṣṭhī? सामान्यातिदेशे विशेषानतिदेशः

When there is atidēśa for the general characteristics, there is no atidēśa for the particular?

किमर्थं पुनरिद्मुच्यते ? What for is this resorted to?

Note:—Kāiyaṭa reads here thus:—Antarēṇāpyatidēśam lingasankhyē siddhē, yathā āpō dāra ityādāu iti praśnaḥ.

#### अन्यत्राभिधेयस्य व्यक्तिवचनभावाल्छपि युक्तवदनुदेशः

There is  $atid\bar{e}\acute{s}a$  (of the  $li\dot{n}ga$  and the  $sa\dot{n}khy\bar{a}$ ) of the prakrti when there is lup on account of its existence of those of the  $vi\acute{s}\bar{e}\acute{s}ya$  in other places.

अन्यत अभिघेयविक्षक्रवचनानि भवन्ति

Linga and vacana as they are found in the viśēṣya are seen in other places which are atidiṣṭa.

कान्यत्र ? To which do you refer by the expression anyatra ? छाकि; छवणः सूपः, छवणा यवागूः, छवणं शाकम् इति

When there is luk; as in the expressions lavaṇah supah (saltish sauce), lavaṇa yavaguh (saltish yavagu) and lavaṇam śakam (saltish vegetable)

अन्यत्राभिषेयवद्व्यक्तिवचनानि भवन्ति छाकि । इहाप्यभिषेयविष्ठिक्कवचनानि प्राप्तुवन्ति । इष्यन्ते चाभिधानवत्स्युरिति । तच्चान्तरेण यतं न सिध्यतीति छपि युक्तवदनुदेशः

There is  $atid\bar{e}\hat{s}a$  of the linga and the  $sankhy\bar{a}$  of the  $vi\hat{s}\bar{e}\hat{s}ya$  in other places as when there is luk. Here too there is chance for the same. It is desired here that there should be the atidēśa of the linga and the  $asnkhy\bar{a}$  of the  $abhidh\bar{a}na$  or the prakrti. It cannot be achieved without effort. Hence is this:—lupi yuktavad anudēśah.

एवमर्थिमिद्मुच्यते This is read only with this purpose in view. अस्ति प्रयोजनमेतत् ? Is this the prayojana?

किं तहींति ? What then?

# **ळुपोऽदुर्शनसं**ज्ञित्वादुर्थगतिर्नोपपद्यते

The meaning is not comprehended on account of the samijnin of lup being adarsana.

लुब्नामेयमदर्शनस्य संज्ञा कियते । न चादर्शनस्य लिङ्गसङ्ख्ये शक्येते अति-देष्ट्रम् । छपोऽदर्शनसंज्ञित्वाद् अर्थगतिनीपपद्यते ।

Lup is made the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  of adarsana. It is not possible for adarśana to take linga and sankhyā through analogy. Since adarśana is the samjñin of lup, the meaning cannot be comprehended.

# न वादर्शनस्याशक्यत्वादर्थगतिः साहचर्यात्

No, there is comprehension of meaning through sāhacarya on account of the incapacity of adarsana to take linga and sankhyā.

न वैष दोष: No, this difficulty does not arise.

किं कारणम्? Why?

अदर्शनस्य अशक्यत्वात् - अदर्शनस्य लिङ्गसङ्ख्ये अशक्ये अतिदेष्ट्रिमिति कृत्वा - अद्रीनसहचरितो योऽर्थस्तस्य गतिर्भविष्यति, साहचर्यात्

On account of the incapacity of adarsana. Taking into account that it is not possible for the atidēśa of the linga and the sankhyā with reference to adarśana, there is comprehension of the meaning of that which is in association with adarsana on account of close association.

#### योगाभावाचान्यस्य

On account of the absence of  $y \bar{o} g a$  with another.

अन्यस्य अद्रश्नेन योगो नास्तीति कृत्वा अद्रश्नेनसहचरितो योऽर्थः तस्य गतिर्भविष्यति, साहचर्यात्

Since it is not possible for another to have association with adarśana, there is comprehension of the meaning of that which is associated with it, on account of close association.

#### समास उत्तरपद्स बहुवचनस छपः 1

To the uttarapada in samāsa when there is lup to the bahuvacana.

समासे उत्तरपदस्य बहुवचनस्य छपो युक्तवद्भावो वक्तव्यः - मधुरापञ्चालाः There is need to mention yuktavad-bhāva when there is lup to the bahuvacana of the second member in compound, as in madhurā-pañcālāḥ.²

किं प्रयोजनम्? What for is it?

नियमार्थम् । समास उत्तरपद्स्यैव

For the sake of niyama.  $Yuktavad-bh\bar{a}va$  is only with reference to the second member in compound.

क मा भूत? Where should it not operate?

पञ्चालमधुरे इति

As in pañcālamadhurē (i.e.) if there is no lup in the second member.

# विशेषणानां चाजातेः (१, २, ५२)

कथिमदं विज्ञायते - जातिर्यद् विशेषणम् इति, आहोस्विद् जातेर्यानि विशेषणानि इति?

How is this interpreted: is it in the way that there is  $yuktavad-bh\bar{a}va$  to the  $j\bar{a}ti$  which is  $vi\hat{s}\bar{e}sana$  or in the way that it is to those which are  $vi\hat{s}\bar{e}sanas$  to the  $j\bar{a}ti$ .

किं चातः ?

What will be the result if it is the one or the other?

- 1. Some additions read niyamāriham at the end.
- 2.  $Madhur\bar{a}pa\tilde{n}c\bar{a}l\bar{a}h$  is a dvandva compound of  $madhur\bar{a}$  (name of a city) and  $pa\tilde{n}c\bar{a}l\bar{a}h$  (the inhabitants of the country of  $P\bar{a}\tilde{n}c\bar{a}la$ ).

यदि विज्ञायते जातिर्यद् विशेषणिमिति, सिद्धं पश्चाला जनपद् इति, सिभिक्षः सम्पन्नपानीयः बहुमाल्यफलः इति न सिद्धचिति । अथ विज्ञायते जातेर्यानि विशेषणानि इति, सिद्धं सुभिक्षः सम्पन्नपानीयो बहुमाल्यफलः इति, पश्चाला जनपद् इति न सिध्यति

If it is interpreted that it is to the jāti which is viśēṣaṇa, the expression pancālājanapadaḥ becomes grammatically correct and not the expression subhikṣaḥ sampannapānīyaḥ bahumālya-phalaḥ. On the other hand, if it is interpreted that it is to those which are viśēṣaṇas to the jāti, the expression subhikṣaḥ sampannapānīyaḥ bahumālyaphalaḥ becomes grammatically correct and not pañcālājanapadaḥ.

एवं तर्हि नैवं विज्ञायते जातिर्यद् विशेषणम् इति, नापि जातेर्यानि विशेषणानि इति

If so, the sūtra is neither interpretated in the manner jātir yad viśēṣaṇam tad yuktavad bhavati nor in the manner jātēr yāni viśēṣaṇāni tāni yuktavad bhavanti.

कथं तर्हि? How then?

विशेषणानां युक्तवद्भावो भवति आ जातेः - आजातिप्रयोगात्

There is yuktavadbhāva to the viśēṣaṇas till the jāti is used.

किमर्थं पुनरिद्मुच्यते ? What for is this said?

# विशेषणानां वचनं जातिनिवृत्त्यर्थम्

- Mention of viśēṣaṇānām to ward off jāti.

जातिनिवृत्त्यर्थोऽयमारम्भः This attempt is to ward off  $j\bar{a}ti$ .

किमुच्यते जातिनिवृत्त्यर्थ इति, न पुनर्विशेषणानामपि युक्तवद्भावो यथा स्याद इति ?

Why is it said that it is to ward off  $j\bar{a}ti$  and not to assign  $yuktavadbh\bar{a}va$  to the  $vi\dot{s}\bar{e}\dot{s}anas$ ?

#### समानाधिकरणत्वात् सिद्धम्

It is achieved through sāmānādhikaranya.

समानाधिकरणत्वाद् विशेषणानां युक्तवद्भावो भविष्यति

There comes  $yuklavadbh\bar{a}va$  to  $viś\bar{e}$  saṇas through their being in apposition with  $viś\bar{e}$  syas.

यद्येवं नार्थोऽनेन । छुपोऽन्यत्रापि जातेर्युक्तवद्भावो न भवति

If so, no purpose is served by this  $(s\bar{u}tra)$ ;  $yuktavadbh\bar{a}va$  does not set in even in places other than where lup exists.

कान्यत ?

What are the places other than that where lup is found.

बदरी सूक्ष्मकण्टका मधुरा वृक्ष इति

In badarī sūksmakantakā madhurā vrksah.

किं पुनः कारणमन्यत्रापि जातेर्युक्तवद्भावो न भवति?

Why does not  $yuktavadbh\bar{a}va$  set in to  $j\bar{a}ti$  even in other places?

आविष्टलिङ्गा जातिः यहिङ्गमुपादाय प्रवर्तते उत्पत्तिप्रभृति आ विनाशान्न तिहङ्गं जहाति

Jāti invariably takes a particular linga; it does not leave off the linga in which it began to be used when it first became current till it becomes obsolete.

न तर्हि इदानीमयं योगो वक्तव्यः

If so, this sūtra need not be read here.

वक्तव्यश्च It has to be read.

किं प्रयोजनम्? What is the benefit?

इदं तत्र तत्नोच्यते - गुणवचनानां शब्दानामाश्रयतो लिङ्गवचनाति भवन्ति इति, तदनेन क्रियते

This is said then and there, that words denoting quality take the *linga* and the *vacana* of the *gunins* and it is achieved by this *sūtra*.

हरीतक्यादिषु व्यक्तिः Gender in harītakī etc.

हरीतक्यादिषु व्यक्तिभेवति युक्तवद्भावेन । हरीतक्याः फलानि हरीतक्यः फलानि ELEVENTH ÄHNIKA—TADAŚIŞYAM...; JÄTYÄKHYÄYÄM... 119

Gender through  $yuktavadbh\bar{a}va$  sets in  $har\bar{\imath}tak\bar{\imath}$  etc., so that the expression  $har\bar{\imath}takyah$   $phal\bar{a}ni$  is used in the sense of the fruits of  $har\bar{\imath}tak\bar{\imath}$ .

खलतिकादिषु वचनम् Number of khalatika etc.

खलतिकादिषु वचनं भवति युक्तवद्भावेन खलतिकस्य पर्वतस्यादूरभवानि वनानि खलतिकं वनानि ।

Number through  $yuktavadbh\bar{a}va$  sets in khalatika etc., so that the expression  $khalatikam \ van\bar{a}ni$  is used in the sense of forests not far from Mt. Khalatika.

मनुष्यलुपि प्रतिषेधः Pratisēdha in manusyalup.

मनुष्यलुपि प्रतिषेधो वक्तव्यः, चञ्चा अभिरूपः; विधिका दर्शनीयः

Prohibition of yuktavadbhāva should be made with reference to manuṣyalup so that cañcā abhirūpaḥ, vadhrikā darśanīyaḥ may be taken to be grammatically correct.

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:—Trnamayah puruṣah cañcā, tat-sadṛśō manuṣyah cañcā.

#### तद्शिष्यं संज्ञाप्रमाणत्वात् (1, 2, 53)

किं या एताः कृत्रिमाष्टिघुभादिसंज्ञाः तत्प्रामाण्यादशिष्यम् ?

Is it not to be read on account of the authority of the artificial  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}s$   $\dot{m}i$ , ghu,  $bh\bar{a}$  etc.?

नेत्याह, संज्ञानं संज्ञा, तदशिष्यम्

'No', says he The word samjñā means sampratyaya (clear knowledge). So it need not be read.

#### जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्थाम् (1, 2, 58)

इद्मयुक्तं वर्तते This is improper.

किमत्रायुक्तम् ? What is improper here?

बहवस्तेऽर्थाः तत्र युक्तं बहुवचनम् । तद्यदेकवचने शासितव्ये बहुवचनं शिष्यते एतदयुक्तम् । बहुषु एकवचनमिति नाम वक्तत्र्यम् ।

Where the objects are many, there is it proper to use the plural number. It is but improper to enjoin the use of the

plural number where singular number is to be enjoined. 'Bahuṣu ēkavacanam' is to be read in place of ēkasmin bahu-vacanam.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says that, if bahuşu  $\bar{e}kavacanam$  is read,  $j\bar{a}ty\bar{a}khy\bar{a}$  should be taken to convey the meaning  $j\bar{a}t\bar{e}h$  upalakṣaṇatvēna  $\bar{a}khy\bar{a}$ .

अत उत्तरं पठित Then he reads the answer.

# जात्याख्यायां सामान्याभिधानादैकार्थ्यम्

The  $\bar{a}ik\bar{a}rthya$  by the mention of  $j\bar{a}ty\bar{a}khy\bar{a}y\bar{a}m$   $\bar{e}kasmin$  is by referring to  $s\bar{a}m\bar{a}nya$  (genus).

जात्याख्यायां सामान्याभिधानादैकाथ्यँ भविष्यति । यत्तद् ब्रीही ब्रीहित्वं, यवे यवत्वं, गार्ग्यं गार्ग्यत्वं, तदेकं, तच्च विवक्षितं, तस्यैकत्वादेकवचनमेव प्राप्नोति । इष्यते च बहुवचनं स्यादिति तच्चान्तरेण यत्नं न सिध्यतीति जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनम् । एवमर्थमिदमुच्यते ।

The state of referring to one object by the mention of  $j\bar{a}ty\bar{a}-khy\bar{a}y\bar{a}m$   $\bar{e}kasmin$  is by referring to genus. The  $vr\bar{i}hitva$  in  $vr\bar{i}hi$ , yavatva in yava and  $g\bar{a}rgyatva$  in  $g\bar{a}rgya$  is one and it is the desired one and singular number alone is to be used since it is one. It is desired that plural number also may be used and it cannot be achieved without effort and hence is read  $j\bar{a}ty\bar{a}-khy\bar{a}y\bar{a}m$   $\bar{e}kasmin$  bahuvacanam. This is why it is read.

अस्ति प्रयोजनमेतत्? Is this the prayojana?

किं तहींति ? What then?

### तत्रैकवचनादेशे उक्तम्

It has been dealt with where there is atidēśa to ēkavacana.

किमुक्तम्? How has it been dealt with?

त्रीहिभ्य आगत इत्यत्र घेकिंति इति गुणः प्राप्तोति इति

In the sentence  $vr\bar{\imath}hibhya\,\bar{a}gatah$ , there is chance for the  $s\bar{u}tra$   $Gh\bar{e}r\,\dot{n}iti$  to operate with reference to  $vr\bar{\imath}hibhyah$ , so that i of  $vr\bar{\imath}hi$  may take guna.

Note:—This has been said under the  $s\bar{u}tra$   $Sth\bar{a}nivad$   $\bar{a}d\bar{e}s\bar{o}snalvidh\bar{a}u$  in the eighth  $\bar{a}hnika$ .

ELEVENTH ĀHNIKA—JĀTYĀKHYĀYĀM...ANYATARASYĀM 121

नैष दोषः This defect does not arise.

अर्थातिदेशात् सिद्धम् The object is achieved through arthātidēśa.

अर्थातिदेशोऽयम् । नेदं पारिभाषिकस्य वचनस्य प्रहणम्

This is a case where  $atid\bar{e}\hat{s}a$  is based on artha. The  $p\bar{a}ribh\bar{a}sika$ -vacana is not taken into account (i. e.) it is not  $vacan\bar{a}tid\bar{e}\hat{s}a$ .

किं तर्हि ! What then ?

अन्वर्धप्रहणम् - उच्यते वचनम्, बहूनामर्थानां वचनं बहुवचनम् इति
The derivative meaning is taken into account. Bahuvacanam means that by which many things are referred to and the derivation of vacanam is ucyatē.

यावद् ब्र्यादेकोऽथीं बहुवद् भवतीति तावदेकसिन् बहुवचनम् इति
As long as it is possible to take one object as many, so long may one use the plural number with reference to one object,

#### सङ्ख्याप्रयोगे प्रतिषेधः

Prohibition when there is a numerical adjunct.

सङ्ख्यात्रयोगे प्रतिषेधो वक्तव्यः । एको त्रीहिः संपन्नः सुभिक्षं करोति ; एको यवः सम्पन्नः सुभिक्षं करोति ।

There is need for prohibition of the use of the bahuvacana when there is a numerical adjunct as in  $\bar{e}k\bar{o}$   $vr\bar{i}hih$  sampannah subhikṣam karōti, (one rich harvest of paddy brings in prosperity)  $\bar{e}k\bar{o}$  yavah sampannah subhikṣam karōti (one rich harvest in yava brings in prosperity).

#### असादो नामयुवप्रत्ययोश्र

Prohibition when asmad is used along with the name or the word ending in yuvapratyaya.

असादो नामप्रयोगे युवप्रत्ययप्रयोगे च प्रतिषेधो वक्तव्यः । नामप्रयोगे - अहं देवदत्तो ब्रवीमि, अहं यज्ञदत्तो ब्रवीमि । युवप्रत्ययप्रयोगे - अहं गार्ग्यायणो ब्रवीमि, अहं वात्स्यायनो ब्रवीमि ।

Prohibition need be mentioned when asmad is used along with the name or the word ending in yuvapraiyaya as in 'Aham Dēvadattō bravīmi', 'Aham Yajñadattō bravīmi', 'Aham Gārgyāyaṇō bravīmi' and 'Aham Vātsyāyanō bravīmi'.

युवग्रहणेन नार्थः - असादो नामप्रत्ययप्रयोगे न इत्येव । इदमीप सिद्ध भवति - अहं गार्ग्यो ब्रवीमि, अहं वात्स्यो ब्रवीमि ।

There is no purpose served by the mention of yuva and it might have been read ' $Asmad\bar{o}$   $n\bar{a}mapratyayapray\bar{o}g\bar{e}$  na' so that the expressions Aham  $G\bar{a}rgy\bar{o}$   $brav\bar{\imath}mi$  and Aham  $U\bar{a}tsy\bar{o}$   $brav\bar{\imath}mi$  too may be sanctioned.

अपर आह Another says:

#### अस्मदः सविशेषणस्य प्रयोगे न इत्येव <sup>2</sup>

It may, as well, be read 'Asmadah saviśēṣaṇasya prayōgē na '.

इदमपि सिद्धं भवति, अहं पदुर्वविमि, अहं पण्डितो ब्रवीमि
This usage too may be sanctioned, 'Aham pațur bravīmi', 'Aham paṇḍitō bravīmi'.

### अशिष्यं वा बहुवत् पृथक्त्वाभिधानात्

Or  $bahuvadbh\bar{a}va$  need not be enjoined on account of mention in different ways.

अशिष्यो वा बहुवद्भावः Or bahuvadbhāva need not be enjoined. किं कारणम् १ Why?

पृथक्त्वाभिधानात् । पृथक्त्वेन हि द्रव्याण्यभिधीयन्ते । बहवस्ते अर्थाः, तत्र युक्तं बहुवचनम्

On account of individual denotation. For dravyas are denoted individually. The objects denoted are many and hence the use of the plural number is appropriate.

किमुच्यते पृथक्त्वाभिधानादिति, यावता इदानीमेवोक्तम् जात्याख्यायां सामा-न्याभिधानादैकार्थ्यम् इति

<sup>1.</sup>  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads:— $Bh\bar{a}şy\bar{e}$  prasangād Asmadō dvayōś ca (1, 2, 59) ityasya pratisēdham āha.

<sup>2.</sup> This is bhāṣya in Bombay edition.

How is it said 'on account of individual denotation immediately after it has been said that the  $\bar{a}ik\bar{a}rthya$  by the mention of  $j\bar{a}ty\bar{a}khy\bar{a}y\bar{a}m\ \bar{e}kasmin$  is by referring to genus (p. 120)?

#### जातिशब्देन हि द्रव्याभिधानम्

For there is the denotation of dravya for the word  $j\bar{a}ti$ .

जातिशब्देन हि द्रव्यमप्यभिधीयते जातिरिप

For individuality too is referred to by the word  $j\bar{a}ti$  and genus also.

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads here:-Dravyam  $ap\bar{\imath}ti$ ,  $pr\bar{a}dh\bar{a}n$ - $y\bar{e}na$  iti  $ś\bar{e}$ sah.

कथं पुनर्ज्ञायते जातिशब्देन द्रव्यमप्यभिधीयत इति?

How is it understood that individuality too is referred to by the word  $j\bar{a}ti$ ?

एवं हि कश्चिन्महित गोमण्डले गोपालकमासीनं पृच्छिति 'अस्त्यत्र काञ्चिद् गां पर्यासि दित । स पर्याति 'पर्याति चायं गाः', पृच्छिति च 'काञ्चिद्त्र गां पर्यासि दिति । नूनमस्य द्रव्यं विवक्षितम् इति

One asks another seated among a large herd of cows thus 'Do you see here any cow?'. He feels thus, "He sees cows and puts the question 'Do you see any cow?" Individuality is certainly meant by him."

तद्यदा द्रव्याभिधानं तदा बहुवचनं भविष्यति, यदा सामान्याभिधानं तदैकवचनं भविष्यति

Hence when individuality is meant, the plural number will be used and when genus is referred to, the singular number will be used.

Note:—From this it is evident that both  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  and  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  feel that this  $s\bar{u}tra$  may be done away with.

### अस्मदो द्वयोश्व (1, 2, 59)

अयमिप योगः शक्योऽवक्तुम् This sūtra too need not be read. कथम् अहं ब्रवीमि, आवां ब्रूवः, वयं ब्रूमः ?

How then can the following usage be sanctioned—Aham bravīmi, Āvām brūvaḥ, Vayam brūmaḥ 1?

इमानीन्द्रियाणि कदाचित् स्वातन्त्र्येण विविक्षितानि भवन्ति, तद्यथा, इदं मे अक्षि सुष्टु पश्यित, अयं मे कर्णः सुष्टु शृणोति इति । कदाचित् पारतन्त्र्येण विविक्षितानि भवन्ति, अनेनाक्ष्णा सुष्टु पश्यामि, अनेन कर्णेन सुष्टु शृणोमि इति These organs of sense are sometimes given prominence so that the following usage is current:—This, my eye, sees well; this, my ear, hears well; and sometimes they are not given prominence, but are intended as instruments so that the following usage is current:—I see well with this eye; I hear well with this ear.

तद्यदा स्वातन्त्रयेण विवक्षा तदा बहुवचनं भविष्यति, यदा पारतन्त्रयेण तदैक-वचनद्विवचने भविष्यतः

Similarly when one speaker or two intend prominence to them, there is the use of the plural number (like Vayam paśyāmaḥ in the place of Aham paśyāmi and Avām paśyāvaḥ) and when prominence is not intended, there is the use of the singular and dual numbers.

### फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे (1, 2, 60)

अयमपि योगः शक्योऽवक्तुम्

This sūtra too may be dispensed with.

कथम्, उदिते पूर्वे फलगुन्यो, उदिताः पूर्वाः फलगुन्यः, उदिते पूर्वे प्रोष्ठपदे, उदिताः पूर्वाः प्रोष्ठपदाः

(If so), how can the following usages be sanctioned:  $-Udit\bar{e}$   $p\bar{u}rv\bar{e}$   $phalguny\bar{a}u$ ,  $Udit\bar{a}h$   $p\bar{u}rv\bar{a}h$  phalgunyah.  $Udit\bar{e}$   $p\bar{u}rv\bar{e}$   $pr\bar{e}$   $pr\bar{e}$  phalgunyah.  $Udit\bar{e}$   $p\bar{u}rv\bar{e}$   $pr\bar{e}$   $pr\bar{e}$  phalgunyah.

³ फल्गुनीसमीपगते चन्द्रमिस फल्गुनीशब्दो वर्तते । बहवस्ते अर्थास्तत्र युक्तं बहुवचनम्; यदा तयोरेवाभिधानं तदा द्विवचनं भविष्यति

- 1. Vayam here refers to one or two persons.
- 2. Only two stars represent pūrvaphalgunī and only two, pūrvaprōṣṭhapadā. This sūtra sanctions the latter usage.
  - 3. Phalgunī is upalakṣaṇa to prōṣṭhapadā.

The word phalguni may refer (by  $g\bar{a}un\bar{i}vrtti$ ) to the moon near the constellation phalguni. If many objects near it are intended, the plural number is appropriate, and if only the two stars are intended, the dual number will be used.

Note:—Since the reading of  $nak satr \bar{e}$  in the  $s\bar{u}tra$  suggests that, according to  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ , the  $bahuvacana-pray\bar{e}ga$  is optionally sanctioned to refer to the constellations alone, it is open to scrutiny how for  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ 's  $praty\bar{a}khy\bar{a}na$  is sound.

# छन्दिस पुनर्वस्रोरेकवचनम् (1, 2, 61) विश्वाखयोश्च (1, 2, 62)

इमाविप योगौ शक्याववक्तुम्

These two sūtras, too, may be dispensed with.

कथम्? How is the purpose of the sūtras achieved?

# पुनर्वसुविशाखयोः सुपां सुछक्पूर्वसवर्णेति सिद्धम्

The object is achieved with reference to Punarvasu and  $Viś\bar{a}kha$  by the  $s\bar{u}tra$   $Sup\bar{a}m$  su-luk ... (7, 1, 39).

पुनर्वसुविशाखयोः सुपां सुलुक्पूर्वसवर्ण इत्येव सिद्धम्

The desired object is achieved with reference to Punarvasu and  $Viś\bar{a}kha$  by the  $s\bar{u}tra\ Sup\bar{a}m\ su-luk\ ...\ (7, 1, 39)$ .

# तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् (1, 2, 63)

तिष्यपुनर्वस्वोरिति किमर्थम् ?

Why should tisya and punarvasu alone be mentioned in the sūtra?

#### कृत्तिकारोहिण्यः

Bahuvacana is found in the expression kṛttikārōhinyaḥ.

नक्षत्र इति किमर्थम्?

What for is the mention of the word nakṣatra?

तिष्यश्च माणवकः, पुनर्वसू च माणवकौ, तिष्यपुनर्वसवः

1. The use of su in place of any sup seems to refer to case and number and this  $s\bar{u}tra$  refers to number alone.

Tiṣya is the name of a māṇavaka, punarvasū denotes the name of two māṇavakas and the dvandva of that tiṣya and that punarvasū is tiṣyapunarvasavaḥ.

Note:—This shows that naming a person with the constellation in which he is born was in vogue even in  $Mah\bar{a}$ - $bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ 's time.

अथ नक्षत्र इति वर्तमाने पुनर्नक्षत्रग्रहणं किमर्थम् ?

What is the need of reading the word nakṣatra again in this  $s\bar{u}tra$ , when it is possible to take it by anuvrtti from the  $s\bar{u}tra$  Phalgun $\bar{i}$ -pr $\bar{o}$ ṣṭhapad $\bar{a}$ n $\bar{a}$ m ca nakṣatr $\bar{e}$  (1, 2, 60).

अयं तिष्यपुनर्वसुशब्दोऽस्त्येव ज्योतिषि वर्तते, अस्ति च कालवाची । तद्यशा, बहवस्तिष्यपुनर्वसवोऽतिकान्ताः, कतरेण तिष्येण गत इति । तद्यो ज्योतिषि वर्तते तस्येदं प्रहणम् ॥

This, the word tiṣya and the word punarvasu, is used to denote the respective constellation and also to denote a duration of time. The latter is illustrated by the following expressions:—Many tiṣya-punarvasus have passed. In which tiṣya did he go? That which refers to the constellation is taken in this sūtra.

Note:—1.  $K\bar{a}iyata$  says that there is  $vy\bar{a}vrtti$  to  $k\bar{a}la$  by one naksatra and to  $m\bar{a}navaka$  by another.

Note:—2. Taking that there may be vyāvrtti to both by the mention of nakṣatradvandva, Mahābhāṣyakāra seems to resort to another way of answering the objection.

अथ वा नक्षत्र इति वर्तमाने पुनर्नक्षत्रग्रहणस्यैतत्त्रयोजनम् - विदेशस्यमपि तिष्यपुनर्वस्वोः कार्यं तदपि नक्षत्रस्यैव यथा स्यात् । तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यस्रोपो वक्तव्यः इति नक्षत्रग्रहणं न कर्तव्यं भवति ।

Or this is the prayojana of reading nakṣatra again when there is chance for the anuvṛtti of nakṣatra that, wherever kārya is enjoined to tiṣyapunarvasu even on other occasions, it refers only to the nakṣatra tiṣyapunarvasu. Hence the word nakṣatra need not be mentioned in the vārttika Tiṣya-puṣyayōr nakṣatrāṇi yalōpaḥ under the sūtra Sūrya-tiṣya... (6, 4, 149).

Note:—1. The word vaktavyah may be omitted from the text above, since it is not found in the vārttika under 6, 4, 149.

Note:—2. Since it is far-fetched to hold that the same name may refer to the naksutra alone in far-off places too,  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  takes to another way of reasoning.

अथ वा नक्षत्र इति वर्तमाने पुनर्नक्षत्रग्रहणस्यैतत् प्रयोजनं, तिष्यपुनर्वसुपर्याय-वाचिनामपि यथा स्यात् - पुष्यपुनर्वसू, सिध्यपुनर्वसू

Or this is the prayojana of reading nakṣatra again when there is chance for the anuvrtti of nakṣatra that, it holds good to the synonyms of tiṣya and punarvasu, as in puṣya-punarvasū, and sidhya-punarvasū.

Note:—  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads:—Tişya-punarvasv $\bar{o}h$  śabday $\bar{o}h$  abidh $\bar{e}y\bar{e}$  nakṣatr $\bar{e}$  vartam $\bar{a}n\bar{a}n\bar{a}m$  naṣatraśabd $\bar{a}n\bar{a}m$  dvandva iti s $\bar{u}tr\bar{a}rtha$  iti bh $\bar{a}vah$ .

अथ द्वन्द्व इति किमर्थम्? What for is the word dvandva? यस्तिष्यः तौ पुनर्वसू येपां त इमे तिष्यपुनर्वसव उन्मुग्धाः

(Dvivacana is only in dvandva) and in the  $bahuvr\bar{\imath}hi$  compound Tisyapunarvasavah which is used with reference to fools to whom tisya is  $punarvas\bar{\imath}u$ , it is in the plural number.

बहुवचनस्येति किमर्थम् ? What for is the word bahuvacanasya ? उदितं तिष्यपुनर्वसु

(So that it may not operate in) Uditam tişyapunarvasu.

कथं चात्रैकवचनम्? How comes the singular number here? जातिद्वन्द्व एकवद्भवतीति

 $J\bar{a}tidvandva$  takes singular number by the  $s\bar{u}tra$   $J\bar{a}tir$   $apr\bar{a}ni-n\bar{a}m$  (2, 4, 6)

अप्राणिनाम् इति प्रतिषेधः प्राप्नोति

There is chance for the pratisēdha mentioned by aprāninām.

एवं तर्हि सिद्धे सित यह्न इवचनमहणं करोति तद् ज्ञापयत्याचार्यः, सर्वो द्वनद्वो विभाष्ट्रयेकवद् भवति इति ।

If so, since he reads bahuvacana when its result can be otherwise achieved,  $\bar{A}c\bar{a}rya$  ( $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ ) suggests that all dvandvas optionally take  $\bar{\epsilon}kavadbh\bar{a}va$ .

किमेतस्य ज्ञापने प्रयोजनम् ?

What is the prayojana of this  $j\tilde{n}apana$ ?

वाभवशालङ्कायनं, वाभवशालङ्कायनाः इत्येतत् सिद्धं भवति

The two prayogas Bābhrava-śālankāyanam and Bābhrava-śālan-kāyanāh are sanctioned

अथ वा नात्रभवन्तः प्राणिनः, प्राणा एवात्रभवन्तः

Or those that are mentioned here are not  $pr\bar{a}nins$ , but they are only  $pr\bar{a}nas$ .

NOTE:—The use of the word atra-bhavantah to refer to stars is perhaps due to the fact that one's life depends upon their position.

#### ELEVENTH AHNIKA ENDS

(First adhyāya, second pāda, second āhnika ends)

#### Twelfth Ahnika

(First adhyāya, second pāda, third āhnika)

### सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ (1, 2, 64)

Seven topics are dealt with here. Firstly  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  discusses the  $pray\bar{o}jana$  of the mention of each word in the  $s\bar{u}tra$ . (2)  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  states reasons for the need of the  $s\bar{u}tra$  (3) elaborately discusses whether the word  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  fits in the  $s\bar{u}tra$  (4), suggests certain additions to the  $s\bar{u}tra$  (5), mentions the absence of  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  in words denoting certain numbers (6), refers to the presence of  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  when words have to denote collectively first and second persons, first and third persons, second and third persons, and first, second and third persons and (7) he lastly decides that this  $s\bar{u}tra$  is unnecessary whether  $j\bar{a}ti$  is  $pad\bar{a}rtha$  or vyakti is  $pad\bar{a}rtha$ .

I--i

रूपग्रहणं किमर्थम् ?

What for is the mention of the word  $r\bar{u}pa$ ?

समानानामेक्द्रोष एकविभक्ती इति इयत्युच्यमाने यत्रैव सर्व समानं-शब्दः अर्थश्च - तत्रैव स्याद् वृक्षाः प्रक्षा इति, इह न स्याद् अक्षाः पादा माषा इति । रूपग्रहणे पुनः क्रियमाणे न दोषो भवति । रूपं निमित्तत्वेन आश्रीयते ;श्रुतौ च रूपग्रहणम् ॥ If the word  $sam\bar{a}n\bar{a}m\bar{a}m$  is read in the  $s\bar{u}tra$  in place of  $sar\bar{u}-p\bar{a}n\bar{a}m$ ,  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  will take place only with reference to  $vrks\bar{a}h$ ,  $plaks\bar{a}h$  etc. where everything is similar—the form of the word and its meaning—and not with reference to the words  $aks\bar{a}h$ ,  $p\bar{a}d\bar{a}h$ ,  $m\bar{a}s\bar{a}h$  etc. (where the similarity is only in form and not in meaning). If the word  $r\bar{u}pa$  is read, this defect does not arise. The  $r\bar{u}pa$  is taken to be nimitta and the cognisance of the  $r\bar{u}pa$  is only through the sense of hearing.

Note:—1. The word  $r\bar{u}pa$  in  $r\bar{u}pagrahana$  in the  $bh\bar{a}sya$  has to refer to  $sar\bar{u}pa$  and hence it gives room to doubt whether sa was omitted by the scribe who copied from the original manuscript.

Note:—2. The word ak s a means an axle, a die etc.;  $p\bar{a}da$  means a foot, a ray of light etc.; and  $m\bar{a}s a$  means a bean, a fool etc.

Note:—3. Kāiyaṭa says:—Śrutāu iti-śrōtrōpalabdhāu ityarthaḥ. Atha vā śrōtrēndriyam śrutir ucyatē. Nāgōjibhaṭṭa adds here—Ādyē grahaṇam viṣayatā, dvitīyē tu pratītir iti vivēkaḥ.

#### I-ii

अथैकग्रहणं किमर्थम् ?

What for is the mention of ēka (in ēkaśēṣaḥ)?

सरूपाणां शेष एकविभक्तौ इति इयत्युच्यमाने द्विबह्वोरिप शेषः प्रसज्येत । एकप्रहणे पुनः कियमाणे न दोषो भवति ।

If the  $s\bar{u}tra$  is read without the word  $\bar{e}ka$  thus— $Sar\bar{u}p\bar{a}n\bar{a}m$   $\pm\bar{e}sa$   $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$ —the  $\pm\bar{e}satva$  may chance to come to two or more forms. That defect will not arise if mention of  $\bar{e}ka$  is made.

#### I-iii

अथ शेषप्रहणं किमर्थम् ? What for is the mention of śēṣa? सरूपाणामेक एकविभक्ती इति इयत्युच्यमाने आदेशोऽयं विज्ञायेत

If the  $s\bar{u}tra$  is read thus— $Sar\bar{u}p\bar{a}n\bar{a}m$   $\bar{e}ka$   $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$ , that which remains will have to be taken as  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$ , (since the  $sasth\bar{i}s$  should be taken as  $sth\bar{a}n\bar{e}-sasth\bar{i}s$  by the  $paribh\bar{a}s\bar{a}$ ,  $sasth\bar{i}sth\bar{a}n\bar{e}y\bar{o}g\bar{a}$ ).

तत्र को दोष: ? What is the harm then?

अश्रश्च अश्वा, आन्तर्यतो द्युदात्तवतः स्थानिनो द्युदात्तवानादेशः प्रसज्येत Aśvāu will have to be considered as the ādēśa of two aśvas and both of its syllables will have to take udāttatva on account of its having to be closely related to the sthānins which have two udātta syllables.

लोप्यलोपिता च न प्रकल्पेत

Besides it may not be easy to decide the elision of the parts to be elided.

तत्र को दोष:? What is the harm then?

गर्गा वत्सा बिदा उर्वाः, यञ् यो बहुषु अञ् यो बहुषु इत्युच्यमानो छङ् न प्रामोति

The  $ya\tilde{n}$  which is left to denote many and the  $a\tilde{n}$  which is left to denote many, after the stems Garga, Vatsa, Bida and Urva are enjoined to be elided (by the  $s\bar{u}tra$   $Ya\tilde{n}a\tilde{n}\delta\hat{s}$  ca 2, 4, 64), but the said elision may not take place.

NCTE:  $-K\bar{a}iya\underline{t}a$  says that, if one y is taken as the  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of many  $yak\bar{a}ras$  after Garga, there is chance for its elision. But if Garga-ya is taken as the  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of Garga-ya-ya, there is no chance for its elision.

मा भूदेवम् । यञन्तं यद् बहुषु, अञन्तं यद् बहुषु इत्येवं भविष्यति । Let it not be interpreted in that way. Let it be interpreted in this way—there is luk to that which is  $ya\tilde{n}anta$  denoting many and  $a\tilde{n}anta$ , denoting many.

नैवं शक्यम्, इह हि दोषः स्यात् काश्यपप्रतिकृतयः काश्यपा इति । No, it cannot be interpreted in that way; for there will be difficulty in arriving at the form  $k\bar{a}syap\bar{a}h$  meaning 'the portraits of  $K\bar{a}syapa$ .'

#### I--iv

एकविभक्तौ इति किमर्थम्?

What for is the mention of the word  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$ ?

पयः पयो जरयति, वासो वासच्छादयति, ब्राह्मणाभ्यां च कृतं ब्राह्मणाभ्यां च देहि इति

(So that ēkaśēṣa may not take place among words having the same form but belonging to different cases) as payaḥ in the sentence payaḥ payō jarayati, as vāsaḥ in the sentence vāsō vāsac chādayati and as brāhmaṇābhyām in the sentences brāhmaṇābhyām ca kṛtam and brāhmaṇābhyām ca dēhi.

#### II

किमर्थं पुनरिदमुच्यते ? What is the need for this sūtra? प्रत्यर्थं शब्दनिवेशानैकेनानेकस्थाभिधानम्

The incapacity of one to denote many on account of each object being expressed by a separate word.

प्रत्यर्थे शब्दा अभिनिविशन्ते

Words are used, each to denote one object.

किमिदं प्रत्यर्थमिति ?

What is the meaning of this word pratyartham?

अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थम्

Pratyartham means 'with reference to each object.'

प्रत्यर्थं शब्दिनवेशात् - एतसात् कारणाद् नैकेन शब्देन अनेकस्यार्थस्याभिधानं प्राप्नोति

On account of one word being used to denote one object. On account of this, one word cannot denote many objects.

तत्र को दोषः ? What is the harm there?

# तत्रानेकार्थाभिधानेऽनेकशब्दत्वम्

Chance for its being considered many words on its denoting many objects.

तत्रानेकार्थाभिधाने अनेकशब्दत्वं प्राप्नोति

There is chance for its being considered many words on its denoting many objects.

इष्यते चैकेनाप्यनेकस्याभिधानं स्यादिति । तच्चान्तरेण यतं न सिध्यति । It is desired that one word should denote many and it cannot

be achieved without special effort.

तसादेकशेषः। एवमर्थमिद्मुच्यते

Hence is the mention of ēkaśēṣa. The sūtra is intended for it.

अस्ति प्रयोजनमेतत् ? Is this the prayojana?

किं तहींति? What then?

किमिदं प्रत्यर्थं शब्दाः अभिनिविशन्त इत्येतं दृष्टान्तमास्थाय सरूपाणामेकशेषः आरभ्यते, न पुनरप्रत्यर्थं शब्दा अभिनिविशन्त इत्येतं दृष्टान्तमास्थाय विरूपाणाम् अनेकशेष आरभ्यते !

How is it that the sūtra Sarūpāṇām ēkaśēṣaḥ is read on the basis of the assumption that each word denotes one object

and a  $s\bar{u}tra\ Vir\bar{u}p\bar{a}n\bar{a}m\ an\bar{e}ka\acute{s}\bar{e}\hat{s}ah$  is not read on the basis of the assumption that one word (like  $ak\hat{s}\bar{a}h$ ) is used to denote many objects (of different nature)?

तत्रैतत् स्यात् रुघायसी सह्पनिशृत्तिः, गरीयसी विद्धपप्रतिपत्तिः इति <sup>1</sup>
This happens there that sarūpanivṛtti is lighter and virūpapratipatti is heavier.

तच न, लघीयसी विरूपप्रतिपत्तिः

No, it is not; virūpapratipatti is lighter.

किं कारणं ? Why?

यत्र हि बहूनां सरूपाणामेकः शिष्यते, तत्रावरतो द्वयोः सरूपयोर्निवृत्ति-र्वक्तव्या स्यात्

Where one among many sarūpas is left behind, it is necessary to state that the two sarūpas that followed are dropped.

एवमप्येतिसान् सित किञ्चिदाचार्यः  $^2$  सुकरतरकं चैकशेषारम्भं मन्यते Though it stands thus,  $Ac\bar{a}rya$  considers that reading the sūtra of ēkaśēṣa is simpler.

#### III—i (a)

किं पुनरयमेकविभक्तावेकशेषो भवति ?

What does the statement ēkavibhaktāu ēkaśēṣaḥ mean?

Note:— $K\bar{a}iyata$  tells us that through this question  $Mah\bar{a}$ - $bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  suggests the question whether the word  $\bar{e}ka$  in  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  denotes number or similarity.

एवं भवितुमहीति It deserves to be this. 8

Note:  $-K\bar{a}iyata$  tells us that  $\bar{e}ka$  refers to number.

#### एकविभक्ताविति चेन्नाभावाद्विभक्तेः

If ēkavibhaktāu is mentioned in the sūtra, it does not happen on account of the absence of vibhakti.

- 1. Iti is omitted in some editions.
- 2. In Guruprasada Sastri's edition the two words sukaratarakam manyatē are found in addition.
  - 3. Such elliptical statements are very rare in the Mahābhāṣya.

एकविभक्ताविति चेत् तन्न

If  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  is read in the  $s\bar{u}tra$ ,  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  has no chance to happen.

किं कारणम्? Why?

अभावाद् विभक्तेः । न हि समुदायात् परा विभक्तिरस्ति ।

On account of the absence of vibhakti. For vibhakti does not follow the samudāya (collection of words).

किं कारणम् ? Why?

अप्रातिपदिकत्वात्

On account of its not being a prātipadika.

ननु चार्थवत् प्रातिपदिकमिति प्रातिपदिकसंज्ञा भविष्यति

Oh! prātipadikasamjñā is certainly there on the strength of the statement Arthavat prātipadikam!

NOTE:—The artha that is referred to here is the samudā- $y\bar{a}rtha$ .

नियमान्न प्राप्नोति - अर्थवत्समुदायानां समासम्रहणं नियमार्थमिति

No, it has no chance to come here on account of the niyama that the mention of  $sam\bar{a}sa$  (in the  $s\bar{u}tra$  Krt-taddhita-sam $\bar{a}s\bar{a}s$  ca) restricts the denotation of arthavat-samud $\bar{a}yas$  (referred to by arthavad in the  $s\bar{u}tra$  Arthavad-adh $\bar{a}tur$ -apratyayah  $pr\bar{a}ti$ -padikam).

NOTE:—If  $sar\bar{u}pas$  refer to stems and  $\bar{e}ka$  in  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  refers to number, the above argument shows that this  $s\bar{u}tra$  has no meaning.

III—ii (a)

यदि पुनः पृथक् सर्वेषां विभक्तिपराणामेकशेष उच्यते

If it is said of  $\bar{e}ka \pm \bar{e} \pm a$  of stems each being followed by a separate case-suffix.

### पृथक्सर्वेषामिति चेदेकशेषे पृथग्विभक्तयुपलब्धिस्तदाश्रयत्वात्

If it is said that  $\bar{e}ka \pm \bar{e}sa$  of stems takes place when each is followed by a separate case-suffix, there is chance for each

case-suffix to stand without being dropped, since ēkaśēṣa depends upon them.

NOTE:—The word  $\bar{e}ka$  in  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  is taken here in the sense of tulya as the word  $\bar{e}ka$  in  $\bar{e}kadik$ .

पृथक् सर्वेषामिति चेदेकशेषे पृथग्विमक्खपलिधः प्रामोति ।

If it is said that  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  of stems takes place when each is followed by a separate case-suffix, there is chance for each case-suffix to stand without its being dropped.

किमुच्यते एकशेषे पृथग्विमक्त्युपलविधः इति ?

How is it said that there is chance for each case-suffix to stand without its being dropped when there is ēkaśēṣa?

यावता समयः कृतः 'न केवला प्रकृतिः प्रयोक्तन्या न च केवलः प्रत्ययः' इति, तदाश्रयत्वात् प्रामोति ।

Since there is the dictum that neither a stem alone is used without a pratyaya nor a pratyaya alone is used without a stem, there is chance for each case-suffix to stand on account of the prakṛtyēkaśēṣa depending upon case-suffix.

यत्र हि प्रकृतिनिमित्ता प्रत्ययनिवृत्तिः, तत्र अप्रत्ययिकायाः प्रकृतेः प्रयोगो भवति, अग्निचित् सोमसुद् इति यथा

Where there is the elision of pratyaya depending upon prakrti, prakrti alone is used without pratyaya, as in the words Agnicit, and Sōmasut.

यत्र च प्रत्ययानिमिता प्रकृतिनिवृत्तिः, तत्र अप्रकृतिकस्य प्रत्ययस्य प्रयोगो भवति - अधुना, इयान् इति यथा

Where there is the elision of the prakrti on account of the pratyaya, the pratyaya alone is used without prakrti, as in the words  $adhun\bar{a}$  and  $iy\bar{a}n$ .

- 1.  $Adhun\bar{a}$  is said to be a pratyaya and it is enjoined after the stem idam in the  $s\bar{u}tra$   $Adhun\bar{u}$  (5, 3, 17) and the stem idam is dropped by the  $s\bar{u}tras$  Idama is (5, 3, 3) and  $Yasy\bar{e}ti$  ca (6, 4, 184).
- 2. Iyān is formed by the operation of sūtras Kimidambhyām võ ghaḥ (5, 2, 40), Idamkimōr iś kī (6, 3, 90) and Yasyēti ca (6, 4, 184).

अस्त । संयोगान्तलोपेन सिद्धम्

Let it be; the object is achieved by samyogantalopa.

Note:—This answer is based on the assumption that, of vrksa-s vrksa-s vrksa-s, the last two stems are dropped so that the arrived-at form is vrksa-s-s-s.

कुतो नु खरुवेतत् परयोर्वृक्षशब्दयोर्निवृत्तिर्भविष्यति, न पुनः पूर्वयोरिति?
How is it that the last two stems are dropped and not the first two?

Note:-In that case the arrived-at form will be s-s-vrksa-s.

तत्रेतत् स्यात् पूर्वनिवृत्ताविप सत्यां संयोगादिलोपेन सिद्धम् इति ।

Even when the first two stems are elided, the object is achieved by  $sa\dot{m}y\bar{o}g\bar{a}dil\bar{o}pa$ .

न सिध्यति तत्रावरतो द्वयोस्सकारयोः श्रवणं प्रसज्येत

No, it is not achieved; two sakāras will exist near the last stem one before it and one after it.

यत्र च संयोगान्तलोपो नास्ति, तत्र च न सिध्यति

Besides the object is not achieved where there is no  $samy\bar{o}$ - $g\bar{a}ntal\bar{o}pa$ .

क च संयोगान्त होंपी नास्ति

Where is not, then, samyogantalopa?

िद्विवचनबहुवचनयोः

When the stem is followed by dual and plural suffixes.

Note:—The above argument shows that  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  does not fit in the  $s\bar{u}tra$  even when  $\bar{e}ka$  is taken in the sense of tulya.

III—iii

यदि पुनः समास एकशेष उच्यते

If ēkaśēṣa is enjoined in a (dvandva) samāsa.

किं कृतं भवति? What is achieved (by it)?

कश्चिद्वचनलोपः परिहृतो भवति

The difficulty regarding the elision of case-suffixes mentioned above is removed.

तत्तर्हि समासग्रहणं कर्तव्यम्

If so, the word (dvandva) samāsē has to be read.

न कर्तव्यम् ; प्रकृतमनुवर्तते

No, it need not be read; it is taken here by anuvṛtti from the sūtra in the context.

क प्रकृतम्? What is the sūtra in the context?

तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहुवचनस्य द्विवचनं नित्यम् इति

The sūtra Tişya-punarvasvēr nakṣatradvandvē bahuvacanasya dvivacanam nityam.

### समास इति चेत्खरसमासान्तेषु दोषः

If it is enjoined in  $sam\bar{a}sa$ , there is difficulty in svara and  $sam\bar{a}s\bar{a}nta$ .

समास इति चेत् स्वरसमासान्तेषु दोषो भवति

If it is enjoined in  $sam\bar{a}sa$ , there is difficulty with reference to svara and  $sam\bar{a}s\bar{a}nta$ .

स्वर - अश्वश्च अश्वश्च अश्वौ । समासान्तोदात्तत्वे कृते एकशेषः प्रामोति । इदिमह सम्प्रधार्यम् - समासान्तोदात्तत्वं क्रियताम् एकशेषः इति । किमत्र कर्तव्यम् ? परत्वात् समासान्तोदात्तत्वम् ; समासान्तोदात्तत्वे च दोषो भवति ।

Svara:—Aśvaḥ ca aśvaḥ ca become aśvāu. Ēkaśēṣa takes place after the sūtra (Samāsasya 6, 1, 223) enjoining samāsāntōtōdāttatva operates. This is to be decided whether samāsāntōtāttatva should precede or ēkaṣēṣa. What is to be done here? Samāsāntōdāttatva has to precede ēkaśēṣa, since the sūtra enjoining the former is para. There is difficulty if samāsāntōtāttatva precedes ēkaśēṣa.

Note:  $-A \hat{s}va$  and  $a \hat{s}va$  become  $a \hat{s}v\bar{a}\hat{s}v\bar{a}u$ ; the final syllable first becomes  $ud\bar{a}tta$ . If the former part remains and the latter part is elided by  $\bar{e}ka \hat{s}\bar{e}\hat{s}a$ , there is chance for  $sarv\bar{a}nud\bar{a}ttatva$  and if the latter part remains, the final syllable of  $a\hat{s}va$  has a chance to be  $ud\bar{a}tta$ . It is defective in both ways.

समासान्त - ऋक् च ऋक् च ऋची । समासान्ते कृते असारूप्याद् एकशेषो न प्राप्नोति । इदिमह सम्प्रधार्यम् - समासान्तः क्रियताम् एकशेष इति । किमत्र कर्तव्यम् १ परत्वात् समासान्तः, समासान्ते च दोषो भवति ।

Samāsānta:—Rk ca rk ca  $rc\bar{a}u$ . There is no chance for  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  through dissimilarity, if the  $sam\bar{a}s\bar{a}ntavidhi$  operates first. This is to be decided whether  $sam\bar{a}s\bar{a}ntavidhi$  is to operate first or  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$ . What is to be done here?  $Sam\bar{a}s\bar{a}ntavidhi$  has to operate first since it is para. After it has operated, difficulty arises (with reference to  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$ ).

Note:—One is rk and the other is rca by the  $s\bar{u}tra$   $Rkp\bar{u}rabdh\bar{u}h...(5, 4, 74)$ .

## अङ्गाश्रये चैकशेषवचनम्

Need for the mention of ēkaśēṣa after the operation of aṅgāśraya-vidhi.

अङ्गाश्रये च कार्ये एकशेषो वक्तव्यः

 $\bar{E}ka\dot{s}\bar{e}sa$  has to be enjoined with reference to the  $k\bar{a}rya$  depending on  $a\dot{n}ga$ .

स्वसा च स्वसारो च स्वसारः । अङ्गाश्रये कृते असारूप्याद् एकशेषो न प्रामोति । इदिमह सम्पर्धायम् - अङ्गाश्रयं कियताम् एकशेष इति । किमत्र कर्तव्यम् १ परत्वादङ्गाश्रयम्

Svasā ca svasārāu ca svasāraḥ. After aṅgāśrayavidhi operates, there is no room for ēkaśēṣa through dissimilarity. This has to be decided whether aṅgāśrayavidhi is to operate first, or ēkaśēṣa. What is to be done here? Aṅgāśrayavidhi is to operate first, since it is para.

तिङ्समासं तिङ्समासवचनम् Mention of  $ti\dot{n}$ -sam $\bar{a}sa$  in  $ti\dot{n}$ -sam $\bar{a}sa$ .

तिङ्समासे तिङ्समासो वक्तव्यः

Tinsamāsa has to be read in tin-samāsa.

एकं तिङ्ग्रहणमनर्थकं समासे तिङ्समास इत्येव सिद्धम्

Mention of one  $ti\dot{n}$  does not serve any purpose; the object is achieved by reading the  $v\bar{a}rttika$   $Sam\bar{a}s\bar{e}$   $ti\dot{n}sam\bar{a}savacanam$ .

नानर्थकम् । तिङ्समासे प्रकृते तिङ्समासो वक्तज्यः

It is not anarthaka. It means that, when there is a chance for tinsamāsa, the word tinsamāsa has to be read.

तिङ्विधिप्रतिषधश्र Both tinvidhi and tin pratisēdha.

तिङ् च कश्चिद्विधेयः, कश्चित् प्रतिषेध्यः । पचति च पचतिः, तश्चिद्वो विधेयः, तिशब्दः प्रतिषेध्यः ॥

One  $ti\dot{n}$  has to be enjoined and another has to be prohibited. When pacati ca pacati ca become pacatah, tas has to be enjoined and ti has to be prohibited.

III
$$-ii(b)$$

यदि पुनरसमास एकशेष उच्येत

Suppose ēkaśēṣa is enjoined in non-samāsas.

असमासे वचनलोपः Mention of vacanalopa in non-samāsa.

यद्यसमासे वचनलोपो वक्तव्यः

If it is in non-samāsa, mention of vacana-lopa is necessary.

ननु चोत्पततैव वचनलोपं चोदिताः साः

Oh! we were informed at the very beginning about this vacanalopa.

द्विवचनबहुवचनविधिं द्वनद्वप्रतिषेधं च वक्ष्यति, तद्धं पुनश्चोद्यते

He (Vārttikakāra) is going to add dvivacana-bahuvacana-vidhi and dvandva-pratiṣēdha and for that sake, it is reopened.

द्विचनबहुवचनविधिः Vidhi of dvivacana and bahuvacana.

द्विवचनबहुवचनानि विधेयानि – वृक्षश्च वृक्य वृक्ष वृक्ष वृक्ष वृक्ष विक्ष विक्य विक्ष विक्य विक्ष विक्य विक्ष विक्ष विक्य विक्ष विक्ष विक्य विक्ष विक्ष व

The dual case-suffix and the plural case-suffix have to be enjoined, so that vrk, as ca vr

द्वन्द्वप्रतिषेधश्च Dvandvapratisedha too.

द्वन्द्वस्य च प्रतिषेघो वक्तव्यः । वृक्षश्च वृक्य वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्ष विक्ष विक्ष

There is need for the pratisēdha of dvandva. Dvandvatva has a chance to set in through the sūtra  $C\bar{a}rth\bar{e}$  dvandvah (2-2-29) in  $vrks\bar{a}u$  which stands for vrksas ca vrksas ca and in  $vrsk\bar{a}h$  which stands for vrksas ca vrksas ca vrksas ca.

नैष दोष, अनवकाश एकशेषो द्वन्द्वं बाधिष्यते

No, this difficulty does not arise, since  $\bar{e}ka \pm \bar{e}$ , which is anava $k\bar{a} \pm a$  will set at naught dvandva.

सावकाश एकशेषः Ekaśēşa is sāvakāśa.

कोऽनकाशः ? Which is the room for it to operate?

तिङन्तान्यवकाशः The avakāśa is finite verbs.

Note:—The need for re-opening III-ii is to show two more defects in it.

### III—iv (a)

यदि पुनः पृथक् सर्वेषां विभक्त्यन्तानामेकशेष उच्येत

Suppose then, ēkaśēṣa is enjoined to the words which are vibhaktyantas (i.e.) which have case-suffixes at the end.

Note:—The saptamī ēkavibhaktāu in the sūtra is taken to have the meaning of ṣaṣṭhī.

किं कृतं भवति ? What is achieved by it?

कश्चिद्वचनलोपः परिहृतो भवति ; विभक्त्यन्तानामेकशेषे विभक्त्यन्तानामेव तु निवृत्तिर्भवति

The difficulty about the vacana-lopa is removed; if ēkaśēṣa is with reference to vibhaktyantas, whole words ending in casesuffix are elided.

# एकविभक्त्यन्तानामिति तु पृथग्विमक्तिप्रतिषेधार्थम्

Need for the mention of  $\bar{e}kavibhaktyant\bar{a}n\bar{a}m$  to prohibit different vibhaktyantas.

एकविभक्त्यन्तानामिति तु वक्तव्यम्

It is the word ēkavibhaktyantānām that has to be read.

किं प्रयोजनम् ? Why?

पृथग्विमाक्ति पतिषेधार्थम् - पृथिविभक्त्यन्तानां मा भूत् । ब्राह्मणाभ्यां च कृतम्, ब्राह्मणाभ्यां च देहि ।

To prohibit (the ēkaśēṣa) of different vibhaktyantas. So that it may not take place to words having similar case-suffix in different cases, as brāhmaṇābhyām in the two sentences brāhmaṇābhyām ca kṛtam and brāhmaṇābhyām ca dēhi.

# न वार्थाविप्रतिषेधाद्यगपद्वचनाभावः

No, there is no chance for ēkaśēṣa on account of difference in meaning.

न वा एष दोषः This difficulty cannot arise.

किं कारणम् ? Why?

अर्थविप्रतिषेधात् । विप्रतिषिद्धौ एतावर्थौ कर्ता सम्प्रदानम् इति अशक्यौ युगपन्निर्देष्ट्रम् । तयोर्विप्रतिषिद्धत्वाद् युगपद्वचनं न भविष्यति

On account of arthavipratiṣēdha. The two meanings kartā and sampradānam are different from each other and so they cannot be expressed simultaneously. Hence they cannot be expressed by one word on account of vipratiṣēdha between them.

# अनेकार्थाश्रयश्र पुनरेकशेषः [तसानैकशब्दत्वम्]

But ēkaśēṣa is on the basis of one denoting many; hence is the impossibility of their becoming one word.

अनेकमर्थं सम्प्रत्याययिष्यामि इति एकशेष आरभ्यते

Ekaśēṣa is resorted to on the basis that the Sūtrakāra intends that one word should be capable of denotiong many at the same time.

तसान्नैकशब्दत्वम् - तसादेकशब्दत्वं न भविष्यति

Hence is the impossibility of their becoming one word:— Hence they do not take ēkašēṣa.

Note:—1. From this,  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  establishes that the two  $br\bar{a}hman\bar{a}bhy\bar{a}m$  having different case-suffixes (mentioned above) cannot take  $\bar{e}ka\acute{s}\bar{e}sa$ .

NOTE:—2. From the line of argument in this pakṣa, it makes us infer that  $\bar{e}ka$  in  $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  does not serve useful purpose.

अयं तर्हि दोष: - कश्चिद्रचनलोप:, द्विचनबहुवचनविधि:, द्वन्द्वपतिषेधश्च इति Even then, this defect remains that there is difficulty about that lopa of the singular suffix and there is need of enjoining dual case-suffix and plural case-suffix and of prohibiting its becoming a dvandva compound.

यदि पुनः प्रातिपदिकानामेकशेष उच्येत

Suppose, then, ēkaśēṣa is enjoined only to prātipadika.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  says here thus: -The word  $\bar{e}kavibakt\bar{a}u$  is not read in the  $s\bar{u}tra$  and the word  $pr\bar{a}tipadikasya$  is taken here by anuvrtti from the  $s\bar{u}tra$   $Hrasv\bar{o}$   $napumsak\bar{e}$   $pr\bar{a}tipadikasya$  is changed to  $pr\bar{a}tipadik\bar{a}n\bar{a}m$ .

किं कृतं भवति ? What is then achieved ?

वचनलोपः परिहृतो भवति

The difficulty about the elision of the case-suffix disappears.

# प्रातिपदिकानामेकशेष मातृमात्रोः प्रतिषेधः सरूपत्वात्

If there is ēkuśēṣa of prātipadikas, need for prohibiting that of mātr and mātr due on account of similarity of form.

प्रातिपदिकानामेकशेषे मातृमात्रोः प्रतिपेधो वक्तव्यः । माता च जनियत्री, मातारौ च धान्यस्य, मातृमातारः

If  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  of  $pr\bar{a}tipadikas$  is resorted to, there is need to prohibit that of  $m\bar{a}tr$  and  $m\bar{a}tr$ - $m\bar{a}t\bar{a}$  (mother) ca  $m\bar{a}t\bar{a}r\bar{a}u$  (the two measurers of corn) ca should compound into  $m\bar{a}trm\bar{a}t\bar{a}rah$ .

किं कारणम् ! Why ?

सरूपत्वात् - सरूपाणि ह्येतानि प्रातिपदिकानि

On account of having the same form. For these prātipadikas are identical in form.

किमुच्यते प्रातिपदिकानामेकशेष मातृमात्रोः प्रतिषेधो वक्तव्य इति, न पुन-र्यस्यापि विभक्त्यन्तानामेकशेषः तेनापि मातृमात्रोः प्रतिषेधो वक्तव्यः स्यात् । तस्यापि ह्येतानि कचिद् विभक्त्यन्तानि सरूपाणि, मातृभ्यां च मातृभ्यां च इति ?

Why is it said that there is need of prohibiting the  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  of  $m\bar{a}tr$  and  $m\bar{a}tr$  when the  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  of  $pr\bar{a}tipadikas$  is dealt with and why is it not said when the  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  of vibhaktyants was discussed? Both of them have the same form in certain cases like  $m\bar{a}trbhy\bar{a}m$ ,  $m\bar{a}trbhy\bar{a}m$  etc.

अथ मतमेतद् विभक्त्यन्तानां सारूप्ये भवितव्यमेवैकशेषेणेति । प्रातिपदिकानामेवैकशेषे दोषो भवति । एवं च कृत्वा चोद्यते ।

It may also be said that there is possibility of  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  when the vibhaktyantas are similar. The difficulty fully arises only when  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  of  $pr\bar{a}tipadikas$  is acceded. The discussion is made only on that basis.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says here that there cannot be  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  on account of  $arthavipratis\bar{e}dha$  and that, even if  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  is acceded to, there cannot be  $anupray\bar{o}ga$  to the same either by  $t\bar{a}bhis$  or by  $t\bar{a}is$ .  $N\bar{a}gojibhatta$  does not agree with his view.

### हरितहरिणइयेतइयेनरोहितरोहिणानां स्त्रियामुपसङ्ख्यानम्

Ēkašēṣa of harita and harina, šyēta and šyēna and rōhita and rōhina in feminine gender to be supplemented.

हरितहरिणश्येतश्येनरोहितरोहिणानां स्त्रियामुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् – हरितस्य स्त्री हरिणी, हरिणस्यापि हरिणी, हरिणी च हरिणी च हरिण्यो; श्येतस्य स्त्री श्येनी, श्येनस्यापि स्त्री श्येनी, श्येनी च श्येनी च श्येन्यो; रोहितस्य स्त्री रोहिणी, रोहिणस्यापि रोहिणी, रोहिणी च रोहिणी च रोहिण्यो

It is necessary to supplement the ēkašēṣa of the following pairs in their feminine gender:—harita and hariṇa, śyēta and śyēna and rōhita and rōhiṇa. Haritasya strī hariṇī, hariṇā ca hariṇī ca hariṇā ca hariṇā u; śyētasya strī śyēnī, śyēnasya strī śyēnī, śyēnī ca śyēnī ca śyēnyāu; rōhitasya strī rōhiṇī, rōhiṇā, rōhiṇā ca rōhiṇā ca rōhiṇā u.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says that, since they are dissimilar in stem form, there is no chance for  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$ .

### न वा पदस्यार्थे प्रयोगात

No, on account of word being used to denote artha.

न वैष दोषः This difficulty does not arise.

Note:—The difficulty here referred to has reference to the two vārttikas Prātipadikānām ēkaśēṣē mātṛmātrōḥ pratiṣēdhaḥ sarūpatvāt and Haritahariṇa....

किं कारणम्? Why?

पदस्यार्थे प्रयोगात्

On account of the use of pada to denote artha.

पदमर्थे प्रयुज्यते, विभक्त्यन्तं च पदम्

Pada is used to denote artha and pada is only vibhaktyanta.

रूपं चेहाश्रीयते । रूपनिर्प्रहश्च शब्दस्य नान्तरेण लौकिकं प्रयोगम् । तसिश्च लौकिके प्रयोगे सरूपाण्येतानि

 $R\bar{u}pa$  is taken into account in this  $s\bar{u}tra$ . The  $r\bar{u}pa$  of a word cannot be decided except with reference to its usage in the world. These have the same form in the  $l\bar{u}ukika$ -pray $\bar{o}ga$ .

Note:—The statement  $sar\bar{u}p\bar{a}ny\bar{e}t\bar{a}ni$  should be taken as upalakṣaṇa. Hence the statement  $vir\bar{u}p\bar{a}ni$   $t\bar{a}ni$  can be added, from which it is seen  $m\bar{a}tar\bar{a}u$  and  $m\bar{a}t\bar{a}r\bar{a}u$  which are  $vir\bar{u}pas$  need not be prohibited from taking  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  on account of their having no chance.

अपर आह

Another interprets the same vārttika in a different way.

न वा पदस्यार्थे प्रयोगात

No, on account of pada being used to denote artha.

न वैष पक्ष एवास्ति प्रातिपदिकानामेकशेष इति

There is no chance only for this pakṣa II [-v 'Prātipadikānām  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa...$ '

किं कारणम्? Why?

पदस्यार्थे प्रयोगात् । पदमर्थे प्रयुज्यते, विभक्त्यन्तं च पदम् । रूपं चेहा-श्रीयते । रूपनिर्प्रहश्च शब्दस्य नान्तरेण लौकिकं प्रयोगम् । तसिश्च लौकिके प्रयोगे प्रातिपदिकानां प्रयोगो नास्ति

On account of the use of pada to denote artha. Pada is used to denote artha and vibhaktyanta alone is pada.  $R\bar{u}pa$  is taken into account in this  $s\bar{u}tra$ .  $R\bar{u}pa$  of a word cannot be decided except with reference to its usage in the world.  $Pr\bar{a}tipadikas$  are not used in the world.

अथानेन पक्षेणार्थः स्या । प्रातिपदिकानामेकशेष इति ?

Is there any prayojana by taking recourse to the pakṣa 'Prāti-padikānām ēkaśēṣaḥ...'?

Note:—Though  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  has proved that this paksa cannot stand,  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  tries to prove that it can stand.

बादमर्थः Yes, certainly.

किं वक्तव्यमेतत्? Is this to be said?

न हि No, it need not.

कथमनुच्यमान गंस्यते ?

How is it understood without its being explained?

एतेनैवाभिहितं सूत्रेण सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ इति

It is explained by this sūtra Sarūpāṇām ēkaśēṣa ēkavibhaktāu itself.

कथम् श How?

विभक्तिः सारूप्येणाश्रीयते । अनैमित्तिक एकशेषः । एकविभक्तौ छौिकके प्रयोगे यानि सरूपाणि तेषामेकशेषो भवति

Vibhakti is taken to be the āśraya of sārūpya and ēkaśēṣa has no nimitta. Hence the sūtra means thus:-Those that are similar in form in worldly usage in the presence of a casesuffix take ēkaśēṣa.

क? Where?

यत्र वा तत्र वेति Wherever it is found.

Note:—Nāgōjibhaṭṭa feels that ēka in ēkavibhaktāu does not serve any useful purpose. Cf. Ēkagrahaṇa-phalam tu cintyam ēva.

III-iv(b)

अथानेन पक्षेणार्थः स्याद्विभक्त्यन्तानामेकशेष इति ?

Is there any prayojana by taking recourse to the pakṣa 'Vibhaktyantānām ēkasēṣaḥ'?

बादमर्थः Certainly, there is.

किं वक्तव्यमेतत् ? Is this to be explained?

Note:—The sentence ' $\bar{E}kavibhakt\bar{\imath}n\bar{a}m$  iti şaşthyantam vaktavyam kimityarthah' in  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$ 's  $Uddy\bar{o}ta$  seems to be an interpolation.

न हि No, it need not.

कथमनुच्यमानं गंस्यते?

How is it understood without its being explained?

एतदप्येतेनैवाभिहितं सूत्रेण सरूपानामेकशेष एकविभक्तौ इति

This too is explained by this  $s\bar{u}tra\ Sar\bar{u}p\bar{a}n\bar{a}m\ \bar{e}kaś\bar{e}$ ,  $a\ \bar{e}ka$ - $vibhakt\bar{a}u$  itself.

कथम्! How?

विभक्तिः सारूप्येणाश्रीयते 1

Vibhakti is taken to be the āsraya of sārūpya.

नेदं पारिभाषिक्या विभक्तेर्प्रहणम्

Vibhakti is not used in the technical sense.

किं तर्हि ? What is its sense then?

अन्वर्थप्रहणं विभागो विभक्तिरिति

It denotes its derivative meaning;  $vibh\bar{a}ga$  is the derivation of vibhakti.

Note:—Kāiyata says that vibhakti denotes karmādikāraka.

1. This is not found in certain editions.

एकविभागे यानि सरूपाणि तेषामेकशेषो भवतीति

The  $s\bar{u}tra$  means that  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  is to those which have similar forms in one case.

ननु चोक्तम् कश्चिद्वचनलोपो द्विवचनबहुवचनविधिः द्वन्द्वप्रतिषेधश्च

Oh, it has been said that there will be difficulty in the elision of case-suffix, that it will be necessary to enjoin the dual and plural suffixes and that its becoming a dvandva compound should be prohibited.

नैष दोषः, यत्तावदुच्यते कश्चिद्वचनलोपो द्विवचनबहुवचनविधिरिति

The difficulty stated first with reference to vacanalopa and dvivacanabahuvacanavidhi does not arise.

सहिववक्षायामेकशेषः 1 - युगपद्विवक्षायामेकशेषेण भवितव्यम् । न तर्हि इदानीमिदं भवित - वृक्षश्च वृक्य वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्षश्च वृक्ष विक्य विक्य

Ēkašēṣa takes place only when there is sahavivakṣā. Ēkašēṣa should set in only when it is desired that all words should denote simultaneously all meanings. In that case vṛkṣāu cannot be the ēkuśēṣa of vṛkṣaḥ ca and vṛkṣaḥ ca and vṛkṣāḥ cannot be the ēkaśēṣa of vṛkṣaḥ ca vṛkṣaḥ ca and vṛkṣaḥ ca. This cannot be in sahavivakṣā. In order to demonstrate ēkaśēṣa, mind should think in this line:—vṛkṣāu ca vṛkṣāu ca vṛkṣāu, vṛkṣāḥ ca vṛkṣāḥ ca vṛkṣāḥ ca vṛkṣāḥ.

यद्प्युच्यते द्वन्द्वप्रतिषेधश्च वक्तव्य इति, नैष दोषः

The difficulty that there is need for dvandvapratiṣēdha does not also arise.

अनवकाश एकशेषो द्वन्द्वं बाधिष्यते

Ēkaśēṣa which has no other room to operate sets at naught dvandva.

1. This is printed as a vārttika in all editions. From the context it seems better to take it as bhāṣya like Atha śabdānuśānam.

ननु चोक्तं सावकाश एकशेषः

Oh, it was said that ēkasēṣa has room to operate.

कोऽनकाशः ? What is the avakāśa?

तिङन्तान्यवकाशः Avakāśa is tinantas (finite verbs).

न तिङन्तान्येकशेषारम्भं प्रयोजयन्ति

The injunction of ēkaśēṣa is not intended for tinantas.

किं कारणम् ? Why?

यथाजातीयकानां द्वितीयस्य पदस्य प्रयोगे सामर्थ्यमस्ति तथाजातीयकानामेकशेषः।
न च तिङन्तानां द्वितीयस्य पदस्य प्रयोगे सामर्थ्यमस्ति ।

 $\bar{E}ka\dot{s}\bar{e}sa$  is only with reference to those words which are capable of being repeated. Finite verbs do not have the capacity of being repeated.

किं कारणम् ? Why?

एका हि किया । एकेनोक्तत्वात् तस्यार्थस्य द्वितीयस्य प्रयोगेण न भवितव्यम् उक्तार्थानामप्रयोग इति

For action is one. Since it is denoted by one word, it cannot be repeated to denote the same on the strength of the dictum  $Ukt\bar{a}rth\bar{a}n\bar{a}m$   $apray\bar{o}gah$  (non-repetition of things said).

यदि तर्हि एका किया, द्विवचनबहुवचनानि न सिध्यन्ति पचतः, पचन्ति lf then the action is one, it is not possible to arrive at the dual and plural forms like pacatah and pacanti.

नैतानि क्रियापेक्षाणि These do not depend upon the kriyā.

किं तर्हि ? Upon what then?

साधनापेक्षाणि

Upon the number of the  $kart\bar{a}$  or karma denoted by the finite verbs.

III—i (b)

अथ वा पुनरस्तु एकविभक्तौ इति
Or let it be when there is ēkavibhakti

ननु चोक्तम् एकविभक्ताविति चेन्नाभावाद्विभक्तैः इति

Oh, the objection *Ekavibhaktāviti cēt na abhāvād vibhaktēḥ*! was raised.

नैष दोष:, परिहृतमेतत् अर्थवत्प्रातिपदिकामिति प्रातिपदिकां भविष्यति इति । This difficulty does not arise. It has been answered that prātipadikasanijnā is secured by the sūtra Arthavad....prātipadikam.

ननु चोक्तम् नियमान्न प्राप्नोति, अर्थवत्समुदायानां समासग्रहणं नियमार्थिमिति Oh, it was said that it is not secured through the niyama that, if arthavat-samudāya gets the samjñā, it is only samāsa.

नैष दोषः, तुरुयजातीयस्य नियमः

No, this difficulty does not arise, since niyama operates only with reference to those of the same class.

कश्च तुल्यजातीयः? What belong to the same class? यथाजातीयकानां समासः?

Those who are capable of being compounded together.

कथञ्जातीयकानां समासः?

Which are capable of being compounded together?

सुबन्तानाम्

Samāsa is possible only with subantas (nouns)

1 V

# सर्वत्रापत्यादिषूपसङ्ख्यानम्

Ekaśēṣa should be stated in addition when apatyapratyaya etc. follow with reference to every pakṣa.

सर्वेषु पक्षेषु अपत्यादिषूपसङ्ख्यानं कर्तन्यम् । भिक्षाणां समूहो भैक्षम् इति Ekaśēṣa should be stated in addition before apatyapratyaya etc. with reference to all the cases discussed above.

सर्वत्र इत्युच्यते, प्रातिपदिकानां चैकशेषे सिद्धम्

The word sarvatra is mentioned in the  $v\bar{a}rttika$ ; but the desired object is achieved in the pakṣa where the  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  of  $pr\bar{a}ti$ -padikas are acceded to.

अपत्यादिषु इत्युच्यते, बहवश्च अपत्यादयः; गर्गस्य अपत्यं बहवो गर्गाः । एका प्रकृतिः बहवश्च यञः । असारूप्यादेकशेषो न प्राप्नोति ।

The word apatyādiṣu is read and apatyādis are many. Many gargas are the apatya of Garga. The stem is one and the pratyayas yañ are many. There is no  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}$ ṣa since they are not similar in form.

Note:—Kāiyaṭa reads here:—Tatra Garga-ya-ya-ya iti sthitē, samudāyasya taddhitāntatvāt prātipadikatvāt tata ēkā vibhaktiḥ, tatra prathamasya ya-śabdasya prakṛtisannipātakṛtam vāirūpyam iti ēkaśēṣō na prāpnōti.

ननु च यथैव बहवो यञः, एवं प्रकृतयोऽपि बह्वचः स्युः As yañs are many, let the stems as well be many.

नैवं शवयम् ; इह हि दोषः स्यात् - गर्गा वत्सा बिदा उर्वा इति । अञ्यो बहुषु यञ्यो बहुषु इत्युच्यमानो छुङ् न प्राप्तोति ।

This is not possible; for the difficulty will arise in the forms  $garg\bar{a}h$ ,  $vats\bar{a}h$ ,  $bid\bar{a}h$  and  $urv\bar{a}h$ . There will be no chance for the elision of  $a\tilde{n}$  or  $ya\tilde{n}$  after the stem denoting bahutva.

NOTE:—If there is elision of all  $ya\tilde{n}$  except the first, there is chance for its luk by the  $s\bar{u}tra$   $Ya\tilde{n}$ - $a\tilde{n}\bar{o}sca$  (2, 4, 64). If, on the other hand, it is acceded that  $g\bar{a}rgyas$  except the first are elided, there is chance for the ya of the first  $g\bar{a}rgya$  since it does not denote bahutva.

मा भूदेवम्; अञन्तं यह्नहुषु यञन्तं यह्नहुषु इत्येवं भविष्यति Let it not be so; elision takes place in añanta and yañanta which denote bahutva.

ननु चोक्तम् - नैवं शक्यिमिह हि दोषः स्यात् - काश्यपप्रतिकृतयः काश्यपा इति Oh, it has been said that it is not possible since difficulty will arise in the form  $k\bar{a}$  which means the portraits of  $K\bar{a}$  syapa.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says here that, if that point is acceded to, the form will have to be  $k\bar{a}syapah$ ; but the word  $k\bar{a}syap\bar{a}h$  alone is used to denote the portraits of the apatya of  $K\bar{a}syapa$ .

नैष दोष: । लोकिकस्य तत्र गोत्रस्य प्रहणम् । न चैतद् लोकिकं गोत्रम् This difficulty does not arise. There, (in the sūtras) mention is made of the gōtra found in the world. This (the pratikṛti) is not lāukika gōtra.

Note:— $G\bar{o}tra$  is the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  denoting the descendants of one from his grandson downwards.  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  tells us that the pratyayas have reference to words denoting human beings and not portraits.

अथ वा पुनरस्तु एका प्रकृतिर्वहवश्च यञः

Or let it be that the stem is one and yañ-pratyayas are many.

ननु चोक्तमसारूप्यादेकशेषो न प्रामोतीति

Oh, it was said that there is no chance for  $\bar{e}ka\acute{s}\bar{e}$ , a on account of  $as\bar{a}r\bar{u}pya$ .

### सिद्धं तु समानार्थानामेकशेषवचनात्

The object is achieved by enjoining  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  of words having the same pravrttinimitta.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

कथम् ? How?

समानार्थानामेकशेषो भवतीति वक्तव्यम्

It is necessary to enjoin that words having the same pravṛtti-nimitta take ēkaśēsa.

यदि समानार्थानामेकशेष उच्यते, कथमहाः पादाः माषा इति ?

If it is said that synonyms take  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$ , how is it possible for homonyms like  $aks\bar{a}h$ ,  $p\bar{a}d\bar{a}h$  and  $m\bar{a}s\bar{a}h$  to take  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$ ?

नानार्थानामीप सरूपाणाम् For the homonyms also.

नानार्थानामपि सद्धपाणामेकशेषो वक्तव्यः

Injunction is to be made of ēkaśēṣa to homonyms too.

# एकार्थानामपि विरूपाणाम् Of synonyms too.

एकार्थानामि विरूपाणामेकशेषो वक्तव्यः - वक्रदण्डश्च कुटिलदण्डश्च वक्रदण्डौ, कुटिलदण्डौ इति वा

Ēkašēsa has to be enjoined to synonyms, so that Vakradaņļas ca Kuţiladanḍas ca may become either Vakradanḍāu or Kuţiladanḍāu.

Note:—The difference between  $sam\bar{a}n\bar{a}rthas$  and  $\bar{e}k\bar{a}rthas$  deserves to be noted: the former refer to those words which have the same pravrttinimitta and the latter refer to those words which have different pravrttinimittas.

### खरभिनानां यस्योत्तरस्वरविधिः

Of those which have different syllables of udātta, with that of the latter.

स्वरिमन्नानां यस्योत्तरस्वरिवधिः तस्यैकशेषो वक्तव्यः, अक्षश्च अक्षेश्च अक्षौ, मीमांसकश्च मीमांसकश्च मीमांसको

Ēkašēṣa of those which have different udātta syllables, having that of the latter has to be enjoined, so that akṣaś ca akṣaś ca may become akṣāu and mīmāmsakaś ca mīmāmsakaś ca may become mīmāmsakāu.

Note:—The word ak sa, if it means a die, has its second syllable  $ud\bar{a}tta$  and if it means axle etc. has its first syllable  $ud\bar{a}tta$ . The word  $m\bar{\imath}m\bar{a}\dot{m}saka$  has its second syllable  $ud\bar{a}tta$ , if it means an investigator and it has its first syllable  $ud\bar{a}tta$ , if it means one who studies  $M\bar{\imath}m\bar{a}\dot{m}s\bar{a}$ .

#### V

## इह कसान भवति एकश्च एकश्च, द्वौ च द्वौ च इति ?

Why does not ēkaśēṣa find a place with reference to ēkaś ca ēkaś ca and dvāu ca dvāu ca?

## सङ्ख्याया अर्थासंप्रत्ययादन्यपदार्थत्वाचानेकशेषः

Absence of  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  with reference to certain numbers on account of their not denoting the desired meaning and on account of the meaning being conveyed by another word.

सङ्ख्याया अर्थासम्प्रत्ययादेकशेषो न भविष्यति । न हि एकौ इत्यनेन अर्थो गम्यते There is no  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  with reference to certain numbers; for the word  $\bar{e}k\bar{a}u$  does not convey any meaning.

अन्यपदार्थत्वाच सङ्ख्याया एकशेषो न भविष्यति; एकश्च एकश्च इत्यस्य द्वौ इत्यर्थः, द्वौ च द्वौ च इत्यस्य चत्वार इत्यर्थः

There is no  $\bar{e}/ca\dot{s}\bar{e}\dot{s}a$  with reference to certain numbers, since  $dv\bar{a}u$  gives the meaning of  $\bar{e}ka\dot{s}$  ca  $\bar{e}ka\dot{s}$  ca and  $catv\bar{a}ra\dot{h}$  gives the meaning of  $dv\bar{a}u$  ca  $dv\bar{a}u$  ca.

नैतौ स्तः परिहारौ

These two cannot be satisfactory reasons for its absence.

यत्तावदुच्यते सङ्ख्याया अर्थासम्प्रत्ययादिति, अर्थासम्प्रत्ययेऽपि हि सत्येकशेषो भवति । तद्यथा गार्ग्यश्च गार्ग्यायणश्च गार्ग्यो, न चोच्यते वृद्धयुवानाविति, भवति चैकशेषः

With reference to what was stated at first that there is no  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}\bar{s}a$  on account of their conveying no meaning, there is  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}\bar{s}a$  even when the meaning is endowed with ambiguity. There is  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}\bar{s}a$  in  $G\bar{a}rgy\bar{a}u$  of  $G\bar{a}rgyah$  and  $G\bar{a}rgy\bar{a}yanah$  though it is not stated that it is so of  $vrddhapratyay\bar{a}nta$  and  $yuvapratyay\bar{a}nta$ .

Note:—Gārgyāu may be split into Gārgyas ca Gārgyas ca or Gārgyas ca Gārgyāyaṇas ca.

यद्प्युच्यते अन्यपदार्थत्वाच इति, अन्यपदार्थेऽपि एकशेषो भवति, तद्यथा विंशतिश्च विंशतिश्च विंशती इति; तयोः चत्वारिंशदृ इत्यर्थः ।

With reference to the other objection that their meaning is conveyed by another word, there is ēkaśēṣa even when their meaning is conveyed by another word. There is ēkaśēṣa of viṁśatiś ca viṁśatiś ca in viṁśatī, though catvāriṁśat conveys the same meaning.

एवं तर्हि नेमौ पृथक्परिहारो । एकपरिहारोऽयं सङ्ख्याया अर्थासम्प्रत्ययाद् अन्यपदार्थत्वाच इति । यत्र हि अर्थासम्प्रत्यय एव वा अन्यपदार्थतेव वा भवति तत्र एकशेषो गाग्यौ, विंशती इति यथा ।

If so, these two are not considered as two reasons for its absence. Arthāsampratyaya and anyapadārthatva of saikhyā

are considered as one reason conjointly. There is  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  as in  $G\bar{a}rgy\bar{a}u$  and  $vi\dot{m}\dot{s}at\bar{\imath}$  where one of the two-arthasampratyaya and anyapadarthata-exists.

अथ वा नेमे एकशेषशब्दाः

Or these (dvāu etc.) are not ēkaśēṣaśabdas.

यदि तर्हि नेमे एकशेषशब्दाः समुदायशब्दास्तर्हि भवन्ति

If, then, they are not ēkaśēṣaśabdas, they have to be considered samudāyaśabdas.

Note:—Samudāyasabdas are those which give collective sense and ēkašēṣasabdas are those where sense is taken individually.

तत्र को दोष:? What is the harm there?

एकवचनं प्रामोति । एकार्था हि समुदाया भवन्ति । तद्यथा यूथं, शतं, वनम् इति

Singular suffix will have to be attached to them. Groups give only collective sense. For example, the words yūtham, śatam and vanam.

सन्तु तर्हि एकशेषशब्दाः Let them be, then, ēkaśēṣaśabdas.

किंकृतं सारूप्यम्?

Where is sārūpya between what is left and the vigrahavākya?

Note:—1. Kāiyaṭa reads here: Ekaś ca ēkaś ca iti vigrahē katham dviśabdaḥ pravartatē iti prašnaḥ. Nāgōjibhaṭṭa explains it thus: Ekaś ca ēkaś ca iti vigrahē śiṣyamāṇa-dvi-śabdēna kim sādrśyam.

Note: -2. Kim may be taken in the sense of katham.

अन्योन्यकृतं सारूप्यम्

Sārūpya is acquired through parasparāpēkṣā.

Note:  $-K\bar{a}iyaţa$  reads here:  $-Paraspar\bar{a}p\bar{\epsilon}kṣay\bar{a}$  dvitvōt-pattāu satyām prakriyāvākyam idam bhavati dvāu ca dvāu ca iti.

सन्ति पुनः केचिदन्येऽपि शब्दा येषामन्योन्यकृतो भावः?

Are there other words whose pravrttinimitta is through parasparāpēkṣā?

सन्तीत्याह - माता, पिता, भ्राता इति

'Yes, there are', says he. They are mātā, pitā, and bhrātā.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says here that, just as a woman after giving birth to a child gets the designation 'mother', so also the word  $\bar{e}ka$  takes the form  $dv\bar{a}u$  when there is  $\bar{e}kas\bar{e}sa$  between  $\bar{e}ka$  and  $\bar{e}ka$ .

विषम उपन्यासः । सक्टदेते शब्दाः प्रवृत्ता अपायेष्विप वर्तन्ते ; इह

The analogy is not sound. These words, ( $pit\bar{a}$  etc.) when once used, are used even when the object which brought them into existence disappears. But here with reference to numbers, if one is taken away from four, it cannot be named four.

अन्यद् इदानीमेतद् उच्यते - सक्नदेते शब्दाः प्रवृत्ता अपायेष्विप वर्तन्ते - इति This is an entirely different thing that these words when once used are used even when the object which brought them into existence disappears.

यतु भवानसांश्चोदयति सन्ति पुनः केचिदन्येऽपि शब्दा येषामन्योन्यकृतो भाव इति; तत्रैते असाभिरुपन्यस्ताः

These words were given by us as answer to the question put by you, sir, whether there are other words whose pravrtti-nimitta is through  $paraspar\bar{a}p\bar{e}ks\bar{a}$ .

तत्रैतद्भवानाह - सक्तदेते शब्दाः प्रवृत्ता अपायेष्वपि वर्तन्ते इति । एतच वार्तम्

There you say that those words when once used are used even in the absence of the object which brought them into existence and it is a flimsy argument.

Note:—The sentence  $\bar{e}tac\ ca\ v\bar{a}rtam$ , when it is taken with the sentence that precedes, means this is a flimsy argument and if it is taken with what follows, it means it is but proper.  $K\bar{a}iyata$  takes it in the latter sense, while  $N\bar{a}g\bar{o}ji-bhatta$  seems to prefer the former.

एकैको नोचन्तुं भारं शकोति यत्कथं तत्र । एकैकः कर्ता स्यात्सर्वे वा स्युः कथं युक्तम् ॥ कारणमुद्यमनं चेन्नोचच्छति चान्तरेण तत्तुल्यम् । तसात् पृथक् पृथक् ते कर्तारः सव्यपेक्षास्तु ॥

When each man cannot singly lift a weight, how can each become the  $kart\bar{a}$  or how can all become so? If the cause is lifting, one does not lift it without the help of another. Hence each depending on others becomes the  $kart\bar{a}$ .

Note:— $K\bar{a}iyaţa$  reads here:— $Yath\bar{a}$  udyant $\bar{r}$ ņ $\bar{a}m$  parasparasannidhikrtam kartrtvam  $\bar{e}k\bar{a}ik\bar{a}p\bar{a}y\bar{e}$  ca nivartat $\bar{e}$  ca tath $\bar{a}$ dvy $\bar{a}divyapad\bar{e}$ s $\bar{o}$ pi.

### VI

### प्रथममध्यमोत्तमानामेकशेषोऽसरूपत्वात्

Need to enjoin the ēkašēṣa of the words of the third person, the second person and the first person, on account of their having different forms.

भथममध्यमोत्तमानामेकशेषो वक्तव्यः । पचति च पचसि च पचथः, पचसि च पचामि च पचावः, पचति च पचसि च पचामि च पचामः ।

It is necessary to mention ēkaśēṣa to the words of the third person, the second person and the first person, so that pacataḥ may be used in place of pacati ca pacasi ca, pacāvaḥ, in place of pacasi and pacāmi and pacāmaḥ in place of pacati ca pacasi ca pacāmi ca.

किं पुनः कारणं न सिध्यति ? Why is it not achieved ?

असर्पत्वात् On account of dissimilarity in form.

Note:—1. Nāgōjibhaṭṭa here says asamānaśabdatvād asamānārthatvāc ca. But this seems to differ from the idea of Mahābhāṣyakāra who says at the beginning of this sūtra Śrutāu ca rūpagrahaṇam.

Note:—2. Even though  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  has mentioned above only the words denoting the third, the second and the first person, it is not easy to understand why  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ 

has given examples only from finite verbs and not from pronouns also thus: -sa ca tvam ca  $yuv\bar{a}m$ ; tvam ca aham ca  $\bar{a}v\bar{a}m$ ; sa ca tvam ca aham ca vayam.

# द्विवचनबहुवचनाप्रसिद्धिश्रेकार्थत्वात्

Non-accomplishment of dvivacana and bahuvacana, on account of the singularity of meaning of that which remains.

द्विवचनबहुवचनयोश्चाप्रसिद्धिः

Non-accomplishment of dvivacana and bahuvacana.

किं कारणम्? Why?

एकार्थत्वात् । एकोऽयमविशष्यते तेनानेन तद्र्थेन भवितव्यम्

On account of the singularity of the meaning. Only one word remains and it should stand along only with its meaning.

किमर्थेन? With what artha?

यदर्थ एक: With that artha which one word has.

किमर्थश्चेकः? What is the artha which one word has?

एक एकार्थः Oneness is the artha of the one word.

नैकार्थ्यम् Its non-having ēkārthatva.

नायमेकार्थः It does not denote only one object.

किं तर्हि ! What then ?

द्रचर्थों बहुर्थश्च It has the meaning of two and many.

# नैकार्थ्यमिति चेद् आरम्भानर्थक्यम्

If  $n\bar{a}ik\bar{a}rthyam$  is acceded to, there is no need for this  $s\bar{u}tra$ .

नैकार्थ्यमिति चेद् एकशेषारम्मोऽनर्थकः स्यात्

If nāikārthyam is acceded to, this sūtra Sarūpāņām ēkśēṣaḥ.... is of no use.

इह हि शठदस्य स्वाभाविकी वा अनेकार्थता स्याद्, वाचिनकी वा?

Is the anēkārthatā of śabda here natural or kālpanikī?

तद्यदि तावद् स्वाभाविकी If, at first, it is taken to be natural,

### अशिष्य एकशेष एकेनोक्तत्वात्

Ekaśēsa need not be enjoined, on account of its being denoted by one.

अशिष्य एकशेषः Ekaśēṣa need not be enjoined.

किं कारणम् ? Why?

एकेनोक्तत्वात् तस्यार्थस्य द्वितीयस्य प्रयोगेण न भवितव्यम् उक्तार्थानामप्रयोग इति ।

Since the meaning is denoted by one, there is no need for the use of the second on the strength of the dictum 'Do not repeat what has been said.'

अथ वाचिनकी, तद्वक्तव्यम्, एकोऽयमविशिष्यते स च द्व्यर्थो भवति बह्वर्थश्च इति

If it is  $k\bar{a}lp \, inik\bar{i}$ , it is to be read that one is left behind and it denotes two objects and more.

Note:- $K\bar{a}iya$ ța says:- $Sar\bar{u}p\bar{a}$ ņām ēkaśēsēsōsnēkārthasćscaika-svibhaktāuiti vaktavyamityarthash.

न वक्तव्यम्, सिद्धमेकशेष इत्येव

No, it need not be read. The object is achieved by the injunction of  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$ .

कथं पुनरेकोऽयमविशिष्यत इत्यनेन द्व्यर्थता बह्वर्थता च शक्या लब्धुम्? How is it that, from the statement that one is left behind, it can denote two objects and more?

तच एकशेषकृतम् It is evidently done by ēkaśēṣa.

न ह्यन्तरेण तद्वाचिनः शब्दस्य प्रयोगं तस्यार्थस्य गतिर्भवति । It is not possible to arrive at that meaning, unless there is a word to convey it.

पश्यामश्च पुनरन्तरेणापि तद्वाचिनः प्रयोगं तस्यार्थस्य गतिर्भवति, अग्निचित् सोमसुत् इति यथा

Oh, we see that it is possible to arrive at a meaning even without anything denoting it, as in the words agnicit and somasut.

Note:—The nominative singular suffix is absent in the words agnicit and somasut, but its meaning of kartriva exists there-

ते मन्यामहे छोपकृतमेतद् येनात्र अन्तरेणापि तद्वाचिनः शब्दस्य प्रथोगं तस्यार्थस्य गतिभवति इति

We think that it is due to the elision (of the case-suffix), since its meaning exists even in the absence of  $v\bar{a}caka$ .

एविमहाप्येकशेषकृतमेतद् । येनात्र एकोऽयमविशष्यते इत्यनेन द्वचर्थता बह्वर्थता च भवति

So also it is here due to the  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$ . The statement that one is left behind makes it denote two objects and more.

उच्येत तर्हि न तु गम्येत । यो हि गामश्व इति ब्र्याद् अश्वं वा गौरिति, न जातुचित् सम्प्रत्ययः स्यात्

Let it, then, be told and not suggested. He who calls a cow by the word horse and horse by the word cow cannot have clear comprehension.

तेन अनेकार्थाभिधाने यत्नं कुर्वता अवश्यं लोकः पृष्ठतोऽनुगन्तव्यः, केष्वर्थेषु लोकिकाः कान् शब्दान् प्रयुक्तत इति

Therefore the world is necessarily to be followed by one who makes an attempt to enable a word give many meanings. He should see which words men in the world use in particular meanings.

लोके च एकैकासिन् वृक्षः इति प्रयुक्षते, द्वयोः वृक्षो इति, बहुषु वृक्षाः इति They use in the world the word vrksah to denote one tree, vrksau to denote two trees and vrksah to denote many trees.

यदि तर्हि लोकोऽवर्यं शब्देषु प्रमाणं, किमर्थमेकरोष आरभ्यते ?

If, then, the world is necessarily the authority with reference to the usage of words, what is the need for this ēkaśēṣa-sūtra?

अथ किमर्थं लोप आरम्यते ?

Why, then, is the  $s\bar{u}tra$  enjoining elision read?

प्रत्यक्षलक्षणमाचार्यः प्रार्थयमानो लोपमारभते, एकशेषारम्भे पुनरस्य न किञ्चित् प्रयोजनमस्ति ।

 $Ac\bar{a}rya$  reads  $l\bar{o}pa$ - $vidh\bar{a}yaka$ - $s\bar{u}tra$  for the dictum  $pratyayal\bar{o}p\bar{e}$  pratyayalaksanam to operate; but there is absolutely no benefit in reading  $\bar{e}ka$ \$\tilde{e}sa- $s\bar{u}tra$ .

ननु चोर्त्तं प्रत्यर्थं शब्दिनवेशान्नैकेनानेकस्याभिधानम् इति । यदि चैकेनानेक-स्याभिधानं स्यात् न प्रत्यर्थं शब्दिनवेशः कृतः स्यात्

Oh, it was said that one is not capable of denoting many on account of each object being denoted by a separate word. If, on the other hand, one is capable of denoting many, separate words need not be used to denote each object separately.

# प्रत्यर्थं शब्दनिवेशानैकेनानेकस्याभिधानाद्प्रत्यर्थमिति चेत्तद्पि प्रत्यर्थमेव

If it is said that separate words need not be used to denote each object separately since one is not capable of denoting many on account of each object being denoted by a separate word, the word denoting two or more is used to denote one group alone.

प्रत्यर्थं शब्दिनवेशान्नैकेनानेकस्याभिधानाद् अप्रत्यर्थिमिति चेत्, एवमुच्यते यदप्येकेनानेकस्याभिधानं भवति तदिप प्रत्यर्थमेव । यदिप ह्यर्थावर्थी प्रति तदिप प्रत्यर्थमेव, यदिप ह्यर्थानर्थान् प्रति प्रत्यर्थमेव ।

If it is said that separate words need not be used to denote each object separately since one is not capable of denoting many on account of each object being denoted by a separate word, it is answered that the word denoting two or more is used to denote one group alone. That which denotes two objects denotes only one group and that which denotes many objects denotes also only one group.

### यावतामभिधानं तावतां प्रयोगो न्याय्यः

It is but right to use a word to denote all meanings which it is capable of denoting.

यावतामर्थानामभिधानं भवति तावतां शब्दानां प्रयोग इत्येव पक्षो न्याच्यः It is this pakṣa alone that is right that allows the use of a word to denote all meanings which it is capable of denoting.

# यावतामभिधानं तावतां प्रयोगो न्याय्य इति चेदेकेनाप्यनेकस्थाभिधानम्

If it is taken that it is right to allow the use of a word to denote all meanings which it is capable of denoting, one will denote many meanings.

यावतामिधानं तावतां प्रयोगो न्याय्य इति चेदेवमुच्यते, एषोऽपि पक्षो न्याय्य एव यद्प्येकेनानेकस्याभिधानं भवति

If it is said that it is but proper to use a word in all senses which it is capable of denoting, this pakṣa too will be right to use a word to denote many.

यदि तर्हि एकेनानेकस्याभिधानं भवति प्रक्षन्ययोधौ

If, then, one can denote many, the prayoga plaksanyagrodhāu-

### एकेनोक्तत्वादपरस्य प्रयोगोऽनुपपन्नः

The use of another is unnecessary, on one giving its meaning too.

एकेनोक्तत्वात् तस्यार्थस्यापरस्य प्रयोगेण न भवितव्यम्

Since its meaning is expressed by one, there is no need to use the other word.

किं कारणम्? Why?

उक्तार्थानामश्योग इति

On account of the dictum of the non-use of words whose meaning has already been expressed.

## एकेनोक्तत्वादपरस्य प्रयोगोऽनुपपन्न इति चेदनुक्तत्वात् प्रक्षेण न्यग्रोधस्य न्यग्रोध-प्रयोगः

If it is said that there is no need of reading that whose meaning has already been expressed by another, the word nyagrādha is read, since its meaning has not been expressed by plakṣa.

एकेनेक्तत्वादपरस्य प्रयोगोऽनुपपन्न इति चेदनुक्तः प्रक्षेण न्यप्रोधार्थ इति कृत्वा न्यप्रोधशब्दः प्रयुज्यते ।

If it is said that there is no need of reading that whose meaning has already been expressed by another, the word nyagrādha is read on the assumption that its meaning has not been expressed by the word plakṣa.

कथमनुक्तः, यदिदानीमेव उक्तम् एकेनाप्यनेकस्याभिधानं भवति इति !
How is it that it is not expressed, even though it has just been announced that one may express many?

सह्रपाणामेकेनाप्यनेकस्याभिधानं भवति, न विरूपाणाम्
There is denotation of many even by one, of those which are similar and not dissimilar.

कि पुनः कारणं सरूपाणामेकेनाप्यनेकस्याभिधानं भवति, न पुनर्विरूपाणाम् ? Why is it that one can denote many of similar things and not many of dissimilar things?

अभिधानं पुनः खाभाविकम् Such abhidhāna is but natural.

स्वाभाविकमभिघानम् It is the natural abhidhana.

उभयदर्शनाच On account of both being seen.

उभयं खर्विष दृश्यते । विरूपाणामिष एकेनानेकस्याभिधानं भवति – तद्यथा द्यावां हु क्षामां, द्यावां चिदसौ पृथिवी नेमेते इति । विरूपाणां किल नामेकेनानेकस्या-भिधानं स्यात्, किं पुनः सरूपाणाम् ?

Both are seen. Many are denoted by one even though they are dissimilar.

•  $Dy\bar{a}v\bar{a}$  ha kṣ $\bar{a}m\bar{a}$  (R. V. 10, 12, 1)

and

Dyāvā cid asmāi prthivī namētē (R. V. 2, 12, 13) are examples for the same. When many are denoted by one even though they are dissimilar, what need be said when they are similar?

Note:—1. It is taken that each of  $dy\bar{a}v\bar{a}$  and  $k\bar{s}\bar{a}m\bar{a}$ , the component parts of the  $V\bar{e}dic$  dual  $dy\bar{a}v\bar{a}k\bar{s}\bar{a}m\bar{a}$ , denotes both  $dy\bar{a}u$  and  $prthiv\bar{\imath}$  and so also each of  $dy\bar{a}v\bar{a}$  and  $prthiv\bar{\imath}$ , the component parts of the  $V\bar{e}dic$  dual  $dy\bar{a}v\bar{a}prthiv\bar{\imath}$ .

Note:—2. The  $s\bar{u}tra$  is set at naught, in the  $dravy\bar{a}bhidh\bar{a}$ -napakṣa, by  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  through the two reasons  $\bar{e}k\bar{e}na$   $uktatv\bar{a}t$  and  $ubhayadarśan\bar{a}c$  ca.

### आकृत्यभिघानाद्वैकं विभक्तौ वाजप्यायनः

 $V\bar{a}japy\bar{a}yana$ 's wish to have only one  $\pm abda$  when it is followed by case-suffix, even when  $pad\bar{a}rtha$  is taken to be  $\bar{a}krti$  (genus).

आकृत्यभिधानाद्वैकं शब्दं विभक्तौ वाजप्यायन आचार्यो न्याय्यं मन्यते । एका आकृतिः, सा च अभिधीयते

 $\bar{A}c\bar{a}rya\ V\bar{a}japy\bar{a}yana$  thinks it proper to have only one śabda before a case-suffix even in  $\bar{a}krtipak$ ; a.  $\bar{A}krti$  is one and it is denoted.

कथं पुनर्ज्ञायते एका आकृतिः सा चाभिधीयते इति ? How is it known that ākṛṭi is one and it is denoted? प्रख्याविशेषात् On account of oneness in comprehension.

न हि गौरित्युक्ते विशेषः प्रख्यायते शुक्का नीला कपिला कपोतिकेति When the word gāuḥ is pronounced, the accessory qualities of being white, black, brown or grey are not comprehended.

यद्यपि तावत् प्रख्याविशेषात् ज्ञायते एका आकृतिरिति, कुतस्त्वेतत् सा अभिधीयते इति ?

Even though it is understood that genus is one through  $prakhy\bar{a}$ -aviśēṣa, how is it known that it is denoted by it?

अन्यपवर्गगतेश्च Through abhēdajñāna too.

अव्यपवर्गगतेश्च मन्यामहे आकृतिरिमधीयते इति । न हि गौरित्युक्ते व्यपवर्गो गम्यते – शुक्का नीला कपिला कपोतिकेति

We decide that genus is denoted through  $abh\bar{e}daj\tilde{n}\bar{a}na$ . When the word  $g\bar{a}uh$  is pronounced, mind does not think of the colour-whiteness, blackness, brownness or greyness separately.

ज्ञायते चैकोपदिष्टम् It is recognised when once it is shown.

ज्ञायते खल्वप्येकोपदिष्टम् । गौरस्य कदाचिद् उपदिष्टो भवति । स तमन्यस्मिन् देशे अन्यस्मिन् काले अन्यस्यां च वयोवस्थायां दृष्ट्या जानाति अयं गौः इति It is definitely recognised when once it is shown. The cow is shown to one sometimes. On seeing it in another place, at another time and at a different growth, he recognises that it is a cow.

कः पुनरस्य विशेषः प्रख्याविशेषाद् इत्यतः ?

How does this  $(j\tilde{n}\bar{a}yat\bar{e}\ c\bar{a}ik\bar{e}padistam)$  differ from  $praky\bar{a}-avis\bar{e}s\bar{a}t$ ?

तस्यैवोपोद्धलकमेतत् प्रख्याविशेषाद् जायते चैकोपदिष्टम् इति

This strengthens it—that  $\bar{e}k\bar{o}padi$   $\bar{e$ 

धर्मशास्त्रं च तथा Dharmaśāstra, too, holds the same view.

एवं च कृत्वा धर्मशास्त्रं प्रवृत्तं - ब्राह्मणो न हन्तव्यः, सुरा न पेया - इति, ब्राह्मणमात्रं च न हन्यते, सुरामात्रं च न पीयते । यदि द्रव्यं पदार्थः स्याद् एकं ब्राह्मणम् अहत्वा एकां च सुरामपीत्वा अन्यत्र कामचारः स्यात् ।

Dharmaśāstra came into existence on this assumption. The injunctions  $Br\bar{a}hman\bar{o}$  na hantavyah and  $Sur\bar{a}$  na  $p\bar{e}y\bar{a}$  tell us that no brahman should be killed and no kind of  $sur\bar{a}$  should be drunk. If, on the other hand, individuality is taken to be the  $pad\bar{a}rtha$ , one is prevented from killing only one brahman and from drinking only one kind of  $sur\bar{a}$  and he is at liberty to do what he likes with the rest.

कः पुनरत्र विशेषोऽव्यपवर्गगतेश्चत्यतः ?

How does this differ from avyapavargagatēh?

तस्यवोपोद्धलकमेतत् - अव्यपवर्गगतेश्च, धर्मशास्त्रं च तथा इति

This Dharmaśāstram ca tathā, strengthens it-Avyapavargagatēś ca.

# अस्ति चैकमनेकाधिकरणस्यं युगपत्

There is one who is seen simultaneously in different places.

अस्ति खल्वप्येकमनेकाधिकरणस्यं युगपल्लभ्यते ?

Is there any one who is seen simultaneously at different places?

Note:—There is no vivakṣā for the meaning of the root in asti.

अस्ति इत्याह 1 'There is,' says he.

किम्? What is it?

### आदित्यः Sun.

1. This is not found in some editions.

तद्यथा एक आदित्योऽनेकाधिकरणस्थो युगपद्परुभ्यते

Sun, who is one, is seen simultaneously at different places.

विषम उपन्यासः ; नैको द्रष्टा आदित्यमनेकाधिकरणस्थं युगपदुपरुभते
The argument is not sound. A single individual does not see
the sun simultaneously in many places.

एवं तर्हि If so.

इतीन्द्रविद्ययः The object is like the word Indra.

Note:  $-K\bar{a}iyața$  reads here:  $-\hat{S}abdapr\bar{a}durbh\bar{a}v\bar{e}$  avyayī-bhāvē kṛtē vatiḥ pratyayaḥ.

तद्यथा, एक इन्द्रोऽनेकस्मिन् ऋतुशते आहूतो युगपत् सर्वत्र भवति । एव-माकृतिरिप युगपत् सर्वत्र भविष्यति ।

Just as one word *Indra* pronounced simultaneously in hundreds of sacrifices, becomes the anga of all the sacrifices at the same time, so also genus too exists everywhere simultaneously.

अवर्यं चैतदेवं विज्ञयम् - एकमनेकाधिकरणस्थं युगपद् उपलभ्यत इति
This is necessarily to be admitted that one can be seen simultaneously in many places.

# नैकमनेकाधिकरणस्थं युगपदिति चेत् तथैकशेषे

If one says that an object cannot be seen at different places at the same time, there will be difficulty in  $\bar{e}ka^{\xi}\bar{e}$ , a.

यो हि मन्यते नैकमनेकाधिकरणस्थं युगपद् उपलभ्यत इति, एकशेषे तस्य दोषः स्यात् । एकशेषेऽपि नैको वृक्षशब्दोऽनेकमर्थं युगपद् अभिदधीत

There will be difficulty in  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  for one who does not admit that an object can remain simultaneously at different places. In  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa$  too one word vrksa cannot denote many things at the same time.

अवस्यं चैतदेवं विज्ञेयमाकृतिरभिधीयत इति

It is necessarily to be taken that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$ .

### द्रव्याभिधाने ह्याकृत्यसम्प्रत्ययः 1

If dravya is padārtha, śabda will not connote ākrti.

द्रव्याभिधाने सत्याकृतेरसम्प्रत्ययः स्यात्

If śabda connotes dravya, it cannot connote jāti.

तत्र को दोष:? What is the harm then?

# तत्रासर्वद्रव्यगतिः 2

In that case it cannot denote all dravyas.

तत्रासर्वद्रव्यगतिः प्रामोति

In that case it chances that it cannot denote all dravyas.

असर्वद्रव्यगतौ को दोषः ?

What is the harm if it does not denote all dravyas?

गौरनुबन्ध्योऽजोऽम्रीषोमीयः इति । एकः शास्त्रोक्तं कुर्वीत, अपरोऽशास्त्रोक्तम् । अशास्त्रोक्ते च कियमाणे विगुणं कर्म भवति । विगुणे च कर्मणि फलानवाप्तिः

There is the injunction that a bull should be killed in anubandhya-iṣṭi and a goat should be killed to propitiate Agni and  $S\bar{o}ma$ . One person alone will be considered to do it according to  $s\bar{a}stras$  and all the rest will be considered to do it what is not enjoined by  $s\bar{a}stras$ . If a karma not enjoined in  $s\bar{a}stras$  is done, it cannot be taken to be properly done. If it is not properly done, it does not bear the desired fruit.

ननु च यस्याप्याकृतिः पदार्थः, तस्यापि यद्यनवयवेन चोद्यते न चानुबध्यते, विगुणं कर्म भवति । विगुणे च कर्मणि फलानवाप्तिः । एका आकृतिरिति च प्रतिज्ञा हीयेत । यचास्य पक्षस्योपादाने प्रयोजनम्, एकशेषो न वक्तव्यः इति, स चेदानीं वक्तव्यो भवति ।

Oh, even with reference to him who holds that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$ , if the injunction refers to  $j\bar{a}ti$  without having for its  $\bar{a}lambana$  a particular vyakti, it cannot be killed and the karma is not properly done. When the karma is not properly done, the desired fruit is not obtained. The standpoint that

<sup>1. &</sup>amp; 2. Pandit Sivadatta's edition reads these two vārttikas as one.

 $j\bar{a}ti$  is one will fall down and consequently the hold that  $\bar{e}ka\dot{s}\bar{e}sa-vidh\bar{a}yaka-s\bar{u}tra$  need not be read in that paksa will give way and it will have to be read.

Note:—Kāiyaṭa reads here: Sarvaviṣayā cēd ākṛtiḥ cōdyatē tadā sarvavyaktiviṣayam anuṣṭhānam vinā vāiguṇyam ēva syād ityarthaḥ.

एवं तर्हि अनवयवेन चोद्यते, प्रत्येकं च परिसमाप्यते, यथा आदित्यः

If so, the injunction is without referring to vyaktivišēṣa; but it is considered to be fulfilled if it acts upon individually, as the sun shines fully in any particular place.

ननु च यसापि द्रव्यं पदार्थः, तस्याप्यनवयवेन चोद्यते, प्रत्येकं च परिसमाप्यते Oh, even according to him who holds that dravya is padārtha, the injunction may not refer to vyaktiviśēṣa and it may be considered to be fulfilled if it acts upon individually.

### एकशेषस्त्वया वक्तव्यः

Ekaśeṣa-vidhayaka-sūtra will have to be read by you (who hold that dravya is padartha).

त्वयापि तर्हि द्विवचनबहुवचनानि साध्यानि ।

Dvivacana and bahuvacana have to be established by you too (who hold that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$ ).

### चोदनायां चैकस्रोपाधिवृत्तेः

On account of the repetition of the  $up\bar{a}dhi$  of the one  $pad\bar{a}rtha$  mentioned in  $c\bar{o}dan\bar{a}$ .

चोदनायां चैकस्योपाधिवृत्तेर्मन्यामहे आकृतिरिभधीयते इति

We think that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$  on account of the  $up\bar{a}dhi$  of the  $pad\bar{a}rtha$  mentioned in  $c\bar{o}dan\bar{a}$  being repeated.

आमेयमष्टाकपालं निवेपेत् - एकं निरुप्य द्वितीयस्तृतीयश्च निरुप्यते

There is the injunction  $\bar{A}gn\bar{e}yam$  astākapālam nirvapēt. Having done the first nirvāpa the second and third are done.

Note:—1. The taking of grain for making  $pur\bar{o}d\bar{a}sa$  is called  $nirv\bar{a}pa$ .

Note:—2. The  $pur\bar{o}d\bar{a}sa$ , the  $vap\bar{a}$  etc. intended for Agni is the  $pad\bar{a}rtha$  and  $ast\bar{a}k\bar{a}p\bar{a}latv\bar{a}di$  is the  $up\bar{a}dhi$ .

यदि च द्रव्यं पदार्थः स्यादेकं निरुप्य द्वितीयस्य नृतीयस्य च निर्वपणं न प्रकल्पेत

If, on the other hand, dravya is  $pad\bar{a}rtha$ , the second and the third  $nirv\bar{a}pa$  will not be possible after the first.

कः पुनरतयोजीतिचोदनयोविशेषः ?

What is the difference between these two  $c\bar{o}dan\bar{a}s$  with reference to  $j\bar{a}ti$ ?

Note:—The two cōdanās are:—(1) Gāur anubandhyaḥ, (2) Āgnēyam aṣṭākapālam nirvapēt.

एका निर्वृत्तेन, अपरा निर्वर्त्यन

One about that which has been made ready and the other about that which has to be made ready.

### VII—i (b)

द्रव्याभिधानं व्याडिः Vyāḍi thinks dravya to be padārtha.

द्रव्याभिधानं व्याडिराचार्यो न्याय्यं मन्यते - द्रव्यमभिधीयते इति ।

Ācārya Vyādi thinks that it is right to take that vyakti is padārtha (i.e.) the abhidhāviṣaya of śabda is vyakti.

Note:—1. Kāiyaṭa reads here:—Jātēḥ vṛttivikalpākṣamatvēna abhāvam manyamānō Vyāḍir dravyam ēva śabdēna abhidhīyatē iti manyatē.

Note:—2.  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  says:—Tattat -  $sa\dot{m}sth\bar{a}n\bar{a}dyupa-laksitam$   $adhisth\bar{a}na$ -caitanyam ēva dravyam.

### तथा च लिङ्गवचनसिद्धिः

The appropriateness of gender and number only then.

एवं च कृत्वा लिङ्गवचनानि सिद्धानि भवन्ति, ब्राह्मणी, ब्राह्मणाः, ब्राह्मणी ब्राह्मणाः इति

Only on that understanding genders and numbers become appropriate.

Ex. brāhmaņī (fem. sing.), brāhmaṇaḥ (masc. sing.), brāhmaṇāu (masc. dual) and brāhmaṇāḥ (masc. plural).

### चोदनासु च तस्यारमभात्

On account of action being taken to it at injunctions.

चोदनासु च तस्यारम्भान्मन्यामहे द्रव्यमभिधीयते इति

We think that dravya is  $pad\bar{a}rtha$ , since action is taken to dravya on hearing  $vidhiv\bar{a}kyas$ .

गौरनुबन्ध्योऽजोऽसीषोमीय इति । आकृतौ चोदितायां द्रव्ये आरम्भणास्म्भन-प्रोक्षणविश्वसनादीनि क्रियन्ते

There are the cōdanās, Gāuḥ anubandhyaḥ and Ajaḥ agnīṣō-mīyaḥ. Though jāti is referred to in cōdanā, ārambhaṇa (purchase), ālambhana (tying to the yūpa), prōkṣaṇa (sprinkling with water), viśasana (killing) etc. are done only to dravya.

### न चैकमनेकाधिकरणस्यं युगपत्

One cannot exist simultaneously in many places.

न खल्वप्येकमनेकाधिकरणस्थं युगपदुपलभ्यते । न ह्येको देवदत्तो युगपत् सुन्ने भवति मथुरायां च ।

Nothing is found to exist simultaneously in many places. The same  $D\bar{e}vadatta$  cannot remain at the same time at Srughna and at  $Mathur\bar{a}$ .

# विनाशे प्रादुर्भावे च सर्वं तथा स्थात्

The whole  $j\bar{a}ti$  will have to die or be born if one dies or is born.

किम्? What?

विनश्येच प्रादुष्याच It may die or be born.

श्वा मृत इति श्वा नाम लोके न प्रचरेत्। गौर्जात इति सर्व गोभूतमनवकाशं स्थात् If one dog dies, there will be no opportunity to call another dog a dog. If one cow is born, there is no opportunity for other cows of the same genus to be called so.

Note:—1. Nāgōjibhaṭṭa says here:—Vyāsajyavṛttir jātiḥ sarvavyaktibhiḥ sambhūya abhivyajyatē iti matē idam dūṣaṇam.

Note:—2. An alternative meaning to the sentence sarvam göbhütam anavakāśam syāt is given by Kāiyaṭa thus:-

Sarvēşu padārthēşu göpratyayaprasangah. This is explained by Nāgōjibhaṭṭa thus:-Gōbhūtam abhivyaktagōtvēna vyāptam tulyavyaktitvēna jātyantarāvakāśarahitam sarvam syāt.

अस्ति च वैरूप्यम् Dissimilarity too exists.

अस्ति खल्विप वैरूप्यं गौश्च गौश्च खण्डो मुण्ड इति

There is dissimilarity too (among them), as is seen in the statements  $khand\bar{o} g\bar{a}uh$  (fractured cow)  $mund\bar{o} gauh$  and (cow without hair).

Note:—It seems to me that the terms khandah and mundah are applied with reference to cows of peculiar description.

तथा च विष्रहः Vigraha too on that basis.

एवं च कृत्वा विग्रह उपपन्नो भवति गौश्च गौश्च इति

Only on this basis the  $vigrahav\bar{a}kya$   $g\bar{a}u\acute{s}$  ca  $g\bar{a}u\acute{s}$  ca can be justified.

Note:—  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  reads here:- $\bar{E}k\bar{a}rthatv\bar{e}$  pary $\bar{a}y\bar{a}n\bar{a}m$  iva sahapray $\bar{o}g\bar{o}$  na sy $\bar{a}t$ .

# व्यर्थेषु च मुक्तसंशयम्

Need for reading ēkaśēṣa without any doubt for the sake of homonyms.

व्यर्थेषु च मुक्तसंशयं भवति । आकृताविष पदार्थे एकशेषो वक्तव्यः - अक्षाः, पादाः, माषाः इति

There is need, without any doubt, for the  $s\bar{u}tra$   $Sar\bar{u}p\bar{a}n\bar{a}m$   $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$   $\bar{e}kavibhakt\bar{a}u$  for the sake of homonyms  $akṣ\bar{a}h$ ,  $p\bar{a}d\bar{a}h$ , and  $m\bar{a}ṣ\bar{a}h$  even when  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$ .

$$VII$$
—ii (b)

### लि**ङ्गच**चनसिद्धिर्गुणस्यानित्यत्वात्

The appropriateness of gender and number on account of the aniyatatva of gunas.

लिङ्गवचनानि सिद्धानि भवन्ति Genders and numbers do fit in. कुतः? How?

गुणस्य अनित्यत्वात् - अनित्या गुणा अपायिनश्च उपायिनश्च

On account of the anityatva of gunas. Gunas are anitya, since they disappear and appear.

Note:—Guna here refers to the state of being masculine, the state of being feminine, the state of being one, the state of being two and the state of being many.

किं य एते शुक्कादयः ? Are not śuklatva etc. guṇas?

नेत्याह 'No,' says he:

स्त्रीपुंनपुंसकानि सत्त्वगुणाः, एकत्वद्वित्वबहुत्वानि च । कदाचिद् आकृति-रेकत्वेन युज्यते, कदाचिद् द्वित्वेन, कदाचिद् बहुत्वेन; कदाचित् स्त्रीत्वेन, कदाचित् पुंस्त्वेन, कदाचिन्नपुंसकत्वेन ।

The dravyagunas are  $str\bar{\imath}tva$ , puinstva, napuinsakatva,  $\bar{\epsilon}katva$ , dvitva and bahutva. Sometimes  $j\bar{a}ti$  is associated with  $\bar{\epsilon}katva$ , sometimes with dvitva, sometimes with bahutva, sometimes with  $str\bar{\imath}tva$ , sometimes with puinstva and sometimes with napuinsakatva.

भवेशिङ्गपिरहार उपपन्नः । वचनपिरहारस्तु नोपपद्यते ; यदि हि कदाचिद् आकृतिरेकत्वेन युज्यते कदाचिद् द्वित्वेन, कदाचिद् बहुत्वेन, एका आकृतिरिति प्रतिज्ञा हीयेत ; यच्चास्य पश्चस्योपादाने प्रयोजनमुक्तम् एकशेषो न वक्तव्यः इति स चेदानीं वक्तव्यो भवति ।

The reason adduced for the presence of linga may fit in. But the reason adduced for the presence of vacana cannot fit in; for, if it is said that sometimes  $\bar{a}krti$  is associated with  $\bar{e}katva$ , sometimes with dvitva and sometimes with bahutva, the pratij $n\bar{a}$  that  $\bar{a}krti$  is one will fall to the ground; besides the one prayojana that the  $\bar{e}kas\bar{e}sas\bar{u}tra$  need not be read by adopting this pakṣa cannot be achieved and the  $s\bar{u}tra$  has now to be read.

Note:—Kāiyata reads here:—Dvivacana-bahuvacanavad anēkašabdatvam api prāpnōti iti ēkašēsōspi vaktavya ityarthaḥ.

एवं तर्हि, If so,

# लिङ्गवचनसिद्धिर्गुणविव**श्वानित्य**त्वात्

Siddhi of linga and vacana on account of the anityatva of gunavivakṣā.

लिङ्गवचनानि सिद्धानि भवन्ति Genders and numbers do fit in. कृतः ? How?

गुणविवक्षाया अनित्यत्वात् - अनित्या गुणविवक्षाः; कदाचिद् आकृतिरेकत्वेन विवक्षिता भवति, कदाचिद् द्वित्वेन, कदाचिद् बहुत्वेन, कदाचित् स्नीत्वेन, कदाचित् पुंस्त्वेन, कदाचित् पुंस्त्वेन, कदाचित्रपुंसकत्वेन

On account of the anityatva of the desire to express gunas. The desire to express gunas is anitya; sometimes there is  $vivak s\bar{a}$  to associate  $\bar{a}krti$  with  $\bar{e}katva$ , sometimes with dvitva, sometimes with bahutva, sometimes with  $str\bar{i}tva$ , sometimes with puristva and sometimes with napurisakatva.

भवेशिङ्गपरिहार उपपन्नः वचनपरिहारस्तु नोपपद्यते; यदि कदाचिदाकृति-रेकत्वेन विवक्षिता भवति कदाचिद् द्वित्वेन कदाचिद् बहुत्वेन, एका आकृतिरिति प्रतिज्ञा हीयेत, यचास्य पक्षस्योपादाने प्रयोजनमुक्तम् एकशेषो न वक्तव्य इति, स चेदानीं वक्तव्यो भवति ।

The reason adduced for the presence of linga may fit in. But the reason adduced for the presence of vacana cannot fit in; for, if it is said that sometimes there is  $vivak s\bar{a}$  to associate  $\bar{a}krti$  with  $\bar{e}katva$ , sometimes with dvitva and sometimes with bahutva, the  $pratij\tilde{n}\bar{a}$  that  $\bar{a}krti$  is one will fall to the ground; besides the one  $pray\bar{o}jana$  that the  $\bar{e}kas\bar{e}sas\bar{u}tra$  need not be read by adopting this paksa cannot be achieved and the  $s\bar{u}tra$  has now to be read.

लिङ्गपरिहारश्चापि नोपपद्यते

The reason adduced for the presence of linga too may not fit in.

किं कारणम्? Why?

आविष्टलिङ्गा जातिर्यिलिङ्गमुपादाय प्रवर्तते उत्पत्तिप्रमृति आविनाशात् तलिङ्गं न जहाति

 $J\bar{a}ti$  invariably takes a particular linga; it does not leave off the linga in which it began to be used when it first became current and in which it will be used till it becomes obsolete.

तसान्न वैयाकरणैः शक्यं होिकिकं लिङ्गमास्थातुन्, अवश्यं कश्चित् स्वकृतान्त आस्थेयः

Therefore it is not possible for grammarians to adopt the natural gender and hence they have to adopt their own.

कोऽसौ स्वकृतान्तः? What is their siddhanta?

# संस्त्यानप्रसवौ लिङ्गम्

Both samstyāna and prasava form the gender.

संस्त्यानप्रसवी लिङ्गमास्थेयी

Samstyāna and prasava should be considered as gender.

किमिदं संस्त्यानप्रसवाविति ?

What is here meant by samstyāna and prasava?

# संस्त्याने स्त्यायतेर्ड्ट् स्त्री स्रतेः सप् प्रसवे पुमान्

The word  $sa\dot{m}sty\bar{a}na$  is formed by adding the pratyaya drat to the root  $sty\bar{a}i$  and it means  $str\bar{i}$  (feminine gender) and prasava is formed by adding the pratyaya sap to the root  $s\bar{u}$  and it means  $pum\bar{a}n$  (masculine gender).

ननु च लोकेऽपि स्त्यायतेरेव स्त्री, सूतेश्च पुमान्

Oh,  $str\bar{\imath}$  is so called even in the world because she allows (the embryo) to grow and  $pum\bar{a}n$  is so called because he produces.

अधिकरणसाधना लोके स्त्री, स्त्यायत्यस्यां गर्भ इति, कर्तृसाधनश्च पुमान् - सूते पुमान् इति । इह पुनरुभयं भावसाधनं, स्त्यानं प्रवृतिश्च

The word  $str\bar{\imath}$  used in the world has its derivation  $sty\bar{a}yati$  asyām garbhaḥ (in whom the embryo solidifies), and she is the adhikaraṇa of the  $sty\bar{a}yanakriy\bar{a}$  and the  $pum\bar{a}n$  is the agent of  $savanakriy\bar{a}$  and prasava is derived thus- $pras\bar{u}t\bar{e}$ . Here (in  $Vy\bar{a}karaṇa$ ), on the other hand, both are  $bh\bar{a}vas\bar{a}dhanas$  (i.e.)  $sty\bar{a}yat\bar{e}$  iti  $str\bar{\imath}$  and  $pras\bar{u}t\bar{e}$  iti prasavaḥ, so that  $str\bar{\imath}$  and prasava mean  $sty\bar{a}nam$  (apacayah) and pravriti (vrddhih).

कस्य पुनः स्त्यानं स्त्री, प्रवृत्तिर्वा पुमान्?

Whose apacaya is feminine gender and whose vṛddhi is masculine gender?

गुणानाम Of gunas.

केषाम्? Of which gunas?

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धानाम्

Of śabda, sparśa, rūpa, rasa and gandha.

सर्वाश्च पुनर्मूत्वेय एवमात्मिकाः संस्त्यानप्रसवगुणाः शब्दस्पर्शस्त्रपरसगन्धवत्यः All padārthas in the world have the qualities śabda, sparśa, rūpa, rasa and gandha gradually decreasing or increasing.

यत्राल्पायांसो गुणास्तत्रावरतस्त्रयः शब्दः स्पर्शो रूपम् इति । रसगन्धो न सर्वत्र । प्रवृत्तिः खल्विप नित्या । न हीदं कश्चिद्पि स्वसिन्नात्मिन मुहूर्तमविष्ठिते, वर्द्धते यावद् अनेन वर्द्धितव्यम् अपचयेन वा युज्यते । तच्चोभयं सर्वत्र ।

Where the guṇas are smaller in number, there you have three-śabdaḥ, sparśaḥ and rūpam; rasa and gandha do not exist everywhere. Pariṇāma too exists for ever. Nothing here remains as it is even for a second; it grows so long it has to grow and then it begins to decay. These two are found everywhere.

Note:—Everything in this world is connected with one or many of the five elements:— $\bar{A}k\bar{a}$ śa,  $v\bar{a}yu$ , agni,  $\bar{a}pah$  and  $prthiv\bar{\imath}$ . Of them  $\bar{a}k\bar{a}$ śa has the only guna śabda;  $v\bar{a}yu$  the two gunas śabda and sparśa; agni the three gunas śabda, sparśa and  $r\bar{u}pa$ ;  $\bar{a}pah$  the four gunas śabda, sparśa,  $r\bar{u}pa$  and rasa; and  $prthiv\bar{\imath}$  the five gunas śabda, sparśa,  $r\bar{u}pa$ , rasa and gandha.

यद्युभयं सर्वत्र कुतो व्यवस्था?

If both are found everywhere, whence is the decision to be made?

विवक्षातः From the desire of the speaker.

संस्यानाविवक्षायां स्त्री, प्रसवविवक्षायां पुमान्, उभयोरप्यविवक्षायां नपुंसकम् । When there is the  $vivak s\bar{a}$  of  $sa\dot{m}sty\bar{a}na$ , it is feminine; when there is the  $vivak s\bar{a}$  of prasava, it is masculine; and when there is the absence of  $vivak s\bar{a}$  of both, it is neuter.

Note:— $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  says under the  $s\bar{u}tra$   $Striy\bar{a}m$  (4, 1, 3) that the gender of words is to be decided from the usage in the world— $Tasy\bar{o}kt\bar{a}u$   $l\bar{o}kat\bar{o}$   $n\bar{a}ma$ .

तत्र लिङ्गवचनसिद्धिर्भुणविवक्षानित्यत्वात् इति लिङ्गपरिहार उपपन्नः, वचन-परिहारस्तु नोपपद्यते ।

The reason linga-vacana-siddhir-guṇa-vivakṣā-anityatvāt adduced for the presence of linga may fit in; but that adduced for the presence of vacana does not fit in.

#### वचनपरिहारश्चाप्युपपन्नः

The reason adduced for the presence of vacana too may fit in.

इदं तावदयं प्रष्टव्य: अथ यस्य द्रव्यं पदार्थः कथं तस्य एकवचनद्विवचन-बहुवचनानि भवन्ति इति ?

He is to be put this question:—How does he who holds the view that dravya is padārtha get ēkavacana, dvivacana and bahuvacana?

एवं स वक्ष्यति, एकसिन्नेकवचनं, द्वयोद्धिवचनं, बहुषु बहुवचनम् इति
He will say—the singular number is used to denote one,
the dual number to denote two and the plural number to
denote many.

यदि तस्यापि वाचिनकानि न स्वाभाविकानि अहमप्येवं वक्ष्यामि, एकसिन्नेक-वचर्नं द्वयोद्विवचनं बहुषु बहुवचनम् इति

If, even according to him, they have to be expressed and are not taken from nature, I shall also read the same thing:— Ekasmin ékaracanam, dvayōr dvivacanam, bahuşu bahuvacanam.

न हि आकृतिपदार्थकस्य द्रव्यं न पदार्थः, द्रव्यपदार्थकस्य वा आकृतिने पदार्थः। उभयोरुभयं पदार्थः। कस्य चित्तु किञ्चित् प्रधानभूतं किञ्चित् गुणभूतम् । आकृतिपदार्थकस्य आकृतिः प्रधानभूता, द्रव्यं गुणभूतम् । द्रव्यपदार्थकस्य द्रव्यं प्रधानभूतम् आकृतिर्गुणभूता ।

For he who holds that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$  cannot but concede that dravya is  $pad\bar{a}rtha$  and he who holds that dravya is  $pad\bar{a}rtha$  cannot but concede that  $\bar{a}krti$  is  $pad\bar{a}rtha$ . Both are  $pad\bar{a}rthas$  to both. One is primary to one and another is secondary.  $\bar{A}krti$  is primary and dravyam is secondary to the  $\bar{a}krti$ - $pad\bar{a}rtha$ - $v\bar{a}din$ ; but, on the other hand, dravyam is primary and  $\bar{a}krti$  is secondary to the dravya- $pad\bar{a}rtha$ - $v\bar{a}din$ .

गुणवचनवद्या Or like words denoting qualities.

गुणवचनवद्वा लिङ्गवचनानि भविष्यन्ति । तद्यथा - गुणवचनानां शब्दाना-माश्रयतो लिङ्गवचनानि भवन्ति – शुक्कं वस्त्रं, शुक्का शाटी, शुक्कः कम्बलः, शुक्को कम्बलो, शुक्काः कम्बला इति

Or linga and vacana will appear as in the words denoting qualities Linga and vacana in the words denoting qualities agree with those in the words which they qualify, as in suklam vastram, sukla satī, sukla kambalah, sukla kambalah and suklah kambalah.

यदसौ द्रव्यं श्रितो भवति गुणः तस्य यि हिङ्गं वचनं च तदुणस्यापि भवति, एविमहापि यदसौ द्रव्यं श्रिता आकृतिः तस्य यि हिङ्गं वचनं च तदाकृतेरि भविष्यति । Just as guṇa-vācaka-śabda agrees in gender and number with the guṇi-vācaka-śabda, so also the ākṛti-vācaka-śabda agrees in gender and number with the vyakti-vācaka-śabda.

## अधिकरणगतिः साहचर्यात्

The procedure with reference to the substratum is through association.

आकृतौ आरम्भणादीनां सम्भवो नास्तीति कृत्वा आकृतिसहचरिते द्रव्ये आरम्भणादीनि भविष्यन्ति

Since the acts of  $\bar{a}$  rambhaṇa etc. are not possible in  $\bar{a}$  kṛti, they are done in the dravyas which are associated with the  $\bar{a}$ krti.

Note:—This is the answer to the vārttika Cōdanāsu ca tasyārambhāt in VII—i (b).

# न चैकमनेकाधिकरणस्थं युगपदिति, आदित्यवद्विषयः

The objection Na ca ēkam ānēkādhikaraņastham yugapat—in VII—i (b)—cannot stand on the analogy of āditya.

न खल्वप्येकमनेकाधिकरणस्थं युगपदुपलभ्यत इति आदित्यवद् विषयो भविष्यति। तद्यथा एक आदित्यो अनेकाधिकरणस्थो युगपदुपलभ्यते

The objection 'Na khalvapi ēkam anēkādhikaraṇastham yugapad upalabhyatē,' cannot stand, if the object is taken analogous to āditya. Sun, who is one, is seen simultaneously at different places.

विषम उपन्यासः। नैको द्रष्टा अनेकाधिकरणस्थमादित्यं युगपदुपरुभते
The argument is not sound, since one cannot see the sun in different places at the same time.

एवं तर्हि, If so,

इतीन्द्रविद्विषयः The object is analogous to Indra - śabda.

तद्यथा एक इन्द्रो अनेकस्मिन् ऋतुशते आहूतो युगपत् सर्वत्न भवति, एव-माकृतिर्युगपत्सर्वत्र भदेदिति

Just as the word Indra pronounced at the same time in hundreds of sacrifices becomes anga to each, so also  $\bar{a}krti$  is found everywhere simultaneously.

#### अविनाशोऽनाश्रितत्वात्

Non-disappearance on account of anāsritatva.

द्रव्यविनाशे आकृतेरविनाशः

Non-disappearance of  $\bar{a}krti$  at the destruction of dravya.

कुतः ? How ?

अनाश्रितत्वात् – अनाश्रिता आकृतिर्द्रव्यम्

On account of  $\bar{a}krti$  not having dravya for its  $\bar{a}sraya$ . Akrti does not have dravya for its  $\bar{a}sraya$ .

किमुच्यते अनाश्रितत्वादिति, यदिदानीमेवोक्तम् अधिकरणगतिः साहचर्यादिति Just now it has been said 'Adhikaraṇagatiḥ sāhacaryāt.' When such is the case, how is it said anāśritatvāt?

एवं तर्हि If so,

#### अविनाशोऽनैकात्म्यात्

Non-disappearance on account of bhinna-svabhāvatva?

द्रव्यविनाशे आकृतेरविनाशः

Akrti does not disappear when dravya is destroyed.

कुतः ? How?

अनैकात्म्यात् - अनेक आत्मा आकृतेर्द्रव्यस्य च । तद्यथा वृक्षस्थोऽवतानो वृक्षे छिन्नेऽपि न विनश्यति On account of difference in nature. The nature of  $\bar{a}krti$  is not one with that of dravya. This may be illustrated thus:—

The mould of a tree is not destroyed even though the tree is cut.

Note:—Nāgōjibhaṭṭa says here:—Nityam ēkam anēkavyakti-vṛtti sāmānyam, tad-viparītam dravyam iti bhēdaḥ.

# वैरूप्यविग्रहो द्रव्यभेदात्

Vāirūpya and vigraha on account of difference in dravya.

वैरूप्यविग्रहाविप द्रव्यमेदाद् भविष्यतः

Vāirūpya and vigraha (mentioned in VII—i (b) happen on account of difference in dravya.

## व्यर्थेषु च सामान्यात् सिद्धम्

It is achieved with reference to homonyms on account of their being derived from roots which have the same form.

विभिन्नार्थेषु च सामान्यात् सिद्धम् ; सर्वत्र अश्वातेः अक्षः, पद्यतेः पादः, मिमीतेः माषः । तत्र क्रियासामान्यात् सिद्धम्

The object is achieved through  $s\bar{a}m\bar{a}nya$  in homonyms:- $Ak\bar{s}a$  (everywhere) is derived from  $a\bar{s}$ ,  $p\bar{a}da$  from pad and  $m\bar{a}\bar{s}a$  from  $m\bar{i}n$ .

अपरस्त्वाह – पुरा कल्प एतदासीत् षोडश माषाः कार्षापणं, षोडशफलाश्च माषशम्बट्यः । तत्र संख्यासामान्यात् सिद्धम्

But another says:-In olden days sixteen  $m\bar{a}sas$  made one  $k\bar{a}rs\bar{a}pana$  and sixteen phalas made one  $m\bar{a}sasambana$ . The object is achieved through similarity in  $sankhy\bar{a}$ .

# वृद्धो यूना तस्रक्षणश्चेदेव विशेषः (1, 2, 65)

इह कसान्न भवति — अजश्च बर्करश्च, अश्वश्च किशोरश्च, उष्ट्रश्च करमश्चेति? How is it that ēkaśēṣa does not take place in the following pairs:—ajaś ca barkaraś ca, aśvaś ca kiśōraś ca and uṣṭraś ca karabhaś ca?

Note:—1. Aja, aśva and uṣṭra respectively denote old goat, old horse and old camel and barkara, kiśōra and karabha denote the young of the same.

Note:—2. The pūrvapakṣa arises on taking vrddha and yuvan in the sense of old one and young one. But vrddha is prācīnasamjñā identical with Pāṇini's gōtra. Gōtra is explained in the sūtra Apatyam pāutraprabhṛti gōtram (4, 1, 162) and yuvā in the sūtra Jīvati tu vamśyē yuvā (4, 1, 163.)

तल्लक्षणश्चेदेव विशेष इत्युच्यते ; न चात्र तल्लक्षण एव विशेषः

It is said (in the sūtra) tallakṣaṇaś cēd ēva viśēṣaḥ; and tallakṣaṇaviśēṣaḥ is not found here.

तल्रक्षण एव विशेषो यत् समानायामाकृतौ शब्दभेदः

The expression tallakṣaṇa ēva viśēṣaḥ means difference in the form of words derived from the same stem.

Note:—1. The stem should be the word denoting the person whose  $p\bar{a}utra$  (grandson),  $prap\bar{a}utra$  (great grandson) etc. are referred to by the words ending in  $g\bar{o}trapratyaya$  and yuvapratyaya.

Note:—2.  $K\bar{a}iyat$ ı says under (1, 2, 68) that  $sam\bar{a}n\bar{a}krti$  means  $\bar{e}k\bar{a}patyatva$ .

## स्त्री पुंवच (1, 2, 66)

इदं सर्वेष्वेव स्त्रीग्रहणेषु विचार्यते – स्त्रीग्रहणेषु स्त्रीग्रत्ययग्रहणं वा स्यात् स्व्यर्थग्रहणं वा स्त्रीशब्दग्रहणं वा इति

This is discussed wherever there is mention of  $str\bar{\imath}$ :-whether  $str\bar{\imath}pratyaya$  is taken into consideration, the meaning of  $str\bar{\imath}$  or the word  $str\bar{\imath}$ .

किं चात: ? What is the difference among them?

यदि प्रत्ययप्रहणं वा शब्दप्रहणं वा, गार्गी च गार्म्यायणी च गर्गाः, केन यशब्दो न श्र्येत? अस्त्रियाम् इति हि छुगुच्यते ।

If we take that it refers to strīpratyaya or the word strī, by which authority can ya be elided so that we can arrive at the form  $garg\bar{a}h$  which is the  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  of  $G\bar{a}rg\bar{\imath}$  ca  $G\bar{a}\imath gayan\bar{a}u$  ca? For, the elision (of ya) is not enjoined with reference to the  $str\bar{\imath}$  in the  $s\bar{u}tra$   $Ya\tilde{n}a\tilde{n}\bar{o}\acute{s}$  ca (2, 4, 64.)

इह च गार्भी च गार्ग्यायणा च गर्भान् पश्य, तस्माच्छसो नः पुंसि इति नत्वं न प्रामोति Natva has no chance to appear by the operation of the  $s\bar{u}tra$   $Tasm\bar{a}c\ chas\bar{o}\ nah\ pu\dot{m}si\ (6,1,103)$  in the word  $garg\bar{a}n$  referring to  $G\bar{a}rg\bar{\imath}$  and  $g\bar{a}rgy\bar{a}yan\bar{a}u$  in the sentence  $Garg\bar{a}n\ pasya$ .

अथ अर्थप्रहणम्, न दोषो भवति

There is no defect if the meaning of  $str\bar{t}$  is taken into consideration.

यथा न दोषस्तथास्तु

Let it be taken in the way in which there is no defect.

इह कसान्न भवति-अजा च बर्करश्च, वडवा च किशोरश्च, उष्ट्री च करमश्च इति Why is there no  $\bar{e}kaś\bar{e}$  in the following pairs:-  $aj\bar{a}$  ca barkaraś ca, vaḍavā ca kiśōraś ca and uṣṭrī ca karabhaś ca?

तल्लक्षणश्चेदेव विशेष इत्युच्यते । न चात्र तल्लक्षण एव विशेषः । तल्लक्षण एव विशेषो यत्समानायामाकृतौ शब्दभेदः

It is said (in the sūtra) tallakṣaṇaś cēd ēva viśēṣaḥ; and tallakṣaṇa-viśēṣa is not found here. The expression tallakṣaṇa ēva viśēṣaḥ means difference in the form of words derived from the same stem.

#### पुमान् स्त्रिया (1, 2, 69)

इह कसान्न भवति – हंसश्च वरटा च, कच्छपश्च दुलिश्च, ऋश्यश्च राहिच इति? Why is not ēkaśēṣa found here:—hamsaś ca varaṭā ca, kacchapaś ca duliś ca and Ŗśyaś ca rōhic ca?

तस्रक्षणश्चेदेव विशेषः इत्युच्यते, न चात्र तस्रण एव विशेषः । तस्रक्षण एव विशेषः यत्समानायामाकृतौ शब्दभेदः

For translation see the end of the previous  $s\bar{u}tra$ .

# भ्रात्पुत्रौ खसृदुहित्भ्याम् (1, 2, 68)

किमर्थमिदमुच्यते? न पुमान् स्त्रिया इत्येव सिद्धम् ?

Why is this sūtra read? Is not its purpose served by the sūtra Pumān striyā?

न सिध्यति । तल्लक्षणश्चेदेव विशेष इत्युच्यते, न चात्र तल्लक्षण एव विशेषः । तल्लक्षण एव विशेषो यत्समानायामाकृतौ शब्दभेदः No, it is not served. It was mentioned there tallakṣaṇaś cēd ēva viśēṣaḥ and it is not found here. Tallakṣaṇa ēva viśēṣō yat samānāyām ākṛtāu śabdabhēdaḥ.

एवं तर्हि सिद्धे सित यदिमं योगं शास्ति तद् ज्ञापयत्याचार्यो यत्रोध्व प्रकृतेः स्थात्तल्लण एव विशेषः तत्र एकशेषो भवति इति

Since  $\bar{A}c\bar{a}rya$  reads this  $s\bar{u}tra$  when its purpose can be otherwise achieved, he suggests that there is  $\bar{e}ku\acute{s}\bar{e}\dot{s}a$ , in general, only when the stem in both the words is the same and the difference lies only in the pratyayas.

किमेतस्य ज्ञापने प्रयोजनम् ?

What is the benefit reaped from this  $j\tilde{n}\bar{a}pana$ ?

हंसश्च वरटा च, कच्छपश्च दुलिश्च, ऋश्यश्च रोहिचेति अत्रैकशेषो न भवति There will be no ēkaśēṣa here:—haṁsaś ca varaṭā ca, kacchapaś ca duliś ca and rśyaś ca rōhic ca.

Note: Rsya means an white-footed antelope.

पूर्वयोर्योगयोर्भ्यान्परिहारः यावद् ब्र्याद्गोत्रं यूनेति तावत् वृद्धो यूनेति, पूर्वसूते गोत्रस्य वृद्धम् इति संज्ञा कियते ।

The mention of  $Vrddh\bar{o} y\bar{u}n\bar{a}$  gives as much parihāra to the previous two  $s\bar{u}tras$  as that of  $G\bar{o}tram y\bar{u}n\bar{a}$ , since vrddham is the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  read in earlier  $Vy\bar{a}karanas\bar{u}tra$  in place of  $g\bar{o}tram$ .

## असरूपाणां युवस्थविरस्त्रीपुंसानां विशेषस्थाविवक्षितत्वात् सामान्यस्य च विवक्षित-त्वात् सिद्धम्

The object is achieved through the  $avivak s\bar{a}$  of the  $vi s\bar{e} sa$  of the pratyayas dealing with yuvan, sthavira,  $str\bar{\imath}$  and  $pum\bar{a}n$  which are dissimilar in form and the  $vivak s\bar{a}$  of the  $s\bar{a}m\bar{a}nya$  (i.e.) the prakrti.

असरूपाणां युवस्थिवरस्त्रीपुंसानां विशेषश्चाविवाक्षितः, सामान्यं च विवाक्षितम् । विशेषस्याविवाक्षितत्वात् सामान्यस्य च विवाक्षितत्वात् सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ इत्येव सिद्धम्

There is no  $vivak \ \bar{a}$  of the  $vi \ \bar{s}\bar{e} \ \bar{s}a$  of the pratyayas dealing with yuvan, sthavira,  $str\bar{\imath}$  and  $pum\bar{a}n$  and there is  $vivak \ \bar{a}$  for the  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ . Since there is no  $vivak \ \bar{a}$  for the  $vi \ \bar{s}\bar{e} \ \bar{s}a$  and there

is  $vivak ildes ilde{a}$  for the  $s ilde{a} m ilde{a} nya$ , the object is achieved by the  $s ilde{u} tra$   $Sar ilde{u} p ilde{a} n ilde{a} m ilde{e} k a ilde{e} ilde{e} a ilde{e} k a vibhakt ilde{a} u$  (and hence the  $s ilde{u} tras V r d d h ilde{o}$   $y ilde{u} n ilde{a} ..., Str ilde{v} p u ilde{n} v a c ilde{a}$  and  $P u m ilde{a} n s tr i y ilde{a}$  need not be read).

Note:—Since  $sar\bar{u}pa$  refers to similarity and not identity, the  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  seems to set at naught the three  $s\bar{u}tras$ .

पुमान् स्त्रिया - इह कस्मान्न भवति ब्राह्मगवत्सा च ब्राह्मगीवत्सश्च इति ? Why is not ēkaśēṣa found with reference to brāhmaṇa-vatsā and brāhmaṇi-vatsa by the sūtra Pumān striyā?

#### ब्राह्मणवत्साब्राह्मणीवत्सयोर्लिङ्गस्याविभाक्तिपरस्य विशेषवाचकत्वादनेकशेषः

Absence of ēkašēṣa in brāhmaṇa-vatsā and brāhmaṇī-vatsa on account of the linga not being followed by the vibhakti being the viśēṣavācaka.

ब्राह्मगवत्साब्राह्मणीवत्सयोर्छिङ्गस्य अविभक्तिपरस्य विशेषवाचकत्वाद् एकशेषो न भविष्यति । यत्र लिङ्गं विभक्तिपरमेव विशेषवाचकं तत्रैकशेषो भवति । नात्र लिङ्गं विभक्तिपरमेव विशेषवाचकम् ।

There is no ēkaśēṣa in brāhmaṇa-vatsā and brāhmaṇī-vatsa, since the liṅga which is viśēṣavācaka is not followed by vibhakti. Ēkaśēṣa sets only in those places where the liṅga which is viśēṣa-vācaka is followed by vibhakti. The liṅga which is viśēṣa-vācaka here is not followed by vibhakti.

यदि तर्हि यत्र लिङ्गं विभक्तिपरमेव विशेषवाचकं तत्रैकशेषो भवति, इह न प्राप्तोति कारकश्च कारिका च कारिको । न ह्यत्र लिङ्गं विभक्तिपरमेव विशेषवाचकम् If it is said that there is  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  only when the linga which is  $viś\bar{e}ṣa-v\bar{a}caka$  preceeds vibhakti, there is no chance for  $k\bar{a}rakaś$  ca  $k\bar{a}rik\bar{a}$  ca to become  $k\bar{a}rak\bar{a}u$ ; for here the linga which is  $viś\bar{e}ṣa-v\bar{a}caka$  is not followed by vibhakti.

किं तर्हि ? What then?

इत्त्वमिष Ikāra too.

कथं पुनिरदं ज्ञायते शब्दो या स्त्री तल्लक्षणश्चेदेव विशेष इति, आहोस्विद् अर्थो या स्त्री तल्लक्षणश्चेदेव विशेष इति ?

How is it understood here whether the  $viś\bar{e}ṣa$  is due to the  $str\bar{i}-v\bar{a}coka-śabda$  or whether the  $viś\bar{e}ṣa$  is due to stryartha?

किं चातः ? What is gained by either?

यदि विज्ञायते शब्दो या स्त्री तल णश्चेदेव विशेषः इति सिद्धं कारकश्च कारिका च कारका, इदं तु न सिध्यति - गोमांश्च गोमती च गोमन्तौ । अथ विज्ञायते अर्थो या स्त्री तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः इति, सिद्धं - गोमांश्च गोमती च गोमन्ती, इदं तु न सिध्यति - कारकश्च कारिका च कारकी । उभयथापि पटुश्च पट्टी च पट्ट इत्येतन्न सिध्यति ।

If it is admitted śabdō yā strī tallakṣaṇaś cēd ēva viśēṣaḥ, kārakas ca kārikā ca becomes kārikāu and gōmāms ca gōmatī ca cannot become gomantau. If, on the other hand, it is admitted arthō yā strī tallakṣanaś cēd ēva viśēṣaḥ, gōmāms ca gōmatī ca becomes gōmantāu and kārakas ca kārikā ca cannot become kārikāu. On admitting even both, paţuś ca paţvī ca cannot become pațū.

एवं तर्हि नैवं विज्ञायते - शब्दो या स्त्री तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः इति, नाप्यथीं या स्त्री तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः इति

If so, it is not taken either śabdō yā strī tallakṣaṇaś cēd ēva višēsah or artho yā strī tallaksaņas cēd ēva višēsah.

कथं तर्हि ? How then?

शब्दार्थी या स्त्री तद्धावेन च तल्लक्षणो विशेष आश्रीयते

It is taken thus: -- śabdo yā strī, artho yā strī, tadbhāvabhāvitvēna yā strī, tallakṣaṇaś cēd ēva viśēṣaḥ.

एवं च कृत्वा इहापि प्राप्तिः - ब्राह्मणवत्सा च ब्राह्मणीवत्सश्च इति If it is so interpreted, there is chance for ēkaśēsa in brāhmanavatsā ca brāhmanīvatsas ca.

एवं तहींदिमिह व्यपदेश्यम्, सदाचार्यो न व्यपदिशति

If so, this should have been mentioned here; and the great Acārya has not mentioned it.

किम्? Why?

तद् इत्यनुवर्तते There is anuvrtti for the word tad. तदित्यनेन प्रकृतौ स्त्रीपुंसौ प्रतिनिर्दिश्येते

By the word tad, the  $str\bar{i}$  and the  $pum\bar{a}n$  which are referred to in the context are taken into account.

को च प्रकृतो ? What are those referred to in the context? प्रधाने । प्रधानं या शब्दस्ती, प्रधानं या अर्थस्त्री इति

Those which are  $pradh\bar{a}na$ , the  $\hat{s}abdastr\bar{\imath}$  which is  $pradh\bar{a}na$  and the  $arthastr\bar{\imath}$  which is  $pradh\bar{a}na$ .

# नपुंसकमनपुंसकेनैकवचास्यान्यतरस्याम् (1, 2, 69)

अयं योगः शक्योऽवक्तुम् This sūtra need not be read.

कथं शुक्कश्च कम्बलः शुक्कं च वस्त्रं तिददं शुक्कं ते इमे शुक्के; शुक्कश्च कम्बलः शुक्का च बृहतिका शुक्कं च वस्त्रं तिददं शुक्कं, तानीमानि शुक्कानि?

What will be the authority to sanction the usage idam śuklam and imē śuklē with reference to śukla-kambala and śukla-vastra and the usage idam śuklam and imāni śuklāni with reference to śukla-kambala, śukla-bṛhatikā and śukla-vastra.

#### प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययाच्छेषः

 $Pradh\bar{a}na$  is left behind, since the  $k\bar{a}rya$ -sampratyaya is in its presence.

प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययात् शेषो भविष्यति

Since the knowledge of the denotation of artha takes place only in the presence of the pradhāna, it alone is left behind.

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:—Śabdēna arthasya abhidhā-nam iha kāryam,

किं च प्रधानम्? Which is pradhāna?

नपुंसकम् - Neuter gender.

कथं पुनर्ज्ञायते नपुंसकं प्रधानमिति?

How is it known that neuter gender is pradhana?

एवं हि दृश्यते लोके - अनिर्ज्ञाते ऽर्थे गुणसन्देहे च नपुंसकालिक प्रयुज्यते - किं जातम् १ इत्युच्यते । द्वयं चैव हि जायते - स्त्री वा, पुमान् वा । तथा विदृरेऽ- व्यक्तरूपं दृष्ट्वा वक्तारो भवन्ति महिषीरूपिमव, ब्राह्मणीरूपिमव ।

It is so seen in the world—It is said 'Kim jātam' (which is born)? when the object is not clearly determined and when there is doubt about its qualities. That turns out bothways—a female or a male. Similarly people, seeing indistinctly an object very far from them, use the expressions mahisī-rūpam-iva, brāhmanīrūpam-iva.

पधाने कार्यसम्प्रत्ययान्नपुंसकस्य शेषो भविष्यति

Since there is the sampratyaya of  $k\bar{a}rya$  in the presence of the  $pradh\bar{a}na$ ,  $napu\dot{m}saka$  is left behind.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - एकवचास्यान्यतरस्याम् इति वक्ष्यामि इति This, then, is the prayojana that I shall state that singular is optionally used.

एतद्पि नास्ति प्रयोजनम् This too is not the prayojana.

#### आकृतिवाचित्वादेकवचनम्

Singular number on account of the denotation of jāti.

आकृतिवाचित्वादेकवचनं भविष्यति

Singular number will be used since  $j\bar{a}ti$  is denoted.

यदा द्रव्याभिधानं तदा द्विवचनबहुवचने भविष्यतः

When there is denotation for dravya, dual and plural numbers will be used.

भ्रात्पुत्रौ स्त्रसुदुहित्भ्याम् (1, 2, 68)

पिता, मात्रा (1, 2, 70) श्वशुरः, श्वश्र्वा (1, 2, 71)

किमर्थमिदमुच्यते, न पुमान् स्त्रिया इत्येव सिद्धम् ?

Why is this read? Is not its purpose served by the  $s\bar{u}tra$   $Pum\bar{a}n\ striy\bar{a}$  itself?

# भ्रातृपुत्रपितृश्वशुराणां कारणाद्रव्ये शब्दनिवेशः

Mention of words to denote objects on account of bhrātr, putra, pitr and śvaśura having bhinna-pravṛttinimittas.

भातृपुत्रिपतृश्वशुराणां कारणाद्रव्ये शब्दिनवेशो भवति

Mention of words to denote objects is made since the words  $bhr\bar{a}tr$ , putra, pitr and svasura have pravrttinimittas different (from those of svasr, duhitr,  $m\bar{a}tr$  and  $svasr\bar{u}$ ).

Note:—It is difficult to understand how the pravṛttinimittas of śvaśura and śvaśrū are different.

भ्रातृपुत्रिषशुराणां कारणाद्रव्ये शब्दनिवेश इति चेत् तुल्यकारणत्वात् सिद्धम् lf the words bhrātā, putra, pitā and śvaśura have certain pravrttinimittas in denoting their meaning, the same holds good to svasā etc. and hence ēkaśēṣa is achieved.

यदि तावद् बिभर्ताति आता, स्वसर्यप्येतद् भवति । तथा यदि पुनाति इति प्रीणाति इति वा पुत्रः, दुहितर्यप्येतद् भवति । तथा यदि पाति पालयतीति वा पिता, मातर्यप्येतद् भवति । तथा यदि आशु आप्तत्यः श्वशुरः, श्वश्र्वामप्येतद् भवति ।

If the pravrttinimitta in bhrātā is bharaṇa, the same is found in  $svas\bar{a}$  too; if it is purification or source of pleasure in putra, the same is found in  $duhit\bar{a}$  too; if it is rakṣaṇa in  $pit\bar{a}$ , the same is found in  $m\bar{a}t\bar{a}$  too; if it is easy accessibility in svasura, the same is found in  $svasr\bar{u}$  too.

दर्शनं वै हेतुः Usage alone is the determining factor.

न हि स्वसरि भातृशब्दो दृश्यते

The word  $bhr\bar{a}t\bar{a}$  is not used to denote sister.

# दर्शनं हेतुरिति चेतुल्यम्

If usage is the determining factor, let one be used in place of another, the pravrttinimitta being the same.

दर्शनं हेतुरिति चेत् तुल्यमेतद् भवति । स्वसर्यपि आतृशब्दो दश्यताम् । तुल्यं हि कारणम्

If usage is the determining factor, the same may be used to denote the other. Let the word  $bhr\bar{a}t\bar{a}$  be used to denote sister too; for the *pravrttinimitta* is the same.

Note:—Since the words  $bhr\bar{a}t\bar{a}$  and  $svas\bar{a}$ , putrah and  $duhit\bar{a}$ ,  $pit\bar{a}$  and  $m\bar{a}t\bar{a}$  are derived from separate roots having different meanings, how can the pairs be said to have the same pravrttinimitta?

न वै एष लोके सम्प्रत्ययः It is not so taken by the world.

न हि लोके भाता आनीयताम् इत्युक्ते स्वसा आनीयते

Sister is not fetched in the world on hearing the sentence  $bhr\bar{a}t\bar{a}$   $\bar{a}n\bar{i}yat\bar{a}m$  (let  $bhr\bar{a}t\bar{a}$  be fetched).

तदिष्यं च It should also be within its range.

तद्विषयं चैतद् द्रष्टव्यं भवति - स्वसरि भ्रातृत्वम्

That too has to be considered within its range— $bhr\bar{a}trtva$  in  $svas\bar{a}$ .

किंविषयम्? Whose range?

एकशेषविषयम् Within the range of ēkaśēṣa.

युक्तं पुनर्यन्नियतविषया नाम शब्दाः स्युः ?

Will it not be proper to hold that words have restricted application?

बाढं युक्तम् Certainly, it is but proper.

## अन्यत्रापि तद्विषयद्र्यनात्

Since restricted application is seen elsewhere too.

अन्यत्रापि नियतविषयाः शब्दा दृश्यन्ते । तद्यथा, समाने रक्ते वर्णे, गौलोहित इति भवति, अश्वः शोण इति; समाने च काले वर्णे, गौ: कृष्ण इति
भवति, अश्वो हेम इति; समाने च गुक्के वर्णे, गौ: श्वेत इति भवति, अश्वः कर्के इति ।
Words are seen, elsewhere too, restricted in their application.
This may be illustrated thus:—Though the red colour is the same, the word lohita is used with reference to the red cow and the word soṇa is used with reference to the red horse; though the black colour is the same, the word kṛṣṇa is used with reference to the black cow and the word hēma with reference to the black horse; and though the white colour remains the same, the word śvēta is used with reference to the white cow and the word karka with reference to the white horse.

## त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् (1, 2, 72)

# त्यदादितः शेषे पुत्रपुंसकतो लिङ्गवचनानि

The linga and vacana with reference to the masculine and neuter genders of the pronouns  $tyad\bar{a}di$  to be decided from the last.

त्यदादितः शेषे पुंनपुंसकतो लिङ्गवचनानि भवन्ति इति वक्तव्यम् - सा च देवदत्तश्च तौ, सा च कुण्डे च तानि

It should be said that linga and vacana with reference to masculine and neuter genders of the pronouns should be decided from the last among those to which they refer, so that  $s\bar{a}$  ca  $D\bar{e}vadatta\dot{s}$  ca may become  $t\bar{a}u$  and  $s\bar{a}$  ca  $kund\bar{e}$  ca may become  $t\bar{a}ni$ .

#### अद्रन्द्रतत्पुरुषिवशेषणानाम्

Of those which are not visēṣaṇas to dvandva and tatpuruṣa compounds.

अद्वन्द्वतत्पुरुषविशेषणानामिति वक्तन्यम् - इह मा भूत्, स च कुक्तुटः, सा च मयूरी, कुक्कुटमयूर्यी ते; अर्घ पिष्पल्याः तत्, अर्घपिष्पल्यी च सा - अर्घपिष्पल्यी ते It must be said that it does not apply to the pronouns which are viśēṣaṇas to dvandva and tatpuruṣa compounds, so that the above vārttika may not operate in the expression kukkuṭamayūryāu tē which is formed from sa ca kukkuṭaḥ and sā ca mayūrī and in the expression ardhapippalyāu tē which is formed from ardham pippalyāḥ tat and ardhapippalī ca sā.

अयमपि योगः शक्योऽवक्तुम् This sūtra, too, may not be read.

कथम् ? Why?

त्यदादीनां सामान्यार्थात् Since pronouns have sāmānyārtha.

त्यदादीनां सामान्यमर्थः । आतश्च सामान्यं, देवदत्तेऽपि हि स इत्येतद् भवति यज्ञदत्तेऽपि । त्यदादीनां सामान्यार्थत्वात् शेषो भविष्यति ।

Pronouns give general sense. Since they give general sense, the word sah is used to denote  $D\bar{e}vadatta$  or  $Yaj\tilde{n}adatta$ . The  $s\bar{e}satva$  operates on account of pronouns having  $s\bar{a}m\bar{a}ny\bar{a}rtha$ .

इदं तार्हि प्रयोजनम् - परस्य शेषं वक्ष्यामि इति
This, then, is the prayojana that there is śēṣa to the para.

परस चोभयवाचित्वात् On account of para denoting both.

उभयवाचि परम् The word para denotes both.

Note:—Since it will be said iṣṭavācī paraśabdaḥ under the sūtra Vipratiṣēdhē param kāryam (1, 4, 2), para may denote both that follows and that precedes.

पूर्वशेषदर्शनाच On account of pūrvasēṣa being found.

पूर्वस्य खल्विष शेषो दृश्यते - स च यश्च ते आनय, यो आनय इति । The case-form of the pronoun that precedes also is found along with that which succeeds. Both  $t\bar{a}u$  and  $y\bar{a}u$  are used in place of sa ca and ya sa ca in the sentences  $t\bar{a}u$   $\bar{a}naya$  and  $y\bar{a}u$   $\bar{a}naya$ .

इदं तर्हि प्रयोजनम् - द्वन्द्वो मा भूदु इति

This, then, is the prayojana that dvandva may not set in.

एतदपि नास्ति प्रयोजनम् This too is not the prayojana.

#### सामान्यविशेषवाचिनोश्च द्वन्द्वाभावात्सिद्धम्

It is accomplished since there is no dvandva between  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ - $v\bar{a}caka$ -sabda and  $vis\bar{e}sa$ - $v\bar{a}caka$ -sabda.

सामान्यविशेषवाचिनोश्च द्वन्द्वो न भवति इति वक्तव्यम् ।

It must be said that there is no dvandva between words denoting  $s\bar{a}m\bar{a}nya$  and those denoting  $vi\hat{s}\bar{e}\hat{s}a$ .

यदि सामान्यविशेषवाचि ोर्द्धन्द्वो न भवतीत्युच्यते, शूद्राभीरम्, गोबळीवर्दम्, तृणोलपम् इति न सिध्यति ।

If it is said that there is no dvandva between  $s\bar{a}m\bar{a}nyav\bar{a}cakas$  and  $vis\bar{e}sav\bar{a}cakas$ , the forms  $s\bar{u}dr\bar{a}bh\bar{\imath}ram$ ,  $g\bar{o}bal\bar{\imath}vardam$  and  $trn\bar{o}lapam$  cannot be secured.

नैष दोषः । इह तावत् शूद्राभीरम् इति, आभीरा जात्यन्तराणि ; गोबली-वर्दम् इति, गाव उत्कालितपुंस्का वाहाय च विक्रयाय च स्त्रिय एवावशिष्यन्ते ; तृणोलपम् इति अपाम् उलपमिति नामधेयम् ।

This difficulty does not arise. Firstly with respect to  $\dot{su}dr\bar{a}$ - $bh\bar{\imath}ram$ ,  $\bar{a}bh\bar{\imath}ras$  form a caste different from  $\dot{su}dras$ ; with respect
to  $g\bar{o}bal\bar{\imath}vardam$ , the  $g\bar{o}s$ , being castrated for bearing burden or
for sale, are practically feminine; as regards  $trn\bar{o}lapam$ , ulapameans water.

Note:-Abhira is, according to Smrtis, he who is born of a brahman father and a mother born of a kṣatriya father and śūdra mother.

तत् तर्हि वक्तव्यम् । It, then, has to be mentioned.

न वक्तव्यम् । सामान्येनोक्तत्वाद्विशेषस्य प्रयोगो न भविष्यति । सामान्ये-नोक्तत्वात् तस्यार्थस्य - विशेषस्य - प्रयोगेण न भवितव्यम् ।

No, it need not be said. The use of the  $vi\acute{s}\bar{e}_{\dot{s}a}$  does not arise on account of the use of  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ . Since the  $vi\acute{s}\bar{e}_{\dot{s}a}$  is denoted by  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ , there chances no  $pray\bar{o}ga$  for the former.

किं कारणम् ? Why?

उक्तार्थानामप्रयोग इति

On account of the dictum Uktārthānām aprayōgaḥ.

न तर्हि इदानीमिदं भवति - तं ब्राह्मगमानय गार्ग्यमिति ।

If so, there is no chance for the use of the sentence Tam  $br\bar{a}hmanam \bar{a}naya G\bar{a}rgyam$  (Bring that  $br\bar{a}hmana G\bar{a}rgya$ ).

भवति, यदा नियोगतस्तस्यानयनं भवति

Yes, there is chance, if the purpose of the vidhi is that he should be brought.

एवं तर्हि येनैव खल्विप हेतुना एतद्वाक्यं भवति तं ब्राह्मणमानय गार्थम् इति तेनैव हेतुना वृत्तिरिप प्रामोति । तसात् सामान्यविशेषवाचिनोर्द्वेन्द्रो न भवतीति वक्तव्यम्

If so, that which leads to the possibility of the sentence Tam  $br\bar{a}hmanam\ \bar{a}naya\ G\bar{a}rgyam$ , leads to the possibility of  $lak san\bar{a}$ . Hence, it must be enjoined that there is no dvandva between  $s\bar{a}m\bar{a}nyav\bar{a}caka$  and  $vis\bar{e}sav\bar{a}caka$ .

# ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री (1, 2, 73)

अयमपि योगः शक्योऽवक्तुम् This sūtra too need not be read.

कथं गाव इमाश्चरन्ति, अजी इमाश्चरन्ति ?

(If so) how is it possible to use the feminine  $im\bar{a}h$  in the sentences  $G\bar{a}vah\ im\bar{a}s\ caranti$  and  $Aj\bar{a}\ im\bar{a}s\ caranti$ ?

गाव उत्कालितपुंस्का वाहाय च विक्रयाय च । स्त्रिय एव अवशिष्यन्ते  $G\bar{a}vah$  are only the bulls which have been castrated so that they may carry burden and they may be sold and (they that move in saigha) are almost feminine.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - ग्राम्येष्विति वक्ष्यामि इति । इह मा भूत न्यक्कव इमे सूकरा इमे इति

This, the mention of  $gr\bar{a}my\bar{e}su$  is then the  $pray\bar{o}jana$  so that the feminine gender may not be used in the expressions  $Nyankava\ im\bar{e}$  and  $s\bar{u}kar\bar{a}\ im\bar{e}$ .

कः पुनरहिति अग्राग्याणां पुंस उत्कालियतुं ये ग्रहीतुमशवयाः? कुत एव वाहाय च विकयाय च ?

Who can castrate the male of the wild animals which cannot be caught? How then is it possible to use them to carry burden or to be sold?

इदं तर्हि प्रयोजनम् पशु विवित वक्ष्यामि इति - इह मा भूत् ब्राह्मणा इमे वृषला इमे

This, the mention of paśuṣu, is then the prayojana so that the feminine gender may not be used in the expressions  $br\bar{a}hman\bar{a}\ im\bar{e}$  and  $vrṣal\bar{a}\ im\bar{e}$ .

कः पुनरहत्यपशूनां पुंस उत्कालियेतुं ये अशक्या वाहाय च विक्रयाय च ? Who will castrate the male of those who are not  $pa \le us$  since they cannot be used either to carry burden or to be sold?

इदं तर्हि प्रयोजनम् सङ्घेष्विति वक्ष्यामि इति । इह मा भूद् एतौ गावै। चरतः

This, the mention of  $sangh\bar{e}su$ , is then the  $pray\bar{o}jana$  so that the feminine gender may not be used in the expression  $Et\bar{a}u$   $g\bar{a}v\bar{a}u$  caratah.

कः पुनरहिति निर्जातेऽर्थे अन्यथा प्रयोक्तुम्?

Who will use the feminine gender incorrectly when he definitely knows that the objects referred to are male.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - अतरुगेषु इति वक्ष्यामि इति । इह मा भूद् उरुगका इमे बर्करा इमे इति This, the mention of atarun $\bar{e}$ su, is then the pray $\bar{o}$ jana—so that the feminine gender may not be used in  $urunak\bar{a}$   $im\bar{e}$  and  $barkar\bar{a}$   $im\bar{e}$ .

कः पुनरहिति तरुणानां पुंस उत्कालियतुं ये अशक्या वाहाय च विकयाय च ? Who will castrate the male of young ones which are unfit either to carry burden or to be sold?

अनेकशफेषु With reference to those having cloven hoof.

अनेकशफोष्विति वक्तव्यम् । इह मा भूद् अश्वाश्चरन्ति गर्दभाश्चरन्ति Mention of anēkaśaphēṣu is necessary, so that the feminine gender may not be used in the expressions Aśvāś caranti and gardabhāś caranti.

TWELFIH ÄHNIKA ENDS

First adhyāya second pāda ends.

#### Thirteenth Ahnika

(First adhyāya, third pāda, first āhnika)

# भूवादयो धातवः (1, 3, 1)

There are three topics in the  $s\bar{u}tra:$ —(1) Why is va found in the  $s\bar{u}tra$ ? (2) What is the purpose of the mention of the word  $\bar{a}di$  in the  $s\bar{u}tra$ ? (3) Is it necessary to have  $sam\bar{a}na$ - $sabdapratis\bar{e}dha$  and  $parim\bar{a}nagrahana$ , if those that are read in  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  are taken as  $dh\bar{a}tus$ ?

T

कुतोऽयं वकारः १ यदि तावत् संहितया निर्देशः कियते, भ्वाद्य इति भवितव्यम् । अथ असंहितया भू - आदय इति भवितव्यम् ।

Wherefrom is this  $vak\bar{a}ra$ ? If  $bh\bar{u}$  and  $\bar{a}dayah$  are read together, the  $s\bar{u}tra$  should have been read  $bhv\bar{a}dayah$  and if they are read leaving some time between them, it should have been read  $bh\bar{u}$ - $\bar{a}dayah$ .

अत उत्तरं पठित He reads the answer thus.

# भूवादीनां वकारोऽयं मङ्गलार्थः प्रयुज्यते

This vakāra in bhūvādi is read to suggest mangala.

NOTE:—This is noted in Guruprasāda Śāstri's edition to be a half of a ślōkavārttika. The author of this  $v\bar{a}rttika$  takes va as the  $\bar{a}gama$ ; but  $K\bar{a}ty\bar{a}yana$  and  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  hold that the root  $v\bar{a}$  is mentioned here.

माङ्गलिक आचार्यो महतः शास्त्रीघस्य मङ्गलार्थं वकारम् आगमं प्रयुङ्को । मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि हि शास्त्राणि प्रथन्ते, वीरपुरुषाणि च भवन्ति, आयुष्मत्पुरुषाणि चाध्येतारश्च मङ्गलयुक्ता यथा स्युरिति

Acârya, eager of maigala, reads the vakāra as āgama to serve as maigala for his great work; for only such works as have maigala at the commencement, at the middle and at the end thrive well, making the readers strong and long-lived and enabling them to meet with auspicious events in their life-time.

TI

अथ आदिग्रहणं किमर्थम् ? यदि तावत् पठ्यन्ते नार्थ आदिग्रहणेन । अन्यत्रापि ह्ययं पठन्नादिग्रहणं न करोति ।

What for is the reading of  $\bar{a}di$ ? If they (roots) are read in  $s\bar{u}tras$ , no purpose is served by it. He does not read  $\bar{a}di$  elsewhere where he reads the  $dh\bar{a}tus$ .

कान्यत्र ? Which is referred to by anyatra?

मृडमृद्गुधकुषिक्कशवदवसः त्तः इति

The sūtra Mṛḍa-mṛda-gudha-kuṣa-kliśa-vada-vasah ktvā.

अथ न पठ्यन्ते नतरामर्थ आदिप्रहणेन । न ह्यपठिताः शक्या आदिप्रहणेन विशेषयितुम्

If they are not read in  $s\bar{u}tras$ , much more is no purpose served by the reading of  $\bar{a}di$ ; for those that are not read cannot be specified by  $\bar{a}di$ .

एवं तर्हि सिद्धे सितं यदादिग्रहणं करोति, तद् ज्ञापयत्याचार्योऽस्ति च पाठो बाह्यश्च सूत्रादिति

Since  $\bar{A}c\bar{a}rya$  has read  $\bar{a}di$  in spite of achieving his object in the manner described above, he suggests that there is a  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  outside  $Ast\bar{a}dhy\bar{a}y\bar{\imath}$ .

किमेतस्य ज्ञापने प्रयोजनम् ?

What is the prayojana of this jñapana?

पाठेन धातुसंज्ञा इत्येतदुपपन्नं भवति

The statement that only those which are read in the  $Dh\bar{a}tu$ - $p\bar{a}tha$  are  $dh\bar{a}tus$  is justified.

III

### पाठेन घातुसंज्ञायां समानशब्दप्रतिषेधः

If those that are read in the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  are given  $dh\bar{a}tusamj\tilde{n}\bar{a}$ , need for the prohibition of  $sam\bar{a}na\hat{s}abdas$ .

पाठेन घातुसंज्ञायां समानशब्दानां प्रतिषेघो वक्तव्यः

If those that are read in the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  are given  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ , there is need to prohibit words of the same form not doing the same function from taking  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

या इति धातुः, या इत्यावन्तः  $^1$ ; वा इति धातुः, वा इति निपातः; नु इति धातुः, नु इति प्रत्यश्च निपातश्च; दिव् इति धातुः, दिव् इति प्रातिपदिकम् ।  $Y\bar{a}$  is a root, and  $y\bar{a}$  is a relative pronoun in the feminine gender;  $v\bar{a}$  is a root, and  $v\bar{a}$  is a  $nip\bar{a}ta$  (in the sense of or etc.); nu is a root and nu is a pratyaya and a  $nip\bar{a}ta$ ; div is a root and div is a pratipadika (meaning heaven).

किं च स्याद् यद्येतेषामपि धातुसंज्ञा स्यात् ?

What will happen if they too get dhātusamjñā?

धातोरिति तन्यदादीनामुत्पत्तिः प्रसज्येत

There is chance for them to be suffixed by the krt-pratyayas like tavyat which come under the adhikārasūtra Dhātōḥ (3, 1, 91)

Note:—T at the end of tavyat is for the sake of svarita-svara by the sūtra Tit svaritam (6, 1, 185).

नेष दोषः । साधने तब्यदादयो विधायन्ते, साधनं च कियायाः । किया-भावात् साधनाभावः । साधनाभावात् सत्यामपि धातुसंज्ञायां तब्यदादयो न भविष्यन्ति This difficulty does not arise. The krt-pratyayas like tavyat are enjoined to denote karmatva, karanatva etc. and karmatvadi- $s\bar{a}dhana$  is found only with reference to  $kriy\bar{a}$  (action); there is no  $s\bar{a}dhana$  if there is no  $kriy\bar{a}$ . Hence the pratyayas tavyat etc. cannot be suffixed to them though they get the  $dh\bar{a}tu$ - $samjn\bar{a}$ , on account of their having no  $s\bar{a}dhana$ .

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  says that  $s\bar{a}dhana$  is upalakṣaṇa to  $bh\bar{a}va$ .

इदं तर्हि 'याः पश्य', आतो धातोः इति स्रोपः प्रसज्येत

If so, the  $\bar{a}$  of  $y\bar{a}h$  in  $y\bar{a}h$  paśya has a chance to be elided by the  $s\bar{u}tra$   $\bar{A}t\bar{o}$   $dh\bar{a}t\bar{o}h$  (6, 4, 140).

नैष दोषः, अनापः इत्येवं सः

This difficulty cannot arise, since  $\bar{a}tah$  is found in the  $s\bar{u}tra$  and not  $\bar{a}pah$ .

1. Bhaṭṭōji Dīkṣit reads in Śabdakāustubha thus:—Bhīmasēnādayō hi artham nirdidiśuḥ iti smaryatē. Pāṇinis tu Bhvēdha...ityādi apāṭhīt.

अस्य तर्हि वाशब्दस्य निपातस्याधातुरिति प्रातिपदिकसंज्ञायाः प्रतिषेधः प्रसज्येत । अप्रातिपदिकत्वात् स्वाद्युत्पत्तिने स्यात् ।

If so, the pratiṣēdha of the  $pratipadikasamj\~n\~a$  chances to happen to the  $nip\=ata v\=a$  on account of the mention of  $adh\=atuh$  in the  $s\=atra$   $Arthavad-adh\=atur-apratyayah$   $pr\=atipadikam$  and case-suffixes cannot be attached to it on account of its not being a  $pr\=atipadika$ .

नैष दोषः । निपातस्यानर्थकस्य प्रातिपदिकत्वं चोदितं, तत्र अनर्थकप्रहणं न करिष्यते । निपातः प्रातिपदिकम् इत्येव

This difficulty does not arise. Reference was made regarding the prātipadikatva of the nipāta which has no meaning; but the word anarthaka is not found in that sūtra. Hence nipāta becomes a prātipadika.

इह तर्हि त्रस्नू इति अचि श्वधातुश्रुवां य्वोः इति उवाङादेशः प्रसज्येत In the word  $trasn\bar{u}$ , then, there is chance for the  $\bar{a}d\bar{e}\dot{s}a$  uvan by the  $s\bar{u}tra$  Aci  $\dot{s}nudh\bar{a}tubhruv\bar{a}m$   $yv\bar{o}h$  (6, 4, 77).

Noie:—Though the root is read as nu, nu is referred to here since it is replaced by nu in actual speech.  $Trasn\bar{u}$  is  $knupratyay\bar{a}nta$ .

नैष दोषः । आचार्यप्रवृत्तिर्जापयति न प्रत्ययस्योवङादेशो भवति इति, यदयं तत्र अप्रहणं करोति

This difficulty does not arise. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that pratyaya does not take  $uva\dot{n}$ - $\bar{a}d\bar{e}\dot{s}a$ , since he reads  $\dot{s}nu$  in the  $s\bar{u}tra$ .

अस्तु तर्हि दिव्शब्दस्य अधातुरिति प्रातिपदिकसंज्ञायाः प्रतिषेधः प्रसज्येत । अप्रातिपदिकत्वात् स्वाद्यत्पत्तिर्न स्थात्

If so, there is chance for the pratisedha of the pratipadikasamjñā with reference to this div on account of the mention of adhātuḥ in the sūtra Arthavad-adhātur-apratyayaḥ....On account of the absence of prātipadikasamjñā, there is no chance for case-suffixes to be attached to it.

नेष दोषः । आचार्यप्रवृत्तिर्जापयति उत्पद्यन्ते दिव्शब्दात् स्वादय इति, यदयं दिवः सावौत्वं शास्ति ।

This difficulty does not arise. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that case-suffixes are attached to the word div, since he enjoins that v will be replaced by  $\bar{a}u$  before s (in the  $s\bar{u}tra$   $Diva\ \bar{a}ut\ 7-1-84$ ).

नैतदस्ति ज्ञापकम् । अस्ति ह्यन्यदेतस्य वचने प्रयोजनम्

This cannot be the  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ ; for there is another  $pray\bar{o}jana$  for its mention.

किम्? What?

दिव्शब्दो यः प्रातिपदिकं तदर्थमेतत् स्यात् - अक्षद्यः इति

This is intended for the word div when it stands as a  $pr\bar{a}ti-padika$ , as in  $ak \neq ady\bar{u}h$ .

न वै अन्नेष्यते It is not required here (by śiṣṭas.)

अनिष्टं च प्रामोति, इष्टं च न सिध्यति

It will appear where it is not needed and it will not appear where it is needed.

एवं तर्हि अननुबन्धकप्रहणे न सानुबन्धकस्य इत्येवम् एतस्य न भविष्यति If so, that which has an anubandha is not referred to by that which is read without an anubandha.

NOTE:—The root div is read as divu in the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  and hence it cannot be referred to by divah in the sūtra Diva  $\bar{a}ut$  (7, 1, 84).

एवमप्यनदुबन्धको दिव्शब्दो नास्तीति कृत्वा सानुबन्धकस्य प्रहणं विज्ञास्यते । Even then, that with anubandha is taken into account on seeing that there is none without anubandha.

#### परिमाणग्रहणं च

(The need too for) the mention of the outer limit of each.

परिमाणग्रहणं च कर्तव्यम् - इयानविधर्यातुसंज्ञो भवतीति वक्तव्यम् There is need to mention the outer limit also. It is necessary to state that dhātusamjñā extends as far as this.

कुतो होतत् ? What is this for?

मूशब्दो धातुसंज्ञो भविष्यति, न पुनर्भ्वेधशब्दः इति

So that bhū can take dhātusamjñā and not bhvēdha.

Note:—1. Avadhi in the  $bh\bar{a}sya$  means  $avadhim\bar{a}n$ .

Note:—2.  $K\bar{a}iyata$  holds that  $bh\bar{u}$  satt $\bar{a}y\bar{a}m$  etc. is apāṇinīya and the meaning mentioned there is taken to be upalakṣaṇa by abhiyuktas. Abhiyukta here,  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  says, refers to  $Bh\bar{\imath}mas\bar{\imath}na$ .

यदि पुनः

#### क्रियावचनो धातुः

इत्येतल्लक्षणं क्रियेत

If then,  $dh\bar{a}tu$  is defined to be that which connotes  $kriy\bar{a}$ !

Note:—Kāiyaṭa reads here:—Ēvam sati samānaśabdānām pratiṣēdhō na vaktavyaḥ, nāpi parimāṇagrahaṇam.

का पुनः किया ? What, then, is  $kriy\bar{a}$ ?

इर्हा Ihā.

का पुनरीहा ? What, then, is īhā ?

चेष्टा Cēstā.

का पुनश्रेष्टा What, then, is cēṣṭā?

व्यापारः Action.

सर्वथा भवान् शब्देनैव शब्दानाचष्टे, न किञ्चिदर्थजातं निदर्शयति एवंजातीयका किया इति ।

You always explain words with words and do not show any object telling  $kriy\bar{a}$  is like this.

किया नामेयमत्यन्तापरिदृष्टा अशक्या पिण्डीभूता निद्शियितुं, यथा गर्भो निर्कुठितः । सासावनुमानगम्या

 $Kriy\bar{a}$  is not cognisible through other  $pram\bar{a}nas$  and cannot be shown as a mass unlike a child that has gone out of the womb; it can be understood only through  $anum\bar{a}na$ .

Note:—The nirluthita-garbha is a vāidharmyadrṣṭānta.

कोसावनुमानः? What is this anumana?

इह सर्वेषु साधनेषु सिन्निहितेषु कदाचित् पचित इत्येतद् भवित, कदाचिन्न भवित । यस्मिन् सिन्निहिते पचिति इत्येतद् भवित सा नूनं किया । अथ वा यया देवदत्त इह भूत्वा पाटिलिपुने भवित सा नूनं किया । When all the requisites are here at hand, there is sometimes a chance to say pacati (cooks) and sometimes not. That is evidently the  $kriy\bar{a}$ , in the presence of which there is a chance to say pacati. Or it is definitely the  $kriy\bar{a}$  by which  $D\bar{e}vadatta$ , having been here, is now at  $P\bar{a}taliputra$ .

कथं पुनर्ज्ञायते क्रियावचनाः पचाद्य इति ?

How is it understood that pacādis are kriyāvacanas?

यदेतेषां करोतिना सामानाधिकरण्यम् - किं करोति? पचित । किं करिष्यति ? पक्ष्यति । किमकार्षीद् अपाक्षीद् इति

Since there is  $s\bar{a}m\bar{a}n\bar{a}dhikaranya$  between them and the root kr. What does he do? He cooks. What will he do? He will cook. What did he do? He cooked.

तल - There

## क्रियावचने उपसर्गप्रत्ययप्रतिषेधः

If  $dh\bar{a}tu$  is defined to be  $kriy\bar{a}vacana$ , there is need for the  $pratis\bar{e}dha$  of upasarga and pratyaya.

क्रियावचने धातावुपसर्गप्रत्यययोः प्रतिषेघो वक्तव्यः, पचति प्रपचति

If  $dh\bar{a}tu$  is defined to be  $kriy\bar{a}vacana$ , there is need to prohibit  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  to upasarga and pratyaya, as in pacati and prapacati.

Note:—The pratyaya ti in pacati and the upasarga pra in prapacati may also take the samjñā in his opinion.

किं पुनः कारणं प्रामोति? How can they get the samjñā?

# सङ्घातेनार्थगतेः

Since meaning is understood from the whole word.

सङ्घातेन ह्यथीं गम्यते सप्रकृतिकेन सप्रत्ययकेन सोपसर्गेण च

For meaning is made out from the whole consisting of the stem, the pratyaya and the upasarga.

## अस्तिभवतिविद्यतीनां च धातुत्वम्

(Need for enjoining)  $dh\bar{a}tutva$  to as,  $bh\bar{u}$  and vid (4th conj.) (i.e., to roots which mean to be, to exist etc.)

अस्तिभवतिविद्यतीनां च धातुसंज्ञा वक्तव्या । यथा हि भवता करोतिना पचादीनां सामानाधिकरण्यं दर्शितं, न तथा अस्त्यादीनां निदर्श्यते । न हि भवति - किं करोति ? अस्ति इति

Dhātu-samjñā has to be enjoined to as, bhū and vid (4th conj.). Sāmānādhikaranya which is shown to exist between kr and pac etc. is not shown to exist between the same kr and as etc. The answer asti (he is) is never possible to the question kim karōti (what does he do?).

## प्रत्ययार्थस्याव्यतिरेकात्प्रकृत्यन्तरेषु 1

On account of the absence of the change of meaning in the pratyaya when it is used along with other stems (in words having different meanings).

प्रत्ययार्थस्याव्यतिरेकात् प्रकृत्यन्तरेषु मन्यामहे धातुरेव कियामाहेति । पचित पठित - प्रकृत्यर्थोऽन्यश्चान्यश्च, प्रत्ययार्थः स एव ।

On account of the absence of the change of meaning in the pratyaya in words having different stems, we think that  $dh\bar{a}tu$  alone connotes  $kriy\bar{a}$ . In the two words pacati and pathati, the meanings of the stems are different, while the meaning of the pratyaya remains the same.

### **धातोश्चार्थाभेदात्प्रत्ययान्तरेषु**

On account of the absence of the change of meaning in the  $dh\bar{a}tu$  also when it is used with other pratyoyas.

धातोश्चार्थाभेदात् प्रत्ययान्तरेषु मन्यामहे धातुरेव क्रियामाहेति । पक्तिः पचनं पाक इति - प्रत्यथार्थोऽन्यश्चान्यश्च भवति, प्रकृत्यर्थः स एव ।

On account of the absence of the change of meaning in the  $dh\bar{a}tu$  also in words used with other pratyayas, we think that it is  $dh\bar{a}tu$  alone that connotes  $kriy\bar{a}$ . In the words paktih, pacanam and  $p\bar{a}kah$ , the meanings of the pratyayas are different, while the meaning of the prakrti remains the same.

कथं पुनर्जायते अयं प्रकृत्यर्थः अयं प्रत्ययार्थ इति

How is it known that this is prakrtyartha and this is pratya-yārtha?

1. This is the answer to the question कथं पुनर्ज्ञीयते कियावचना; पचादय इति?

#### अन्वयव्यतिरेकाभ्याम्

Through anvaya (logical continuance) and vyatirēka (logical discontinuance).

अन्वयाच व्यतिरेकाच Through anvaya and vyatirēka,

कोऽसावन्वयो व्यतिरेको वा? What is this—anvaya or vyatirēka?

इह पचतीत्युक्ते कश्चिच्छ्वदः श्रूयते - पच्छ्वदः चकारान्तः, अतिशब्दश्च प्रत्ययः । अर्थोऽपि कश्चिद् गम्यते विक्कित्तिः कर्तृत्वं, एकत्वं च । पठित इत्युक्ते कश्चित् शब्दो हीयते, कश्चिद् उपजायते, कश्चिद् अन्वयी । पच् - शब्दो हीयते, पठ् - शब्द उपजायते, अतिशब्दोऽन्वयी । अर्थोऽपि कश्चित् हीयते, कश्चिद् उपजायते, कश्चिद् अन्वयी । विक्कित्तिर्हीयते, पठिकिया उपजायते, कर्तृत्वं च एकत्वं च अन्वयी । ते मन्यामहे - यः शब्दो हीयते तस्यासी अर्थः योऽर्थो हीयते, यः शब्द उपजायते तस्यासावर्थः योऽर्थे उपजायते, यः शब्दोऽन्वयी ।

Here in the word pacati, the element pac which ends in c is heard and the element ati, the pratyaya, is also heard. Meaning too-modification into boiled rice, kartriva (the state of being the agent) and ēkatva (oneness) - is understood. Here in the word pathati, a portion of the word found in pacati has been dropped, something has been inserted in its place and a portion continues to be the same. The element pac has disappeared, the element path has taken its place, and the element ati continues to be the same. An element in the meaning too has disappeared, another has taken its place and another element continues to be the same. Vikltti has disappeared, the act of reading has taken its place and kartriva and ēkatva continue to be the same. Hence we infer that the element in the word which has disappeared has for its meaning the element in the meaning which has disappeared, the element in the word which has newly appeared has for its meaning the element in the meaning which has newly set in and the element in the word which continues to be the same has for its meaning the element in the meaning which continues to be the same.

विषम उपन्यासः - बहवो हि शब्दा एकार्था भवन्ति; तद्यथा इन्द्रः, शकः, पुरुहूतः, पुरुन्दरः ; कन्दुः, कोष्टः, कुसूल इति । एकश्च शब्दो बह्वर्थः; तद्यथा अक्षाः, पादाः, माषा इति

The argument is not sound; for many words have the same meaning like Indra, Sakra,  $Puruh\bar{u}ta$  and Purandara (to denote Indra) and kandu,  $k\bar{o}siha$  and  $kus\bar{u}la$  (to denote granary) and one word has many meanings like the words  $aks\bar{a}h$ ,  $p\bar{a}d\bar{a}h$  and  $m\bar{a}s\bar{a}h$ .

अतः किं न साधीयोऽर्थवत्ता सिद्धा भवति ?

Does this not clearly prove the capacity of denoting meaning in words?

नापि ब्रूमोऽर्थवत्ता न सिध्यति इति । वर्णिता ह्यर्थवत्ता – अन्वयव्यतिरेकाभ्या-मेव । तत्र कुत एतद् अयं प्रकृत्यर्थः अयं प्रत्ययार्थ इति, न पुनः प्रकृतिरेवोभावर्थी ब्रूयात् प्रत्यय एव वा ?

We do not say that arthavattā is not achieved. The arthavattā was explained through anvaya and vyatirēka. How is it taken there that this is prakṛtyartha and this is pratyayārtha? Why should it not be said that both are the arthas of the prakṛti or the pratyaya?

सामान्यशब्दा एत एवं स्युः । सामान्यशब्दाश्च नान्तरेण प्रकरणं विशेषणं वा विशेषेष्ववित्रष्ठन्ते । यतस्तु खळु नियोगतः पचतीत्युक्ते स्वभावतः कस्मिश्चिद्विशेषे पच्शब्दो वर्तते अतो मन्यामहे नेमे सामान्यशब्दा इति । न चेत् सामान्यशब्दाः प्रकृतिः प्रकृत्यर्थे वर्तते प्रत्ययः प्रत्ययार्थे ।

If so, they will become  $s\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$ .  $S\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$  need prakarana or  $vi\dot{s}\bar{e}\dot{s}ana$  (adjunct) to denote  $vi\dot{s}\bar{e}\dot{s}as$ . Since the word pacati is used as an answer to a question, pac is naturally a  $vi\dot{s}\bar{e}\dot{s}a\dot{s}abda$  and hence they do not come under the category of  $s\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$ . If they are not  $s\bar{a}m\bar{a}nya\dot{s}abdas$ , prakrti denotes prakrtyartha and pratyaya suggests pratyayārtha.

1. It is interesting to note that the words Puruhū!a and Purandara are found in the hymns of the Rgvēda only as višēṣaṇas and not as višēṣyas. From the above statement it is clear that they became višēṣyas before Mahābhāṣyakāra's time.

#### क्रियाविशेषक उपसर्गः

Upasarga enables the  $dh\bar{a}tu$  to denote another  $kriy\bar{a}$ .

पचित इति किया गम्यते, तां शो विशिनष्टि ।

 $Kriy\bar{a}$  is denoted by pac and it is differentiated by pra.

यद्यपि तावदत्रैतत् शक्यते वक्तुं यत्र धातुरुपसर्गं व्यभिचरति, यत्न न खळु तं व्यभिचरति तत्र कथम् - अध्येति अधीते इति ?

Even though it is possible to say so in cases where  $dh\bar{a}tus$  can be used alone or with upasargas, how are we to meet the situation where  $dh\bar{a}tus$  are invariably used along with prepositions, as in  $adhy\bar{e}ti$  and  $adh\bar{i}t\bar{e}$ ?

यद्यप्यत्र धातुरुपसर्गं न व्यभिचरति, उपसर्गस्तु धातुं व्यभिचरति । ते मन्यामहे य एवास्य अधेरन्यत्र अर्थः स इहापि ।

Even though the root is not used except with an upasarga, the upasarga is used with roots other than it. Hence we take that it has the same meaning here as elsewhere.

कः पुनरन्यत्राधेरर्थः ?

What, then, is the meaning suggested by adhi elsewhere?

अधिरुपरिभावे वर्तते Adhi suggests the meaning—above.

इह ताईं व्यक्तमर्थान्तरं गम्यते - तिष्ठति, प्रतिष्ठते इति । तिष्ठति इति व्रिजिकियाया निवृत्तिः । प्रतिष्ठत इति व्रिजिकिया गम्यते । ते मन्यामहे उपसर्गकृत-मेतद्, येनात्र व्रिजिकिया गम्यते ।

Here in the words tisthati and  $pratisthat\bar{e}$  the meanings are definitely different. The root  $sth\bar{a}$  means the absence of going and  $pra-sth\bar{a}$  means going. Therefore the sense of going found in the latter is due to the  $upasarga\ pra$ .

Note:  $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  here says that the above statement suggests three things:—(1) If the act of going is suggested by the preposition alone,  $sth\bar{a}$  cannot get the  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . (2) It cannot be the meaning of  $sth\bar{a}$  alone, since it has a contrary meaning. (3) If it is the meaning of pra- $sth\bar{a}$ , it alone can get the  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

प्रोयं दृष्टापचारः आदिकर्मणि वर्तते । न चेदं नास्ति बहुर्था अपि धातवो भवन्तीति ; तद्यथा - विषः प्रिकरणे दृष्टः, छेदने चापि वर्तते - केशश्मश्रु वपित इति ; ईिंडः स्तुतिचोदनायाच्ञासु दृष्टः, प्रेरणे चापि वर्तते - अभिर्वा इतो वृष्टिमीहे मरुतोऽमुतश्च्यावयन्ति इति ; करोतिः अभूतप्रादुर्भावे दृष्टः, निर्मलीकरणे चापि वर्तते - पृष्ठं कुरु, पादो कुरु - उन्मृदान इति गम्यते । निक्षेपणे चापि वर्तते कटे कुरु, अश्मानितः कुरु, स्थापय इति गम्यते । एविमहापि तिष्ठतिरेव विजितिशेव विजितिशेव विजितिशेव विजितिशेव विजितिशेव।

This pra suggesting departure is used (with stha) to denote the initial action after stopping. It cannot be said that dhātus do not have many meanings. It may be illustrated thus:-The root vap, which is used to mean to sow, is also used to mean to cut, as in the sentence kēśaśmaśru vapati (he shaves his head and beard); the root id which is used to mean to praise, to enjoin and to beg is also used to mean to drive, as in Agnir vā itō vrṣṭim īṭṭē marutōsmutaś cyāvayanti (Fire drives the cloud from here and winds from there). The root kr which is used to mean to do, is also used to mean to clean, as in the sentences prstham kuru (clean your back), pādāu kuru (clean your feet), (i.e.) it means to rub off with earth. It is used also in the sense of to put in, as in the sentences kate kuru (bury in the burial ground), ghațē kuru (put in the pot), asmānam itaķ kuru (put in the stone here) (i.e.) it means to bury 1. So also the root  $sth\bar{a}$ , here, conveys the meaning of going and the same conveys the meaning of stopping also.

अयं तर्हि दोष: - अस्तिभवतिविद्यतीना धातुत्वम् इति
This dōṣa, then, remains that dhātusamjñā should be enjoined to as, bhū and vid (4th conj.)

यदि पुनः

#### भाववचनो धातुः

1. It may also be noted that kr means to know in the vārttika Yasmāi tarhi sampratyupadiśati tasya akrtah under (1, 1, 1), it means to accomplish in the word krtakrtyāh and it means to be in the vicinity of in the word akrtadārāh with reference to Lakṣmaṇa in the Rāmāyaṇa.

इत्येतल्लक्षणं क्रियेत Suppose dhātu is defined to connote bhāva. कथं पुनर्ज्ञायते भाववचनाः पचादय इति ?

How is it understood that pac etc. connote bhāva?

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhațța$  reads here:— $Kriy\bar{a}$ sabdah saparispandus $\bar{a}dhanas\bar{a}dhy\bar{a}rth\bar{e}$  rūdhah bh $\bar{a}va$ sabdah ca saparispandaaparispanda-anyataras $\bar{a}dhanas\bar{a}dhyah$ .

यदेषां भवतिना सामानाधिकरण्यम् - भवति पचति, भवति पक्ष्यति, भवति अपाक्षीद् इति

Since these have sāmānādhikaraņya with bhavati as in bhavati pacati, bhavati pakṣyati and bhavati apākṣīt.

Note:—Bhavati pacati means yat-kartṛkā pacikriyā tat-kartṛkā sattā (i.e.) he who cooks lives. Here bhavanam means ātmabharaṇam. The adhikaraṇa of cooking is the adhikaraṇa of living. Hence bhavati and pacati are said to have  $s\bar{a}m\bar{a}n\bar{a}-dhikaraṇya$ .

कः पुनर्भावः ? What is bhava?

Note:  $-K\bar{a}iyaţa$  reads here: -Yadi kriy $\bar{a}iva$  bh $\bar{a}vah$  tad $\bar{a}$  pak $\bar{s}\bar{a}ntar\bar{o}p\bar{a}d\bar{a}nam$  anarthakam, anyah tad $\bar{a}$  avy $\bar{a}ptir$  iti pra $\hat{s}nah$ .

भवतेः स्वपदार्थो भवनं भाव इति

 $Bh\bar{a}va$  means bhavanam which is the intrinsic meaning of the root  $bh\bar{u}$ .

यदि भवतेः स्वपदार्थो भवनं भावः, विश्वतिषिद्धानां धातुसंज्ञा न प्राप्नोति, भेदः छेदः । अन्यो हि भावः अन्योऽभावः । आतश्चान्यो भावः अन्योऽभाव इति, यो हि यस्य भावमिच्छति स न तस्याभावम्, यस्य चाभावं न तस्य भावम् । पचादीनां च धातुसंज्ञा न प्राप्नोति, यथा हि भवता क्रियावचने धातौ करोतिना सामानाधिकरण्यं निद्धितं न तथा भाववचने धातौ निद्ध्यते । करोतिः पचादीनां सर्वान् कालान् सर्वान् पुरुषान् सर्वाणि वचनानि अनुवर्तते । भवतिः पुनः वर्तमानकालत्वं चकत्वं च । If bhāva means bhavanam, the true meaning of the root bhū, those like bhid, chid which give a diametrically opposite meaning cannot get dhātusamijñā; for bhāva is one and abhāva is another. For the same reason, since bhāva is one and

abhāva is another, he who desires one's existence does not desire its absence and he who desires one's absence does not desire its existence. There is no chance for pac etc. to get  $dh\bar{a}tusamjn\bar{a}$ , since the  $s\bar{a}m\bar{a}n\bar{a}dhikaranya$  that was shown by you between them and the root kr is not shown in the same way between them and the root  $bh\bar{u}$ . Kr agrees with pac etc. in all tenses, in all persons and in all numbers; but the root  $bh\bar{u}$ , is used only in the present tense and in the singular number.

का तर्हि इयं वाचोयुक्तिः भवति पचिति, भवति पक्ष्यति, भवति अपाक्षीद् इति ? How, then, is this expression:—bhavati pacati, bhavati pakṣyati, bhavati apākṣīt to be construed?

एषेषा वाचोयुक्तिः - पचादयः कियाः भवतिकियायाः कर्न्यो भवन्ति इति That expression has to be taken in this way:— $Pac\bar{a}di-kriy\bar{a}h$  become the agents of  $bhavati-kriy\bar{a}$ .

यद्यपि तावदेत्रैतच्छक्यते वक्तुं, यत्र अन्या चान्या च किया । यत्र खलु सैव किया, तत्र कथं भवेदपि भवेत्, स्यादपि स्याद् इति?

Even though it is possible to explain in this way when the roots are different, how is it possible to explain when the roots are the same, as in  $bh\bar{a}v\bar{e}t$   $bh\bar{a}v\bar{e}t$  and  $sy\bar{a}t$   $sy\bar{a}t$ ?

अत्राप्यन्यत्वमास्ति They too are taken to be different.

कुतः ? How?

कालमेदात् साधनमेदाच । एकस्यात्र भवतेभवतिः साधनं, सर्वकालश्च प्रत्ययः । अपरस्य बाह्यं साधनं वर्तमानकालश्च प्रत्ययः

On account of difference in the tense and the  $s\bar{a}dhana$ . One has for its  $s\bar{a}dhana$  bhavati and the pratyaya denoting all the three tenses and another has for its  $s\bar{a}dhana$  an external element and the pratyaya denoting the present tense.

Note:—The expression bhavēd bhavēt may be translated thus:—May the present life continue for ever!

यावता अत्राप्यन्यत्वमस्ति पचादयश्च किया भवतिकियायाः कर्र्यो भवन्तीति, अस्त्वयं कर्तृसाधनः भवतीति भाव इति Even though it is possible to show that there is anyatva and  $pac\bar{a}dikriy\bar{a}s$  become agent to  $bhavatikriy\bar{a}$  (on the basis of  $bh\bar{a}vas\bar{a}dhanatva$ ), let the word  $bh\bar{a}va$  be  $kartrs\bar{a}dhana$  so that it has its derivation bhavati iti.

कि कृतं भवति? What is accomplished by it?

विप्रतिषिद्धानां धातुसंज्ञा सिद्धा भवति

Dhātusamjñā is accomplished with reference to those which have a diametrically opposite meaning.

भवेद्विपतिषिद्धानां धातुसंज्ञा सिद्धा स्यात्, प्रातिपदिकानामिष तु प्राप्नोति, वृक्षः प्रक्ष इति

It is true that the desired  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  is accomplished with reference to those which have a diametrically opposite meaning, but the same has a chance to appear with reference to the  $pr\bar{a}tipadikas$  like vrksa and plaksa.

किं कारणम् ? Why?

एतान्यपि हि भवन्ति For these two have their janma (bhāva).

एवं तर्हि कर्मसाधनो भविष्यति, भाव्यते यः स भाव इति । किया चैव हि भाव्यते, स्वभावसिद्धं तु द्रव्यम्

If so, let it be  $karmas\bar{a}dhana$ , so that  $bh\bar{a}va$  means that which is made to appear. It is the  $kriy\bar{a}$  which is made to appear and dravya is evidently  $siddh\bar{a}vastha$  through  $\pm sabda\pm saktisvabh\bar{a}va$ .

एवमिप भवेत् केषांचिन्न स्याद् यानि न भाव्यन्ते

Even then there is chance for others too which do not come under the category of those that are not made to appear.

ये त्वेते सम्बन्धिशब्दास्तेषां प्राप्तोति - माता, पिता, श्राता इति
These words of relationship like mātā, pitā and bhrātā which come under the category of those that are made to appear will get it (dhātusamjñā).

सर्वथा वयं प्रातिपदिकपर्युदासान्न मुच्यामहे

In whatever way we explain we cannot escape to rid prātipadika from coming within its range. पठिष्यति ह्याचार्यो भूवादिपाठः प्रातिपदिकाणवयत्यादिनिवृत्त्यर्थः इति । यावता पठिष्यति - पचाद्यश्च कियाः भवतिकियायाः कर्र्यो भवन्तीति, अस्त्वयं कर्तृसाधनो भवतीति भावः

 $Ac\bar{a}rya$  ( $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$ ) is going to read that the purpose of the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  is to prevent  $pr\bar{a}tipadika$ ,  $\bar{a}navayati$  etc. from getting  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . Because he reads it, let  $bh\bar{a}va$  be  $kartrs\bar{a}dhana$  since  $pac\bar{a}dikriy\bar{a}s$  become the agents of  $bhavatikriy\bar{a}$ .

Note:—Aṇavayati is the Prākṛtic form of ājñāpayati.

किं वक्तव्यमेतत् ! Is this to be said ?

न हि No, it need not.

कथमनुच्यमानं गंस्यते ?

How is it understood without its being said?

एतेनैव अभिहितं सूत्रेण भूवादयो धातवः इति

It is understood from this sūtra Bhūvādayō dhātavaḥ.

कथम ? How?

नेदमादिशहणम् It is not the word ādi that is read here.

वदेरयमौणादिक इञ् कर्तृसाधनः भुवं वदन्तीति भूवाद्य इति

Bhūvādayaḥ means those which tell  $bh\bar{u}$  and is derived thus:- bhuvam ( $j\bar{a}yam\bar{a}nam$ ) vadanti iti and the word is formed thus:-  $bh\bar{u}+vad+i\tilde{n}$  ( $un\bar{a}dipratyaya$ ) where  $i\tilde{n}$  suggests  $kartrs\bar{a}dhanatva$ .

Note:  $K\bar{a}iyaţa$  reads here:  $J\bar{a}yam\bar{a}nam$  artham  $y\bar{e}$  abhidadhati  $t\bar{e}$   $dh\bar{a}tava$  ityarthah. Bhavatir atra  $janmav\bar{a}c\bar{\iota}$   $grhyat\bar{e}$ .

## भाववचने घातौ तदर्थप्रत्ययप्रतिषेधः

If  $dh\bar{a}tu$  is taken to denote  $bh\bar{a}va$ , there is need to prohibit  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  from reaching pratyayas which denote  $bh\bar{a}va$ .

भाववचने घातौ तदर्शस्य प्रत्ययस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः । शिश्ये इति If  $dh\bar{a}tu$  is taken to denote  $bh\bar{a}va$ , there is need to prohibit  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  from reaching pratyayas which denote  $bh\bar{a}va$  as  $\bar{e}$  in  $\dot{s}i\dot{s}y\bar{e}$ . 1

1.  $Si\acute{s}y\bar{e}$  is the third person singular, perfect in  $bh\bar{a}v\bar{e}pray\bar{o}ga$ . If  $dh\bar{a}tu$  is taken to denote  $bh\bar{a}va$ ,  $\bar{e}$  has a chance to be taken as  $dh\bar{a}tu$  and then it has a chance to be changed to  $\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$   $Ad-\bar{e}ca$   $upad\bar{e}\acute{s}a$   $a\acute{s}iti$  (6, 1, 45).

किं च स्यात् ? What will happen (if it is not done)? अशिति इत्यात्वं प्रसज्येत, तद्धि धातोविहितम

 $\bar{E}$  will have a chance to be changed to  $\bar{a}$ , since it is enjoined to  $dh\bar{a}tu$ .

#### इतरेतराश्रयं च, प्रत्यये भाववचनत्वं तस्माच प्रत्ययः

Interdependence too,  $bh\bar{a}vavacanatva$  coming in when there is pratyaya and the use of pratyaya to denote it.

इतरेतराश्रयं च भवति There sets in interdependence too.

का इतरेतराश्रयता ? How does interdependence arise?

प्रत्यये भाववचनत्वं, तसाच प्रत्ययः — उत्पन्ने हि प्रत्यये भाववचनत्वं गम्यते, स च तावद् भाववचनाद् उत्पाद्यः । तदेतद् इतरेतराश्रयं भवति । इतरेतरा-श्रयाणि च कार्याणि न प्रकल्पन्ते ।

Pratyayē bhāvavacanatvam, tasmāc ca pratyayaḥ-when pratyaya exists, it is taken to suggest bhāvavacanatva and to denote bhāvavacanatva pratyaya is to be used. This is the interdependence. Deeds which are interdependent are not accomplished.

#### ं सिद्धं तु नित्यशब्दत्वादनाश्रित्य भाववचनत्वं प्रत्ययः

Our object is gained on account of the nityatva of śabda and on account of the use of the pratyaya without looking for bhāvavacanatva.

सिद्धमेतत् This (the desired object) is accomplished. कथम ? How?

नित्यशब्दत्वात् - नित्याः शब्दाः ; नित्येषु शब्देषु अनाश्रित्य भाववचनत्वं प्रत्यय उत्पद्यते ।

(It is so) since  $\pm abda$  is nitya— $\pm \hat{S}abdas$  are nitya; when  $\pm abdas$  are nitya, the pratyaya exists without its depending upon  $bh\bar{a}vavacanatva$ .

#### प्रथमभावग्रहणं च

Reading, too, the adjunct prathama to  $bh\bar{a}va$  (in the  $v\bar{a}rttika$   $Bh\bar{a}vavacan\bar{o}\ dh\bar{a}tuh$ ).

प्रथमभावप्रहणं च कर्तव्यम्, प्रथमं यो भावमाह इति

Mention is to be made of the adjunct prathama to  $bh\bar{a}va$ , so that it may mean that which denotes  $bh\bar{a}va$  first.

कुतः पुनः प्राथम्यम् ? किं शब्दतः आहोस्विद् अर्थतः

From which standpoint is prāthamya to be considered? Is it with reference to śabda or with reference to artha?

किं चातः ? What is the difference?

यदि शब्दतः सनादीनां घातुसंज्ञा न प्रामोति - पुत्रीयति वस्त्रीयति

If it is with reference to  $\pm abda$ ,  $\pm an\bar{a}dis$ , as in  $putr\bar{i}yati$  and  $vastr\bar{i}yati$  cannot get the  $dh\bar{a}tusamj\bar{n}\bar{a}$  (since the element putra which is pronounced first does not denote  $bh\bar{a}va$ ).

अथ अर्थतः, सिद्धा सनादीनां घातुसंज्ञा, स एव तु दोषो भाववचने तदर्थ-प्रत्ययप्रतिषेधः इति ।

If, then, it is with reference to artha,  $san\bar{a}dis$  get  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  (since  $bh\bar{a}va$  is mentioned by kyac first); but the defect  $bh\bar{a}va$ - $vacan\bar{e}$  tad-artha-pratyaya- $pratis\bar{e}dhah$  stands.

एवं तर्हि नापि शब्दतो नाप्यर्थतः

If so, it is neither with reference to śabda nor with reference to artha.

किं तर्हि? With reference to what then? अभिधानत:

From the standpoint of the capacity of denoting  $bh\bar{a}va$ .

सुमध्यमेऽभिघाने यः प्रथमं भावमाह

That which denotes  $bh\bar{a}va$  first through its capacity which well stands via-media (between  $\acute{s}abda$  and artha).

इह ये एव भाववचने धातौ दोषाः, त एव क्रियावचनेऽपि । तत्र त एव परिहाराः

Here, the defects noted with reference to the pakṣa ' $bh\bar{a}va$ - $vacan\bar{o}$   $dh\bar{a}tu\dot{h}$ ' and the arguments advanced to meet them
remain the same for the pakṣa ' $Kriy\bar{a}vacan\bar{o}$   $dh\bar{a}tu\dot{h}$ ' also.

Note:— $K\bar{a}iyata$  says that, in that paksa,  $prothama-bh\bar{a}va-grahanam$  should be changed to  $prathama-kriy\bar{a}$ -grahanam.

तलेद्मपरिहृतम् - अस्तिभवतिविद्यतीनां धातुत्विमिति

In the  $kriy\bar{a}vacanapakṣa$ , the point that  $dh\bar{a}tutva$  should be enjoined to as,  $bh\bar{u}$  and vid (4th conj.) remains unmet.

तस्य परिहारः Meeting it thus:-

कां पुनः क्रियां अवान् मत्वा आह, अस्तिभवतिविद्यतीनां घातुसंज्ञा न प्राप्नोति ं इति ? किं यत्तद्देवदत्तः कंसपात्र्यां पाणिनौदनं भुङ्क्ते इति ?

Which is taken to be  $kriy\bar{a}$  by you when you make the statement that as,  $bh\bar{u}$  and vid cannot take  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ ? What is the  $kriy\bar{a}$  when it is said that  $D\bar{e}vadatta$  eats the food in the bell-metal-plate with his hand?

न ब्रूमः कारकाणि किया इति We do not say that the kārakas are kriyā.

किं तर्हि ? What then ?

कारकाणां प्रवृत्तिविशेषः क्रिया । अन्यथा च कारकाणि शुष्कौदने प्रवर्तन्ते, अन्यथा च मांसौदने

The special act which enables the  $k\bar{a}rakas$  to function is the  $kriy\bar{a}$ . The method of functioning of the  $k\bar{a}rakas$  when pure rice is eaten is different from that when rice mixed with meat is eaten.

Note:—Food is  $karma-k\bar{a}raka$ , bell-metal-plate is adhi-karaṇa-k\bar{a}raka and hand is  $karaṇa-k\bar{a}raka$  to the  $kriy\bar{a}$  of eating.

यद्येवं सिद्धा अस्तिभवतिविद्यतीनां धातुसंज्ञा । अन्यथा हि कारकाणि अस्तौ प्रवर्तन्ते, अन्यथा हि म्रियतौ ।

If so, it is decided that as,  $bh\bar{u}$  and vid get  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . The  $k\bar{a}rakas$  with reference to as function in a different way from that in which those with reference to mr function.

षड् भावविकाराः इति ह स्माह भगवान् वार्ष्यायणिः - जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति इति ।

The revered  $V\bar{a}rsy\bar{a}yani$  said that six are the changes in the state of existence:— $j\bar{a}yat\bar{e}$  (is born), asti (continues to exist),

viparinamatē (transforms), vardhatē (grows), apakṣīyatē (decays) and vinasyati (dies).

सर्वथा स्थित इत्यत्न धातुसंज्ञा न प्राप्नोति ; बाह्यो ह्येतेभ्यः तिष्ठतिः । Anyhow from the fact that asli is one of the bhāvavikāras, sthā cannot receive dhātusamjñā, since asti is different from other bhāvavikāras.

एवं तर्हि कियायाः किया निवर्तिका भवति, द्रव्यं द्रव्यस्य निवर्तकम् । एवं हि कश्चित् कञ्चित् प्रच्छिति किमवस्था देवदत्तस्य व्याधिः इति ? स आह वर्द्धते इति ; अपर आह अपक्षीयते इति ; अपर आह स्थित इति । स्थित इत्युक्ते वर्धतेश्च अपक्षीयतेश्च निवृत्तिर्भवति ।

If so, one kriyā differentiates itself from another kriyā and one dravya differentiates itself from another dravya. One puts this question to another, 'How is Dēvadatta's illness?' One says, 'Varddhatē (it grows)'; another says 'Apakṣīyatē (it declines)'; another says 'Sthitaḥ (it stands in the same state).' The word sthitaḥ removes from our mind the idea conveyed by the words varddhatē and apakṣīyatē.

अथवा नान्तरेण कियां मृतभविष्यद्वर्तमानाः कालाः व्यज्यन्ते । अस्त्यादिभि-रिष मृतभविष्यद्वर्तमानाः कालाः व्यज्यन्ते ।

Or the tenses – past, future and present – are not suggested except through  $kriy\bar{a}$ . They – the past tense, the future tense and the present tense – are suggested by the  $kriy\bar{a}s$  as etc.

अथ वा नान्यत् पृष्टे न अन्यद् आरूयेयम् । तेन न भविष्यति - किं करोति ? अस्ति इति

Or it is not proper to give an answer which is not suited to the question. Hence asti cannot be the suitable answer to the question kim karōti.

NOTE:—From this it is clear that, if  $dh\bar{a}tu$  is defined as  $kriy\bar{a}vacuna$ , it is difficult to get the  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  to as,  $bh\bar{u}$  etc. If, on the other hand, it is defined as  $bh\bar{a}vavacana$ , there is the need to read the adjunct prathama to  $bh\bar{a}va$ .

अथ यद्येव किंयावचनो धातुः इत्येष पक्षः, अथापि भाववचनो धातुः इति

Let dhātu be defined as bhāvavacana in addition to its being defined as kriyāvacana.

ाकें गतमेतद् इयता सूत्रेण आहोस्विद् अन्यतरासिन् पक्षे भूयः सूत्रं कर्तव्यम्? Are both secured from this sūtra or another sūtra has to be read to secure that which is not secured by the one or the other?

गतिमत्याह 'They are secured', says he.

कथम्? How?

अयमादिशब्दोऽस्त्येव व्यवस्थायां वर्तते, तद्यथा देवदत्तादीन् समुपविष्टान् आह देवदत्तादय आनीयन्ताम् इति । ते उत्थाप्य आनीयन्ते ।

This – the word  $\bar{a}di$  – suggests the relative position. It is seen from this:—One says, "Fetch  $D\bar{e}vadatt\bar{a}dis$ " when  $D\bar{e}vadatta$  and others are sitting in a row. They are made to rise and are fetched.

अस्ति प्रकारे वर्तते, तद्यथा देवदत्तादय आख्या अभिरूपा दर्शनीयाः पक्षवन्तः। देवदत्तप्रकारा इति गम्यते ।

It is used to denote species. It is seen from this:— $D\bar{e}va-datt\bar{a}dis$  are rich, beautiful, of fine complexion and have friends. From the word  $D\bar{e}vadatt\bar{a}dis$ , the species of  $D\bar{e}vadatta$  is understood.

प्रत्येकं चादिशब्दः परिसमाप्यते भ्वादय इति च वादय इति च । तद्यदा तावत् कियावचनो धातुः इत्येष पक्षः तदा भू इत्यत्र य आदिशब्दः स व्यवस्थायां वर्तते, वा इत्यत्र यः आदिशब्दः स प्रकारे, भू इत्येवमादयो वा इत्येवंप्रकारा इति । यदा तु भाववचनो धातुः इत्येष पक्षः तदा वा इत्यत्र य आदिशब्दः स व्यवस्थायां, भू इत्यत्र य आदिशब्दः स प्रकारे, वा इत्येवमादयो भू इत्येवंप्रकारा इति ।

The word  $\bar{a}di$  (in the  $s\bar{u}tra$ ) is taken individually with both—  $bh\bar{u}$  and  $v\bar{a}$  – so that we may expand  $bh\bar{u}v\bar{a}dayah$  into  $bhv\bar{a}dayah$  and  $v\bar{a}dayah$ . When we take the definition to be  $kriy\bar{a}vacan\bar{o}$   $dh\bar{a}tuh$ , the word  $\bar{a}di$  which goes with  $bh\bar{u}$  denotes the relative position and the word  $\bar{a}di$  which goes with  $v\bar{a}$  denotes species, so that  $bh\bar{u}v\bar{a}dayah$  means  $bh\bar{u}$   $ity\bar{e}vam\bar{a}dayah$   $v\bar{a}$   $ity\bar{e}vamprak\bar{a}n\bar{a}h$  (those which commence with  $bh\bar{u}$  and those which belong

to the same class as  $v\bar{a}$ ) When we take the definition to be  $bh\bar{a}vavacan\bar{o}$   $dh\bar{o}tuh$ , the word  $\bar{a}di$  which goes with  $v\bar{a}$  denotes the relative position and the word  $\bar{a}di$  which goes with  $bh\bar{u}$  denotes species, so that  $bh\bar{u}v\bar{a}dayah$  means  $v\bar{a}$  ityēvamādayah  $bh\bar{u}$  ityēvamprakārāh (those which commence with  $v\bar{a}$  and those belonging to the class of  $bh\bar{u}$ ).

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  says that, with reference to the latter pakṣa the sātra Adiprabhrtibhyaḥ śapaḥ (2, 4, 72) should be read as  $V\bar{a}prabhrtibhyaḥ$  śapaḥ.

यदि तर्हि लक्षणं क्रियते नेदानीं पाढः कर्तव्यः

If, then, the definition is thus enunciated, there is no need to read the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$ .

कर्तव्यक्ष It has to be read.

किं प्रयोजनम् श Why?

# भुवादिपाठः प्रातिपदिकाणवयत्यादिनिवृत्त्यर्थः

The  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$  is intended to prevent  $pr\bar{a}tipadika$  and the class of  $\bar{a}navayati$  from taking  $dh\bar{a}tusamj\tilde{n}\bar{a}$ .

भ्वादिपाठः कर्तव्यः Dhātupāṭha has to be read.

किं प्रयोजनम्? Why?

प्रातिपदिकाणवयत्यादिनिवृत्त्यर्थः - प्रातिपदिकनिवृत्त्यर्थे आणवयत्यादिनिवृत्त्यर्थश्च For preventing prātipadika and the class of āṇavayati from taking dhātusamjñā—For preventing the prātipadika (of the forms bhōktum, bhuktvā etc.) from taking the samjñā and for preventing the prākṛtic form of roots like āṇavayati (the prākṛtic form of ājñāpayati) from taking the samjñā.

Note:— $N\bar{a}g\bar{o}jibhatta$  says that no purpose is served by reading the word  $pr\bar{a}tipadika$  in the above  $v\bar{a}rttika$ .

के पुनराणवयत्याद्यः What are āṇavayatyādis?

आणवयति, वहति, वड्ढयति इति

They are anavayati, vattati and vaddhayati.

#### खरानुबन्धज्ञापनाय च

For the sake of suggesting the svara and the anubandha too.

स्वरानुबन्धज्ञापनाय च पाठः कर्तन्यः, स्वरान् अनुबन्धांश्च ज्ञास्यामि इति । Dhātupāṭha has to be read also for the sake of svara and anubandha, so that I may know the svaras and anubandhas (with which roots are read).

न ह्यन्तरेण पाठं स्वरा अनुबन्धा वा शक्या विज्ञातुम्
For it is not possible to know the svaras and the anubandhas with which roots are read without Dhātupāṭha.

ये त्वेते न्याय्यविकरणा उदात्ता अननुबन्धकाः पठ्यन्ते, एतेषां पाठः शक्योऽ-कर्तुम्

Those which take the usual conjugational signs, which are  $ud\bar{a}tta$  and which are read without anubandhas may not be read in the  $Dh\bar{a}tup\bar{a}tha$ .

एतेषामप्यवश्यमाणवयत्यादिनिवृत्त्यर्थः पाठः कर्तव्यः

They too have to be read so that the class of  $\bar{a}navayati$  may not take the  $sa\dot{m}j\tilde{n}a$ .

न कर्तञ्यः No, it need not be done.

## शिष्टप्रयोगादाणवयत्यादीनां निवृत्तिः

Nivrtti of the class of anavayati through śistaprayoga.

शिष्टप्रयोगाद् आणवयत्यादीनां निवृत्तिर्भविष्यति

The  $dh\bar{a}tusa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  is avoided from the class of  $\bar{a}navayati$  through  $\dot{s}istapray\bar{o}ga$ .

स चावश्यं शिष्टपयोग उपास्यो येऽपि पठ्यन्ते तेषामपि विपर्यासनिवृत्त्यर्थः । छोके हि कृष्यर्थे किसिं प्रयुक्तते दृश्यर्थे च दिसिम्

This śiṣṭaprayōga must, necessarily, be resorted to, so that even those that are read in the *Dhātupāṭha* may not be read in a different way. In the world kis is used in the sense of to plough and dis in the sense of to see.

## उपदेशेऽजनुनासिक इत् (1, 3, 2)

There are two topics dealt with here:—(1) The prayojana of the word  $upad\bar{e}\dot{s}\bar{e}$  in the  $s\bar{u}tra$  and the consequent discussion on the difference between  $upad\bar{e}\dot{s}a$  and  $udd\bar{e}\dot{s}a$  in their connotation (2) The meaning of the word  $upad\bar{e}\dot{s}a$  and its derivation.

उपदेश इति किमर्थम् ?

What for is the word upadēśē read (in the sūtra)?

अभ्र आँ 1 अपः । उद्देशे योऽनुनासिकस्तस्य मा भूदिति

So that the  $s\bar{u}tra$  may not operate where the  $anun\bar{a}sika$  is not in  $upad\bar{e}sa$  but is in  $udd\bar{e}sa$ , as in  $\bar{a}$  in the  $V\bar{e}dic$  statement  $Abhra\ \bar{a}\ apah$ .

कः पुनरुद्देशोपदेशयोर्विशेषः ?

What is the difference between uddēśa and upadēśa?

प्रत्यक्षमाख्यानमुपदेशः ; गुणैः प्रापणमुद्देशः

 $Upad\bar{e}\acute{s}a$  means the direct indication of that which can be perceived by senses and  $udd\bar{e}\acute{s}a$  means the indirect reference to that through its qualities.

प्रतिश्वां तावदाख्यानमुपदेशः - तद्यथा, अगोज्ञाय कश्चिद् गां सक्थिन कर्णे वा गृहीत्वोपदिशति 'अयं गौः' इति । स प्रत्यक्षमाख्यातमाह 'उपदिष्टो मे गौः' इति । Firstly upadēśa is direct indication. It may be illustrated thus: One taking hold of the thigh or the ear of a cow tells another who has no knowledge of cow, 'This is the cow.' He who has heard it said so as to appeal to his sense of sight replies, 'Gō is upadiṣṭa to me.'

गुणैः प्रापणमुद्देशः - तद्यथा, कश्चित् कञ्चिद् आह 'देवदत्तं मे भवान् उद्दिशतु' इति । स इहस्थः पाटलिपुत्रस्थं देवदत्तमुद्दिशति 'अङ्गदी कुण्डली किरीटी व्यूढोरस्को वृत्तबाहुलीहिताक्षः तुङ्गनासो विचित्राभरण ईदशो देवदत्तः इति । स गुणैः प्राप्यमाणमाह 'उद्दिष्टो मे देवदत्तः ' इति ।

Uddēśa is indirect reference through qualities. This may be illustrated thus:—One tells another, "Tell me about Dēvadatta." He, being here, tells about Dēvadatta who is at Pāṭaliputra thus:—He wears armlets, ear-rings and crown; he has a wide chest, muscular arms, fiery eyes and prominent nose; and he wears diverse ornaments. This is the description of Dēvadatta. He who is instructed thus with such a description says, "Uddiṣṭō mē Dēvadattaḥ."

1.  $\tilde{A}\dot{n}$  has changed to  $\tilde{a}$  by the  $s\tilde{u}tra$   $\tilde{A}\dot{n}\delta$ Sanunāsikas chandasi (6, 1, 126).

# इत्संज्ञायां सर्वप्रसङ्गोऽविशेषात्

Chance for all with reference to it-samj $\tilde{n}a$ , on account of no difference.

इत्संज्ञायां सर्वपसङ्गः - सर्वस्यानुनासिकस्येत्संज्ञा प्राप्तोति । अस्यापि प्राप्तोति, अम्र आँ अपः

It-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}y\bar{a}m$  sarva-prasa $\dot{n}ga\dot{h}:$ —It-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  will chance to take hold of all anun $\bar{a}sikas$ . It will reach this too—( $\tilde{a}$  in) abhra  $\tilde{a}$  apa $\dot{h}$ .

किं कारणम् ? Why?

अविशेषात् On account of no difference.

न हि कश्चिद् विशेष उपादीयते - एवंजातीयकस्यानुनासिकस्येत्संज्ञा भवति इति । अनुपादीयमाने विशेषे सर्वप्रसङ्गः

For no viśēṣa that the it-sumjñā reaches a particular anunāsika is stated here. There is chance for all to get it, since no viśēṣa is stated here.

किमुच्यते 'अनुपादीयमाने विशेषे' इति शक्यं न नाम उपादीयते यदोपदेश इत्युच्यते ? लक्षणेन ह्युपदेशः

Why is it said 'when there is  $anup\bar{a}d\bar{a}na$  of  $viś\bar{e}$ , 'How cannot  $up\bar{a}d\bar{a}na$  be wherever there is mention of the word  $upad\bar{e}$  'sa?' There is  $upad\bar{e}$  even through lak, upad (the distinguishing features).

सङ्कीर्णावुद्देशोपदेशौ । पत्यक्षमास्त्यानमुद्देशो गुणैश्च प्रापणमुपदेशः

Uddēśa and upadēśa are intertwined in their connotation. Pratyakṣam ākhyānam may be called uddēśa and guṇāiḥ prāpaṇam, upadēśa.

प्रत्यक्षं तावदाच्यानमुद्देशः, तद्यथा - कश्चित् कश्चित् आह 'अनुवाकं में भवान् उद्दिशतु' इति । स तसे आचष्टे 'इषेत्वकम् अधीष्व, शन्नोदेवीयकमधीष्व' इति । स प्रत्यक्षम् आस्यातमाह 'उद्दिष्टो मेऽनुवाकः, तमध्येष्ये' इति

Firstly uddēśa too may be defined as the direct indication of that which can be perceived by the senses. It may be illustrated thus:—One says to another, "Kindly make the uddēśa of an

anuvāka to me" He tells him, "Read the anuvāka commencing with Iṣē tvā and read the anuvāka commencing with Śannōdēvīḥ. He having been informed thus says, "Uddiṣṭō mē anuvākaḥ, tam adhyēṣyē (Direct indication of the anuvāka has been made and I shall read it.)"

Note:—Iṣē  $tv\bar{a}$  is the commencement of the  $Yajurv\bar{e}da$   $Samhit\bar{a}$  and  $Sann\bar{o}d\bar{e}v\bar{i}h$  is found in the  $Atharvav\bar{e}da$ . At the commencement of the first  $\bar{a}hnika$ , the mention of  $sann\bar{o}d\bar{e}v\bar{i}h$  is made first and that of  $is\bar{e}$   $tv\bar{a}$  is made after it. The order is here reversed.

गुणैश्च प्रापणमुपदेशः, तद्यथा कश्चित् कञ्चिद् आह — ग्रामान्तरं गमिष्यामि, पन्थानं मे भवान् उपदिशतु इति । स तस्मै आचष्ट — "अमुष्मिन्नवकाशे हस्तदक्षिणो प्रहीतन्यः, अमुष्मिन् हस्तवामः" इति । स गुणैः प्राप्यमाणमाह — "उपदिष्टो मे पन्थाः" इति । एवमेतौ सङ्कीर्णावुदेशोपदेशौ ।

Upadēśa may be taken to be the indirect reference through qualities. It may be illustrated thus:—One says to another, "I shall go to the next village. Kindly make the upadēśa of the way to me." He replies to him, "Turn right in this place and turn left here." He tells him who suggested the way through guṇas, "The way is upadiṣṭa to me." Hence the connotation of uddēśa and upadēśa are intertwined.

एवं तर्हि इत्कार्याभावाद् अत्रेत्संज्ञा न भविष्यति । ननु च लोप एवेत्कार्य स्थात् If so, since there is no  $itk\bar{a}rya$  here,  $itsainj\tilde{n}a$  may not set in. Oh, elision is the it- $k\bar{a}rya$ !

अकार्य छोप: Elision is not the desired kārya.

इह हि शब्दस्य हूचर्थ उपदेशः। कार्यार्थो वा भवत्युपदेशः श्रवणार्थो वा। कार्यं चेह नास्ति। कार्ये चासति यदि श्रवणमपि न स्यादुपदेशोऽनर्थकः स्यात्। The upadēśa of śabda here has two-fold purpose. It may be either for the sake of kārya or for the sake of śravaṇa. There is no kārya here. Its upadēśa will serve no purpose, if it is not intended also for śravaṇa, it having no kārya.

इदमस्तीत्कार्यम् - इह अभ्र ऑं अटितः । अनन्तरलक्षणायां सत्यामित्संज्ञायाम् आदितश्च इति इट्प्रतिषेधः प्रसज्येत ।

There is this it- $k\bar{a}rya$  in  $Abhra\ \tilde{a}$  atitah. When  $itsamj\tilde{n}\bar{a}$  exists when the  $k\bar{a}rya$  to what follows comes, there will be it-pratisive  $s\bar{e}dha$  by the  $s\bar{u}tra\ \bar{A}ditas$  ca (7, 2, 16).

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:— $Yad\bar{a}$  anē $k\bar{a}nt\bar{a}$  anubandh $\bar{a}h$  tad $\bar{a}$  anantara it-sainj $n\bar{a}kah$  k $\bar{a}ryasya$  višē $n\bar{a}k\bar{a}b$  bhavati iti dh $\bar{a}t\bar{o}r$   $\bar{a}ditv\bar{a}t$  it-pratisēdha-prasaingah.

## सिद्धं तूपदेशनेऽनुनासिकवचनात्

The object is achieved by enjoining anunāsikatva to upadēśana.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

कथम्? How?

उपदेशने योऽनुनासिकः स इत्संज्ञो भवतीति वक्तत्र्यम्

It must be said that the anunāsika found in upadēśana takes the it-samj $\tilde{n}a$ .

किं पुनरुपदेशनम्? What is meant by upadēsana?

शास्त्रम् Śāstra.

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते

It is achieved; but the sūtra has to undergo modification.

II

यथान्यासमेवास्तु Let the sūtra be as it is.

ननु चोक्तम् इत्संज्ञायां सर्वपसङ्गोऽविशेषाद् इति

Oh, it has been said that there is chance for all with reference to  $itsa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  on account of the absence of  $vi\dot{s}\bar{s}sa$ .

नैष दोषः । उपदेश इति घञयं करणसाधनः

This difficulty does not arise. The a at the end of the word  $upad\bar{e}\acute{s}a$  is taken to be  $gha\tilde{n}$  in the sense of karanatva.

न सिध्यति । परत्वान् ल्युट् प्राप्नोति

No, it is not achieved. The root dis with upa will take lyut, since the  $s\bar{u}tra$   $Karan\bar{a}dhikaranay\bar{o}$ s ca (3, 3, 117) is later.

न ब्रूमोऽकर्तरि च कारके संजायाम् इति

We do not say that ghañ takes place by the sūtra Akartari ca  $k\bar{a}rak\bar{e}$  samj $n\bar{a}y\bar{a}m$  (3, 3, 19).

कि तर्हि ! By what sūtra then ?

हलश्च इति By the sūtra Halas ca (3, 3, 121.)

तत्रापि संजायाम् इति वर्तते, न चैषा संजा

There too there is anuvṛtti to the word  $samij\tilde{n}ay\bar{a}m$  from the  $s\bar{u}tra\ Pumsi\ samij\tilde{n}ay\bar{a}m\ ghah\ pr\bar{a}y\bar{e}na$  (3, 3, 117) and this is no  $samij\tilde{n}\bar{a}$ .

प्रायवचनादसंज्ञायामपि भविष्यति

The word  $pr\bar{a}ya$  enables it to appear even when there is no  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

प्रायवचनात् संज्ञायामेव स्याद्वा न वा, न ह्युपाधेरुपाधिर्भवति, विशेषणस्य वा विशेषणम्

On account of the word  $pr\bar{a}ya$ ,  $gha\tilde{n}$  may or may not appear in  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ - $\dot{s}abdas$ ; for it is not possible for an  $up\bar{a}dhi$  to have an  $up\bar{a}dhi$  for it or a  $vi\dot{s}\bar{e}sana$  to have a  $vi\dot{s}\bar{e}sana$  for it.

Note:—Viśēṣaṇa is one which is mentioned as upasarjana to the vidhēya. If another viśēṣaṇa is mentioned, it can be viśēṣaṇa only to the vidhēya and not to the viśēṣaṇa. If a word not mentioned in a sūtra is taken there by anuvrtti and is construed as the viśēṣaṇa to the vidhēya, it is called upādhi. If another word also is taken by anuvrtti, it can go along only with the viśēṣya and not with the upādhi. Hence both prāyēṇa and samjñāyām which are taken by anuvrtti can qualify only ghañ enjoined in the sūtra Halaś ca.

यदि नोपाधेरुपाधिर्भवति विशेषणस्य वा विशेषणम्, कल्याणादीनामिनङ्, कुल्टाया वा, इनङ्विभाषा न प्रामोति ।

If it is taken that an  $up\bar{a}dhi$  cannot have an  $up\bar{a}dhi$  nor a viśēṣaṇa a viśēṣaṇa, the  $vibh\bar{a}ṣ\bar{a}$  of  $ina\dot{n}$  in the  $s\bar{u}tra$   $Kulaṭ\bar{a}y\bar{a}$   $v\bar{a}$  (4, 1, 127) following the  $s\bar{u}tra$   $Kaly\bar{a}ny\bar{a}d\bar{\imath}n\bar{a}m$   $ina\dot{n}$  (4, 1, 126) has no chance to appear.

इनडेवाल प्रधानम् । विहितः प्रत्ययः प्रकृतश्चानुवर्तते

Inan alone is pradhāna here. The pratyaya enjoined by Strībhyō dhak (4, 1, 20) and inan which is prakṛta are taken by anuvṛtti.

इह तर्हि वाकिनादीनां कुक् च, पुतान्तादन्यतरस्याम् इति कुग्विभाषा न प्रामोति

If so, there is no chance for the  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  of kuk in the  $s\bar{u}tra$   $Putr\bar{a}d$   $anyatarasy\bar{a}m$  (4, 1, 159) following the  $s\bar{u}tra$   $V\bar{a}kin\bar{a}-d\bar{\imath}n\bar{a}m$  kuk ca (4, 1, 158).

अत्रापि कुगेव प्रधानम् । विहितः प्रत्ययः प्रकृतश्चानुवर्तते

Kuk alone is  $pradh\bar{a}na$  here too. The pratyaya  $phi\tilde{n}$  enjoined by the  $s\bar{u}tra$   $Ud\bar{i}c\bar{a}m$   $vrddh\bar{a}d$   $ag\bar{o}tr\bar{a}t$  (4, 1, 157) and kuk which is prakrta are taken by anuvrtti.

एवं न चेदमकृतं भवति नोपाधेरुपाधिर्विशेषणस्य वा विशेषणम् इति । न च कश्चिद् दोषो भवति

Hence the statement that  $up\bar{a}dhi$  has no  $up\bar{a}dhi$  for it, nor  $vi\acute{s}\bar{e}\dot{s}ana$  a  $vi\acute{s}\bar{e}\dot{s}ana$  for it is not without foundation and there is no harm, if one adheres to it.

एवं च कृत्वा घञ् न प्राप्नोति

In that case there is no chance for ghañ by the sūtra Halaś ca.

एवं तर्हि कृत्यल्युटो बहुलम् इत्येवमत्र घञ् भविष्यति

If so, it gets ghañ from the sūtra Kṛtya-lyuṭō bahulam (3, 3, 113).

Note: $-K\bar{a}iyaṭa$  reads here: $-Bahulagrahaṇ\bar{a}d$  asamj $n\bar{a}$ y $\bar{a}m$  api gha $\bar{n}$  bhavişyati ityarthah.

#### हलन्यम् (1, 3, 3)

There are three topics here:—(1) Chance for all hals to take it-samj $\tilde{n}a$ . (2) The denotation and derivation of hal. (3) Pratisēdha of ittva to the final hal of avyutpannaprātipadikas.

I

## हलन्त्ये सर्वप्रसङ्गः सर्वान्त्यत्वात्

On admitting the  $s\bar{u}tra$  Halantyam, there is chance for all hals to take it- $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  on account of all being followed by  $avas\bar{a}na$ .

हलन्त्ये सर्वप्रसङ्गः । सर्वस्य हलः इत्संज्ञा प्रामोति

If we admit the sūtra Halantyam, there is chance for all to take it-samjñā. It-samjñā may befall all hals.

किं कारणम्? Why?

सर्वान्त्यत्वात् On account of each Being followed by virāma.

Note:—Nāgōjibhaṭṭa tells us the meaning of antya thus:-Yad uccārya viramyatē tattvam antyatvam.

सर्वो हि हल् तं तमवधिं प्रत्यन्ता भवति

For all hals become antya with reference to the respective avadhi (in the form of  $vir\bar{a}ma$ ) of each.

Note:—Nāgēśa gives us two more readings:—(1) Sarvō hi hal antyō bhavati (2) Sarvō hi hal taṁ taṁ avadhīkṛtya antyō bhavati.

## सिद्धं तु व्यवसितान्त्यत्वात्

The object is achieved on account of reading vyavasitāntya in the sūtra.

सिद्धमेतत् This (the object) is accomplished.

कथम् ! How?

व्यवसितान्त्यत्वात्

On account of reading vyavasitantya in the sūtra.

व्यवसितान्त्यो हल् इत्संज्ञो भवतीति वक्तव्यम्

It must be read that the antya of limited groups of words take it-samj $\tilde{n}\tilde{a}$ .

के पुनर्व्यवासिताः ? What are vyavasitas ?

धातुशातिपदिकशत्ययनिपातागमादेशाः

They are  $dh\bar{a}tu$ ,  $pr\bar{a}tipadika$ , pratyaya,  $nip\bar{a}ta$ ,  $\bar{a}gama$  and  $\bar{a}d\bar{e}sa$ .

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते

The object is achieved; but the sūtra, then, is modified.

यथान्यासमेवास्तु Let the sūtra be as it is.

ननु चोक्तम् हलन्त्ये सर्वप्रसङ्गः सर्वान्त्यत्वादु इति

Oh it has been said "Halantyē sarvaprasangah sarvāntyatvāt."

नैष दोषः । आहायम् - हल्लन्यमित्सं इति । सर्वश्च हल् तं तमविषे प्रत्यन्तो भवति । तत्र प्रकर्षगतिर्विज्ञास्यते - साधीयो योऽन्त्यः इति

This difficulty does not arise. He says, "Halantyam it-samjñam bhavati." All hals become antya with reference to the respective avadhi of each. It may be understood that it refers to the prominent among them, so that antya is taken to mean  $s\bar{a}dh\bar{i}yah$  antyah.

कश्च साधीयः १ Which is sādhīyuḥ?

व्यवसितानां योऽन्त्यः That which is antya to vyavasitas.

अथ वा सापेक्षोऽयं निर्देशः क्रियते । न चान्यत् किञ्चिद् अपेक्ष्यमस्ति, तेन व्यवसितानेवापेक्षिण्यामहे ।

Or the mention of antya needs another to give a complete sense. Nothing is needed other than vyavasitas and hence we take them here.

II

## लकारस्यानुबन्धाज्ञापितत्वाद्धल्ग्रहणाप्रसिद्धिः

Difficulty in knowing the denotation of hal on account of l not being made known to be it.

लकारस्यानुबन्धत्वेन अज्ञापितत्वात् हल्महणस्याप्रसिद्धिः । हलन्त्यं इत्संजं भवतीत्युच्यते । लकारस्यैव तावदित्संज्ञा न प्रामोति ।

Since l has not been made known to be anubandha, it is not possible to determine what the word hal denotes. It is said that antyam hal is it; but firstly it-samjñā cannot reach lakāra.

Note:—Kāiyaṭa reads here:—Itarētarāṣryam manyatē.... Pratyāhārāśrayā it-samjñā, tadāśrayaś ca pratyāhāraḥ.

## सिद्धं तु लकारनिर्देशात्

The object is achieved by reading lakara.

सिद्धमेतत् This is achieved.

कथम् ! How?

लकारनिर्देशः कर्तव्यः Lakāra is to be read.

हलन्त्यमित्संज्ञं भवति, लकारश्च इति वक्तव्यम्

The final hal takes  $itsa\dot{m}j\tilde{n}a$  and it must be read that  $lak\bar{a}ra$  too takes it.

Note:—Kāiyaṭa feels that the word hal in the sūtra itself is a samāhāradvandva of hal and l, where l is dropped by Saṃyōgāntasya lōpaḥ. In that case kartavyaḥ found in the bhāṣya should be taken in the sense of vyākhyēyaḥ. But Nāgēśa differs from him. He says that kartavyaḥ should be taken in the usual sense, since l cannot be dropped by the sūtra Saṃyō-gāntasya lōpaḥ, since the following two vārttikas read under that sūtra:—(1) Saṃyōgāntalōpē yaṇaḥ pratiṣēdhaḥ (2) Na vā jhalō lōpāt stand against it.

एकशेषनिर्देशाद्वा Or by taking it as ēkasēṣa.

अथ वा एकशेषिनिर्देशोऽयम् – हल् च हल् च हल् च हल्, हलन्त्यम् इत्संज्ञं भवित इति Or this may be taken as an  $\bar{e}ka\hat{s}\bar{e}\bar{s}a$  thus:  $hal\ ca\ hal\ ca\ hal$ .  $Halantya\ gets\ it\text{-}sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

Note:  $-K\bar{a}iyata$  says that one hal mentioned above is sasthītatpuruṣa meaning hasya l and the other is  $praty\bar{a}h\bar{a}ra$ . Nāgēśa says that, in that case, the hal which is tatpuruṣa cannot have anything to do with the word antya, though it should go with both members of the dvandva compound and hence considers it as the  $s\bar{u}tra$  Hal. Further he says that  $\bar{e}kaś\bar{e}ṣa$  connotes tantratva by  $lakṣan\bar{a}$ .

अथ वा लकारस्यैवेदं गुणभूतस्य ग्रहणम् । तत्र ' उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इति इत्संज्ञा भविष्यति ।

Or this (lakara) stands for l which is used as an anubandha (as in gaml). It gets it-samijnā by the sūtra Upadēśēsj-anunāsika it.

Note:— $K\bar{a}iya$  ta says that unless ac- $praty\bar{a}h\bar{a}ra$  is formed by declaring c of  $Ai\bar{a}uc$  as it, l cannot take it- $samij\tilde{n}\bar{s}$  by the  $s\bar{u}tra$   $Upad\bar{e}\dot{s}\bar{e}sj$ - $anun\bar{a}sika$  it. Hence he feels that the mention of l ditah in the  $s\bar{u}tra$   $Pus\bar{a}di$ - $ldyut\bar{a}di$ -ditah  $parasm\bar{a}ipad\bar{e}su$  (3, 1, 55) may suggest that l may have it- $k\bar{a}rya$ .

अथ वा आचार्यप्रवृत्तिर्जापयित - भवित लकारस्य इत्संज्ञा इति, यद्यं णलं लितं करोति

Or the procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$   $P\bar{a}nini$  suggests that l gets it- $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ , since he reads nal (in the  $s\bar{u}tra$   $Parasm\bar{a}ipad\bar{a}n\bar{a}m$  nal....(3, 4, 82) with l as it.

Note:— $N\bar{a}g\bar{e}\hat{s}a$  feels that the arguments based on the  $j\tilde{n}\bar{a}paka$  of lditah and nal are flimsy and  $\bar{e}ka\hat{s}\bar{e}\hat{s}a$ -nird $\bar{e}\hat{s}\bar{a}d$   $v\bar{a}$  is the fitting answer.

## प्रातिपदिकप्रतिषे**घोऽकृत्त**द्धिते

(The need for) the pratiṣēdha of the prātipadika not ending in kṛtpratyaya or taddhitapratyaya.

अकृत्तद्भितान्तस्य प्रातिपदिकस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः - उद्धित् शकृत् इति । There is need to mention the pratisēdha with reference to the prātipadika which does not end in kṛtpratyaya or taddhita-pratyaya to secure the forms udašvit and śakṛt.

Note:—The need for this  $v\bar{a}rttika$  arises only when the avyutpannaprātipadikas are read as referred to at the end of the first  $\bar{a}hnika$ .

अकृत्तद्धितान्तस्येति किमर्थम् ?

Why should akrt-taddhitantasya be read?

कुम्भकारः नगरकारः औपगवः कापटव इति

(So that it may not operate in) kumbhakāraḥ, nagarakāraḥ, āupagavaḥ and kāpaṭavaḥ.

## इदर्थाभावात् सिद्धम्

It is accomplished on account of the absence of it-kārya.

इत्कार्याभावाद् अल इत्संज्ञा न भविष्यति

The it-samj $\tilde{n}a$  will not set in here, since there is no it-karya.

इदमस्ति इत्कार्यम् - तित्स्वरितम् इति स्वरितत्वं यथा स्यात्

There is this it- $k\bar{a}rya$ , that svaritatva may appear by the  $s\bar{u}tra$  Tit svaritam (6, 1, 185).

नैतद्स्ति । प्रत्ययग्रहणं तत्र चोद्यिष्यति

No, it cannot be. It is the pratyaya ending in t that brings out the  $k\bar{a}rya$  there.

इह तर्हि राजा तक्षा ञ्नितीत्याद्युदात्तत्वं यथा स्यात् If so, ādyudātiatva may appear by the sūtra Nīnityādir nityam, (6, 1, 197) in rājā and takṣā.

क्नितीत्युच्यते, तत्र व्यपवर्गाभावान्त भविष्यति

 $\bar{N}niti$  is read in the  $s\bar{u}tra$  and since it is not separated from the  $pr\bar{a}tipadika$ , the  $s\bar{u}tra$  does not operate there.

इदं तर्हि स्वर्, उपोत्तमं रिति इत्येष स्वरो यथा स्यात् If so, the last but one in svar takes udātta by the sūtra Upōttamam riti (6, 1, 217).

स्वरितकरणसामध्यन्ति भविष्यति न्यङ्स्वरौ स्वरितौ इति It does not appear on account of the force of the injunction of svaritatva by Nyańsvarāu svaritāu (Phiț 74).

इह तर्हि अन्तर् If so, it will operate in antar?

उत्तमशब्दिस्त्रिभृतिषु वर्तते । न चात्र त्रिप्रभृतयः सन्ति

The word uttama has its application in words having three syllables and more and three syllables and more are not found here.

इह तर्हि सनुतर् उपोत्तमं रिति इत्येष स्वरो यथा स्यात् If so, the last but one in sanutar may be udātta by the sūtra Upōttamam riti.

अन्तोदात्तिपातनं करिष्यते । स निपातनस्वरो रित्स्वरस्य बाधको भविष्यति It is enjoined that their final syllable is udātta and it will set at naught the rit-svara.

एतचात्र युक्तम् – यदित्कार्याभावाद् इत्संज्ञा न स्यात् । यत्नेत्कार्ये भविष्यति तत्रेत्संज्ञा, तद्यथा आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्तिकुण्डिनच् इति

This is but proper here:-If there is no purpose by taking it-sa $\dot{m}j\dot{n}\bar{a}$ , let there be no it-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ . If there is purpose, as in the  $s\bar{u}tra$   $Agastyak\bar{a}undinyay\bar{o}r$  agastikundinac, let there be  $itsa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

## न विभक्तौ तुस्माः (1, 3, 4)

## विभक्तौ तवर्गप्रतिषेधोऽतद्विते

Prohibition of tavarga with reference to vibhakti which is non-taddhita.

विभक्तौ तवर्गप्रतिषेधोऽतद्धित इति वक्तव्यम् । इह मा भूत् किमोत् क प्रेप्सन् द्वियसे, कार्द्धमासा इति

There is need for tavarga-pratiṣēdha to be mentioned only with reference to vibhakti that is non-taddhita, so that it may not operate here in the  $s\bar{u}tra$   $Kim\bar{o}st$  (5, 3, 12), from which kva in kva  $pr\bar{e}psan$   $d\bar{v}vyas\bar{e}$  and  $kv\bar{a}rddham\bar{a}s\bar{a}h$  is evolved.

स तर्हि वक्तव्यः It should, then, be mentioned.

न वक्तव्यः । आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति न विभक्तौ तद्धिते प्रतिषेधो भवतीति, यद्यम् 'इदमस्थमुः ' इति मकारस्येत्संज्ञापरित्राणार्थम् उकारमनुबन्धं करोति ।

No, it need not be mentioned. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$   $P\bar{a}nini$  suggests that the pratised ha does not apply to taddhitavibhakti, since he reads the anubandhau in thamu in the  $s\bar{u}tra$   $Idamas\ thamuh$  (5, 3, 24) to prevent m from getting the it-sa $mij\tilde{n}a$ .

यद्येतज् ज्ञाप्यते इदानीम् इत्यत्र प्रामोति

If it is suggested that the  $pratis\bar{e}dha$  does not apply to taddhita-vibhakti, it-sam $jn\bar{a}$  has a chance to appear (in  $d\bar{a}n\bar{i}m$ ) of  $id\bar{a}n\bar{i}m$ .

इत्कार्याभावादु अत्र इत्संज्ञा न भविष्यति

It-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  does not set in, since it serves no purpose here.

इदमस्तीत्कार्यं मिदचोन्त्यात्परः इत्यचामन्त्यात् परो यथा स्यात्

There is this  $itk\bar{a}rya$  that the mit appears after the final vowel in the word by the  $s\bar{u}tra\ Mid\ ac\bar{o}nty\bar{a}t\ parah\ (1,1,47)$ .

इश्भावे कृते नास्ति विशेषः, मिदचोन्त्यात्पर इति वा, परत्वे प्रत्ययः परः इति वा

1. Kva is formed from kim by the operation of the  $ś\bar{u}tras$   $Kim\bar{o}t$  (5, 3, 12) and  $Kv\bar{a}ti$  (7, 2, 105).

After  $ida\dot{m}$  is changed to i (by the  $s\bar{u}tra$  Idama i\$ 5, 3, 3) before  $d\bar{a}n\bar{i}m$  is added to it, there is no difference in effect whether Mid  $aconty\bar{a}t$  parah operates or Pratyayah para\$ ca.

स एव तावदिश्मावो न प्रामोति

There is absolutely no chance for  $i\dot{s}$ - $bh\bar{a}va$  itself to appear there.

किं कारणम् ? Why?

प्राग्दिशः प्रत्ययेषु इत्युच्यते

It is said that (in the  $s\bar{u}tra$   $Pr\bar{a}g$   $dis\bar{o}$  vibhaktih 5, 3, 1) the pratyayas preceding dis are taken as vibhakti.

कः पुनरहिति इस्भावं प्राग्दिशः प्रत्ययेषु वक्तुम् ?

Who is competent to say that  $i\dot{s}bh\bar{a}va$  sets in only before the pratyayas preceding the word dik?

कि तर्हि ! What then?

प्राग्दिशोऽर्थेष्विश्भावः किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः प्रत्ययोत्पत्तिः

Is-bhāva sets in before the meanings of the pratyayas preceding the word dik and the pratyaya is after kim, sarvanāman and bahu which are not  $dvy\bar{a}di$ .

एवं तर्हि तदोप्ययं वक्तव्यः । तदश्च मिदचोन्त्यात्परत्वेन न सिध्यति If so, the same has to be said with reference to tad. Otherwise the desired form from tad cannot be achieved by the operation of Mid-acontyāt-paraḥ.

ननु चालाप्यत्वे कृते नास्ति विशेषः, मिदचोन्त्यात्परः इति वा परत्वे प्रत्ययः पर इति वा ।

Oh! there is no difference even here whe ler Midacontyāt parah operates or Pratyayah paraś ca, if tad has been changed to ta (by the sūtra Tyadādīnām aḥ (7, 2, 102).

तिद्ध अत्वं न प्रामोति If so, atva does not set in.

किं कारणम् ? Why?

विभक्तावित्युच्यते

It is said that it sets in only when vibhakti follows.

एवं तर्हि यकारान्तो दानीं करिष्यते

If so,  $d\bar{a}n\bar{\imath}m$  is taken to end in y.

किं यकारों न श्रूयते ? Why is not yakāra heard?

ल्वप्तिर्विष्टो यकारः

Yakāra has been elided, though it was originally pronounced.

चुदू (1, 3, 7)

## चुञ्चप्चणपोश्वकारप्रतिषेधः

Need for prohibiting ittva to c of cuñcup and canap 1.

चुञ्चप्चणपोश्चकारस्य प्रतिषेघो वक्तव्यः, केशचञ्चः केशचणः

There is need to prohibit ittva to the initial c of  $cu\tilde{n}cup$  and canap, so that the words  $k\tilde{e}\acute{s}aca\tilde{n}cuh$  and  $k\tilde{e}\acute{s}acanah$  may be formed.

इदर्थीभावात्सिद्धम् It is accomplished on account of idarthābhāva.

इत्कार्याभावाद् अत्रेत्संज्ञा न भविष्यति

It-samjñā does not set in, since no purpose is served from it.

इदमस्तीत्कार्यम् । "चितः" अन्त उदाचो भवतीति अन्तोदात्तवं यथा स्यात् । There is this it-kārya. It may have its final syllable udātta by the sūtra Citaḥ (6, 1, 163) which enjoins that the final syllable of a pratyaya which is cit is udātta.

पित्करणमिदानीं किमर्थ स्यात्?

What is, then, the use of reading p as it?

# पित्करणं किमर्थमिति चेत्पर्यायार्थम्

Reading p as it is to suggest that they are synonyms.

पित्करणं किमर्थमिति चेत्पर्यायार्थम्

If it is asked why p is read as it, it is to suggest that  $cu\tilde{n}cup$  and canap are synonymous.

एवं तर्हि यकारादी चुञ्चप्चणपौ

If so, cuñcup and canap have yakāra for their initial letter.

1. These two are taddhitapratyayas enjoined in the sūtra Tēna vittaś cuñcup-canapāu (5, 2, 26).

किं यकारों न श्रूयते ?

How is it that  $yak\bar{a}ra$  is not pronounced?

द्धप्तिनिर्देष्टो यकारः Yakāra is said to have been dropped.

Note:— $K\bar{a}iyața$  explains the word lupta-nirdișța in two ways:—1.  $P\bar{u}rvam$  nirdișțah paścāt luptah and 2.  $Lupt\bar{o}syam$  iți pratij $n\bar{a}tah$ .

इर उपसङ्ख्यानम् Supplementing ir to take it-tva.

इर उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - रुधिर् , अरुधत् अरौत्सीत्

There is need to supplement that ir takes it-sa $\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ , so that the forms arudhat and  $ar\bar{a}uts\bar{\imath}t$  may be formed from rudhir.

Note:—Since ir consists of a vowel and a consonant and since it-tva is enjoined either to a vowel or a consonant, there is need for this.

## अवयवग्रहणात्सिद्धम्

It is accomplished on account of the parts taking it.

रेफस्यात्र हरून्त्यम् इति भविष्यति, इकारस्य उपदेशेऽजनुनासिक इत् इति R takes it-sam $j\tilde{n}\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra$  Halantyam (1, 3, 3) and i by the  $s\bar{u}tra$   $Upad\bar{e}$ \$ $\bar{e}$ \$j  $anun\bar{a}$ sika it (1, 3, 2)

#### अवयवग्रहणादिति चेद् इदिद्विधिप्रसङ्गः

If it is conceded through avayavagrahana, there is chance for the vidhi enjoined to that which is idit to operate.

अवयवग्रहणादिति चेद् इदिद्विधिरिप प्रामोति । भेता, छेता इदितो नुम् धातोः इति नुम् प्रामोति

If it is said that the object is accomplished since the parts take it, there is chance for the rules pertaining to those which are *idit* to operate, so that num may enter into  $bh\bar{e}tt\bar{a}$  and  $ch\bar{e}tt\bar{a}$  by the  $s\bar{u}tra\ Idit\bar{o}\ num\ dh\bar{a}t\bar{o}h$  (7, 1, 58).

यदि पुनरयिनदिद्विधिः कुम्भीधान्यन्यायेन विज्ञायेत । तद्यथा कुम्भीधान्यः श्रोत्रिय इत्युच्यते - यस्य कुम्भ्यामेव धान्यं स कुम्भीधान्यः ; यस्य पुनः कुम्भ्यां चान्यत्र च धान्यं नासौ कुम्भीधान्यः ।

Suppose the vidhi pertaining to idit is taken under  $kumbh\bar{i}-dh\bar{a}nyany\bar{a}ya$ . It may be explained thus:—It is said this  $\hat{s}r\bar{o}triya$  (Brahman  $V\bar{e}dic$  scholar) is  $kumbh\bar{i}dh\bar{a}nya$ . He who has grain only in a jar goes by that name and not one who has grain both in a jar and elsewhere.

नायमिदिद्विधिः कुम्भीधान्यन्यायेन शक्यो विज्ञातुम् । इह हि दोषः स्याद् -दुनदि नन्दशुः इति

This idid-vidhi cannot be taken under the  $kumbh\bar{\imath}dh\bar{a}nya$ - $ny\bar{a}ya$ ; for, in that case, there will be difficulty in the formation of the word nandathuh from the root nad read as tunadi.

एवं तर्हि नैवं विज्ञायते - इकार इत् अस्य सोऽयम् इदित्; तस्य इदित इति If so, the word iditah is not taken as the genetive singular of idit having its derivation ikārah it yasya sah.

कथं तर्हि? How then?

इकार एवेत् इदित् इदिदन्तस्य इति

Iditah is taken to mean ididantasya where idit, being a tatpuruṣa compound, is derived thus:- $ik\bar{a}ra$   $\bar{e}va$  it.

अथ वा ऋकारस्येव इदमित्त्वभूतस्य ग्रहणम् । तस्य च उपदेशेऽजनुनासिक इत् इतीत्संज्ञा भविष्यति ।

Or this (ir in bhidir etc.) may be taken to be the modified form of  $\bar{r}$  which has taken i before it (by the sūtra  $\bar{R}$ ta id-dhātāh (7, 1, 100) and  $\bar{r}$  takes it-samjñā by the sūtra  $\bar{U}$ padēśē aj anunāsika it.

अथ वा आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित नैवंजातीयकानामिदिद्विधिर्भवति इति; यदय-मिरितः कांश्चिन्नुमनुषक्तान् पठित उवुन्दिर् निशामने, स्कन्दिर् गतिशोषणयोः ।

Or the procedure of  $Ac\bar{a}rya$   $P\bar{a}nini$  suggests that idid-vidhi does not operate in such cases as this, since he reads some roots having ir as it with num; as ubundir (to see) and skandir (to go, to dry).

अथ वा आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयित इर्शब्दस्येत्संज्ञा भवति इति, यदयम् इरितो वा इत्याह Or the procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya\ P\bar{a}nini$  suggests that ir may take it- $s_{\perp}\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ , since he himself reads the  $s\bar{u}tra\ Irit\bar{o}\ v\bar{a}$  (3, 1, 57.)

अथ वा अन्त इति वर्तते Or there is anuvrtti for the word antë.

Note:—There is the word antē in the sūtra Gōḥ pādāntē (7, 1, 57) and it is taken into the next sūtra  $Idit\bar{o}$  num  $dh\bar{a}t\bar{o}h$  (7, 1, 58), so that  $num\bar{a}gama$  comes only with reference to roots which have i as it only as their final member. Here i in ir is not the final member.

## तस्य लोपः (1, 3, 9)

Three topics are here dealt with:—(1) What is the need for the word tasya in the sūtra? (2) Is there any need to make upasankhyāna of some and pratiṣēdha of others? (3) Are anubandhas ēkānta or anēkānta?

I

तस्यमहणं किमर्थम् ? What for is the reading of tasya?

इत्संज्ञकः प्रतिनिर्दिश्यते

The antecent of the stem of tasya is it-samjñaka.

नैतद्सित प्रयोजनम् । प्रकृतम् इद् इति वर्तते

This is not the prayojana. The word it near at hand is taken here by anuvrtti.

क प्रकृतम् ? What is the sūtra where it is near at hand ? उपदेशेऽजनुनासिक इत् The sūtra Upadēśēsj anunāsika it. तद्वै प्रथमानिर्दिष्टं षष्ठीनिर्दिष्टेन चेहाथ:

It is mentioned there in the first case and we want the sixth case here.

अर्थाद्विभक्तिपरिणामो भविष्यति

The case may be changed to suit the need.

तद्यथा - उचानि देवदत्तस्य गृहाणि, आमन्त्रयस्व (एनम्) देवदत्तमिति गम्यते । देवदत्तस्य गावोऽश्वा हिरण्यं च, आढ्यो वैधेयः, देवदत्त इति गम्यते । पुरस्तात् पष्ठीनिर्दिष्टं सदर्थात् द्वितीयानिर्दिष्टं प्रथमानिर्दिष्टं च भवति । एविमहापि पुरस्तात् प्रथमानिर्दिष्टं सद् अर्थात् षष्ठीनिर्दिष्टं भविष्यति ।

This may be illustrated thus:—High are the houses of  $D\bar{e}va$ datta and call aloud;  $D\bar{e}vadattam$  is supplied there. There
are cows, horses and gold with  $D\bar{e}vadatta$  and the fool is rich;  $D\bar{e}vadatta$  is supplied there. That which is mentioned in the
sixth case before, is taken in the second and first cases so as
to suit the context. So also, that which is mentioned in the
first case before, may be changed to sixth case here.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - ये अनेकाल इत्संज्ञाः तेषां लोपः सर्वादेशो यथा स्यात्। This, then, is the  $pray\bar{o}jana$ , that  $l\bar{o}pa$  may be the  $sarv\bar{a}d\bar{e}sa$  of the it which consists of more than one letter.

अथ कियमाणेऽपि वै तस्यग्रहणे कथमिव लोपः सर्वादेशो लभ्यः ?

How is it taken that  $l\bar{o}pa$  may be the  $sarv\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  of the it which is  $an\bar{e}k\bar{a}l$ , even if the word tasya is read?

रूभ्य इत्याह 'It can be secured', says he.

कुतः ! How?

वचनप्रामाण्यात् - तस्यश्रहणसामध्यति

On the authority of the vacana—On the capacity of the mention of the word tasya.

#### II

## इतो लोपे णल्क्त्वानिष्ठास्पसङ्ख्यानमित्प्रतिषेधात्

Need to bring nal,  $ktv\bar{a}$  and  $nisth\bar{a}$  pratyayas within the operation of  $It\bar{o}$   $l\bar{o}pah$ , on account of it-pratised a with reference to them.

इतो लोपे णल् - क्ता - निष्ठासु उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् । णल् - अहं पपच; क्ता - देवित्वा सेवित्वा; निष्ठा - शयितः शयितवान्

There is need for the upasankhyāna of nal, ktvā and niṣṭhā within the range of Itō lōpaḥ, so that papaca (1st pers.), dēvitvā sēvitvā and śayitaḥ śayitvān may be secured.

किं पुनः कारणं न सिध्यति ? Why is it not achieved ? इत्प्रतिषेधात् On account of it-pratisēdha.

प्रतिषिध्यतेऽत्र इत्संज्ञा । णळुत्तमो णिद्धा भवति ; क्त्वा सेण्न किद्भवति ; निष्ठा सेण्न किद्भवतीति The it-samjñā is set at naught thus:—The sūtra Ņal uttamō vā (7,1,91) optionally sets at naught the nitva of nal in the first person; the sūtra  $P\bar{u}\dot{n}ah$  ktvā ca (1,2,22) optionally sets at naught the kitva of ktvā; and the sūtra Niṣṭhā śin-svidimidi-kṣvidi-dhṛṣaḥ (1,2,19) sets at naught the kitva of niṣṭhā.

## सिद्धं तु णलादीनां ग्रहणप्रतिषेधात्

It is achieved on account of the pratisedha of the  $k\bar{a}ryas$  of nal etc.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

कथम् ! How ?

णलादीनां प्रहणानि प्रतिपिध्यन्ते । णल्लत्तमो वा णिद्रहणेन गृह्यते, क्त्वा सेण्न किद्रहणेन गृह्यते । निष्ठा सेण्न किद्रहणेन गृह्यत इति ।

The  $k\bar{a}ryas$  of nal etc. are set at naught here: -Nal-uttam $\bar{o}$   $v\bar{a}$  nid-graha $n\bar{e}$  na  $grhyat\bar{e}$ ;  $Ktv\bar{a}$   $s\bar{e}n$ -na kid-graha $n\bar{e}$  na  $grhyat\bar{e}$ : Nisth $\bar{a}$   $s\bar{e}$ nna kidgraha $n\bar{e}$  na  $grhyat\bar{e}$ .

निर्दिष्टलोपाद्वा Or by the lopa to that which is expressed.

निर्दिष्टलोपाद्वा सिद्धमेतत् - अथ वा निर्दिष्टस्य अयं लोपः क्रियते, तसात् सिद्धमेतत्

This is achieved on account of the *lopa* to *nirdiṣṭa*:-Or this elision is to that which is pronounced and hence the object is achieved.

## तत्र तुस्मानां प्रतिषेधः

Need for the pratisēdha of tavarga, s and m there.

तत्र तुस्मानां प्रतिषेषो वक्तव्यः - तस्मात् तस्मिन् यस्मात् यस्मिन् वृक्षाः प्रक्षाः अचिनवम् असुनवम् अकरवम्

There is the need to prohibit the operation of this rule with reference to tu, s and m, as in  $tasm\bar{a}t$  tasmin,  $yasm\bar{a}t$  yasmin,  $vrks\bar{a}h$   $plaks\bar{a}h$ , acinavam, asunavam, akaravam.

## न वोचारणसामर्थ्यात्

No, it need not be, on account of the sāmarthya of uccāraņa.

न वा वक्तज्यः It need not be said.

किं कारणम् ? Why?

उचारणसामर्थ्यादत्र लोपो न भविष्यति

Elision will not take place here on account of the capacity of their  $ucc\bar{a}rana$ .

## अनुबन्धलोपे भावाभावयोर्विप्रतिषेधादप्रसिद्धिः

 $Apr\bar{a}m\bar{a}nya$  of the  $\pm \bar{a}stra$  on account of the conflict caused by some enjoining the elision of anubandha and some, the retention of the same.

अनुबन्धलोपे भावाभावयोर्विरोधादप्रसिद्धिः। न ज्ञायते केनाभिशायेण प्रसजित, केन निवृत्तिं करोति इति

There is  $apr\bar{a}m\bar{a}nya$  on account of the conflict caused by some  $s\bar{u}tras$  enjoining the elision of the anubandha and some enjoining its retention.

## सिद्धं त्वपवादन्यायेन

It is achieved by taking recourse to apavādanyāya.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

कथम् ? How?

अनवादन्यायेन On adopting the apavāda-nyāya.

किं पुनरिह तथा यथोत्सर्गापवादौ?

What is here which stands in the same relation as utsarga and  $apav\bar{a}da$ ?

## भावो हि कार्यार्थोऽनन्यार्थे लोपः

The presence of anubandha is to effect some  $k\bar{a}rya$  and its elision is intended that one other than the desired  $k\bar{a}rya$  may not set in.

काय करिष्यामि इत्यनुबन्ध आसज्यते, कार्यादन्यद् मा भूदिति लोपः

Anubandha is enjoined that I may do some  $k\bar{a}rya$  and  $l\bar{o}pa$  is enjoined that nothing other than the desired  $k\bar{a}rya$  may set in.

#### III

अथ यस्यानुबन्ध आसज्यते, किं स तस्यैकान्तो भवति आहोस्विदनेकान्तः? Does the anubandha which is attached to one become its part (avayava) or not?

एकान्तस्तत्रोपलब्धेः It is its part on account of its being seen there.

एकान्त इत्याह "It is its part", says he.

कुतः ? On what basis?

तत्रोपरुद्धः - तत्रस्थो ह्यसानुपरुभ्यते। तद्यथा वृक्षस्था शासा वृक्षेकान्तोपरुभ्यते। Since it is found there—For it is seen forming a part of it. The analogy is this:—The branches which are in the tree are considered to be its part.

## तत्रासरूपसर्वादेशदाप्प्रतिषेधे पृथक्त्वनिर्देशोऽनाकारान्तत्वात्

In  $\bar{e}k\bar{a}nta$ -pakṣa there will be difficulty in  $asar\bar{u}pa$ -vidhi and  $sarv\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$ -vidhi and there should be separate mention in  $d\bar{a}p$ -pratiṣ $\bar{e}dha$  on account of its not being  $\bar{a}k\bar{a}r\bar{a}nta$ .

Note:—The expression  $asar\bar{u}pa-sarv\bar{a}d\bar{e}sa$  should be taken as a separate word with the seventh case suffix being dropped.

तत्रासरूपविधौ दोषी भवति - कर्मण्यण्, आतोऽनुपसर्गे कः इति ; कविषये अणि प्राम्नोति

In the case of  $\bar{e}k\bar{a}nta$ -pakṣa difficulty arises in the vidhis where different anubandhas are found. For instance, there is the  $s\bar{a}m\bar{a}nya$ - $s\bar{u}tra$  Karmanyan and there is the viśēṣa- $s\bar{u}tra$   $\bar{A}t\bar{o}$ -nupasargē kaḥ; when the latter operates, the it n also may appear.

सर्वादेशे च दोषो भवति - दिव औत् - औत् सर्वादेशः प्राप्नोति । (In the case of  $\bar{e}k\bar{a}nta-pakṣa$ ) there will be difficulty in  $sarv\bar{a}-d\bar{e}sa$  also. For instance from the  $s\bar{u}tra$  Diva  $\bar{a}ut$ ,  $\bar{a}ut$  may be taken as  $sarv\bar{a}d\bar{e}sa$ .

दाप्प्रतिषेधे पृथक्त्वनिर्देशः कर्तव्यः - अदाब्दैपौ इति वक्तव्यम् In the sūtra  $D\bar{a}dh\bar{a}ghvad\bar{a}p$  where there is  $pratis\bar{e}dha$  for  $d\bar{a}p$ , there should be separate mention (of  $d\bar{a}ip$ ). It should be stated  $Ad\bar{a}bd\bar{a}ip\bar{a}u$ .

किं पुनः कारणं न सिध्यति ? Why is it not secured?

अनाकारान्तत्वात् Since it does not end in ākāra.

ननु चात्त्वे कृते भविष्यति

Oh, it ends in  $\bar{a}$  after the operation of the rule  $\bar{A}d\bar{e}ca\ upad\bar{e}\dot{s}\bar{e}s$ - $\dot{s}iti\ (6, 1, 45)$ .

तिद्ध आत्वं न प्रामोति There is no chance for the āttva.

किं कारणम् श Why?

अनेजन्तत्वात्

Since it  $(d\bar{a}ip)$  does not end in  $\bar{e}c$ , (but it ends in p).

अस्तु तर्हि अनेकान्तः Let it not be its part then.

## अनेकान्ते वृत्तिविशेषः

If it is anēkānta, non-accomplishment of samāsa.

यद्यनेकान्तो वृत्तिविशेषो न सिद्ध्यति । किति णितीति कार्याणि न सिध्यन्ति । किं हि स तस्येद्भवति येनेत्कृतं स्यात्?

If it does not form its part,  $sam\bar{a}sa$  is not accomplished. The  $k\bar{a}ryas$  when k is it or n is it do not happen. To whom will the it belong, so that its  $k\bar{a}rya$  may go to it?

एवं तहीनन्तरः If so, let it be considered to follow it.

# अनन्तर इति चेत् पूर्वोत्तरयोरित्कृतप्रसङ्गः

If it is considered to be anantara, the it- $k\bar{a}rya$  may be to both that precedes and that follows.

अनन्तर इति चेत पूर्वोत्तरयोरित्कृतं प्रामोति - वुञ्छण्

If it is anantara, the it- $k\bar{a}rya$  may be to both that precedes and that follows, as in  $vu\tilde{n}chan$ .

## सिद्धं तु व्यवसितपाठात्

It is accomplished by reading them without samhitā.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

फथम् ? How?

व्यवसितपाठः कर्तव्यः वुञ् छण्

They must be read not together, as in vun chan...(4, 2, 80).

स चावश्यं व्यवसितपाठः कर्तव्यः

The vyavasitapāṭha must needs be done.

## इतरथा ह्येकान्तेऽपि सन्देहः

If  $vyavasitap\bar{a}tha$  is not done, there may arise doubt even in  $\bar{e}k\bar{a}nta-pak$ sa.

अक्रियमाणे व्यवसितपाठे एकान्ते अपि सन्देहः स्यात् । तत्र न ज्ञायते किमयं पूर्वस्य भवत्याहोस्वित्परस्येति

If they are not read with *vicchēda*, there will be chance for doubt even when *anubandhas* are taken as a part of that with which it is associated. It is not certain to decide there whether it forms a part of that which precedes or of that which follows.

सन्देहमात्रमेतद्भवति, सर्वसन्देहेषु चेदमुपतिष्ठते व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिनी हि सन्देहादलक्षणम् इति । पूर्वस्थेति व्याख्यास्यामः ।

Doubt alone arise there. In all cases of doubt we take recourse to this—that detailed knowledge arises from the commentary and hence doubt does not enable the  $\hat{sastra}$  to be neglected. We comment that it forms a part of what precedes.

#### श्रुवाद्वा Or from usage.

वृत्ताद्वा पुनः सिद्धमेतत् । वृद्धिमन्तमाद्युदात्तं दृष्ट्वा ञिदिति व्यवसेयम् । अन्तोदात्तं दृष्ट्वा किदिति ।

Or this is evidently decided from usage. On seeing the initial syllable taking vrddhi and  $ud\bar{a}tta$  tone, it should be decided that it is  $\tilde{n}it$ . On seeing the final syllable taking  $ud\bar{a}tta$ , it should be decided that it is kit.

युक्तं पुनर्यद्वृत्तनिमित्तको नामानुबन्धः स्थात्, नानुबन्धनिमित्तकेन नाम वृत्तेन भवितव्यम् ।

It is but right to take that the use of anubandha depends upon usage and not that the usage depends upon the anubandha used.

वृत्तनिमित्तक एवानुबन्धः । वृत्तको ह्याचार्योऽनुबन्धानासजित

The use of anubandha is certainly decided from usage. For  $\bar{A}c\bar{a}rya$  makes use of anubandhas only from his knowledge of the usage.

उभयमिदम् अनुबन्धेषूक्तमेकान्ता अनेकान्ता इति । किमल न्याय्यम्?

Both sides $-\bar{e}k\bar{a}ntatva$  and  $an\bar{e}k\bar{a}ntatva$  have been explained with reference to anubandhas. Of the two which is to be adopted?

एकान्ता इत्येव न्याय्यम्

It is but right to take them only as ēkāntas.

कृत एतत्? On what basis is this decision arrived at? अत्र हि हेतुर्व्यपदिष्टः; यच नाम सहेतुकं तद् न्याय्यम्

For, the reason for adopting it is here given; that which is supported with a  $h\bar{e}tu$  is  $ny\bar{a}yya$ .

ननु चोक्तं तत्रासरूपसर्वादेशदाप्प्रतिषेधे पृथक्त्वनिर्देशोऽनाकारान्तत्वाद् इति । Oh the following defect was raised there:-Tatra asarūpasarvādēśa- $d\bar{a}p$ -pratiṣēdhē pṛthaktva-nirdēśōsanākārāntatvāt.

असरूपविधौ तावन दोषः । आचार्यप्रवृत्तिज्ञापयित नानुबन्धकृतमसारूप्यं भवति इति यदयं ददातिद्धात्योर्विभाषा इति विभाषां शास्ति ।

There is no harm with reference to  $asar\bar{u}pavidhi$ . The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$ , in enjoining  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  in the  $s\bar{u}tra$   $Dad\bar{a}tidadh\bar{a}ty\bar{o}r$   $vibh\bar{a}s\bar{a}$  (3, 1, 139) suggests that anubandhas do not bring in  $as\bar{a}r\bar{u}pya$ .

यदप्युक्तं सर्वादेश इति, अल्लाप्याचार्यप्रवृत्तिज्ञापयित नानुबन्धकृतमनेकाल्त्वं भवति इति, यदयं शित्सर्वस्य इत्याह

The difficulty raised with reference to  $sarv\bar{a}d\bar{e}sa$  too cannot stand, since the mention of sit sarvasya in the  $s\bar{u}tra$   $An\bar{e}k\bar{a}l$   $\dot{s}it$  sarvasya (1, 1, 55) by  $Ac\bar{a}rya$  suggests that auubandhas do not subscribe to  $an\bar{e}k\bar{a}ltva$ .

यदप्युक्तं दाप्प्रतिषेधे पृथक्त्विनिर्देशः कर्तव्यः इति, न कर्तव्यः; आचार्य-प्रवृत्तिर्ज्ञापयति नानुबन्धकृतम् अनेजन्तत्वं भवतीति, यदयम् उदीचां माङो व्यतीहारे इति मेङः सानुवन्धकस्य आत्वभूतस्य ग्रहणं करोति Even the statement that  $d\bar{a}ip$  should be separately mentioned need not be made. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that anubandhas do not stand against  $\bar{e}jantatva$ , since he reads  $m\bar{a}nah$  in place of  $m\bar{e}nah$  in the  $s\bar{u}tra$   $Ud\bar{v}c\bar{a}m$   $m\bar{a}n\bar{o}$   $vyat\bar{v}h\bar{a}r\bar{e}$  (3, 4, 19).

## यथासङ्ख्यमनुदेशः समानाम् (1, 3, 10)

There are three topics here:-(1) What are the sūtras which serve as examples? (2) What is the need for this sūtra? (3) Is sankhyātānudēśa based on śabdasāmya or arthasāmya?

T

किमुदाहरणम् ! Which serves as the example ?

इको यणचि, दध्यत्र मध्वत्र

The sūtra Ikō yan aci, by which the forms dadhyatra and madhvatra are formed, is the example.

नैतदस्ति । स्थानेन्तरतमेनाप्येतत् सिद्धम्

It is not so. It results even from the operation of the sūtra Sthānēsntaratamaḥ (1, 1, 50).

कुत आन्तर्यम्? What is the basis of their antarya?

तालुस्थानस्य तालुस्थान ओष्ठस्थानस्यौष्ठस्थानो भविष्यति

The palatal (consonant) replaces the palatal (vowel) and the labial (consonant) replaces the labial (vowel).

इदं तर्हि तस्थस्थिमपां तांतंतामः इति

This, then, the  $s\bar{u}tra$   $Tas-thas-tha-mip\bar{a}m$   $t\bar{a}\dot{m}-ta\dot{m}-ta-amah$  (3, 4, 101) serves as an example.

ननु चैतदपि स्थानेऽन्तरतमेनैव सिद्धम्

Oh, this too results from the operation of the  $s\bar{u}tra\ Sth\bar{a}n\bar{e}s$ ntaratamah (1, 1, 50).

कृत आन्तर्यम्? What is the basis of their antarya?

1. Even though v is labio-dental, it replaces the labial vowel u, since there is no labial semi-vowel in Sanskrit Language corresponding to the English w.

एकार्थस्यैकार्थो द्यर्थस्य द्यर्थो बहुर्थस्य बहुर्थो भविष्यति इति
The singular suffix will have āntarya with the singular one,
the dual with the dual and the plural with the plural.

Note:— $K\bar{a}iya$ ta reads here:— $Nity\bar{a}n\bar{a}m$  śabd $\bar{a}n\bar{a}m$  prayō-g $\bar{a}d$  arthakṛtam  $\bar{a}ntaryam$  asty $\bar{e}va$  iti bh $\bar{a}vah$ .

इदं तर्हि तूदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्डक्छण्डब्यक इति
This, then, the sūtra Tūdī-śalātura-varmatī-kūcavārāḍ ḍhak-chaṇ-ḍhañ-yakaḥ (4, 3, 94) serves as an example.

Note:  $-K\bar{a}iyața$  reads here:  $-P\bar{a}thakram\bar{e}n\bar{a}iva$  sambandhō bhavişyati iti bhāvaḥ.

#### II

किमर्थ पुनरिदमुच्यते? What for is this sūtra read? संज्ञासमासनिर्देशात्सर्वप्रसङ्गोऽनुदेशस्य, तत्र यथासङ्ख्यवचनं नियमार्थम् The sūtra Yathāsankhyam....is for the sake of niyama, since, otherwise, all in anudēśa may replace all among uddēśya on account of their being mentioned through samjñā or samāsa.

संज्ञया समासैश्च निर्देशाः क्रियन्ते । संज्ञया तावत् - परसौपदानां णलतु-सुस्थलथुसणल्वमाः इति । समासैः - तृद्शिलातुरवर्मतीकूचवाराङ्दक्छण्दञ्यकः इति । संज्ञासमासनिर्देशात् - एतसात् कारणात्, सर्वप्रसङ्गः - सर्वस्य उद्देशस्य सर्वोऽनुदेशः प्रामोति । इष्यते च समसङ्ख्यं यथा स्यादिति । तच्चान्तरेण यत्नं न सिध्यति इति तत्र यथासङ्ख्यवचनं नियमार्थम् । एवमर्थमिदमुच्यते ।

Sūtras are read making use of samjnā and samāsas. The sūtra Parasmāipadānām nal-atus-us-thal-athus-a-nal-va-māḥ (3, 4, 82) is, firstly, through samjnā and the sūtra Tūdī-śalātura-varmatī-kūcavārāḍ ḍhak-chan-ḍhañ-yakaḥ (4, 3, 94) is through samāsas. On account of this reason (i.e.) mention through samjnā and samāsa, there is room for sarva-prasanga (i.e.) all anudēśas may replace all uddēśas. It is desired they should replace only those which hold the same place in their order. This cannot be accomplished without special effort. Hence is this sūtra yathāsankhyam....read for the sake of niyama. It is intended for it.

किं पुनः कारणं संज्ञया च समासैश्च निर्देशाः क्रियन्ते ?

Why should mention be made through  $s\bar{a}\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  and  $sam\bar{a}sas$ ?

## संज्ञासमासनिर्देशः पृथग्विमक्तिसंद्रयनुः चारणार्थः

Mention through  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  and  $sam\bar{a}sa$  is to avoid the repetition of case-suffixes and  $sa\dot{m}j\tilde{n}ins$ .

संज्ञया च समासैश्च निर्देशाः कियन्ते पृथग् विभक्तीः संज्ञिनश्च मोचीचरम् इति Sūtras are read making use of samijñā and samāsas to avoid repetition of case-suffixes and samijñins.

## प्रकरणे च सर्वसम्प्रत्ययार्थः

For the sake of taking the whole into cognition in the context.

प्रकरणे च सर्वेषां सम्प्रत्ययो यथा स्यात् - विदो लटो वेति

So that the whole may, in context, be taken into consideration, as in the  $s\bar{u}tra$   $Vid\bar{o}$   $lat\bar{o}$   $v\bar{a}$  (3, 4, 83).

#### III

किं पुनः शब्दतः साम्यं सङ्ख्यातानुदेशो भवति आहोस्विद् अर्थतः ?
Does sankhyātānudēśa take place on the basis of śabda or artha?
कश्चात्र विशेषः ? What is the difference here?

## सङ्ख्वासाम्यं शब्दतश्रेण्णलादयः परसैपदानां डारोरसः प्रथमस्य अयवायाव एच इत्यनिर्देशः

If sankhyāsāmya is based on śabda, it is not found in the following sūtras:—Parasmāipadānām nal-atus-us.... (3, 4, 82), Luṭaḥ prathamasya dārāurasaḥ (2, 4, 85) and Ēcōsyavāyāvaḥ (6, 1, 78) where parasmāipadanām and nalādis, prathamasya and dārāurasaḥ and ēcaḥ and ayavāyāvaḥ do not agree in number.

सङ्ख्यासाम्यं शब्दतश्चेण्णलादयः परसौपदानां डारीरसः प्रथमस्य अयवायाव एच इति अनिर्देशः । अगमको निर्देशः अनिर्देशः

परसैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः इति णलादयो बहवः परसेपदानामित्येकः शब्दः । वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्नोति ।

In the  $s\bar{u}tra$   $Parasm\bar{a}ipad\bar{a}n\bar{a}m$  nal-atus-us-thal-athus-a-nal-va- $m\bar{a}h$ ,  $nal\bar{a}dis$  are many and  $parasm\bar{a}ipad\bar{a}n\bar{a}m$  is one word and on account of the number of words not being the same in both, there is no chance for  $sankhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$ .

डारौरसः प्रथमस्य, डारौरसो बहवः, प्रथमस्य इत्येकः शब्दः । वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्नोति ।

With reference to Dārāurasaḥ prathamasya, ḍā-rāu-rusas are many and prathamasya is one word and on account of disparity in their number there is no chance for saṅkhyātānudēśa.

एचोऽयवायावः, अयवायावो बहवः, एच इत्येकः शब्दः । वैषम्यात् सङ्ख्या-तानुदेशो न प्राप्नोति ।

In the  $s\bar{u}tra$   $\bar{E}c\bar{o}syav\bar{a}y\bar{a}vah$ , ay-av- $\bar{a}y$ - $\bar{a}vas$  are many and  $\bar{e}cah$  is one word and on account of disparity in their number there is no chance for  $sahhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$ .

अस्तु तर्हि अर्थतः Let it, then, be on the basis of artha.

# अर्थतश्रेल्लखटोर्नन्धरीहणसिन्ध्रतक्षश्रिलादिषु दोषः

If it is on the basis of artha, there will be difficulty in the sūtras referring to lṛlutōḥ nandi etc. arīhaṇa etc. and sindhutakṣaśilādis.

अर्थतश्चेत् लृङ्डरोर्नन्चरीहणसिन्धुतक्षशिलादिषु दोषो भवति

If it is on the basis of artha, there is difficulty with referring to lrlutorh nandi etc. arīhaṇa etc. and sindhutakṣaśilādis.

स्यतासी वृद्धटोः, स्यतासी द्वौ, वृद्धटोरित्यस्य त्रयोऽर्थाः । वैषम्यात् सङ्ख्या-तानुदेशो न प्रामोति ।

In the sūtra Syatāsī lrluṭōḥ (3, 1, 33) sya and tās are two and lrluṭōḥ convey three arthas. On account of disparity in number, there is no chance for saṅkhyātānudēśa.

Note:—1. Lr refers to both  $lr\dot{n}$  and lrt and so  $lrlut\bar{a}u$  denotes three objects.

Note: - 2. Kāiyata reads here: -Yadā tu lrrūpam sāmānyam arthō lrśabdasya iti pakṣaḥ, tadā astyēva sāmyam iti dōṣābhāvaḥ. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः, नन्द्यादयो बहवः, ल्युणिन्यचस्त्रयः । वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्रामोति

In the sūtra Nandi-grahi-pacādibhyō lyuninyacaḥ (3, 1, 134), nandyādis are more than three and lyuninyacaḥ are three. On account of disparity in number, there is no chance for sankhyā-tānudēśa.

Note:—Here  $K\bar{a}iya$ ta reads thus:— $Nandy\bar{a}di$ şu api avayavēna vigrahaḥ, samudāyaḥ samāsārthaḥ iti āśrīyamāṇē samudāyatrayāpēkṣayā pratyayatrayasya sāmyasadbhāvād adōṣaḥ.

अरीहणाद्यो बहवः, वुञादयः सप्तदश । वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्तोति

In the  $s\bar{u}tra~Vu\bar{n}$ -chan... $ar\bar{\imath}hana$ - $kr\dot{s}\bar{a}\dot{s}va$ ... (4, 2, 80),  $ar\bar{\imath}han\bar{a}dis$  are many and  $vu\bar{n}\bar{a}dis$  are seventeen. On account of the disparity in number there is no chance for  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}\dot{s}a$ .

सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ, सिन्धुतक्षशिलादयो बहवः, अणञौ द्वौ । वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्रामोति ।

In the  $s\bar{u}tra$  Sindhu-takṣasilādibhyōsṇañāu (4, 3, 93), sindhu-takṣaśilādis are many and aṇ and añ are only two. On account of the disparity in number, there is no chance for  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}-nud\bar{e}\dot{s}a$ .

## आत्मनेपद्विधिनिष्ठासार्वधातुकद्विग्रहणेषु

(There will be  $d\bar{o}$ sa) in  $\bar{a}tman\bar{e}padavidhi$ , nisth $\bar{a}$  and  $s\bar{a}rva-dh\bar{a}tukadvigrahana$ .

## आत्मनेपदविधिनिष्ठासार्वधातुकाद्विग्रहणेषु च दोषो भवति

There will be dōṣa with reference to ātmanēpadavidhi, niṣṭhā and sārvadhātukadvigrahana.

आत्मनेपदविधिश्च न सिध्यति - अनुदात्तिकत आत्मनेपदम्, अनुदात्तिकतौ द्वौ आत्मनेपदमित्यस्य द्वावर्थौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति ।

There will be difficulty in the operation of  $\bar{a}tman\bar{e}padavidhi$ Anud $\bar{a}tta\dot{n}ita$   $\bar{a}tman\bar{e}padam$  (1, 3, 12). Anud $\bar{a}tta$  and  $\dot{n}it$  are two and  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  denotes two ( $ta\dot{n}$  and  $\bar{a}na$ ) and here  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  may chance to operate.

निष्ठा - रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः इति रेफदकारौ द्वौ, निष्ठेत्यस्य द्वावर्थी, तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्नोति ।

With reference to  $nisth\bar{a}$ . In the  $s\bar{u}tra$   $Rad\bar{a}bhy\bar{a}m$   $nisth\bar{a}t\bar{o}$  nah  $p\bar{u}rvasya$  ca dah (8, 2, 42), there are two:— $r\bar{e}pha$  and  $dak\bar{a}ra$  and  $nisth\bar{a}$  denotes two (kta and ktavat) and here  $sahhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  may chance to operate.

सार्वधातुकद्विग्रहणेषु च दोषो भवति - श्रसोरह्णेपः, श्रमस्ती द्वी, सार्व-धातुकमित्यस्य द्वावर्थी, तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्नोति ।

There chances dōṣa in the sūtras where sārvadhātukatva is associated with two. In the sūtra Śnasōr allōpaḥ (6, 4, 111), there are two-śnam and the root as and sārvadhātuka denotes two (tin and śit) and here there is chance for sankhyātānudēśa to operate.

## एङः पूर्वत्वे प्रतिषेधः

Need for prohibiting  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  with reference to  $p\bar{u}rva-r\bar{u}pa$  when  $\bar{e}\dot{n}$  is followed by a.

एङः पूर्वत्वे प्रतिषेघो वक्तव्यः । एङः पदान्तादति, ङसिङसोश्च, ङसिङसौ द्वौ एङित्यस्य द्वावर्थी, तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति

There is need to prohibit  $sankhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  with reference to  $p\bar{u}rvar\bar{u}pa$  when  $\bar{e}\dot{n}$  is followed by a. In the  $s\bar{u}tra$   $\dot{n}vasinas\bar{o}s$  ca (6, 1, 110) which follows  $E\dot{n}a\dot{n}$   $pad\bar{a}nt\bar{a}d$  ati (6, 1, 109),  $\dot{n}asi$  (fifth case suffix) and  $\dot{n}as$  (sixth case suffix) are two and  $\bar{e}\dot{n}$  denotes two objects and there is chance for  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  to operate.

अस्तु तर्हि शब्दतः Let it, then, be on the basis of śabda.

ननु चोक्तं सङ्ख्यासाम्यं शब्दतश्चेण्णलादयः परसैपदानां डारौरसः प्रथमस्या-यवायाव एच इत्यनिर्देशः इति ।

Oh, it has been said that, if  $sankhy\bar{a}s\bar{a}mya$  is based on  $\hat{s}abda$ , there is no agreement in number in the mention of  $nal\bar{a}dis$  and  $parasm\bar{a}ipad\bar{a}n\bar{a}m$ ,  $d\bar{a}$ - $r\bar{a}u$ -rasah and prathamasya and ay-av-ay-avah and  $\bar{e}cah$ .

नैष दोषः । स्थानेऽन्तरतमः इत्यनेन व्यवस्था भविष्यति ।

This difficulty does not arise. It will be warded off by the  $s\bar{u}tra$   $Sth\bar{a}n\tilde{e}sntaratamah$ .

कृत आन्तर्यम् ? On what basis is antarya taken?

एकार्थस्यैकार्थो, द्यर्थस्य द्यर्थो, बहुर्थस्य बहुर्थः, संवृतावर्णस्य संवृतावर्णो, विवृतावर्णस्य विवृतावर्णः

The singular suffix has  $\bar{a}ntarya$  with the singular one, the dual with the dual, the plural with the plural,  $sa\dot{m}vrta-ak\bar{a}ra$  with  $sa\dot{m}vrta-ak\bar{a}ra$  and  $vivrta-ak\bar{a}ra$  with  $vivrta-ak\bar{a}ra$ .

Note:  $N\bar{a}g\bar{e}\hat{s}a$  says that the mention of  $sa\dot{m}vrt\bar{a}varnasya$   $sa\dot{m}vrt\bar{a}varnah$  is unnecesary, since  $ak\bar{a}ra$  is only vivrta in  $prakriy\bar{a}da\dot{s}\bar{a}$ . He also says that  $\bar{e}k\bar{a}rthasya$  etc. is upalaksana to  $pratyaktv\bar{a}di$ .

## अतिप्रसङ्गो गुणवृद्धिप्रतिषेधे विङति

Ativyāpti in the pratiṣēdha of guṇa and vrddhi by the  $s\bar{u}tra$   $K\dot{n}iti$  ca (1, 1, 5).

अतिशसङ्गो भवति गुणवृद्धिशतिषेधे विङति । गुणवृद्धी द्वे विङती द्वौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः शामोति

There will be  $ativy\bar{a}pti$  with reference to the prohibition of guna and vrddhi by the  $s\bar{u}tra$   $K\dot{n}iti$  ca (1, 1, 5). Guna and vrddhi are two and kit and  $\dot{n}it$  are two and hence there is chance for  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$ .

नैष दोषः ; गकारोऽप्यत्र निर्दिश्यते

This difficulty does not arise; gakāra too is referred to here. तत्ति गकारप्रहणं कर्तव्यम् Then there is need to read it.

न कर्तव्यम् । कियते न्यास एव । ककारे गकारश्चर्त्वभूतो निर्दिश्यते, गिति किति हितीति ।

No, it need not be read. It is read in the  $s\bar{u}tra$  itself.  $Gak\bar{a}ra$  is changed to voiceless  $kak\bar{a}ra$ , since it is followed by  $kak\bar{a}ra$ , so that the  $s\bar{u}tra$  may be expanded into  $giti\ kiti\ niti$ .

#### उदिकूले रुजिवहोः

Ativyāpti of sankhyātānudēśa in the operation of the sūtra Udikūlē rujivahōh (3, 2, 31).

उदिकूले द्वे रुजिवही द्वौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति

Udi and  $k\bar{u}la$  are two and ruj and vah are two. There is chance for  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}\dot{s}a$ .

नैप दोषः । नोदिरुपपदम् ।

This difficulty does not arise; for the word ut is not upapada.

किं तर्हि? What then?

विशेषणं रुजिवहोः - उत्पूर्वाभ्यां रुजिवहिभ्यां कूळ उपपद इति

It is  $vi\acute{s}\bar{e}\dot{s}ana$  to ruj and  $va\dot{h}$ , so that the  $s\bar{u}tra$  may be expanded thus—ut- $p\bar{u}rv\bar{a}bhy\bar{a}m$  ruji- $vahibhy\bar{a}m$   $k\bar{u}l\bar{e}$   $upapad\bar{e}$ .

#### तच्छीलादिषु धातुतिग्रहणेषु

( $Ativy\bar{a}pti$ ) in places where three roots are mentioned in  $s\bar{u}tras$ , which take pratyaya denoting  $t\bar{a}cch\bar{\imath}lya$  etc.

तच्छीलादिषु धातुत्रिग्रहणेषु दोषो भवति । विदिभिदिच्छिदेः कुरच्; विदिभिदिच्छिदः लयः, तच्छीलादयस्त्रयः । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्तोति । Difficulty arises in sūtras having three roots taking a pratyaya having three meanings tācchīlya etc. In the sūtra Vidi-bhidi-cchidēḥ kurac (3, 6, 162), vid, bhid and chid are three and tācchīlādis which kurac denotes are three (tācchīlya, vayōvacana and śakti 3-2-129) and saikhyātānudēśa has there a chance to set in.

## घञादिषु द्विग्रहणेषु

Ativyāpti in the  $s\bar{u}tras$  where two which take the pratyaya  $gha\tilde{n}$  etc. are mentioned.

घञादिषु द्वित्रहणेषु दोषो भवति । निरभ्योः पूल्वोः । निरभी द्वौ, पूल्वौ द्वौ । तत्न सङ्ख्यातानुदेशः प्राम्नोति ।

Difficulty arises in  $s\bar{u}tras$  where two which take the pratyaya  $gha\tilde{n}$  etc. are mentioned. In the  $s\bar{u}tra$   $Nir-abhy\bar{o}h$   $p\bar{u}-lv\bar{o}h$  (3, 3, 28), nir and abhi are two and  $p\bar{u}$  and  $l\bar{u}$  are two and  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  has a chance to set in there.

नैष दोष: । इप्यते चात्र सङ्ख्यात।नुदेशः, निष्पावः अभिलाव इति
There is no harm here. Sankhyātānudēśa is here wished for viz. niṣpāvaḥ, abhilāvaḥ.

एवं तर्हि अकर्तिर च कारके भावे च इति द्वौ, पूल्वौ द्वौ, तत्र सङ्ख्यातानु-देशः प्रामोति

If so, akartari ca kārakē, bhāvē which are taken by anuvṛtti from 3-3-19 & 3-3-18 are two and  $p\bar{u}$  and  $l\bar{u}$  are two and sankhyātānudēśa may there set in.

# अवे तृस्तोः करणाधिकरणयोः

Ativyāpti in tr and str preceded by ava when they take ghañ in the sense of karanatva and adhikaranatva.

# तृस्त्री द्वी करणाधिकरणे द्वे । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति

The roots  $t\bar{r}$  and str are two and karana and adhikarana are two. Hence  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  has a chance to set in the interpretation of the  $s\bar{u}tra$   $Av\bar{e}$   $t\bar{r}stror$   $gha\tilde{n}$  (3, 3, 120) where there is anuvrtti to karana and adhikarana from the  $s\bar{u}tra$  (3, 3, 117).

## कर्त्वकर्मणोश्च भूकुञोः

Ativyāpti with reference to  $bh\bar{u}$  and  $kr\tilde{n}$  when kartr or karman is upapada.

# कर्तृकर्मणी द्रे भूकुञौ द्रौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति

Kartr and karman are two and  $bh\bar{u}$  and  $kr\tilde{n}$  are two and  $sankhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  may set in there.

Note:—The sūtra referred to is Kartrkarmaņō bhūkṛñōḥ (3, 3, 127).

#### अनवक्रुप्त्यमर्षयोरिकं वृत्ते ऽपि

(Ativyāpti) in operation of the sūtra Anavakļptyamarṣayōr akimvrttēspi (3, 3, 145).

अनवक्छप्त्यमर्षे द्वौ किंद्रताकिंद्रते द्वे । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्तोति Anavaklpti and amarşa are two and akimvṛtta and kimvṛtta are two. Sankhyātānudēśa chances to set in.

Note:—There is anuvitti for kimvitte from 3, 3, 144.

## कुभ्वोः क्त्वाणमुलौ

Ativyāpti where the roots kr and  $bh\bar{u}$  take the pratyayas  $ktv\bar{a}$  and namul.

# कृभ्यो हो, क्त्वाणमुली हो, तत्र सङ्घ्यातानुदेशः प्राप्तोति

Kr and  $bh\bar{u}$  are two,  $ktv\bar{a}$  and namul are two and there  $sankhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}\hat{s}a$  chances to appear.

Note:—The concerned sūtra is Svāngē tas-pratyayē krbhvōh (3, 4, 61) where there is anuvrtti for ktvānamulāu from 3, 4, 59.

## . अधीयानविदुषोइछन्दोब्राह्मणानि

Ativyāpti with reference to the pratyayas enjoined in the sūtra  $Tad\ adh\bar{\imath}t\bar{e}\ tad\ v\bar{e}da\ (4,2,59)$  to be tacked on to the words chandas and  $br\bar{a}hman\bar{a}ni$  found in 4, 2, 66.

छन्दोत्राह्मणानि द्वे, अधीते वेद इति च द्वौ, तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्नोति Chandas and brāhmaṇāni are two, adhītē and vēda are two and there sankhyātānudēśa may set in.

## रोपधेतोः पथिदृतयोः

Ativyāpti with reference to  $r\bar{o}padha$  and  $\bar{i}k\bar{a}ra$  on one side and pathin and  $d\bar{u}ta$  on the other side.

रोपघेतोः प्राचाम्, तद्गच्छति पथिदूतयोः, रोपघेतौ द्वौ, पथिदूतौ द्वौ, तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति

With reference to the sūtras Rōpadhētōḥ prācām (4, 2, 123) and Tad gacchati pathidūtayōḥ (4, 3, 85), rōpadha and  $\bar{\imath}t$  are two, pathin and dūta are two and sankhyātānudēśa may set in there.

#### तत्र भवस्तस्य व्याख्यानः क्रतुयज्ञेम्यश्र

Ativyāpti to tatra-bhava-pratyaya and tasya-vyākhyāna-pratyaya with reference to kratu and yajña.

तत्र भवस्तस्य व्याख्यानौ द्वी, क्रतुयज्ञी द्वी । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्रामोति ।

Tatra-bhava-pratyaya and tasya-vyākhyāna-pratyaya are two, kratu and yajña (4, 3, 68) are two and sankhyātānudēśa may set in.

#### सङ्घादिष्त्रञ्त्रभृतयः

Avyāpti in sanghādi with reference to the pratyayas añ etc.

# सङ्घादिष्वञ्त्रभृतयः सङ्ख्यातानुदेशेन न सिध्यन्ति

The pratyayas an etc. (noted in the sūtra Sanghānkalakṣaṇēṣu anyanināman 4, 3, 127) with reference to sangha etc. cannot be made to apply in order.

नैष दोषः; घोषप्रहणमपि तल्ल कर्तव्यम्

There is no harm there; the word ghōṣa too should there be read.

## वेशोयशुआदेर्भगाद्यल्खौ

Ativyāpti with reference to  $v\bar{e}\leq\bar{o}$  yasādi in taking the pratyayas yalkhāu (4, 4, 131).

वेशो यश आदी द्वौ यल्खौ द्वौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्नोति  $V\bar{e}$ sa- $\bar{a}$ di and yasa- $\bar{a}$ di are two, yal and kha are two and  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}$ sa may set in there.

#### ङासङसोः ख्यत्यात्परस्य

Ativyāpti with reference to khiti and khīti in connection with the pratyayas nasi and nas.

ङसिङसौ द्वौ, स्वत्यौ द्वौ । तत्र सङ्ख्यातानुदेशः प्राप्तोति Nasi and nas are two, khiti and khīti are two (6, 1, 112) and sankhyātānudēśa may set in there.

# न वा समानयोगवचनात्

No, on account of  $yath\bar{a}sankhyam$  being applied to what is found in one  $s\bar{u}tra$ .

न वैष दोष: The difficulties raised above do not arise.

किं कारणम् ? Why?

समानयोगवचनात् - समानयोगे सङ्ख्यातानुदेशं वक्ष्यामि ।

On account of  $sam\bar{a}na-y\bar{o}ga-vacana$ . I shall state that  $yath\bar{a}-sankhyam$  applies only with reference to those that are found in the same  $s\bar{u}tra$ .

#### तस्य दोषो विदो लटो वा

The defect on so saying is in the operation of the  $s\bar{u}tra$   $Vid\bar{o}$   $lat\bar{o}$   $v\bar{a}$  (3, 4, 83).

तस्येतस्य लक्षणस्य दोषो विदो लटो वा इति सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्तोति The defect on holding that lak sana is found in the interpretation of the  $s\bar{u}tra\ Vid\bar{o}\ lat\bar{o}\ v\bar{a}$ , since  $sankhy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}sa$  has no chance to play its part there.

Note:— $Parasm\bar{a}ipad\bar{a}n\bar{a}m$  nalatusus...which are needed here are found in the previous  $s\bar{u}tra$ .

## ध्माघेटोर्नाडीमुष्ट्योश्र

The defect is with reference to  $dhm\bar{a}$  and  $dh\bar{e}t$  in association with the  $upapada\ n\bar{a}d\bar{i}$  and  $mu\bar{s}ti$ .

# ध्माधेटोर्नाडीमुण्ट्योश्च सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्नोति

Sankhyātānudēśa has no chance to set in with reference to  $dhm\bar{a}$  and  $dh\bar{e}t$  when they take  $n\bar{a}d\bar{i}$  and musti for their upapada in 3, 2, 30.

#### खलगोरथादिनित्रकट्यचश्र

The defect lies in the stems khala,  $g\bar{o}$  and ratha taking the pratyayas ini, tra and katya.

## सङ्ख्यातानुदेशो न प्रामोति

There is no chance for sankhyātānudēśa.

Note:— $Khalag\bar{o}rath\bar{a}t$  (4, 2, 50) is one  $s\bar{u}tra$  and Initra-katyacas ca (4, 2, 51) is another  $s\bar{u}tra$ .

#### सिन्ध्वपकराभ्यां कनणञौ च

The defect lies in the stems sindhu and apakara which take kan taking the pratyayas an and  $a\tilde{n}$ .

## सङ्ख्यातानुदेशो न प्रामोति

There is no chance for sankhyātānudēśa.

Note:— $Ana\tilde{n}au$  ca (4, 3, 33) is a separate  $s\bar{u}tra$ .

#### युष्मदस्मदोश्रादेशाः

There will be difficulty in the  $\bar{a}d\bar{e}\dot{s}as$  of yuşmad and asmad.

युष्मदस्मदोश्चादेशाः सङ्ख्यातानुदेशेनं न सिध्यन्ति

The  $\bar{a}d\bar{e}\dot{s}as$  of  $yu\dot{s}mad$  and asmad cannot be taken through  $sa\dot{n}khy\bar{a}t\bar{a}nud\bar{e}\dot{s}a$ .

तसाद् यसिन् पक्षेऽल्पीयांसी दोषास्तमास्थाय प्रतिविधयं दोषेषु

Hence the defects raised in that pakṣa which has the less
number of flaws have to be met with.

अथ वैवं वक्ष्यामि "यथासङ्ख्यमनुदेशः समानां स्वरितेन" ततः अधिकारः । अधिकारश्च भवति स्वरितेन इति

Or I shall read the sūtras thus:—Yathāsankhyam anudēśaḥ samānām svaritēna and then Adhikāraḥ. We get adhikāraḥ through svarita.

एवमपि स्वरितं हष्ट्वा सन्देहः स्यात् - न ज्ञायते किमयं समसङ्ख्यार्थः, आहोस्विद् अधिकारार्थ इति ।

Even then this doubt will arise on seeing the *svarita* whether it is intended to denote  $samasankhy\bar{a}$  or  $adhik\bar{a}ra$ .

सन्देहमात्रमेतद्भवति । सर्वसन्देहेषु चेदमुपतिष्ठते व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि सन्देहादलक्षणम् इति । समसङ्ख्यार्थ इति व्याख्यास्यामः

Doubt alone springs there. In all cases of doubt there is this dictum ' $Vy\bar{a}khy\bar{a}nat\bar{o}$  viśeṣapratipattir na hi sandēhād alakṣaṇam.' We explain that it is to denote samasaṅkhyā.

Note:  $K\bar{a}iyaļa$  reads here: Yatra svaritatvam pratij $n\bar{a}yat\bar{e}$  tatr $\bar{a}iva$  śab $dat\bar{o}$  arthat $\bar{o}$   $v\bar{a}$  s $\bar{a}my\bar{a}$ śray $\bar{e}na$ yath $\bar{a}$ sa $\bar{n}khy\bar{a}$ s $\bar{a}my\bar{e}$ .

## खरितेनाधिकारः (1, 3, 11)

The purpose served by the sūtra is the only topic discussed here.

किमर्थमिदमुच्यते ? Why is this sūtra read?

## अधिकारः प्रतियोगं तस्यानिर्देशार्थः

Adhikāra is intended for its non-repetition in each sūtra.

अधिकारः कियते, प्रतियोगं तस्यानिर्देशार्थः इति

 $Adhik\bar{a}ra$  is resorted to, so that it may not be repeated in every  $s\bar{u}tra$ .

किमिदं प्रतियोगमिति ?

What is this—the expression pratigogam?

योगं योगं प्रति प्रतियोगम्

The word pratiyogam is derived thus—yogam yogam prati.

योगे योगे तस्य ग्रहणं मा कार्षम् इति

So that I may not read it in every sūtra.

किं गतमेतदियता सूत्रेण ?

Is this the meaning that is understood from this sūtra?

गतम् इत्याह 'Yes', says he.

क्तः ? On what authority?

ভাৰন: From the world.

तद्यथा लोके 'अधिकृतोऽसौ म्रामे', 'अधिकृतोऽसौ नगरे' इत्युच्यते, यो यत्र व्यापारं गच्छति । शब्देन चाप्यधिकृतेन कोऽन्यो व्यापारः शक्योऽवगन्तुमन्यदतो योगे योग उपस्थानात् ।

It is illustrated thus:—He who has work to do in a village or a city is said 'Adhikrtōssāu grāmē' Adhikrtōssāu nagarē'. What can a word which is adhikrta do except making its appearance in every sūtra?

## न वा निर्दिश्यमानाधिकृतत्वाद्यथा लोके

No, this need not be on account of the adhikrtatva of that which is newly mentioned, as is in the world.

न वैतत्त्रयोजनमस्ति No, this need not be the prayojana.

किं कारणम् श Why?

निर्दिश्यमानाधिकृतत्वाद्यथा लोके - निर्दिश्यमानमधिकृतं गम्यते ।

On account of the adhikrtatva of that which is newly mentioned, as is in the world. It is understood that what is newly mentioned gets the  $vy\bar{a}p\bar{a}ra$ .

तद्यथा - देवदत्ताय गौदीयतां, यज्ञदत्ताय विष्णुमित्राय इति । गौरिति गम्यते । एवमिहापि पदरुजविशस्प्रशो घञ् , सृ स्थिरे, भावे घञ् इति गम्यते ।

This may be illustrated thus:—Let a cow be given to Dēvadatta, Yajñadatta, Viṣṇumitra and it is understood that a cow may be given to Yajñadatta and one to Viṣṇumitra. So also

here the ghañ in the sense of  $bh\bar{a}v\bar{e}$  mentioned in the  $s\bar{u}tra$  Padaruja-viśu-spṛśō ghañ (3, 3, 16) follows in the following  $s\bar{u}tra\ Sr\ sthir\bar{e}$ .

## अन्यनिर्देशस्तु निवर्तकस्तस्मात्परिभाषा

Mention of another sets at naught and so there is need for the  $paribh\bar{a}s\bar{a}$ :

अन्यनिर्देशस्तु लोके निवर्तको भवति । तद्यथा देवदत्ताय गौदीयतां, यज्ञ-दत्ताय कम्बलो विष्णुमित्राय च इति कम्बलो गोर्निवर्तको भवति । एवमिहापि अभिविधो भाव इनुण् घञो निवर्तकः स्यात् ।

Mention of another in the world sets at naught what has been mentioned. This may be illustrated thus:-Let a cow be given to  $D\bar{e}vadatta$  and a kambala to  $Yaj\tilde{n}adatta$  and Visnumitra. Here the mention of kambala makes the cow recede. So also here the inun mentioned in the  $s\bar{u}tra$   $Abhividh\bar{a}u$   $bh\bar{a}va$  inun (3, 3, 44) makes  $gha\tilde{n}$  recede.

तसात् परिभाषा कर्तव्या Hence is the need for the paribhāṣā. अधिकारपरिमाणाज्ञानं तु Non-knowledge of the limit of adhikāra.

अधिकारपरिमाणाज्ञानं तु भवति । न ज्ञायते कियन्तमविधम् अधिकारोऽनु-वर्तत इति

There is the non-knowledge of  $adhik\bar{a}raparim\bar{a}na$ . It is not known how far  $adhik\bar{a}ra$  extends.

अधिकारपरिमाणज्ञानार्थं तु To know the extent of the adhikāra.

अधिकारपरिमाणज्ञानार्थमेव तहीयं योगे वक्तव्यः। अधिकारपरिमाणं ज्ञास्यामि इति If so, this  $s\bar{u}tra$  has to be read only to know the extent of the  $adhik\bar{a}ra$ —that I may know the extent of the  $adhik\bar{a}ra$ .

कथं पुनः खरितेनाधिकारः इत्यनेन अधिकारपरिमाणं श्ववयं विज्ञातुम्? How is it, then, possible to understand the extent of the adhikāra from the sūtra Svaritēnādhikārah?

एवं वक्ष्यामि स्वरितेनाधिकारः इति । स्वरितं दृष्ट्वा अधिकारो न भवति इति । I shall then read the  $s\bar{u}tra$   $Svarit\bar{e}n\bar{a}dhik\bar{a}rah$  in the sense that  $adhik\bar{a}ra$  ceases on seeing the svarita.

केनेदानीमधिकारो भविष्यति?

On what authority will adhikāra commence?

लौकिकोऽधिकारः Adhikāra commences, as is in the world.

न, अधिकार इति चेदुक्तम्

No, objection was raised against lāukika-adhikāra.

किमुक्तम्? What objection was raised?

अन्यनिर्देशस्तु निवर्तकस्तरमात्परिभाषा इति

Anya-nirdēśas tu nivartakas tasmāt paribhāṣā.

अधिकारार्थमेव तहीयं योगो वक्तव्यः

This sūtra has, then, to be read only for adhikāra.

ननु चोक्तम् अधिकारपरिमाणाज्ञानं तु इति

Oh, objection was raised against it thus:— $Adhik\bar{a}ra$  -  $pari-m\bar{a}n\bar{a}j\tilde{n}\bar{a}nam\ tu$ .

## यावतिथोऽलनुबन्धस्तावतो योगानिति वचनात्सिद्धम्

It is accomplished by taking that an al is read as anubandha to suggest that the adhikāra extends to the same number of  $s\bar{u}tras$  as its number in the  $praty\bar{a}h\bar{a}ra-s\bar{u}tras$ .

यावतिथोऽल् अनुबध्यते तावतो योगान् अधिकारोऽनुवर्तते इति वक्तव्यम् It must be that the adhikāra extends to the same number of  $s\bar{u}tras$  as is the number of al (in the pratyāhāra sūtras) used as an anubandha.

Note:—If the  $adhik\bar{a}ra$  extends to two  $s\bar{u}tras$ , i should be read as anubandha; u should be read if it is to extend to three  $s\bar{u}tras$  etc.

अथेदानीं यत्राल्पीयांसोऽलः, भूयस्थ योगानिधकारो अनुवर्तते, कथं तत्र कर्तव्यम् १

What should be done where the number of al is smaller than the number of  $s\bar{u}tras$  to which the  $adhik\bar{u}ra$  extends?

## भ्रयसि प्राग्वचनम्

When the number is great, the word  $pr\bar{a}k$  is to be read.

भूयसि प्राग्वचनं कर्तव्यम्, प्रागमुतः इति वक्तव्यम् When the number is great, the word  $pr\bar{a}k$ , as  $pr\bar{a}k$  of this, should be read.

तत्ति वक्तव्यम् It has to be read.

न वक्तव्यम् No, it need not.

सन्देहमात्रमेतद् भवति । सर्वसन्देहेषु चेदमुपतिष्ठते व्याख्यानतो विशेषप्रति-पत्तिनीहिं सन्देहाद्रकक्षणम् इति । प्रागमुत इति व्याख्यास्यामः

Doubt alone arises there. In all cases of doubt we take recourse to this—that detailed knowledge arises from the commentary and hence doubt does not enable the śāstra to be neglected. We comment that it is before this.

यद्येवं नार्थोऽनेन If so, no purpose is served by this sūtra.

केनेदानीमधिकारो भविष्यति ?

How will then adhikāra be accomplished?

लौकिको ऽधिकारः

Adhikāra as is seen in the world is resorted to.

ननु चोक्तं नाधिकार इति चेदुक्तम्

Oh, it was said that objection was raised against  $l\bar{a}ukika$ - $adhik\bar{a}ra$ .

किमुक्तम्? What objection was raised?

अन्यनिर्देशस्तु निवर्तकस्तस्मात् परिभाषा

Mention of another sets at naught and hence is the need for  $paribh\bar{a}s\bar{a}$ .

सन्देहमात्रमेतद्भवति । सर्वसन्देहेषु चेदमुपतिष्ठते व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि सन्देहादरुक्षणम् इत्युक्तम् । इनुण्विति सन्देहे घिति व्याख्यास्यामः ।

Doubt alone arises there. In all cases of doubt it was said that this dictum stands before us 'Vyākhyānatō viśēṣapratipattir na hi sandēhād alakṣaṇam.' When it is doubtful whether the pratyaya inun found in Abhividhāu bhāva inun (3, 3, 44) is to be taken by anuvrtti in the next sūtra Ākrōśēsvanyōr grahaḥ or ghañ, found in 3, 3, 16, we declare it is ghañ.

न तर्हि इदानीमयं योगो वक्तव्यः

In that case this sūtra need not be read now.

वक्तव्यक्ष Certainly should it be read.

किं प्रयोजनम्? Why?

स्वरितेनाधिकारगतिर्यथा विज्ञायेत, अधिकं कार्यम्, अधिकः कारः

·So that adhikāragati, adhikam kāryam and adhikah kārah may be understood through svarita.

अधिकारगतिः - गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य इत्यत्र गोटाङ्ग्रहणं चोदितं तन्न कर्तव्यं भवति । स्त्रीयहणं स्वरियप्ते । स्वरितेनाधिकारगतिभीविष्यतीति स्त्रियामित्येवं प्रकृत्य ये प्रत्यया विहितास्तेषां प्रहणं विज्ञास्यते । तत्र स्वरितेन अधिकारगतिभीवतीति न दोषो भवति । Adhikāragatiḥ:—Need for gōṭāṅgrahaṇam was stated under the sūtra Gōstriyōr-upasarjanasya (1, 2, 48) and it need not be made. The word strī is read with svarita accent. Taking that the adhikāra of striyām is suggested by svarita, all pratyayas which are enjoined under the range of striyām are taken into account.

अधिकं कार्यम् :—अपादानमाचार्यः किं न्याय्यं मन्यते ? यत्र प्राप्य निवृत्तिः । तेनेहैव स्यात् - प्रामाद् आगच्छित्, नगराद् आगच्छिति । साङ्काश्यकेभ्यः पाटिलपुलका अभिरूपतरा इत्यत्र न स्यात् । स्वरितेन अधिकं कार्यं भवतीत्यत्रापि सिद्धं भवति । तथा - अधिकरणमाचार्यः किं न्याय्यं मन्यते ! यत्र कृत्स्व आधारात्मा व्याप्तो भवति । तेनेहैव स्यात्, तिलेषु तैलम्, दिन्न सर्पिरिति । गङ्कायां गावः, कृषे गर्गकुलमित्यल न स्यात् । स्वरितेन अधिकं कार्यं भवतीति अत्रापि सिद्धं भवति ।

Adhikam kāryam. Which does Ācārya consider to be the proper apādāna? The place from where actual separation takes place. In that case, the fifth case will be regular only in the sentences, grāmād āgacchati, nagarād āgacchati and it cannot be regular in the sentence Sāṅkāśyakābhyaḥ Pāṭaliputrakā abhirūpatarāḥ (People of Pāṭaliputra are more beautiful than those of Sāṅkāśyaka). It is achieved here too by svarita taking that it does more kārya. Similarly which does Ācārya consider to be the proper adhikaraṇa? Where the whole ādhēya is in association with it. In that case the use of the locative will be proper only in the sentences, tilēṣu tāilam (there is oil in seasamum) and dadhni sarpiḥ (there is clarified butter in curd) and it cannot be regular in Gaṅgāyām gāvaḥ (there are cows in the Ganges) and kūpē gargakulam

(there is a family of earthworms in the well). It is achieved here too by svarita taking that it does more  $k\bar{a}rya$ .

अधिकः कारः - पूर्विविविविधिश्च न पठितव्या भवन्ति-गुणवृद्धचौत्त्वतृज्बद्भावेभ्यो नुम्पूर्वविविविद्धम् । नुमचिरतृज्बद्भो नुडिति । नुम्नुटौ स्वरियण्येते । तत्र स्वरितेन अधिकः कारो भवतीति नुम्नुटौ भविष्यतः

Adhikah kārah. The cases where vipratisēdhē pūrvam kāryam operates need not be read:—Num in preference to guṇa, vṛddhi, āutva and trjvadbhāva and nuṭ in preference to num, cira and trjvadbhāva. Num and nuṭ are read with svarita accent. Through the capacity of svarita that it does adhika-kāra, num and nuṭ set in there.

कथं पुनः अधिकः कार इत्यनेन पूर्वविश्वतिषेधाः शक्या न पठितुम् ? On what authority can we not read  $p\bar{u}rvavipratis\bar{e}dha$  by taking  $adhik\bar{a}ra$  in the sense adhikah  $k\bar{a}rah$ ?

लोकतः From the world.

तद्यथा - लोके 'अधिकमयं कारं करोति ' इत्युच्यते, योऽयं दुर्बलः सन् बलविद्धः सह भारं वहित । एविमहापि अधिकमयं कारं करोतीत्युच्यते योऽयं पूर्वः सन् परं बाधते It may be illustrated thus:—When a weak man is able to bear a burden along with the strong, people say in the world, "This man does adhika-kāra." Similarly here too that which over-rules those that follow is said to do adhika-kāra.

अधिकारगतिस्च्यर्था विशेषायाधिकं कार्यम् । अथ योऽन्योऽधिकः कारः पूर्वविप्रतिषेधार्थः सः ॥

The three-fold use of the  $s\bar{u}tra$   $Svarit\bar{e}na$   $adhik\bar{a}rah$  mentioned above is stated in this  $g\bar{a}th\bar{a}$ .

Note:—1. Nāgēśa reads here:—Dvitīyaphalam-viśēṣāyēti-gāuṇasaṅgrahāyētyarthaḥ. Tṛtīyam āha-atha yōsnya iti.

Note:—2.  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  has not stated the second and the third  $pray\bar{o}janas$ , but has mentioned only the first with some emendation. But it seems  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  has given them on the authority of an old  $g\bar{a}th\bar{a}$ . Or perhaps the  $g\bar{a}th\bar{a}$  is his own.

THIRTEENTH ÄHNIKA ENDS.

(First adhyāya, third pāda, first āhnika ends)

#### Fourteenth Ahnika

(First adhyāya, third pāda, second āhnika)

# अनुदात्तिङित आत्मनेपदम् (1, 3, 12)

Three topics are discussed here:—(1) Is there the need for the prohibition of ātmanēpada terminations after conjugational signs? (2) Does this sūtra restrain the application of verbal terminations or enjoin them? (3) Is there pratyaya-niyama or prakrtyartha-niyama here?

Ι

#### विकरणेभ्यः प्रतिषेधः

Prohibition after conjugational signs.

विकरणेभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः - चिनुतः, सुनुतः, सुनीतः, पुनीतः । ङित इति आत्मनेपदं प्राप्नोति

There is need for the prohibition (of ātmanēpada terminations) after conjugational signs; for otherwise ātmanēpada terminations have to be used in the verbs cinutaḥ, sunutaḥ, lunītaḥ and punītaḥ on the strength of nitaḥ in the sūtra.

Note:—The conjugational signs used in the above forms are not pit and hence they are considered to be  $\dot{n}it$  on the strength of the  $s\bar{u}tra$   $S\bar{a}rvadh\bar{a}tukam$  apit (1, 2, 4).

नैष दोष:; नैवं विज्ञायते ङकार इद् यस्य सोऽयं ङित्, ङितः इति
This difficulty does not arise. Nitaḥ is not taken as the ablative singular of nit which is a bahuvrīhi compound having its vigraha nakāraḥ it yasya saḥ.

कथं तर्हि ? How, then, is it taken?

¹ डकार इद् डित्, डित इति

It is taken as the ablative singular of nit which is a tatpurusa compound.

अथ वा उपदेश इति वर्तते

Or, the upadēśa is taken here by anuvṛtti.

1. Nkāra ēva is the reading in Śrī Guruprasāda Sāstri edition.

अथ वा <sup>1</sup> उक्तमेतत् 'सिद्धं तु पूर्वस्य कार्यातिदेशात्' इति Or it has been said that the object is achieved on account of the atidēśa referring to the kārya of what precedes.

सर्वथा चङङ्भ्यां प्रामोति

Anyhow it will chance to appear after can and an.

एवं तर्हि धातोरिति प्रकृतं वर्तते

If so, the word  $dh\bar{a}t\bar{o}h$  is taken here by anuviti from the context.

क प्रकृतम् ?

What is the *sūtra* which is found in the context whence the anuvṛtti is made?

मूवादयो धातवः इति The sūtra Bhūvādayō dhātavaḥ.

तहै प्रथमानिर्दिष्टं, पञ्चमीनिर्दिष्टेन चेहार्थः

It is in the nominative case there and we here want the ablative case.

अर्थाद्विभक्तिपरिणामो भविष्यति

The change in the case takes place to suit the need.

तद्यथा - उच्चानि देवदत्तस्य गृहाणि, आमन्त्रयस्वैनम् - देवदत्तमिति गम्यते । देवदत्तस्य गावोऽधा हिरण्यं च, आढ्यो वैधेयः - देवदत्त इति गम्यते

It may be illustrated thus:-High are the storeys of  $D\bar{e}va-datta$ 's bungalow; call him in a loud tone. It is seen that the word him refers to  $D\bar{e}vadatta$ . Cows, horses and gold are of  $D\bar{e}vadatta$ ; the fool is rich. It is seen that the word fool refers to  $D\bar{e}vadatta$ .

पुरस्तात षष्ठीनिर्दिष्टं सत् अर्थात् प्रथमानिर्दिष्टं द्वितीयानिर्दिष्टं च भवति । एविमहापि पुरस्तात् प्रथमानिर्दिष्टं सत् अर्थात् पश्चमीनिर्दिष्टं भविप्यति

It (Dēvadattasya) being first mentioned in the sixth case, it is, out of necessity, changed to the first case and the second case respectively. So also, it being mentioned in the first case there, it is changed into the fifth case here.

1. This was said under the sūtra GānkuṭādibhyōSñninkit (1, 2, 1).

II

किमर्थं पुनिरदमुच्यते ? With what purpose is this sūtra read?

Note:— $K\bar{a}iyața$  explains it thus:—Does this serve as  $niyama-s\bar{u}tra$  restricting the application of  $l\bar{a}d\bar{e}s$  or a  $vidhi-s\bar{u}tra$  enjoining  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations?

# आत्मनेपद्वचनं नियमार्थम्

Mention of this  $s\bar{u}tra$  with reference to  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  is to serve as niyama.

नियमार्थोऽयमारम्भः This attempt is for the sake of niyama.

किमुच्यते नियमार्थोऽयमिति, न पुनर्विध्यर्थोऽपि स्यात् ?

Why is it said that this is for the sake of niyama and not for the sake of vidhi as well?

#### लविधानादिहितम्

The injunction has been made by the mention of  $l\bar{a}d\bar{e}\hat{s}as$  (in the  $s\bar{u}tra\ Tip-tas-jhi....3$ , 4, 78).

लविधानाद्धि आत्मनेपदं परसैपदं च विहितम्

Both  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  and  $parasm\bar{a}ipada$  are enjoined by the  $s\bar{u}tra$  mentioning  $l\bar{a}d\bar{e}sas$ .

अस्ति प्रयोजनमेतत्? Can this be the prayojana?

किं तहींति? What difficulty is there?

#### विकरणव्यवहितत्वाचु नियमाप्राप्तिः

There is no chance for niyama to act, on account of the interception of conjugational signs.

विकरणेस्तु व्यवहितत्वानियमो न प्रामोति

There is no chance for niyama to act on account of the interception of vikaraṇas.

इदमिह सम्प्रधार्य, विकरणाः कियन्तां नियम इति

This has to be decided whether the vidhis enjoining vikaraņas operate first or this niyama-vidhi.

किमत्र कर्तव्यम्? Which has the prior chance here?

परत्वाद्विकरणाः

Rules enjoining vikaraṇas should operate first, since they are para.

नित्याः खल्विप विकरणाः, कृतेऽपि नियमे प्राप्नुवन्ति अकृतेऽपि प्राप्नुवन्ति । नित्यत्वात् परत्वाच विकरणेषु कृतेषु विकरणेः व्यवहितत्वान्नियमो न प्राप्नोति

Vikaranas are then nitya, since they operate both when the niyama has operated and when the niyama has not operated. Since they are both nitya and para they operate first and then there is no chance for the niyama to operate on account of the interception of vikaranas.

नैष दोषः, अनवकाशो नियमः

This difficulty cannot arise, since the niyama will then have no room to operate.

सावकाशः It has room to operate.

कोऽवकाशः? Where is the room to operate?

य एते छिग्विकरणा रुछिविकरणाश्च लिङ्किटी च

Where roots take *lugvikarana* and *śluvikarana* and take the terminations of *lin* and *lit*.

यदि पुनरियं

#### परिभाषा

विज्ञायेत Suppose this sūtra is taken as a paribhāṣā.

ार्के कृतं भवति? What is gained by it?

कार्यकालं संज्ञापरिभाषम्, यत्र कार्यं तत्र द्रष्टव्यम् । लस्य तिबादयो भवन्ति इति उपस्थितिमदं भवति अनुदात्तिकत आत्मनेपदं, शेषात्कर्तरि परसौपदम् इति । On account of the dictum Kāryakālam samijnāparibhāṣam, this sūtra appears on the scene of action. Where lakāra takes tib-ādēśas, the two sūtras Anudātta-nita ātmanēpadam and Śēṣāt kartari parasmāipadam appear on the scene.

एवमपि इतरेतराश्रयं भवति ।

Even then the defect of inter-dependence sets in.

का इतरेतराश्रयता? How is interdependence?

अभिनिर्वृत्तानां लस्य स्थाने तिबादीनामात्मनेपद्परसैपदसंज्ञ्या भावितव्यम्, संज्ञया च तिबादयो भाव्यन्ते, तद् इतरेतराश्रयं भवति । इतरेतराश्रयाणि च कार्याणि न प्रकल्पन्ते

The samjñās ātmanēpada and parasmāipada have to be given only after tibādis have taken the place of lakāra and through samjñā tibādis are made to exist. This is interdependence. Deeds which are interdependent are not accomplished.

परसैपदेषु तावन्नेतरेतराश्रयं भवति । परसैपदानुक्रमणं न करिष्यते ।
There is no interdependence with reference to parasmāipada;
parasmāipadas are not enjoined with reference to particular
prakṛtis.

अवर्यं कर्तव्यम् - अनुपराभ्यां क्रुञः इत्येवमर्थम्

It should necessarily be done so that the root kr when preceded by anu and  $par\bar{a}$  (even when the  $kriy\bar{a}phala$  goes to  $kart\bar{a}$ ) may take  $parasm\bar{a}ipada$  terminations.

ननु चैतद्पि आत्मनेपदानुक्रमण एव करिष्यते, स्वरितञितः कर्त्रभिष्राये क्रियाफले, आत्मनेपदं भवति, कर्तरि अनुपराभ्यां क्रुञो न इति ।

Oh, this too may be read where the prakṛtis which take ātmanēpada terminations are read. The sūtra Svaritañitaḥ kartrabhiprāyē kriyāphalē (1, 3, 72) enjoins the use of ātmanēpada terminations and the sūtra Anu-parābhyām kṛñaḥ (1, 3, 79) may be read Kartari anuparābhyām kṛñō na.

Note:—In this case the sūtra has to be changed.

आत्मनेपदेषु चापि नेतरेतराश्रयं भवति

The defect of interdependence does not set in even with reference to ātmanēpada terminations.

कथम्? How?

भाविनी संज्ञा विज्ञास्यते सूलशाटकवत् । तद्यथा - कश्चित् कञ्चित् तन्तु-वायमाह, 'अस्य सूत्रस्य शाटकं वय ' इति । स पश्यित, यदि शाटको न वातव्यः, अथ वातव्यो न शाटकः, शाटको वातव्यश्च इति विभितिषिद्धम्, भाविनी खल्ल अस्य संज्ञा अभिनेता - स मन्ये वातव्यो यस्मिन्नुते शाटक इत्येतद् भवित इति । एविमिहापि, स लस्य स्थाने कर्तव्यः यस्य अभिनिर्भृत्तस्य आत्मनेपदिमत्येषा संज्ञा भविष्यति The  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  which is to come will be taken into consideration like  $s\bar{u}tras\bar{a}taka$  (cloth of thread). This is explained thus:—One says to a weaver, "Weave a cloth of this thread." He thinks thus:—If it is already a cloth, it need not be woven; and if it is to be woven, it is not a cloth. The expressions—cloth and one to be woven conflict each other. Hence the  $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$  that is to come is meant here. I think therefore that what will be called a cloth after it is woven is meant here. So also here, that the  $\bar{a}d\bar{e}sa$  of  $lak\bar{a}ra$  should take its place, which will, afterwards, get the  $\bar{a}tman\bar{e}pada$   $sa\dot{m}j\tilde{n}\bar{a}$ .

अथ वा पुनरस्तु नियमः Or let it be considered as niyama.

ननु चोक्तं विकरणैर्व्यवहितत्वान्नियमो न प्राप्नोति

Oh, it was said that there cannot be niyama on account of the interception of vikaranas.

नैष दोषः । आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति विकरणेभ्यो नियमो बलीयान् इति, यदयं विकरणविधौ आत्मनेपदपरसैपदान्याश्रयति पुषादिद्युताद्य्ळिदितः परसैपदेषु, आत्मने-पदेष्वन्यतरस्याम् इति ।

This defect cannot stand. The procedure of  $\bar{A}c\bar{a}rya$  suggests that niyama is stronger than vikaraṇa since, he holds  $\bar{a}tman\bar{e}$ pada and parasmāipada as the basis for vikaraṇavidhi in the sūtras Puṣādi-dyutādi-lditaḥ parasmāipadēṣu (3, 1, 55) and  $\bar{A}tman\bar{e}pad\bar{e}$ ṣvanyatarasyām (2, 4, 44).

नैतद्दित ज्ञापकम् । अभिनिर्शृत्तानि हि लस्य स्थाने आत्मनेपदानि परस्मैपदानि च This cannot be  $j\tilde{n}\bar{a}paka$ , for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations and  $parasm\bar{a}ipada$  terminations are entitled to be  $\bar{a}d\bar{e}sas$  of  $lak\bar{a}ra$ .

 $\mathbf{Note}:=Kar{a}iyata$  reads here :— $Prar{a}g$  api niyam $ar{a}t$  tēṣ $ar{a}m$  sambhavam $ar{a}trar{e}$ ņa nimittatva-avir $ar{o}dhar{a}t$ .

यत्तर्हि अनुपसर्गाद्वा इति विभाषां शास्ति

If so, it is secured by the fact that  $\bar{A}c\bar{a}rya$  enjoins  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  in the  $s\bar{u}tra\ Anupasarg\bar{a}d\ v\bar{a}$  (1, 3, 43).

#### III

किं पुनरयं प्रत्ययनियमः - अनुदात्तिक्ति एव आत्मनेपदं भवति, भावकर्मणोरेव आत्मनेपदं भवति इति, आहोस्वित् प्रकृत्यर्थनियमः - अनुदात्तिक्ति आत्मनेपदमेव, भावकर्मणोरात्मनेपदमेव इति?

Does this restrict the use of the pratyaya that, if ātmanēpada is to be used, it should be used only after anudattēt and nidanta and only in bhāvēprayōga and karmani-prayōga or the prakrti and its meaning that, after anudāttēt and nidanta and in bhāvē-prayōga and karmani-prayōga, only ātmanēpada terminations should be used?

कश्चात्र विशेष:? What is the difference here?

# तत्र प्रत्ययनियमे शेषवचनं परसौपदस्यानि इत्तत्वात्

Of them, if it is pratyaya-niyama, there is need for the word  $\cdot \dot{s}\bar{e}s\bar{a}t$  on account of  $parasm\bar{a}ipada$  not being prevented after them.

तल प्रत्ययनियमे शेषप्रहणं कर्तव्यम् परसीपदनियमार्थं 'शेषात् कर्तरि परसी-पदम्' इति

Of them, if it is pratyaya-niyama, there is need for the word  $\pm \bar{e} \bar{s} \bar{a} t$  to restrict the use of  $parasm\bar{a}ipada$  in the  $\pm \bar{u}tra$   $\pm \bar{e} \bar{s} \bar{a} t$   $kartari\ parasm\bar{a}ipadam$ .

किं कारणम्? Why?

परसौपदस्य अनिवृत्तत्वात् - प्रत्यया नियताः प्रकृत्यर्थी अनियतौ ; तत्र परसौ-पदमि प्राप्तोति । तत्र शेषग्रहणं कर्तव्यं परसौपदिनयमार्थं शेषादेव परसौपदं भवति नान्यत इति

On account of the parasmāipada not being prevented. The pratyayas have been restricted and prakrti and artha have not been restricted; hence is chance for parasmāipada also to be used there. Therefore the word śēṣāt has to be read to restrict the use of parasmāipada, so that parasmāipada can be used only after the rest and after none else.

#### क्यष आत्मनेपदवचनं तस्यान्यत्र नियमात्

The need for the mention of  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  after kyas (in the  $s\bar{u}tra\ V\bar{a}\ kyasah$  (1, 3, 90) on account of its being restricted elsewhere.

क्यष आत्मनेपदं वक्तव्यम् - लोहितायति, लोहितायते

Mention should be made of ātmanēpada after kyas so that the form lōhitāyatē between lōhitāyati and lōhitāyatē can be achieved.

किं पुनः कारणं न सिध्यति श Why is it not achieved? तस्यान्यत्र नियमात् - तद्धि अन्यत्र नियम्यते

On account of its being restricted elsewhere – for it has been restricted elsewhere (i e. after anudāttēt and nidunta).

Note:— $N\bar{a}g\bar{e}\hat{s}a$  says that the  $s\bar{u}tra$   $V\bar{a}$  kyasah (1, 3, 90) and the following three  $s\bar{u}tras$  are suggested to be read before the  $s\bar{u}tra$   $\hat{S}\bar{e}s\bar{a}t$  kartari  $parasm\bar{a}ipadam$  (1, 3, 78).

उच्यते च, न च प्राप्तोति । तद् वचनाद्भविष्यति

It is said and it is argued that it has no chance. It gets the chance on account of its being stated.

अस्तु तर्हि प्रकृत्यर्थनियमः Let it, then, be prakṛtyartha-niyama.

# प्रकृत्यर्थनियमेऽन्याभावः

If it is taken as prakṛtyartha-niyama, there is no chance for others.

प्रकृत्यर्थनियमे अन्येषां प्रत्ययानामभावः । अनुदात्तिङ्तः तृजाद्यो न प्राप्नुवन्ति । If it is taken as prakṛṭyartha-niyama, there is no chance for other pratyayas. The pratyayas, trc etc., have no chance to come after anudāttēt and nidanta.

नैष दोष: । अनवकाशास्तृजादय:, उच्यन्ते च, ते वचनाद् भविष्यन्ति This defect does not arise;  $trj\bar{a}dis$  have no room to operate; they are read and they go after them on account of their being read.

सावकाशास्तृजाद्यः Trjādis have room to operate.

कोऽवकाशः ! Where is the room for them to operate ? परसैपदिनोऽवकाशः

They operate where parasmāipada terminations operate.

. तत्रापि नियमान्न प्राप्नवन्ति

They do not operate there too on account of niyama (that only parasmāipada terminations come after them).

तव्यदाद्यस्तर्हि भावकर्मणोर्नियमान्न प्राप्नवन्ति

If so, tavyad etc. cannot have chance to operate after them in bhāvēprayōga and karmaṇiprayōga on account of niyama.

FOURTEENTH ÄHNIKA-ANUDĀTTANITA ĀTMANĒPADAM 267

तब्यदादयोप्यनवकाशाः । ते वचनाद् भविष्यन्ति

 $Tavyad-\bar{a}dis$  too are  $anavak\bar{a}sas$ ; they operate on account of their being read.

चिण तर्हि भावकर्मणोर्नियमान प्राप्नोति

If so, cin has no chance to appear in  $bh\bar{a}v\bar{e}pray\bar{o}ga$  and  $karmanipray\bar{o}ga$  on account of niyama.

चिण् वचनाद् भविष्यति

Cin appears on account of its being read.

घर्ड् तर्हि भावकर्मणोर्नियमान्न प्राप्तोति

If so,  $gha\dot{n}$  has no chance to appear in  $bh\bar{a}v\bar{e}pray\bar{o}ga$  and  $karmanipray\bar{o}ga$  on account of niyama.

तत्रापि प्रकृतं कर्मग्रहणमनुवर्तते

The word karma is taken even there by anuvrtti from the context.

क प्रकृतम् ?

What is that sūtra which is found in the context?

अण्कर्मणि च इति The sūtra An karmani ca (3, 3, 12)

Note:—The word karmani is taken to the  $s\bar{u}tra$   $Bh\bar{a}v\bar{e}$  (3, 3, 18) by anuvrtti from the  $s\bar{u}tra$  An karmani ca (3, 3, 12.)

तद्वै तत्रोपपदिविशेषणम् । अभिधेयविशेषणेन चेहार्थः । न चान्यार्थं प्रकृत-मन्यार्थं भवति । न खल्वप्यन्यत् प्रकृतम् अनुवर्तनादन्यद् भवति ; न हि गोधा सर्पन्ती सर्पणादिहर्भवित

Oh, it is there upapada-viśēṣaṇam (i e.) upapad u-viśēṣōpasthā-pakam. It should be viśēṣaṇa to the dhātvartha here. That which has one purpose there cannot have another purpose here. It is not right to say that which is one thing here becomes a different thing when it goes elsewhere. A lizard moving cannot become a serpent simply because it has gone to another place.

यत्तावदुच्यते नान्यार्थं प्रकृतमन्यार्थं भवतीति, अन्यार्थमपि प्रकृतमन्यार्थं भवति -तद्यथा शाल्यर्थं कुल्याः प्रणीयन्ते, ताभ्यश्च पानीयं पीयते, उपस्पृश्यते, शालयश्च भाव्यन्ते । As regards the statement 'that which has one purpose there cannot have another purpose here', (it may be said that) which has one purpose here is found to have another purpose also elsewhere. For instance channels are cut for the sake of paddy; they are used for drinking water and for purification; and the paddy also is got.

यद्प्युच्यते 'न खल्वप्यन्यत् प्रकृतमनुवर्तनादन्यद् भवति न हि गोधा सर्पन्ती स्पिणादहिर्भवति ' इति, भवेद् द्रव्येषु एतदेवं स्यात्; शब्दस्तु खळु येन येन अभिसंबध्यते तस्य तस्य विशेषको भवति ।

As regards the statement 'that which is one thing here does not become a different thing when it goes elsewhere and that a lizard moving cannot become a serpent simply because it has gone to another place,' it may be with reference to objects; but the same śabda becomes adjunct in different ways with reference to different kinds of viśēṣyas.

शेषग्रचनं च The need for the mention of sēṣa too.

शेषवचनं च कर्तव्यं शेषात् कर्तरि परसैपदम् इति

There is need to mention the word  $\hat{s}\bar{e}s\bar{a}t$  in the  $s\bar{u}tra$   $\hat{S}\bar{e}s\bar{a}t$  kartari parasm $\bar{a}i_{l}adam$  (1, 3, 78.)

किं प्रयोजनम्? Why?

शेषनियमार्थम् । प्रकृत्यर्थी नियतौ, प्रत्यया अनियताः, ते शेषेऽिष प्राप्तुवन्ति । तत्र शेषप्रहणं कर्तव्यम् - शेषात् कर्तरि परसौपदमेव नान्यदिति ।

For the sake of śēṣaniyama. Prakṛti and artha are niyata and pratyayas are aniyata and hence they may chance to go in with the śēṣa too. Hence mention of the word śēṣāt in the sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam is necessary, so that it may enjoin that parasmāipada terminations alone will go with them.

# कर्तरि चात्मनेपद्विषये परसौपद्प्रतिषेधार्थम्

To prohibit parasmāi pada terminations from coming in kartariprayoga in place of ātmanē pada terminations.

कर्तरि चात्मनेपदिवषये परसौपदिपतिषेधार्थ द्वितीयं शेषप्रहणं कर्तव्यम् । शेषाच्छेषे इति वक्तव्यम् । इह मा भूत् - भिद्यते कुसूरुः स्वयमेव इति । In order to prohibit parasmāipada terminations from appearing in place of  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations in  $kartari-pray\bar{o}ga$ , the word  $s\bar{e}sa$  has to be read the second time thus:  $-s\bar{e}s\bar{a}cc\bar{e}s\bar{e}$ , so that parasmāipada terminations may not appear in the word  $bhidyat\bar{e}$  of the sentence  $bhidyat\bar{e}$   $kus\bar{u}lah$  svayam  $\bar{e}va$  (granary opens itself).

कतरसिन् पक्षेऽयं दोषः ? In which pakṣa does this defect arise ? श्रकृत्यर्थनियमे When there is niyama for prakṛti and artha.

प्रकृत्यर्थनियमे तावन्न दोषः । प्रकृत्यर्थी नियती, प्रत्यया अनियताः, तत्र नार्थः कर्तृप्रहणेन । कर्तृप्रहणाचैष दोषः

This defect does not arise in prakrtyartha-niyama-pakṣa. Prakrti and artha are niyata and pratyayas are aniyata and hence no purpose is served by the word kartari (in the  $s\bar{u}tra$   $\hat{S}\bar{e}s\bar{a}t$  kartari  $parasm\bar{a}ipadam$ ). The mischief is due to its mention.

प्रत्ययनियमे तहीयं दोषः । प्रत्यया नियताः, प्रकृत्यर्थी अनियतौ, तत्र कर्तृ-ग्रहणं कर्तव्यं भावकर्मणोर्निवृत्त्यर्थम् । कर्तृत्रहणाचेष दोषः

If so, the defect arises only in pratyaya-niyama-pakṣa. Pratya-yas are niyata and prakṛti and artha are aniyata and hence there is the necessity to mention kartari to prevent the parasmāipada terminations appearing in bhāvēprayōga and karmani-prayōga. The defect mentioned above arises only on the mention of kartari.

प्रकृत्यर्थनियमे शेषप्रहणं शक्यमकर्तुम् It is possible to omit the word śēṣāt in prakṛtyartha-niyamapakṣa.

कथम् ? How?

प्रकृत्यर्थी नियती, प्रत्यया अनियताः । ततो वक्ष्यामि प्रसौपदं भवतीति । तिव्यमार्थं भविष्यति - यत्र प्रसौपदं चान्यच प्राप्तोति, तत्र प्रसौपदमेव भवतीति Prakrti and artha are niyata and pratyayas are aniyata. I shall then read parasmāipadam bhavati. It is taken as a niyamavidhi meaning that parasmāipada alone appears where there is chance for parasmāipada and one other than parasmāipada.

तत्ति प्रत्ययनियमे द्वितीयं शेषप्रहणं कर्तव्यम्

If so, if pratyaya-niyama-pakṣa is acceded to, there is need to mention śēṣa the second time.

Note:— $N\bar{a}g\bar{e}\hat{s}a$  says that, since  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$  has read  $\hat{s}\bar{e}\bar{s}\bar{a}t$  and kartari, he favours the pratyaya-niyama-pak $\bar{s}a$ .

न कर्तव्यम् । योगविभागः करिष्यते 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्', ततः 'भावकर्मणोः,' ततः 'कर्तरि' - कर्तरि चात्मनेपदं भवति भावकर्मणोः - ततः 'कर्मव्यतिहारे,' कर्तरीत्येव । भावकर्मणोरिति निवृत्तम्

No, it need not be done. The sūtra Kartari karmavyatihārē which follows the sūtras Anudāttanita ātmanēpadam and Bhāvakarmanōh is split into two sutras Kartari and Karmavyatihārē, where the sūtra Kartari means kartari ca ātmanēpadam bhavati bhāvakarmanōh and then is read karmavyatihārē where there is no anuvrtti for bhāvakarmanōh.

यथैवं तर्हि कर्मणि कर्तिर भवति, एवं भावेऽपि कर्तिर प्राप्तोति, एति जीवन्त-मानन्दः, नास्य किश्चिद्भजति इति ।

If so, just as  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  appears when karma is used as  $kart\bar{a}$ , so also will it appear when  $bh\bar{a}va$  is used as  $kart\bar{a}$ , as in  $\bar{e}ti$   $j\bar{v}antam$   $\bar{a}nandah$  and  $n\bar{a}sya$   $ki\tilde{n}cid$  rujati.

द्वितीयो योगविभागः करिष्यते — 'अनुदात्तिक्ति आत्मनेपदम्', ततः 'भावे ततः 'कर्माणे' — 'कर्मणि चात्मनेपदं भवति, ततः 'कर्तरि' – कर्तरि चात्मनेपदं भवति, ततः 'कर्मणीत्यनुवर्तते, भाव इति निवृत्तम् । ततः कर्मव्यतिहारे, कर्तरीत्येव, कर्मणीति निवृत्तम्

Another sūtra-split will be done:—The sūtra 'Anudāttanita ātmanēpadam' is read; then 'Bhāvē' is read as a separate sūtra; then 'Karmani' is read as a sūtra, meaning that ātmanēpada appears in karmani-prayōga; then Kartari is read where there is anuvrtti for karmani and not for bhāvē so that it means that ātmanēpada appears in karma-kartari-prayōga; then is Karmavyatihārē read where there is anuvrtti only to kartari and not to karmani.

एवमिप शेषप्रहणं कर्तव्यम् अनुपराभ्यां कृञ इत्येवमर्थम् । इह मा भूत् अनुकियते स्वयमेव, पराकियते स्वयमेव Even then, there is need for the mention of śēṣa for the sake of Anuparābhyām kṛñaḥ so that it may not operate in Anukriyatē svayam ēva and Parākriyatē svayam ēva.

ननु चैतद्पि योगविभागादेव सिद्धम्

Oh, this too is achieved by sūtra-split itself.

न सिध्यति । अनन्तरा या प्राप्तिः सा योगविभागेन शक्या बाधितुम् No, it is not achieved. That which has an immediate prāpti can be set at naught.

कृत एतत्? How is this arrived at? अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा इति

Vidhi or pratisēdha refers to what is nearest.

परा प्राप्तिरप्रतिषिद्धा तया प्रामोति

The prāpti (from the sūtra Anuparābhyām kṛñaḥ 1, 3, 79) which is at a distance is not set at naught and hence it will operate through it.

ननु चेयं प्राप्तिः परां प्राप्तिं बाधते

Oh, the  $pr\bar{a}pti$  here sets at naught the  $pr\bar{a}pti$  at a distance (through  $p\bar{u}rvavipratis\bar{e}dha$ ).

नोत्सहते प्रतिषिद्धा सती बाधितुम्

That which is set at naught has no capacity to set another at naught.

Note:—Nāgēśa reads here:—Utsargāpavādayōr ēkavākyatayā apavādaviṣayē utsargāprasaktēr iti bhāvaḥ.

एवं तर्हि कर्तरि कर्मव्यतिहारे इत्यत्र कर्तृग्रहणं प्रत्याख्यायते । तत् प्रकृतमुत्तरत्र अनुवर्तिष्यते - शेषात् कर्तरि कर्तरि इति

If so, the word kartari in the sūlra Kartari karmavyatihārē is pronounced to be unnecessary. It is taken here, so that the sūlra Śēṣāt kartari parasmāipadam is read thus:—Śēṣāl kartari kartari parasmāipadam.

किमथिमिदं कर्तरि कर्तरि इति ! What for is this kartari kartari?

कर्तेव यः कर्ता तत्र यथा स्यात् । कर्ता चान्यश्च यः कर्ता तत्र मा भूदिति । ततः अनुपराभ्यां कृत्रः, कर्तरि कर्तरि इत्येव

So that it will operate where  $kart\bar{a}$  itself is  $kart\bar{a}$  and not where both  $kart\bar{a}$  and one other than  $kart\bar{a}$  are  $kart\bar{a}$ . The  $s\bar{u}tra$   $Anupar\bar{a}bhy\bar{a}m$   $kr\tilde{n}ah$  will operate only when then  $kart\bar{a}$  is  $kart\bar{a}$ .

Note:—Since the Sūtrakāra has read the words śēṣāt and kartari in the sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam, he favours only pratyaya-niyama-pakṣa. Vārttikakāra pointed out that, in that pakṣa, the four sūtras commencing with Vā kyaṣaḥ should be read before the sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam. He then pointed out a defect in the prakṛtyartha-niyama-pakṣa and suggested that the word śēṣē should be added after śēṣāt in the sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam. Mahābhāṣyakāra favours prakṛtyartha-niyama-pakṣa, answers the defects pointed out by the Vārttikakāra in that pakṣa and further suggests that the words śēṣāt and kartari are unnecessary in the sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam. He then meets by yōgavibhāga the defect in the pratyaya-niyama-pakṣa with reference to karma-kartari-prayōga.

# कर्तरि कर्मव्यतिहारे (1, 3, 14)

Two topics are dealt with here:-(1) Whether the word karma may be replaced by  $kriy\bar{a}$ . (2) The need for kartari in the  $s\bar{u}tra$ ?

T

क्रियाव्यतिहारे There is need to read kriyāvyatihārē.

क्रियान्यतिहार इति वक्तन्यम्  $Kriy\bar{a}vyatih\bar{a}r\bar{\epsilon}$  is to be read.

कर्मव्यतिहार इत्युच्यमाने इहापि प्रसज्येत - देवदत्तस्य धान्यं व्यतिछनन्ति इति, इह च न स्यात् - व्यतिछन्ते, व्यतिपुनत इति

If karma-vyatihārē is read, ātmanēpada may have chance to appear even in vyatilunanti in the sentence Dēvadattasya dhānyam vyatilunanti and it will not appear in vyatilunatē, vyatipunatē.

Note:—1. The intention of the  $s\bar{u}tra$  is that, if a  $dh\bar{a}tu$  is used with reference to one who is not enjoined to do the  $kriy\bar{a}$  meant by the root in  $\hat{s}\bar{a}stras$ , it takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ 

terminations in the active voice. Hence the  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$  has read the word karma in the  $s\bar{u}tra$  in the sense of  $kriy\bar{a}$ . But the  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$ , fearing that it may denote the technical karma ( $kartur\ \bar{\imath}psitatamam\ karma$ ) and consequently that the  $\bar{a}tman\bar{e}$ -pada may appear where there is vinimaya in the fruit of the action suggests this.

Note:—2.  $K\bar{a}iyata$  states that  $D\bar{e}vadattasv\bar{a}mikam$   $dh\bar{a}-nyam$   $lavan\bar{e}na$   $sv\bar{i}kurvanti$  is the meaning of  $D\bar{e}vadattasya$   $dh\bar{a}-nyam$  vyatilunanti.

तत्ति वक्तव्यम् It, then, has to be so read.

न वक्तव्यम् । कियां हि लोके कर्नेत्युपचरन्ति, कां कियां करिष्यिस किं कर्म करिष्यसि ? इति

No, it need not be so read. For the people in the world use the word karma in the sense of  $kriy\bar{a}$  as in,  $K\bar{a}\dot{m}$   $kriy\bar{a}\dot{m}$  karisyasi,  $Ki\dot{m}$  karma karisyasi.

एवमपि कर्तव्यम् । कृत्रिमाकृत्रिमयोः कृत्रिमे कार्यसंप्रत्ययः

Even then it should be so read. When one has one sense technically and another universally,  $k\bar{a}rya$  takes place only to the former.

कियापि कृत्रिमं कर्म

Even kriyā is krtrima-karma (as in bhōktum icchati).

न सिध्यति । कर्तुरीप्सिततमं कर्म इत्युच्यते । कथं च किया नाम कियया ईप्सिततमा स्थात्?

No, it cannot be so. It is said that karma is kartur  $\bar{\imath}psitatamam$ . How can  $kriy\bar{a}$  be  $\bar{\imath}psitatam\bar{a}$  through  $kriy\bar{a}$ .

क्रियापि क्रिययेप्सिततमा भवति

Kriyā, too, does become īpsitatamā through kriyā.

कया कियया? By which kriyā?

संपञ्यतिकियया प्रार्थयतिकियया अध्यवस्थितिकियया वा । इह य एष मनुष्यः प्रेक्षापूर्वकारी भवति स बुद्ध्या तावत् कञ्चिद्धे सम्पश्यति, संदृष्टे प्रार्थना, प्रार्थिते अध्यवसायः, अध्यवसाये आरम्भः, आरम्भे निर्वृत्तिः, निर्वृत्तौ फळावाप्तिः । एवं क्रियापि कृत्रिमं कर्म । Through the  $kriy\bar{a}$  of comprehension, through the  $kriy\bar{a}$  of desire to get the fruit or through the  $kriy\bar{a}$  of determination. He who is here a man of foresight first conceives an object in his mind, desires then to get it, determines then to get it, draws a plan in his mind then how to get it, acts then to get it and finally arrives at the fruit. Hence  $kriy\bar{a}$  too is krtrima karma.

एवमप्युभयोः कृतिमयोरुभयगतिः प्रसज्येत । तसात् क्रियाव्यतिहार इति वक्तव्यम्

If both are, then, krtrima, there is chance for both to be denoted and hence it is necessary to read kriyā-vyatihāra.

न वक्तव्यम् । इह कर्तरि व्यतिहारे इतीयता सिद्धम् । सोऽयम् एवं सिद्धे सित यत् कर्मग्रहणं करोति तस्यतत्प्रयोजनम् - क्रियाव्यतिहारे यथा स्यात् कर्मव्यति-हारे मा भूदिति ।

No, it need not be so read. The object will be achieved if the  $s\bar{u}tra$  here is simply read  $Kartari\ vyatih\bar{a}r\bar{e}$  without the word karma. When it can thus be achieved, he reads the word karma and the benefit of its mention is that it suggests that action takes place only when there is  $kriy\bar{a}$ - $vyatih\bar{a}ra$  and not karma- $vyatih\bar{a}ra$ .

II

## अथ कर्तृग्रहणं किमर्थम् ?

What is the need for the word kartari in the sūtra?

# कर्मव्यतिहारादिषु कर्तृग्रहणं भावकर्मनिवृत्त्यर्थम्

Mention of kartari in karmavyatihāra etc. is to prohibit the same in bhāvēprayōga and karmaṇi-prayōga.

कर्मन्यतिहारादिषु कर्तृत्रहणं क्रियते, भावकर्मणोरनेन आत्मनेपदं मा भूदिति l Mention of kartari is made with reference to karma-vyatihāra etc. so that ātmanēpada terminations may not appear in bhāvē prayōga and karmani-prayōga in such cases by this sūtra.

## इतरथा हि तत्र प्रतिषेधे भावकर्मणोः प्रतिषेधः

Or at the prohibition (of  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ ) in kartari, the same will apply to  $bh\bar{a}v\bar{e}$  and karmani.

अित्रयमाणे कर्त्रग्रहणे भावकर्मणोरप्यात्मनेपदमनेन प्रसज्येत ।

If kartari is not read in the sūtra, there is chance for ātmanēpada in bhāvē and karmaņi too by this sūtra.

तत्र को दोषः ? What harm is there?

तल प्रतिषेधे भावकर्मणोः प्रतिषेधः - तत्र प्रतिषेधे भावकर्मणोरप्यनेनात्मनेपदस्य प्रतिषेधः प्रसज्येत - व्यतिगम्यन्ते ग्रामाः, व्यतिहन्यन्ते दस्यव इति

Tatra pratiṣēdhē bhāvakarmaṇōḥ pratiṣēdhaḥ—there is chance for ātmanēpada-pratisēdha in bhāvē and karmani in places where there is pratisēdha for the same in kartari, so that, (by the operation of the sūtra Na gatihimsārthēbhyah) ātmanēpada will have no chance in the forms vyatigamyante and vyatihanyante in the sentences vyatigamyantē grāmāh and vyatihanyantē dasyavah.

## न वानन्तरस्य प्रतिषेधात्

No, on account of the pratisēdha to what is immediate.

न वा एष दोषः This difficulty does not arise.

किं कारणम् श Why?

अनन्तरस्य प्रतिषेधात् - अनन्तरं यदात्मनेपदविधानं तस्य प्रतिषेधात् On account of the pratisēdha to the ātmanēpada-vidhāna which is immediate.

कुत एतत्? What is the authority for this?

अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेघो वा इति

On the dictum Anantarasya vidhir vā bhavati pratiṣēdhō vā.

पूर्वा प्राप्तिरप्रतिषिद्धा तया मविष्यति

The prāpti by the previous sūtra (Bhāvakarmaṇōh) is not prohibited and ātmanēpada appears here on the strength of that sūtra.

नन चेयं प्राप्तिः पूर्वी प्राप्तिं बाधते

Oh! this sets at naught the previous one.

नोत्सहते प्रतिषिद्धा सती बाधितुम्

That which is set at naught has no capacity to set another at naught.

उत्तरार्थम् For the sake of that which follows.

उत्तरार्थं तर्हि कर्तृग्रहणं कर्तव्यम्

The word kartari has, then, to be read so that it may be taken by anuvrtti in that which follows.

न कर्तव्यम् । क्रियते तत्रैव शेषात्कर्तरि परसौपदम् इति

No, it need not be read. It is read in that  $s\bar{u}tra$  itself  $\dot{S}\bar{e}s\bar{a}t$ . kartari parasmāipadam.

द्वितीयं कर्तृप्रहणं कर्तव्यम्

There is need for the word kartari to be read for the second time.

किं प्रयोजनम् ? Why?

कतैंव यः कर्ता तत्र यथा स्यात्, कर्ता चान्यश्च यः कर्ता तत्र मा भूदिति So that parasmāipada may appear only when kartā here is the kartā (in kartari-prayōga) and not when it is kartā and karma etc. elsewhere (as in karma-kartari-prayōga etc.)

# न गतिहिंसार्थेभ्यः (1, 3, 15)

प्रतिषेधे इसादीनामुपसङ्ख्यानम् Addition of hasādis in the pratisēdha.

प्रतिषेषे हसादीनामुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - व्यतिहसन्ति, व्यतिजलपन्ति, व्यतिपठन्ति

There is need to add has etc. to the roots having gatyartha and himsārtha where ātmanēpada terminations are prohibited, to secure the forms vyatihasanti, vyatijalpanti and vyatipaṭhanti.

Note:— $K\bar{a}iyata$  reads here:— $Hasiprak\bar{a}r\bar{a}n\bar{a}m$   $\pm abda-kriy\bar{a}n\bar{a}m$ .

हरिवह्योरप्रतिषेधः Non-pratisedha to the roots hr and vah.

हरिवद्योरप्रतिषेघो भवतीति वक्तव्यम् - सम्प्रहरन्ते राजानः, संविवहन्ते गर्गैः इति Mention should be made that the pratisēdha does not apply to the roots hr (himsārthaka) and vaḥ (gatyarthaka), so as to secure the forms sampraharantē and samvivahantē in the sentences sampraharantē rājānaḥ and samvivahantē gargāiḥ.

न वहिर्गत्यर्थः । देशान्तरप्रापणिकयोऽत्र वहिः

The root vah does not mean to go, but now it only means to enable another to reach another place.

Note:—The two  $v\bar{a}rtlikas$  above supplementing and restricting the application of the  $s\bar{u}tras$  of  $\bar{A}c\bar{a}rya$   $P\bar{a}nini$  clearly testify that Sanskrit Language underwent changes in her growth from the time of the  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$  to that of the  $V\bar{a}rtlika-k\bar{a}ra$ . The statement Na vahir gatyarthah of  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  shows that she underwent further change before the time of  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ . It is only with reference to the change in the form and the meaning of words recorded by  $V\bar{a}rtlikak\bar{a}ra$  and  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$  that the statement  $Yath\bar{o}ttaram$   $mun\bar{n}n\bar{a}m$   $pr\bar{a}m\bar{a}nyam$  chiefly holds.

# इतरेतरान्योन्योपपदाच (1, 3, 16)

परस्परोपपदाच Along with the upapada paraspara too.

परस्परोपपदाचेति वक्तन्यम् परस्परस्य न्यतिस्नुनन्ति, परस्परस्य न्यतिपुनन्ति
The word paraspara also has be added in the sūtra so as to secure the following expressions:—Parasparasya vyatilunanti, parasparasya vyatipunanti.

# विपराभ्यां जे: (1, 3, 19)

विपराभ्यामित्युपसर्गग्रहणम्

Reading of upasarga as adjunct to vi and parā.

उपस्रोग्रह्णं कर्तव्यम् - इह मा भूत् - परा जयित सेना इति
There is need to read upasarga as adjunct to vi and  $par\bar{a}$  so that the  $pratis\bar{e}dha$  may not appear in the expression  $par\bar{a}$  jayati of the sentence  $par\bar{a}$  jayati  $s\bar{e}n\bar{a}$ .

Note:— $Par\bar{a}$  here means  $prakrst\bar{a}$  and qualifies  $s\bar{e}n\bar{a}$ .

तत्ति वक्तव्यम् It, then, has to be read.

न वक्तव्यम् No, it need not be read.

यद्यपि तावदयं पराशब्दो दृष्टापचार उपसर्गश्चानुपसर्गश्च, अयं खल्ल विशब्दोऽ-दृष्टापचार उपसर्ग एव । तस्यास्य कोऽन्यो द्वितीयः सहायो भवितुमहिति अन्यदत उपसर्गात् । तद्यथा - अस्य गोद्वितीयेनार्थः इति गौरेवोपादीयते, नाश्चो न गर्दभ इति

Even though this word  $par\bar{a}$ , going out of the range of upasarga, may be used both as upasarya and non-upasarga, this

word vi does not go out of the range of upasarga and is used only as upasarga. Which second can be associated with it other than an upasarga? For instance, if one says I want one which is second to this cow, only a cow is brought before him and neither a horse nor an ass.

## आङो दोऽनास्यविहरणे (1, 8, 20)

#### आङो दोऽन्यसनिक्रयस्य

 $\bar{A}tman\bar{e}pada$  terminations to the root  $d\bar{a}$  with  $\bar{a}\dot{n}$  in meanings other than dividing.

आङो दोऽञ्यसनिकयस्य इति वक्तव्यम् - इहापि यथा स्यात् विपादिकां व्याददाति, कूळं व्याददाति इति

It should be read that  $d\bar{a}$  with  $\bar{a}\dot{n}$  takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  if its meaning is anything other than dividing, so that  $parasm\bar{a}i$ -pada terminations may appear in the word  $vy\bar{a}dad\bar{a}ti$  in the sentences  $vip\bar{a}dik\bar{a}m$   $vy\bar{a}dad\bar{a}ti$  (he opens the tumor on the foot) and  $k\bar{u}lam$   $vy\bar{a}dad\bar{a}ti$  (it breaks open the bank.)

तत्ति वक्तव्यम् It, then, has to be read.

न वक्तव्यम् । इह आङो दोऽनास्य इतीयता सिद्धम् । सोऽयमेवं सिद्धे सित यद्विहरणश्रहणं करोति तस्यैतत्प्रयोजनम् - आस्यविहरणसमानिकयादिप यथा स्यात् । यथाजातीयका चास्यविहरणिकया तथाजातीयकात्रापि

No, it need not be read. The object of the Sūtrakāraka will here be achieved by reading the sūtra Āṇō dōsnāsyē. When such is the case, he has read the sūtra with the word viharaṇa added to it. Its prayōjana is that the operation of the sūtra extends to all meanings similar to āsyaviharaṇa, which belong to the same class.

खाङ्गकर्मकाच After that which has for its object its own limb.

· स्वाङ्गकर्मकाचेति वक्तव्यम् । इह मा भृत् - व्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम् इति

It must be read that the  $pratis\bar{e}dha$  holds good only when dividing one's own limb is referred to, so that it may not operate here— $Vy\bar{a}dadat\bar{e}$   $pip\bar{\imath}lik\bar{a}h$   $pata\dot{n}gasya$  mukham.

# क्रीडोऽनुमंपरिभ्यश्र 1, 3, 21)

उपसर्गप्रहणम् (Need) to read upasarga.

उपसंगिष्रहणं कर्तव्यम् । इह मा भूत् अनु की डिति माणवकम् इति
There is need to read upasarga-anu, so that it may not operate here in Anu krīḍati māṇavakam (he plays with the pupil).

Note: Here anu has karmapravacanīyasamiñā.

समोऽक्जने Krid with sam in the sense other than  $k\bar{u}jana$ .

समोऽकूजन इति वक्तन्यम् - इह मा भूत्, सङ्क्रीडन्ति शकटानि It must be read that krīḍ with sam takes ātmanēpada terminations only when it has any meaning other than making noise, so that it may not operate here in sankrīḍanti śukaṭāni (carts rattle).

## आगमेः क्षमायाम्

(Addition) of the causal of gam with  $\bar{a}$  in the sense of waiting patiently.

आगमे: क्षमायाभुपसङ्ख्यानं हर्ते .म् - माणवक आगमयस्व तावत् There is need to add to the list the causal of gam with ā in the sense of waiting patiently, so that ātmanēpada may be used here in Mānavaka āgamayasva tāvat (Oh pupil, wait patiently for some time).

शिक्षेजिज्ञासायाम् (Addition) of śikṣ in the sense of jijñāsā.

शिक्षेजिज्ञासायामुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - विद्यासु शिक्षते, धनुषि शिक्षते । Addition of śikṣ in the sense of eagerness to know should be added so that ātmanē pada may be used in Vidyāsu śikṣatē and Dhanuṣi śikṣatē.

Note:—Kāiyaṭa reads here:—Śakiḥ sannantō grhyatē iti vidhyartham idam. Nāgēśa adds here:—Icchā san-arthaḥ, śaktiḥ prakṛtyarthaḥ, tasya jñānaviṣayatvam ātmanēpadadyōtyam iti.

## किरतेई**र्षजीविकाकुलायकरणे**षु

Addition of  $k\bar{r}$  with reference to pleasure, living and preparing a place to remain.

किरतेईर्षजीविकाकुलायकरणेषु उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - अपस्किरते वृषो हृष्टः, अपस्किरते कुक्कुटो भक्ष्यार्थी, अपस्किरते श्वा आश्रयार्थी ।

There is need to add the root  $k\bar{r}$  when pleasure is the cause and living and making a place to remain are the fruit so that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  may be used in  $Apaskirat\bar{e}$   $vrs\bar{o}$  hrstah (Bull scrapes with the feet through joy.)  $Apaskirat\bar{e}$  kukkut $\bar{o}$  bhaksy $\bar{a}$ -rth $\bar{i}$  (Cock scrapes with the feet in search of food) and  $Apaskirat\bar{e}$  śv $\bar{a}$   $\bar{a}$ śray $\bar{a}$ rth $\bar{i}$  (Dog scrapes with the feet to prepare a place to remain).

हरतेर्गतताच्छील्ये Addition of hr in the sense of taking after.

हरतेर्गतताच्छील्ये उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - पेतृकमश्वा अनुहरन्ते, मातृकं गावोऽनुहरन्ते

Addition is to be made of the root hr when it means to take after with reference to the features etc. so that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  may be used in  $P\bar{a}itrkam\ a\acute{s}v\bar{a}\ anuharant\bar{e}$  (Horses take after their father, their features etc.) and  $M\bar{a}trkam\ g\bar{a}v\bar{o}$ snuharant $\bar{e}$  (Cows take after their mother, their features etc.).

आशिषि नाथः (Addition of)  $n\bar{a}th$  in the sense of  $\bar{a}sis$ .

आशिषि नाथ उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - सिर्पिषो नाथते, मधुनो नाथते
The root nāth in the sense of āśis is to be added to secure
ātmanēpada in Sarpiṣō nāthatē (he wishes that he may be
blessed with butter) and Madhunō nāthatē (he wishes that he
may be blessed with honey).

Note:— $N\bar{a}g\bar{e}\acute{s}a$  reads:— $Idam\ m\bar{e}\ bh\bar{u}y\bar{a}t\ iti\ icch\bar{a}\ \bar{a}\acute{s}\bar{\imath}h$ .

#### आङि नुप्रच्छयोः

(Addition) of the roots nu and pracch preceded by the preposition  $a\dot{n}$ .

आङि नुप्रच्छ्योरुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - आनुते शृगालः, आष्ट्छते गुरुम् इति Addition has to be made of the roots nu and pracch when they are preceded by the preposition ān to secure ātmanēpada in Ānutē śrgālaḥ (fox cries with anxiety) and Āprechatē gurum (he takes leave of his teacher).

FOURTEENTH ÄHNIKA—SAMAVA...; UDÖSNÜ...; UPÄN... 281

शप उपलम्भने Addition of sap in the sense of telling.

शप उपलम्भन उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - देवदत्ताय शपते, यज्ञदत्ताय शपते The root śap in the sense of to tell should be added to secure ātmanēpada in Dēvadattāya śapatē (He tells Dēvadatta) and Yajñadattāya śapatē (He tells Yajñadatta).

#### समवप्रविभ्यः स्थः (1, 3, 22)

आङः स्थः प्रतिज्ञाने

Addition of  $sth\bar{a}$  with  $\bar{a}\dot{n}$  in the sense of assertion.

आङः स्थः प्रतिज्ञान इति वक्तव्यम् - अस्ति सकारमातिष्ठते, आगमौ गुणवृद्धी आतिष्ठते, विकारौ गुणवृद्धी आतिष्ठते

The root  $sth\bar{a}$  with  $\bar{a}\dot{n}$  in the sense of to assert is to be added to secure  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  in  $Astim\ sak\bar{a}ram\ \bar{a}tisthat\bar{e}$  (He asserts that the root in asti is s.)  $\bar{A}gam\bar{a}u\ gunaverddh\bar{i}\ \bar{a}tisthat\bar{e}$  (He asserts that  $guna\ and\ verddhi\ are\ \bar{a}gama$ ) and  $Vik\bar{a}r\bar{a}u\ gunaverddh\bar{i}\ \bar{a}tisthat\bar{e}$  (He asserts that  $guna\ and\ verddhi\ are\ vik\bar{a}ra$ ).

## उदोऽनूध्वंकर्मणि 1, 2, 24)

उद ईहायाम् Need to read Uda īhāyām.

उद ईहायामिति वक्तव्यम् । इह मा भूत् उत्तिष्ठति सेना इति
It should be read that sthā with ut takes ātmanēpada when it means to be active, so that it may not appear in the expression uttiṣṭhati sēnā (which means the army is collected).

## उपान्मन्त्रकरणे (1, 2, 25)

### उपाद्देवपूजासङ्गतकरणयोः

Need to read  $sth\bar{a}$  with upa in the sense of  $p\bar{u}j\bar{a}$  and  $sa\dot{n}gata$ -karana.

उपाद्देवपूजासङ्गतकरणयोरिति वक्तव्यम् - देवपूजायाम् - आदित्यमुपतिष्ठते, चन्द्रमसमुपतिष्ठते ; सङ्गतकरणे - रथिकादुपतिष्ठते, अश्वारोहानुपतिष्ठते

It must be read that  $sth\bar{a}$  with upa takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  when it means to worship and to meet, as in  $\bar{A}dityam$   $upatisthat\bar{e}$  (he worships the sun), Candramasam  $upatisthat\bar{e}$  (he worships the

moon), Rathikān upatiṣṭhatē (he meets the charioteers) and Aśvārōhān upatiṣṭhatē (he meets the cavalry).

बहूनामप्यचित्तानामेको भवति चित्तवान् । पद्य वानरसैन्येऽस्मिन् यदर्कमुपतिष्ठते ॥

(One at least among many in this army of monkeys has wisdom, since he worships the sun).

मैवं मंखाः सचित्तोऽयमेषोऽपि हि यथा वयम् । एतदप्यस्य कापेयं यदर्कमुपतिष्ठति ॥

(Do not think that he is wise. He is like us. It is his monkeyism that he stands near the sun).

अपर आह Another says :—

## उपाद्देवपूजासङ्गतकरणमित्रकरणपथिषु

Need to read that  $sth\bar{a}$  with upa in the sense of  $d\bar{e}vap\bar{u}j\bar{a}$ ,  $sa\dot{n}gatakarana$ , mitrakarana and pathin.

उपाद्देवपूजासङ्गतकरणमिलकरणपथिष्विति वक्तव्यम्

It must be read that  $sth\bar{a}$  with upa takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  in the meanings of to worship, to meet, to make friends and to lead to.

देवपूजासङ्गतकरणयोरुदाहृतम्

Examples have been given with reference to  $d\bar{e}vap\bar{u}j\bar{a}$  and  $sa\dot{n}gatakarana$ .

मित्रकरणे - रथिकानुपतिष्ठते ; अश्वारोहानुपतिष्ठते । पथिषु - अयं पन्थाः सुम्नमुपतिष्ठते , अयं पन्थाः साकेतमुपतिष्ठते

With reference to mitra-karaņa:-rathikān upatiṣṭhatē, aśvārōhān upatiṣṭhatē. With reference to pathin: ayam panthāh Srugghnam upatiṣṭhatē (this way leads to Srugghna); ayam panthāh Sākētam upatiṣṭhatē (this way leads to Sākēta).

वा लिप्सायाम् Need to read Vā lipsāyām.

वा लिप्सायामिति वक्तन्यम् । भिक्षुको ब्राह्मणकुलमुपतिष्ठते; भिक्षुको ब्राह्मण-कुलमुपतिष्ठति इति वा It must be read that  $sth\bar{a}$  with upa optionally takes  $\bar{a}tman\bar{e}$ -pada terminations in the sense of to eagerly approach Viz.  $Bhikṣukah br\bar{a}hmaṇakulam upatiṣṭhat\bar{e}$ ;  $bhikṣuk\bar{o}$   $br\bar{a}hmaṇakulam upatiṣṭhati$ .

## उद्धिभ्यां तपः (1, 3, 27)

अकर्मकादित्येव, (इह मा भूत) उत्तपति सुवर्ण सुवर्णकारः

The ātmanēpada should be used after the root tap with ut and vi only when it is intransitive, so that it may not appear in the sentence Uttapati suvarṇam suvarṇakāraḥ (goldsmith heats gold).

## खाङ्गकर्मका<del>च</del>

After it when it takes for its object a limb of the subject.

स्वाङ्गकर्मकाचेति वक्तव्यम् - उत्तपते पाणी, वितपते पाणी, उत्तपते पृष्ठम्, वितपते पृष्ठम्

It must be said that it takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  when it takes for its object the limb of the subject, Viz. Uttapatē  $p\bar{a}n\bar{i}$  (he warms the hands),  $vitapat\bar{e}$   $p\bar{a}n\bar{i}$  (he warms hands);  $uttapat\bar{e}$  prstham (he warms the back) and  $vitapat\bar{e}$  prstham (he warms the back)

अथोद्धिभ्यामित्यत्र किं प्रत्युदाह्वियते ?

What is the  $pratyud\bar{a}harana$  with reference to tap with ut and vi?

निष्टप्यते इति The word niştapyatē.

किं पुनः कारणमात्मनेपदमेवोदाहियते, न पुनः परस्मेपदं प्रत्युदाहार्य स्यात् ? Why is it that one with ātmanēpada terminations alone is given as pratyudāharaņa and not one with parasmāipada terminations too?

तिप्यमकर्मकः । अकर्मकाश्चापि सोपसर्गाः सकर्मका भवन्ति । न चान्तरेण कर्मकर्तारं सकर्मका अकर्मका भवन्ति

This root tap is intransitive. The intransitives become transitives when they are preceded by upasargas. The transitives never become intransitives unless in karmakartariprayōga.

यदुच्यते न चान्तरेण कर्मकर्तारं सकर्मका अकर्मका भवन्तीति, अन्तरेणापि कर्मकर्तारं सकर्मका अकर्मका भवन्ति । तद्यथा - नदी वहति इत्यकर्मकः, भारं वहति इति सकर्मकः । तसात् निष्टपतीति शत्युदाहार्यम् ।

With reference to the statement that transitive verbs can become intransitives only in karma-kartari-prayōga, it may said that even otherwise they become intransitives. For instance the verb vahati is intransitive in the expression nadī vahati (river flows) and it is transitive in the expression bhāram vahati (he carries the burden.) Hence niṣṭapati may be given as a pratyudāharaṇa.

## आङो यमहनः (1, 3, 28)

अकर्मकाद् इत्येव; (इह मा भूत्) आयच्छति रज्जुं कूपात्, आहन्ति वृषळं पादेन ।

(It must be read that it happens) only when it is intransitive, so that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations may not appear in  $\bar{a}yacchati$  rajjum  $k\bar{u}p\bar{a}t$  (he draws the rope from the well) and  $\bar{a}hanti$  vṛṣalam  $p\bar{a}d\bar{e}na$  (he kicks vrṣala with the foot).

### खाङ्गकर्मकाच

After them when they take the limbs of the subject for their object.

स्वाङ्गकर्मकाचोति वक्तन्यम् - आयच्छते पाणी, आहते उदरम् इति It must be read that they take  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations only when they have for their object the limb of the subject as in, Ayacchate  $p\bar{a}n\bar{i}$  and  $\bar{a}hat\bar{e}\ udaram$ .

## समो गम्यृच्छिभ्याम् (1, 3, 29)

## समो गमादिषु विदिप्रच्छिखरतीनामुपसङ्ख्यानम्

Among gamādis preceded by sam, there is need for the addition of the roots vid, pracch and svr.

समो गमादिषु विदिशच्छिस्वरतीनामुपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् संवित्ते, सम्प्रच्छते, संस्वरते

There is need to add to the list of gam preceded by sam, the roots vid, pracch and svr to secure the forms samvittē, samprechatē and samsvaratē.

अर्तिश्रुद्दिशभ्यश्च After the roots r, śru and drś preceded by sam.

ं अर्तिश्रुदृशिभ्यश्चेति वक्तव्यम् - अर्ति - मा समृत, मा समृषाताम् , मा समृषत ; श्रु - संशृणुते ; दृशि - सम्पर्यते

It must be said that the roots r (1st conj.),  $\dot{s}ru$  and  $\dot{d}r\dot{s}$  too when preceded by sam take  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations to secure the forms  $M\bar{a}$  samrta,  $m\bar{a}$   $samr\bar{s}at\bar{a}m$ ,  $m\bar{a}$   $samr\bar{s}ata$ ;  $sa\dot{m}$ - $\dot{s}rnut\bar{e}$ ;  $sampa\dot{s}yat\bar{e}$ .

Note:—It is not easy to understand why  $V\bar{a}rttikak\bar{a}ra$  has not read this  $v\bar{a}rttika$  and the previous one as one. Perhaps the latter is the addition made by  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ .

## उपसर्गादस्यत्यूद्योर्वावचनम्

Mention of option with reference to the roots as (4th conj.) and  $\bar{u}h$  when they are preceded by a preposition.

उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वेति वक्तन्यम् - निरस्यति, निरस्यते ; समूहति, समूहते It must be read that the roots as (4th conj.) and ūh preceded by upasargas optionally take ātmanēpada terminations as in, nirasyati, nirasyatē; samūhati, samūhatē.

# आङ उद्गमने (1, 3, 4**6**)

### ज्योतिषामुद्रमने

Only with reference to the udgamana of a luminous object.

ज्योतिरुद्गमने इति वक्तव्यम् - इह मा भूत् - आक्रामित धूमो हर्म्यतलाद् इति lt must be raad that kram with  $\bar{a}$  takes  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations only when it refers to the rising up of luminous objects, so that it may not be applied in the sentence  $\bar{a}kr\bar{a}mati$  dhūmō harmyatalāt (smoke rises from the floor of the palace).

## व्यक्तवाचां सम्रचारणे (1, 3, 48)

व्यक्तवाचामिति किमर्थम् ?

What for is the word vyaktavācām in the sūtra?

वरतनु संप्रवदन्ति कुनकुटाः

In order that vad may not take ātmanēpada terminations in the sentence Varatanu, sampravadanti kukkuṭāḥ (Dear Damsel, cocks crow together).

व्यक्तवाचामिति उच्यमानेप्यत्र प्राप्नोति, एतेऽपि हि व्यक्तवाचः

Even though the word  $vyaktav\bar{a}c\bar{a}m$  is read in the  $s\bar{u}tra$ ,  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations may appear in the previous example, since they (cocks) too are  $vyaktav\bar{a}ks$ .

आतश्च व्यक्तवाचः, कुक्कुटेनोदिते उच्यते कुक्कुटो वदति इति । Since, it is said—kukkuţō vadati—when they crow, they are vyaktavāks.

Note: Dhātupāṭha reads thus: vada vyaktāyām vāci.

एवं तर्हि व्यक्तवाचामित्युच्यते ; सर्व एव हि व्यक्तवाचः ; तत्र प्रकर्षगति-विज्ञास्यते - साधीयो ये व्यक्तवाच इति ।

If so, the word  $vyaktav\bar{a}c\bar{a}m$  is read in the  $s\bar{u}tra$ ; all are  $vyaktav\bar{a}ks$ ; hence the word in the  $s\bar{u}tra$  suggests that it refers to those who are the best of  $vyaktav\bar{a}ks$ .

के च साधीयः ? Who are the best?

येषां वाचि अकारादयो वर्णा व्यज्यन्ते

In whose speech the letters  $ak\bar{a}ra$  etc. are produced.

न चैतेषां वाचि अकारादयो वर्णा व्यज्यन्ते

The letters  $ak\bar{a}ra$  etc. are not produced in the sound which comes out of their mouth.

एतेषामपि वाचि अकारादयो वर्गा व्यज्यन्ते

The letters akāra etc. are produced in their vocal sound also.

आतश्च व्यज्यन्ते, एवं ह्याहुः कुक्कुटाः कुक्कुट् इति

Since people say that cocks crow kukkut, they (the letters  $ak\bar{a}ra$  etc.) are produced.

नैवं ते आहुः । अनुकरणमेतत्तेषाम्

They do not pronounce that way. This is only the repetition of their crowing.

अथ वा नैवं विज्ञायते व्यक्ता वाग् येषां त इमे व्यक्तवाच इति
Or the word vyaktavācaḥ is not split in this way:—vyaktā
vāg yēṣām tē.

कथं तर्हि ? In what way then?

#### व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाच इति

Vyāktavācah is split thus:-vyaktā vāci varnāh yēṣām tē (those in whose speech the letters akāra etc. are clearly pronounced).

#### अवाद्धः (1, 3, 51)

अवाद्गो गिरतेः Need to read Avād giratēh.

अवाद्ग इत्यत्र गिरतेरिति वक्तव्यम् । गृणातेर्मा भृत्

The word girateh should find a place in the  $s\bar{u}tra$  in the place of grah, so that it may not refer to  $g\bar{r}$  of the ninth conjugation.

तत्ति वक्तज्यम् It, then, has to be read.

## न वा प्रयोगाभावात

No, it need not be read, since there is no prayoga for it.

न वा वक्तव्यम्, प्रयोगाभावात् अवाद्घ इत्युच्यते, न चावपूर्वस्य गृणातेः प्रयोगोऽस्ति

No, it need not be read on account of the absence of  $pray\bar{o}ga$ . The  $s\bar{u}tra$  reads  $Av\bar{a}d$  grah and there is no  $pray\bar{o}ga$  of the root  $g\bar{r}$  of the ninth conjugation preceded by ava.

## समस्तृतीयायुक्तात् (1, 3, 54)

तृतीयायुक्तादिति किमधम्?

What for is the word trtīyāyuktāt in the sūtra?

Note:—Kāiyaṭa reads here:-Dhātōs tṛtīyāyōgasambhavāt tadarthēna yōgē bhāvyam ātmanēpadēna. Sa ca sarvatra caratyarthē sambhavati.

### उमी लोको सञ्चरिस इमं चामुं च देवल

(So that it may not appear in the sentence)  $ubh\bar{a}u$   $l\bar{b}k\bar{a}u$   $sa\tilde{n}carasi$   $ima\dot{m}$   $c\bar{a}mu\dot{m}$  ca  $D\bar{e}vala$ , (Oh  $D\bar{e}vala$ , you move about the two worlds, here and there).

तृतीयायुक्तादिति उच्यमानेऽप्यत्र प्राप्नोति, अत्रापि हि तृतीयया योग इति । Even though the word trtīyāyuktāt is read in the sūtra, it will appear even here, since the dhātvartha is connected with karaņa, the meaning of the third case.

एवं तर्हि तृतीयायुक्तादित्युच्यते, सर्वत्र च तृतीयया योगः, तत्र पकर्षगति-विज्ञास्यते - साधीयो यत्र तृतीयया योग इति ।

If so, the word  $trt\bar{\imath}y\bar{a}yukt\bar{a}t$  is read in the  $s\bar{u}tra$ , there is  $y\bar{o}ga$  with  $trt\bar{\imath}y\bar{a}$  everywhere and hence it has to be taken to refer to that where the  $y\bar{o}ga$  with  $trt\bar{\imath}y\bar{a}$  is of high order.

क च साधीयः Where is it of high order?

यत्र तृतीयया योगः श्रूयते

Where the  $y\bar{o}ga$  with the  $trt\bar{i}ya$  is expressed in words.

## दाणश्र सा चेचतुर्ध्यर्थ (1, 3, 55)

सा चेत् तृतीया चतुर्थर्थे इत्युच्यते, कथं नाम तृतीया चतुर्थ्ये स्थात्? It is read in the sūtra Sā cēt caturthyarthē. How is it possible for the third case to be used to convey the meaning of the fourth case?

एवं तर्हि अशिष्टव्यवहारे अनेन तृतीया च विधीयत आत्मनेपदं च - दास्या सम्प्रयच्छते, वृषल्या सम्प्रयच्छते । यः शिष्टव्यवहारः - ब्राह्मणीभ्यः सम्प्रयच्छति इत्येव तत्र भवितव्यम् ।

If so, this  $s\bar{u}tra$  enjoins  $trt\bar{v}y\bar{a}$  and  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  with reference to the  $vyavah\bar{a}ra$  of  $a\acute{s}i\dot{s}tas$ , as in  $d\bar{a}sy\bar{a}$  sampratyacchat $\bar{e}$  and  $vr\dot{s}aly\bar{a}$  samprayacchat $\bar{e}$ . In the  $vyavah\bar{a}ra$  of  $\acute{s}i\dot{s}tas$ , the  $pray\bar{o}ga$  should be  $br\bar{a}hman\bar{v}bhyah$  samprayacchat $\bar{e}$ .

यद्येवं, नार्थोऽनेन If so, no purpose is served by this sūtra.

केनेदानीं तृतीया भविष्यति आत्मनेपदं च?

On what authority, then, can  $trt\bar{i}y\bar{a}$  and  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  appear here?

सहयुक्तेऽप्रधाने इत्येव तृतीया भविष्यति, कर्तरि कर्मव्यतिहारे इत्यात्मनेपदम्
The sūtra Sahayuktēspradhānē sanctions the third case and the sūtra Kartari karmavyatihārē sanctions ātmanēpada.

Note:—1.  $K\bar{a}iyata$  gives the meaning of the sentence  $d\bar{a}sy\bar{a}$  samprayacchatē thus:— $D\bar{a}sy\bar{a}i$  viśrānya tayā saha upabhunktē. The vyatihāra is explained by  $N\bar{a}g\bar{e}sa$  thus:— $D\bar{a}syabhilasitam$  dhūrtah karōti, dāsī ca dhūrttābhilasitam iti vyatihārasiddhih.

Note:—2. The use of the third case suffix to give the meaning of the fourth case suffix is a sort of contamination and this was recognised by the  $S\bar{u}trak\bar{a}ra$ . Another point to be noted here is that Grammar should have for its basis not only the language used by  $\dot{s}istas$  but also by  $a\dot{s}istas$ .

#### उपाद्यमः स्वकरणे (1, 3, 56)

इह कस्मान्न भवति स्वं शाटकान्तमुपयच्छति इति ?

How does not  $\bar{a}tmn\bar{e}pada$  termination appear in upayacchati in the sentence  $Sva\dot{m}$   $\pm \bar{a}tak\bar{a}ntam$  upayacchati (he holds the end of his cloth)?

अस्वं यदा स्वं करोति तदा भवितव्यम्

It should appear where one makes a thing not belonging to him his own.

यद्येवं स्वीकरणमिति प्रामोति

If so, the word should be svīkaranam.

विचित्रास्तद्धितवृत्तयः । नातस्तद्धित उत्पद्यते

Strange are the operations of taddhitas and hence the taddhita suffix is not found here.

## नानोईः (1, 3, 58)

### अनोर्ज्ञः प्रतिषेधे सकर्मकवचनम्

Need of the mention of sakarmaka in the sūtra Nānōrjñaḥ.

अनोई: प्रतिषेधे सकर्मकग्रहणं कर्तव्यम् । इह मा भूत् औषधस्यानुजिज्ञासते इति There is need to mention sakarmaka in the sūtra which prohibits ātmanēpada terminations in the desiderative of jñā with anu, so that it may not affect the prayōga āuṣadhasya anujijñāsatē.

## न वाकर्मकस्योत्तरेण विधानात्

No, on account of the akarmaka being enjoined with it later on.

न वा कर्तव्यम् It need not be read.

किं कारणम् ? Why?

अकर्मकस्योत्तरेण विधानात् - अकर्मकाज्जानातेरुत्तरेण योगेन आत्मनेपदं विधी-यते पूर्ववत्सनः इति ।

On account of the  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations being enjoined to the intransitive by a later  $s\bar{u}tra$ —The  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations are enjoined to the root  $j\bar{n}\bar{a}$  when it is intransitive by the  $s\bar{u}tra$   $P\bar{u}rvavat\ sanah\ (1,3,62)$  which follows.

प्रतिषेधः पूर्वस्य This is a pratisēdha for what precedes.

पूर्वस्य चायं प्रतिषेधः । स च सकर्मकार्थ आरम्भः

This is a pratisēdha to what precedes and it is concerned with transitive verb.

कथं पुनर्ज्ञायते पूर्वस्यायं प्रतिषेध इति ?

How is it understood that this is pratisedha to what precedes? अनन्तरस्य विधिव भवति प्रतिषेधो वेति

Vidhi or pratisēdha is concerned with what is immediate.

कथं पुनर्ज्ञायते सकर्मकार्थ आरम्भ इति

How is it known that it is concerned with transitive verb?

अकर्मकाज्जानातेः सन आत्मनेपदवचने प्रयोजनं नास्तीति कृत्वा सकर्मकार्थो विज्ञायते

Taking that no purpose is served by enjoining  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  termination to the desiderasive of  $j\bar{n}\bar{a}$  if it is intransitive, it is taken that it is concerned with the transitive.

### श्रदेः शितः (1, 3, 60)

There are two topics under this  $s\bar{u}tra:$ —(1) Does  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations appear here or not? (2) Is there any need to add  $advyav\bar{a}ya$  in  $upasargap\bar{u}rva$ -niyama?

I

## शदेः शितः परसैपदाश्रयत्वादातमनेपदाभावः

No chance for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  on account of the  $\pm ap$  of the root  $\pm ad$  having for its  $\bar{a}\pm raya$ , the  $parasm\bar{a}ipada$ .

शतेः शितः परसौपदाश्रयत्वाद् आत्मनेपदस्याभावः - शीयते शीयेते शीयन्ते

There is no chance for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations to appear after the  $\hat{s}ap$  of the root  $\hat{s}ad$ , since the former has for its  $\bar{a}\hat{s}raya$  the  $parasm\bar{a}ipada$  terminations.

किं च भोः शदेः शित् परसमपदेष्वित्युच्यते?

Is it, sir, said that sap comes after sad when parasmāipada terminations come after it?

न खळु परसमपदेषु इत्युच्यते, परसमपदेषु तु विज्ञायते

It is not said, to be certain, that it comes when parasmaipada terminations come, but it is so understood.

कथम् ? How?

अनुदात्ति आत्मनेपदम्, भावकर्मणोरात्मनेपदम् इत्येतौ योगौ उक्त्वा शेषात् कर्तरि परस्मैपदिमृत्युच्यते । एवं च न परस्मैपदेषूच्यते, परस्मैपदेषु च विज्ञायते The sūtra Śēṣāt kartari parasmāipadam is read after the sūtras Anudāttanita ātmanēpadam and Bhāvakarmanōh which enjoin ātmanēpada. Hence though it is not stated that śap comes when there is parasmāipada, it is so taken.

कः पुनरर्हति एतौ योगावुक्त्वा शेषात् कर्तरि परसमपदं वक्तुम्?

Who is competent to say that the  $s\bar{u}tra$  ' $\hat{S}\bar{e}s\bar{a}t$  kartari parasmāipadam' is read after these two  $s\bar{u}tras$ ?

कि तर्हि? What is intended then?

अविशेषेण सर्वमात्मनेपद्पकरणमनुकम्य शेपात् कर्तरि परसैपद्मित्युच्यते

After completely dealing with the whole topic concerning with ātmanēpada, the sūtra 'Šēṣāt kartari parasmāipadam' is read.

एवमपि परसौपदाश्रयो भवति

Even then it has parasmāipada for its āśraya.

कथम्? How?

इदं तावदयं प्रष्टव्यः, यदीदं नोच्येत किमिह स्यादिति?

He is to be questioned what termination will appear if this sūtra is not read.

परसैपदम् इत्याह "Parasmāipadam," says he.

परसौपद्मिति चेत् परसौपदाश्रयो भवति

If it is parasmāipada, it has parasmāipada for its āśraya.

सिद्धं तु लडादीनामात्मनेपदवचनात्

It is accomplished by reading that lat etc. take ātmanēpada.

सिद्धमेतत् This is accomplished.

कथम्? How?

शदेर्लडादीनात्मनेपदं भवति इति वक्तव्यम्

It must be read that the latetc. after sad takes ātmanēpada terminations.

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते

It is accomplished. The sūtra, in that case, is modified.

यथान्यासमेवास्त Let the sūtra remain as it is.

ननु चोक्तं शदेः शितः परसौपदाश्रयत्वादात्मनेपदाभावः इति ।

Oh, it was said that there is no chance for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  on account of the  $\pm ap$  of the root  $\pm ad$  has for its  $\bar{a}\pm aya$ , the  $parasm\bar{a}ipada$ .

नैष दोप: । शित इति नैषा पश्चमी

This difficulty does not arise; the word śitaḥ is not taken to be the fifth case of śit.

का तर्हि ? What case is it then ?

सम्बन्धषष्ठी - शितो यः शदिः

It is the sixth case denoting relationship thus:—the śad of śap.

कश्च शितः शदिः What is sad with reference to sap?

प्रकृतिः It is its prakrti (stem).

शदेः शित्प्रकृतेरिति Of sad which is the prakrti of sap?

अथ वा आहारं शदेः शितः इति, न च शदिः शिदस्ति, त एवं विज्ञास्यामः शदेः शिद्धिषयाद् इति ।

Or he has read the sūtra thus: -Śadēḥ śitaḥ; śad is not śit and hence we interpret the sūtra to mean śadēḥ śid-viṣayāt.

अथवा यद्यपि तावद् एतदन्यत्र भवति 'विकरणेभ्यो नियमो बलीयान् ' इति इहैतन्नास्ति । विकरणो हीहाश्रीयते शितः इति

Or even though the dictum that niyama is stronger than vikaraṇa holds good elsewhere, it may be taken that it does not hold good here. Vikaraṇa is taken, by the mention of sitah, to be the  $\bar{a}sraya$  of the  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ .

II

### उपसर्गपूर्वनियमेऽङ्व्यवाय उपसङ्ख्यानम्

Need to supplement that the niyama will take place even though there is interception by at between upasarga and dhātu.

उपसर्गपूर्वनियमेऽइन्यवाय उपसङ्ख्यानं कर्तन्यम्, न्यविश्वत न्यकीणीत
There is need to add that the niyama will take place even though there is the interception by at between upasarga and dhātu. so as to secure the forms nyaviśata and vyakrī nīta.

किं पुनः कारणं न सिध्यति ? Why is it not accomplished ? अटा व्यवहितत्वात् On account of the interception by at.

ननु चायमङ् धातुभक्तो धातुप्रहणेन प्रहीष्यते

Oh, this at, being a part of  $dh\bar{a}tu$ , is capable of being taken into consideration on the mention of  $dh\bar{a}tu$ .

न सिध्यति ; अङ्गस्य ह्याडुच्यते, विकरणान्तं चाङ्गम् । सोऽसौ सङ्घातभक्तो न शक्यो धातुत्रहणेन प्रहीतुम् ।

No, it cannot be; for at is enjoined to ang and ang is that which has vikaran at the end. Hence this at which is a part of the whole cannot be taken as the part of  $dh\bar{a}tu$ .

एवं तहींदिमिह सम्प्रधार्थम् - अट् कियतां विकरण इति
If so, this has to be decided whether at should be brought in first or vikarana.

किमत्र कर्तव्यम्? What has to be done here?

परत्वाद् अडागमः । नित्या विकरणाः; कृतेऽपि अटि प्रामुवन्ति, अकृतेऽपि प्रामुवन्ति Ad-āgama should have the precedence, since it is para. Vikaraņas are nitya, since they make their appearance whether at has made its appearance or not.

अडिप नित्यः ; कृतेप्विप विकर्णेषु प्राप्तोति, अकृतेप्विप प्राप्तोति At, too, is nitya, since it makes its appearance whether vikaraņas have made their appearance or not.

अनित्योऽट् । अन्यस्य कृतेषु विकरणेषु प्रामोति, अन्यस्य अकृतेषु । शब्दा-न्तरस्य च प्राम्नुवन्विधरनित्यो भवति ।

At is anitya. It appears in certain words which have taken vikaranas and in other words which have not taken vikaranas. The vidhi which operates in dissimilar words is anitya.

एवं तर्हि इदिमह संप्रधार्यम्, अट् क्रियतां लादेश इति
If so, it has to be decided here whether at should have precedence or lādēśa.

किमत्र कर्तव्यम्? What is to be done here?

परत्वादडागमः । नित्यो लादेशः ; कृतेऽपि अटि प्राप्तोति, अकृतेऽपि प्राप्तोति  $A\dot{q}$ - $\bar{a}gama$  has the precedence, since it is para.  $L\bar{a}d\bar{e}$  is nitya, since it makes its appearance whether  $a\dot{q}$ - $\bar{a}gama$  has appeared or not.

नित्यत्वात् लादेशस्य आत्मनेपद् एवाडागमो भविष्यति Since lādēśa is nitya, the aḍ-āgama shall make its appearance after ātmanēpada terminations have set in.

## नित्यत्वास्त्रादेशस्यात्मनेपदेऽडागम इति चेदटोऽपि नित्यनिमित्तत्वा-दात्मनेपदाभावः ।

If it is said that adāgama follows the ātmanēpada on account of lādēśa being nitya, there is no chance for ātmanēpada to set in on account of adāgama having for its nimitta (lan etc.) which is nitya.

नित्यत्वात् छादेशस्य आत्मनेपदेऽडागम इति चेदेवमुच्यते - अडिप नित्यनिमित्तः । कृतेऽपि छादेशे प्राप्तोत्यकृतेऽपि प्राप्तोति । अटो नित्यनिमित्तत्वादात्मनेपद्स्याभावः । If it is said that ad-āgama sets in after ātmanēpada has made its appearance on account of lādēśa being nitya, it is answered

thus:—At too is nityanimitta. It chances to come whether  $l\bar{a}d\bar{e}\dot{s}a$  has appeared or not. Since at is nityanimitta, there is no chance for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  to set in.

तस्मादुपसङ्ख्यानम् - तस्मादुपसङ्ख्यानं कर्तव्यस्

Hence is the need for  $upasankhy\bar{a}na$ —Therefore there is the need for  $upasankhy\bar{a}na$ .

न कर्तेव्यम् No, it need not be made.

अन्तरङ्गस्तर्हि लादेशः If so, lādēša is antarainga.

नैतद्विवदामहे अन्तरङ्गो नान्तरङ्ग इति

We do not quarrel about it whether it is antaranga or not.

अस्त्वयं नित्यश्चान्तरङ्गश्च । अत्र खलु लादेशे कृते त्रीणि कार्याणि युगपत् प्रामुवन्ति - विकरणः, अडागमः, नियम इति । तद्यदि सर्वतो नियमो लभ्येत, कृतं स्यात् ; तत्तु न लभ्यम् । अथापि विकरणात्पूर्वमङ् इत्यङ् लभ्येत, एवमपि कृतं स्यात् । तत्तु न लभ्यम्

Let it be nitya and antaranga. After lādēśa here sets in, three factors simultaneously crop up:—Vikarana, adāgama and niyama. If niyama precedes everywhere the other two, the object is achieved; but it is not the case. If adāgama precedes vikarana, then too the object is achieved, but that, too, is not the case.

किं कारणम्? Why?

आङ्गात् पूर्व विकरणा एषितव्याः तरतः, तरन्ति इत्येवमर्थम्

For the sake of securing the forms taratah and taranti, vikaranas have to be brought in before anga-kārya.

Note:—The  $a\dot{n}ga-k\bar{a}rya$  referred to here is ittva enjoined in the  $s\bar{u}trx$  Rta id  $dh\bar{a}t\bar{o}h$  (7, 1, 100).

अडाड्भ्यामप्यन्यदाङ्गं पूर्वमेषितव्यम् उपार्च्छत् इत्येवमर्थम् । तत्र हि आटि कृते साट्कस्य ऋच्छिभावः प्राप्नोति ।

Another  $anga-k\bar{a}rya$  is to be resorted to before at or  $\bar{a}t$ , so that the form  $up\bar{a}rcchat$  can be secured. If  $\bar{a}d\bar{a}gama$  takes precedence, the  $\bar{a}d\bar{e}\acute{s}a$  rcch will replace the root with  $\bar{a}t$ .

Note:—The root r of the first conjugation takes the form rcch before the conjugational sign sap. If the  $\bar{a}d\bar{a}gama$  sets in before r is replaced by rcch,  $\bar{a}+r$  will become  $\bar{a}r$  and through  $\bar{a}divadbh\bar{a}va$ ,  $\bar{a}r$  will be replaced by rcch, so that we will get the form rcchat in place of  $\bar{a}rcchat$ .

ननु च ऋच्छिभावे कृते शब्दान्तरस्य अकृत आडिति कृत्वा पुनराड् भविष्यति Oh, after rcch replaces  $\bar{a}r$ ,  $\bar{a}t$  may come in on the basis that this rcch, being another word, has not taken it.

पुनः ऋच्छिभावः पुनराडिति चक्रक्रमव्यवस्था प्राप्तोति It will lead to a vicious circle that <u>rech</u> happens after <u>ā</u>t and <u>ā</u>t after <u>rech</u> and so on.

नैष दोषः । यत्तावदुच्यते आङ्गात्पूर्वं विकरणा एषितव्याः तरतः तरन्ति इत्येवमर्थमिति, भवेत्सिद्धं यत्र विकरणाः नित्या आङ्गमनित्यं तत्राङ्गात्पूर्वं विकरणाः स्युः, यत्र तु खल्ल उभयं नित्यं परत्वात्तत्राङ्गं तावद् भवति ।

This difficulty does not arise. With reference to the statement firstly made that vikaraṇas should come in before  $\bar{a}nga-k\bar{a}rya$  so that the forms  $tarata\dot{n}$  and taranti can be secured, let vikaraṇas take precedence over  $\bar{a}nga-k\bar{a}rya$  where the former is nitya and the latter is anitya. Where both are nitya,  $\bar{a}nga-k\bar{a}rya$ , being para, will have precedence.

यद्प्युच्यते अडाड्भ्यामप्यन्यदाङ्गं पूर्वमेषितव्यम् उपाच्छत् इत्येवमर्थमिति, अस्त्वत्र आट्, आटि कृते साट्कस्य ऋच्छिभावः । ऋच्छिभावे कृते, शब्दान्तरस्य अकृत आडिति कृत्वा पुनराड् भविष्यति

With reference to the other statement that  $\bar{a}iga$ - $k\bar{a}rya$  should have precedence before at or  $\bar{a}t$  so that the form  $up\bar{a}rcchat$  may be secured, let there be  $\bar{a}t$  first and let rcch replace  $\bar{a}r$ . After rcch has replaced  $\bar{a}r$ ,  $\bar{a}t$  may again set in since rcch has not had it.

ननु चोक्तं, पुनर्ऋच्छिभावः पुनराडिति चक्रकमञ्यवस्था प्राप्तोति इति Oh, it was said that there would be vicious circle by having again the  $\bar{a}d\bar{e}\hat{s}a$  rech and then  $\bar{a}t$  and so on.

नैष दोष: There is no harm here.

चक्रकेज्विष्टतो व्यवस्था

Decision may be made as we desire in vicious circles.

अथवा नेरिति नैषा पश्चमी

Or the word neh (in the sūtra Ner viśah) is not in the fifth case.

का तर्हि ? What then?

विशेषणषष्ठी, नेर्यो विशिः

It is in the sixth case suggesting viśēṣaṇatva, so that it means the root viś which belongs to ni.

कश्च नेर्विशि:! What is the relationship between ni and vis.

विशेष्यः Viś is viśēṣya

व्यवहितश्चापि शक्यते विशेषयितुम्

It is possible to take it as  $viś\bar{e}sya$ , though there is interception between the two.

अथ वा निरिप पदं, विशिरिप पदं, पदिविधिश्च समर्थानां, व्यवहितेऽपि सामर्थ्यं भवति

Or, nir is a pada, and  $vi\acute{s}$  too is a pada and there is pada-vidhi between samarthas and there is  $s\bar{a}$  marthya between the two even though there is interception.

## पूर्ववत्सनः (1, 3, 62)

There are four topics dealt with here:—(1) To which is the word  $p\bar{u}rva$  related? (2) What is the lak sya which comes under the purview of this  $s\bar{u}tra$ ? (3) Is it  $k\bar{a}ry\bar{a}tid\bar{e}sa$  or  $nimitt\bar{a}tid\bar{e}sa$  that is resorted to here? (4) Is there need to replace sanah in the  $s\bar{u}tra$  by  $pratyay\bar{a}t$ ?

I

किमिदं पूर्वग्रहणं सनपेक्षं - प्राक् सनो येभ्य आत्मनेपदमुक्तं तेभ्यः सन्नन्तेभ्योऽपि भवति इति, आहोस्विद् योगापेक्षं - प्राग् एतसाद् योगाद् येभ्यो योगेभ्य आत्मनेपदमुक्तं तेभ्यः सन्नन्तेभ्य आत्मनेपदं भवति इति

Is this word  $p\bar{u}rva$  related to san, so that this  $s\bar{u}tra$  may mean that the roots enjoined to take  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  before san-pratyaya is added to them take the same even after it is added to them

or is it related to  $s\bar{u}tra$ , so that this  $s\bar{u}tra$  may mean that the roots enjoined to take  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  in the  $s\bar{u}tras$  preceding this take it after san-pratyaya is added to it?

किं चातः ? What is the difference?

यदि सनपेक्षं निमित्तमिवशेषितं भवति, पूर्ववत्सनो न ज्ञायते किमन्ताद्भवि-तन्यम् इति, अथ योगापेक्षम् उत्तरत्र निधिनं प्रकल्पेत बुभुक्षते उपयुयुक्षते इति If it is related to san, the exterior limit is not expressly stated to enable us to know to which limit Pūrvavat sanaḥ is to operate and if it is related to the sūtra, this sūtra will have no operation with reference to the roots mentioned in the sūtras to follow from which the forms bubhukṣatē and upayuyukṣatē are secured.

यथेच्छिस तथास्तु Let it be as you please.

अस्तु तावत् सनपेक्षम्

Firstly let it be taken to be related to san.

ननु चोक्तं निमित्तमविशेषितं भवति इति

Oh, it was said that the exterior limit is not expressly stated.

निभित्तं च विशेषितम् The target is stated.

कथम् ! How ?

सनमेवात्र निमित्तत्वेनापेक्षिण्यामहे, पूर्ववत् सनः आत्मनेपदं भवति We take the san itself to be the target, so that the sūtra may

mean that ātmanēpada terminations are used after san-pratyaya is added to roots which take them before it is added.

कुतः ? What is the reason?

सनः इति From the word sanah (fifth case of san).

अथ वा पुनरस्तु योगापेक्षम् Or let it be related to sūtra.

ननु चोक्तम् उत्तरत्र विधिर्न प्रकल्पेत इति

Oh, it was said that this  $s\bar{u}tra$  will have no operation with reference to the roots mentioned in the  $s\bar{u}tras$  to follow.

विधिश्च प्रकल्रतः The sūtra will have operation there too.

कथम्? How?

उत्तरत्रापि पूर्ववत्सन इत्येवानुवर्तिष्यते

Pūrvavat sanah is taken in the sūtras to follow by anuvrtti.

I1

किमर्थं पुनरिद्मुच्यते ?

What is the lakṣya which comes under the purview of this sūtra? पूर्ववत्सन् इति शदिभ्रियत्यर्थम्

The  $s\bar{u}tra\ P\bar{u}rvavat$ -sanah is for the sake of sad and mr.

शदिम्रियत्यर्थोऽयमारम्भः शदिम्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्याम् आत्मनेपदं मा भूदिति । This  $s\bar{u}tra$  is intended for the roots sad and mr so that  $\bar{a}tman\bar{e}-pada$  may not appear after san-pratyaya in the roots sad and mr.

### इतरथा हि ताभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपद्प्रतिषेधः

Or, there is need to mention ātmanēpada-pratiṣēdha after san in those two roots.

इतरथा हि - अनुच्यमानेऽस्मिन् - शदिम्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपदस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः स्यात् , शिशित्सति मुमूर्षति

If it is not so stated, there is need to prohibit atmanepada termination from appearing after san in the roots sad and ma, so that the forms sisitsati and mumūrsati may be secured.

कथं पुनः पूर्ववत्सन इत्यनेन श्रादिष्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपदस्य प्रतिषेधः शक्यो विज्ञातुम्?

How is it possible to learn that there is  $pratis\bar{e}dha$  to the sannantas of  $\dot{s}ad$  and  $m\dot{r}$  from taking  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  from the  $s\bar{u}tra\ P\bar{u}rvavat\ sana\dot{h}$ ?

वितिनिर्देशोऽयम् । कामचारश्च वितिनिर्देशे वाक्यशेषं समर्थयितुम् This has the pratyaya vat and it is left to our pleasure to

complete the sentence in the way we should like.

तद्यथा - उशीनरवन्मद्रेषु यवाः । सन्ति, न सन्ति इति । मातृवदस्य कलाः । सन्ति, न सन्ति इति । एवमिहापि पूर्ववद्भवति, न भवति इति ।

This may be illustrated as follows:—The sentence—the yara grains at Madra as at Uśīnara—may be completed by are or

are not. The sentence—his features as in his mother,—may be completed by are or are not. So also  $p\bar{u}rvavad$  here may be completed by bhavati or na bhavati.

न भवति इत्येवं वाक्यशेषं समर्थयिष्यामहे - यथा पूर्वयोयोगयोः सन्नन्ताभ्या-मात्मनेपदं न भवति, एवमिहापि शदिम्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपदं न भवति इति । We shall complete the sentence by na bhavati. The sūtra will then mean) that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  does not appear after sannanta of the roots sad and mr as in the previous two  $s\bar{u}tras:-N\bar{a}n\bar{o}rj\tilde{n}ah$  (1, 3, 58) and  $Praty\bar{a}nbhy\bar{a}m$  śruvah (1, 3, 59).

यदि तर्हि शदिम्रियत्यर्थोऽयमारम्भः, विधिनं प्रकल्पते - आसिसिषते, शिशयिषते If the sūtra is, then, intended for sad and mr, it is not possible to have ātmanēpada terminations in places where we want them, as in āsisiṣatē and sisayiṣatē.

अथ विध्यर्थः

Suppose we take the sūtra enjoining ātmanēpada after sannanta.

शदिम्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपदं शासोति

(If so,)  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  chances to appear after the san-pratyaya in the roots  $\dot{s}ad$  and mr.

यथेच्छिस तथास्तु Let it be as you please.

अस्तु तावत्प्रतिषेधार्थः

Let it, then, be taken as intending pratisēdha.

ननु चोक्तं विधिन प्रकल्पते इति

Oh, it was said that it cannot, then, be taken as a vidhi.

विधिश्च प्रक्लप्तः Vidhi, too, is possible.

कथम्? How?

एतदेव ज्ञापयति सन्नन्तादात्मनेपदं भवतीति यद्यं शदिभ्रियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यम् आत्मनेपदस्य प्रतिषेषं शास्ति ।

The statement that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  is prohibited after sannanta with reference to the roots sad and mr, suggests that  $\bar{a}tman\bar{e}$ pada appears after sannanta as a general rule,

अथ वा पुनरस्तु विध्यर्थः Or let it be taken as intending vidhi.

ननु चोक्तं शदिमियतिभ्यां सन्नन्ताभ्यामात्मनेपदं प्रामोति इति ।

Oh, it was said that, in that case,  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  chances to appear after san in the roots  $\hat{s}ad$  and mr.

नैष दोषः । प्रकृतं सनो न इत्यनुवर्तिप्यते

This difficulty does not arise. The phrase sano na is taken here from the context by anuvrtti.

क प्रकृतम् ?

What is the  $s\bar{u}tra$  in the context wherefrom there is anuvṛtti?

ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः, नानोर्ज्ञः

The  $s\bar{u}tra\ J\tilde{n}\bar{a}$ - $\hat{s}ru$ -smr-dr $\hat{s}\bar{a}m\ sanah\ (1,3,57)\ and\ N\bar{a}n\bar{o}ri\tilde{n}ah\ (1,3,58).$ 

सकर्मकात् सनो न

 $\bar{A}tman\bar{e}pada$  does not appear after san of the root  $j\tilde{n}\bar{a}$  with anu if it is transitive.

प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः - सनो न

 $\overline{A}tman\bar{e}pada$  does not appear after san of the root  $\acute{s}ru$  preceded by the prepositions prati or  $\bar{a}$ .

शदेः शितः - सनो न

Ātmanēpada does not appear after san of the root sad.

म्रियतेः छुङ्छिङोश्च सनो न इति

Atmanēpada does not appear after san of the root mr.

इहेदानीं पूर्ववत्सनः इति, सन इत्यनुवर्तते, नेति निवृत्तम् । एवं च कृत्वा सोऽप्यदोषो भवति यदुक्तं निमित्तमविशेषितं भवति इति ।

Here in this sūtra Pūrvavat sanah, there is anuvrtti to the word sanah, na having receded from anuvrtti. In this case the defect — nimittam aviśēṣitam bhavati raised above is also answered.

नैव वा पुनरत्न शदिम्रियतिभ्यामात्मनेपदं प्राप्नोति

There is, in that case, no chance for  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  after the sannanta of the roots  $\pm ad$  and mr.

कि कारणम् ? Why?

'शदेः शितः' इत्युच्यते, न च शदिरेवात्मनेपदस्य निमित्तम् The sūtra is read Śadēḥ śitaḥ. Hence the root śad alone is not the nimitta of ātmanēpada.

किं तर्हि ! What then ?

शिद्पि निमित्तम्. Śit, too, is nimitta.

अथापि शदिरेव शित्परस्तु निमित्तम्

Or it is the fad that is followed by fit is nimitta.

न चायं सन्परः शित्परो भवति

That which follows san here does not follow sit.

यत्र तर्हि शिनाश्रीयते म्रियतेर्छङ्खिङोश्च इति

Then, what about the sūtra Mriyatēr lun-linoś ca where śit is not taken into account?

अत्रापि न म्रियतिरेवात्मनेपदस्य निमित्तम्

Even here the root mr alone is not the nimitta of ātmanēpada.

किं तर्हि ! What then ?

छङ्छिङाविप निमित्तम्  $Lu\dot{n}$  and  $li\dot{n}$ , too, are nimitta.

अथापि म्रियतिरेव छुङ्छिङ्परस्तु निमित्तम्

Or the root mr followed by lun and lin is the nimitta.

न चायं सन्परो छङ्छिङ्परो भवति

That which follows san here does not follow lun or lin.

III

ार्के पुनः पूर्वस्य यदात्मनेपददर्शनं तत् सन्नन्तस्यातिदिश्यते ? Is the ātmanēpada enjoined to a root extended by analogy to the same when it takes after it the pratyaya san too?

एवं भवितुमहिति. It deserves to be so.

पूर्वस्थात्मनेपद्दर्शनात्सन्नन्तादात्मनेपद्भाव इति चेद् गुपादिषु अप्रसिद्धिः

If it is said that the ātmanēpada which is enjoined to the root before san is added appears after it is added, it is not possible to arrive at the sannanta forms of the roots gup etc.

पूर्वस्थात्मनेपददर्शनात् सन्नन्तादात्मनेपदं भवतीति चेद् गुपादिषु अप्रसिद्धिः । गुपादीनां न प्राप्नोति । जुगुप्सते मीमांसते इति । न ह्येतेभ्यः प्राक् सन आत्मनेपदं नापि परस्मेपदं पद्यामः

If it is said that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  sets in after san-pratyaya is added to roots because they took it even before, it is not possible to arrive at the forms derived from the root gup etc. It cannot appear after gup etc. The forms  $jugupsat\bar{e}$  and  $m\bar{e}m\bar{a}m\bar{s}at\bar{e}$  cannot be secured. For we see neither the  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  termination nor the  $parasm\bar{a}ipada$  termination after them, unless san is added to them.

NOTE:—The two  $s\bar{u}lras\ Gup$ -tij- $kidbhyah\ san\ (3,1,5)$  and  $M\bar{a}n$ -badha- $d\bar{a}n$ - $s\bar{a}nbhy\bar{o}\ d\bar{i}rghas\ c\bar{a}bhy\bar{a}sasya\ (3,1,6)$  tell us that the roots gup etc. are used only with san.

## सिद्धं तु पूर्वस्य लिङ्गातिदेशात्

The object is achieved by the extension of the linga of  $\bar{a}tman\bar{e}-pada$  found before, through analogy.

सिद्धमेतत् The object is achieved.

कथम्? How?

पूर्वस्य यदात्मनेपदलिङ्गं तत्सन्नन्तस्याप्यतिदिश्यते

The ātmanēpada-linga attached to the root is extended to sannanta by atidēśa.

### कुञादिषु तु लिङ्गप्रतिषेधः

Need for the pratisēdha of linga in krñ etc.

कुञादिषु तु लिङ्गस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः, अनुचिकीषिति पराचिकीषिति इति । There is need for the pratisēdha of linga in kṛñ etc. so that the forms anucikīrṣati and parācikīrṣati can be secured.

Note:—1. Kāiyaṭa reads here:—Anuparābhyām kṛñaḥ ityanēna parasmāipadam ēva vidhīyatē, natu ittvam nivartyatē.

Note:—2. It was shown that there is one defect in  $k\bar{a}ry\bar{a}tid\bar{e}\acute{s}a$  and one in  $nimitt\bar{a}tid\bar{e}\acute{s}a$ .

अस्तु तर्हि प्राक् सनो येभ्य आत्मनेपदं दृष्टं तेभ्यः सन्नन्तेभ्योऽपि भवतीति If so, let the ātmanēpada suffixed to roots before san is added be suffixed after san too is added.

ननु चोक्तं पूर्वस्थात्मनेपददर्शनात्सन्नन्तादात्मनेपदभाव इति चेद् गुपादिष्व-प्रसिद्धिरिति ।

Oh, it was said that, if  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  sets in after san on account of its having appeared before it was added, the forms derived from the roots gup etc. cannot be secured.

नैष दोषः । अनुबन्धकरणसामर्थ्याद्भविष्यति

This difficulty does not arise. The forms are secured on the strength of their being read with anudāttēt.

अथ वा अवयवे कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति । तद्यथा - गोः सक्थिन् कर्णे वा कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति ।

Or the *linga* found in the avayava becomes the distinguishing element of avayavin. For instance the mark made in the thigh or the ear of a cow forms the distinguishing mark of the cow.

यद्यवयवे कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति, जुगुप्सयति मीमांसयति इत्यत्रापि प्रामोति

If the linga made in the arayava becomes the distinguishing element of the avayavin, the ātmanēpadā terminations may set in where we find the parasmāipada terminations, as in jugupsayati and mīmāmsayati.

नैष दोषः । अवयवे कृतं लिङ्गं कस्य समुदायस्य विशेषकं भवति? This difficulty does not arise. Which avayavin has for its

distinguishing element, the linga made in the avayava?

यं समुदायं योऽवयवो न व्यभिचरति

It becomes the distinguishing element of that avayavin, from which the avayava never separates itself.

सनं च न व्यभिचरति, णिचं च पुनर्व्यभिचरति

It invariably forms a part of sannanta alone, but not so with reference to nijanta.

तद्यथा गोः सक्थिन कर्णे वा कृतं लिक्नं गोरेव विशेषकं भवति न गोमण्डलस्य। This may be illustrated thus:-The mark made in the thigh or the ear of a cow forms the distinguishing mark of the cow and not of the herd.

#### IV

### प्रत्ययग्रहणं णियगर्थम्

Need to read pratyaya for the sake of ni and yak.

प्रत्ययग्रहणं कर्तव्यम् । पूर्ववत्प्रत्ययादिति वक्तव्यम्

There is need to read pratyaya. The  $s\bar{u}tra$  is to be read .  $P\bar{u}rvavat\ pratyay\bar{a}t$ .

किं प्रयोजनम् ? Why?

णियगर्थम् - णियगन्तादिप यथा स्याद् इति, आकुस्मयते विकुस्मयते हृणीयते महीयते इति

For the sake of ni and yak. So that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations may appear after nic and yak, as in  $\bar{a}kusmayat\bar{e}$ ,  $vikusmayat\bar{e}$ ,  $hrn\bar{i}yat\bar{e}$  and  $mah\bar{i}yat\bar{e}$ .

तल को दोष: ? What is the defect there?

### तत्र हेतुमीण्णचः प्रतिषेधः

Need for the pratisēdha of hētuman-nic there.

तत्र हेतुमण्णिचः प्रतिषेधो वक्तव्यः - आसयति, शाययति इति

There is the need to prohibit ātmanēpada in hētumaņ-ņic, so that the forms āsayati and śāyayati can be secured.

सूत्रं च भिद्यते The sūtra has to be modified.

यथान्यासमेवास्तु Let the sūtra remain as it is.

कथमाकुस्मयते विकुस्मयते हृणीयते महीयते इति ?

How can the forms ākusmayatē, vikusmayatē, hṛṇīyatē and mahīyatē be secured?

अनुबन्धकरणसामर्थ्याद्भविष्यति

They are secured by the sāmarthya of the reading of anubandha.

Note:— $N\bar{a}g\bar{e}\hat{s}abhațța$  reads here:— $\bar{A}kusm\bar{a}d\bar{a}tman\bar{e}padinah$  iti gaṇasūtrāt kusma ātmanē $pad\bar{i}$ . Hrnīnmahīnāu kaṇḍvādī  $\dot{n}it\bar{a}u$  paṭhitāu.

अथ वा अवयवे कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति । तद्यथा - गोः सक्थिन कर्णे वा कृतं लिङ्गं समुदायस्य विशेषकं भवति । Or the mark made in the avayava forms the distinguishing mark of the avayavin. This is illustrated thus:—The mark made in the thigh or the ear of a cow forms its distinguishing mark.

हणीययति महीययति इत्यत्रापि प्रामोति

It (ātmanēpada) will appear here also, in hṛṇīyayati and mahīyayati.

अवयवे कृतं लिङ्गं कस्य समुदायस्य विशेषकं भवति ?

Which avayavin has for its distinguishing mark the linga made in the avayava?

यं समुदायं योऽवयवो न व्यभिचरति

The avayavin from which the avayava never gets separated.

यकं च न व्यभिचरति, णिचं तु व्यभिचरति

It does not get separated from the avayava with reference to yak, but not with reference to nic.

तद्यथा - गोः सक्थिन कर्णे वा कृतं लिक्नं गोरेव विशेषकं भवति, न गोमण्डलस्य

It may thus be illustrated:—The mark made in the thigh or the ear of a cow forms the distinguishing mark of the cow, but not of the herd.

## आम्प्रत्ययवत्कुञोऽनुप्रयोगस्य (1, 2, 63)

कृञ्यहणं किमर्थम्? What for is the mention of kṛṇaḥ here? इह मा भूत् - ईहामास ईहामासतुः ईहामासुः

So that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  may not appear in  $\bar{\imath}h\bar{a}m\bar{a}sa$ ,  $\bar{\imath}h\bar{a}m\bar{a}satuh$  and  $\bar{\imath}h\bar{a}m\bar{a}suh$ .

कथं चात्रास्तेरनुप्रयोगो भवति ?

How is the root as taken to be anuprayoga by this sūtra? प्रत्याहारप्रहणं हि तत्र विज्ञास्यते

For kṛñ is taken to be pratyāhāra there.

Note:—Pratyāhāra from kr in the sūtra Abhūtatadbhāvē krbhvastiyōgē...(5, 4, 50) to  $\tilde{n}$  in  $kr\tilde{n}$  in the sūtra  $Kr\tilde{n}\bar{o}$   $dvit\bar{\imath}ya...$  (5, 4, 58) is meant here.

कथं पुनर्ज्ञायते तत्र प्रत्याहारप्रहणभिति ?

How is it known that it denotes pratyāhāra there?

इह कृञ्महणात् Since kṛñ is read in this sūtra.

इह कसात्प्रत्याहारप्रहणं न भवति?

Why should it not be taken to be pratyāhāra here?

इहैव कृञ्महणात् Evidently from the reading of kṛñ here.

अथेह कसान्न भवति उदुम्भाञ्चकार उदुब्बाञ्चकार?

Now why is not ātmanēpada found here in udumbhāñcakāra and udubjāñcakāra?

ननु चाम्प्रत्ययवद् इत्युच्यते, न चात्र आम्प्रत्ययादात्मनेपदं पश्यामः

Oh, the expression  $\bar{a}mpratyayavat$  is read in the  $s\bar{u}tra$  and we do not see  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  after  $\bar{a}mpratyayaprakrti$  (i.e.) the roots umbh and ubj.

न ब्रूमोऽनेनेति

We do not say from this (i.e.) that the ampratyayaprakṛti takes atmanēpada after it.

कि तिहैं! On the strength of what then?

स्वरिताञितः कर्त्रभिप्राये कियाफले आत्मनेपदं भवतीति

On the strength of the sūtra Svaritañitah kartrabhiprāyē kriyā-phalē (1, 3, 72).

नैष दोषः । इदं नियमार्थं भविष्यति आम्प्रत्ययवदेवेति

This difficulty does not arise. This sūtra is taken to be niyama so that that the ātmanēpada sets in only when the āmpratyayaprakṛti is entitled to take it.

यदि नियमार्थं विधिनं प्रकल्पते - ईहाञ्चके ऊहाञ्चके इति

If it is taken as niyamavidhi, it cannot serve as apūrva-vidhi to secure the forms  $\bar{\imath}h\bar{\alpha}\tilde{n}cakr\bar{e}$  and  $\bar{u}h\bar{\alpha}\tilde{n}cakr\bar{e}$ .

विधिश्च प्रक्लप्तः Its apūrva-vidhitva too is settled.

कथम्? How?

पूर्वविदाते वर्तते, आम्प्रत्ययवत्पूर्ववच इति

The word  $p\bar{u}rvavat$  is taken here by anuvrtti, so that this  $s\bar{u}tra$  may be read thus— $\bar{A}mpratyayavat$   $p\bar{u}rvavacca$   $kr\tilde{n}\bar{o}snu-pray\bar{o}gasya$ .

### प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपातेषु (1, 8, 64)

#### **स्वराद्यपसृ**ष्टात्

Svarādyupasrṣṭāt should be read in place of propābhyām.

स्वराद्युपसृष्टादिति वक्तव्यम् - उद्युङ्के, अनुयुङ्के

The expression svarādyupasṛṣṭāt should be read so that we may secure the forms udyunktē and anuyunktē.

Note:—In the list  $pr\bar{a}di$ , all the upasargas which begin with a vowel should be mentioned here (i.e.) apa, anu, ava etc. In that case pra will be left out.

अपर आह Another says.

### खराद्यन्तोपसृष्टात्

The expression Svarādyantopasrṣṭāt should be read.

स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वक्तव्यम् - प्रयुक्के, नियुक्के, विनियुक्के

The expression svarādyantōpasṛṣṭāt should be read (i.e. all which begin in a vowel and which end in a vowel should be taken) so that the forms prayunktē, niyunktē, viniyunktē etc. may be secured.

#### समः क्ष्णुवः (1, 3, 65)

किमर्थ विदेशस्यस्य प्रहणं कियते, न समो गमादिषु इत्येबोच्येत ?

Why is this read separately and not included in the  $s\bar{u}tra$   $Sam\bar{o}$   $gamyrcchibhy\bar{a}m$  (1, 3, 29)?

# समः क्ष्णुवः सकर्मकार्थम्

The sūtra Samah kṣṇuvah is for the sake of giving transitive sense.

सकर्मकार्थोऽयमारम्भः । अकर्मकादिति तत्रानुवर्तते

This sūtra is with reference to the transitive verb. The word akarmakāt has anuvṛtti there in 1, 3, 29 from 1, 3, 26.

## भुजोऽनवने (1, 3, 66)

#### अनवनकौटिल्ययोः

Anavana-kāuṭilyayōḥ has to be read in place of anavanē.

ं अनवनकोटिल्ययोरिति वक्तव्यम्, इहापि यथा स्यात् प्रभुजति वाससी, निभुजति जानुशिरसी इति ।

The expression  $anavana-k\bar{a}utilyay\bar{o}h$  has to be read, so that the forms prabhujati and nibhujati in the sentences prabhujati  $v\bar{a}sas\bar{\imath}$  and nibhujati  $j\bar{a}nu\dot{s}iras\bar{\imath}$  may be secured.

तत्ति वक्तव्यम् It has then to be read.

न वक्तव्यम् । यस्य भुजेरवनमनवनं चार्थस्तस्य ग्रहणम् । न चास्य भुजेरवनमनवनं चार्थः

No, it need not. It is only that root bhuj (7th conjugation) which has both arana and anavana (abhyavahāra) for its meaning is taken here. Both avana and anavana are not the meanings of this bhuj (6th conjugation) which has kāuṭilyá for its meaning.

Note:—Anavanakāutilyayōḥ is published as a vārttika in some editions. Śrī Guruprasādaśāstri records that it is not so found in some manuscripts. It seems to me that it is only a  $p\bar{u}rvapakṣa$  raised by  $Mah\bar{a}bhaṣyak\bar{a}ra$  to illustrate the principle  $Sa\dot{m}sargavad$  viprayogospi viśēṣa-smṛti-hētuḥ noted by  $K\bar{a}iyaṭa$ .

# णेरणौ यत्कर्भ णौ चेत्स कर्तानाध्याने (1, 3, 67)

Three topics are dealt with here:—(1) Is there any need to mention that none other than what is karma in anyantaprayōga can be karma in nyantaprayōga? (2) In this sūtra necessary or not? (3) Is there need for prohibiting ātmanēpada when ātman is the kartā in the nyantaprayōga?

I

# णेरात्मनेपद्विधानेऽण्यन्तस्य कर्मणस्तत्रोपलब्धिः

With reference to ātmanēpada-vidhāna in nyantaprayōga, it happens only when the karma found in anyanta-prayōga is the karma there too.

णेरात्मनेपद्विधानेऽण्यन्तस्य यत्कर्भ यदा ण्यन्ते तदेव कर्म भवति तदात्मनेपदं भवतीति वक्तव्यम्

With reference to the ātmanēpada-vidhāna in nyantaprayōga, it must be said that ātmanēpada sets in only when the karma found in anyantaprayōga is found as such in the nyanta-prayōga.

इत्रथा हि स्वप्रसङ्गः Or it will chance to appear everywhere.

इतरथा हि सर्वत्र प्रसङ्गः स्यात् । इहापि प्रसज्येत - आरोहन्ति हस्तिनं हस्तिपकाः, आरोहयमाणो हस्ती स्थलमारोहयति मनुष्यान्

Or it will chance to appear everywhere. It will appear here also:—Ārōhanti hastinam hastipakāḥ, ārōhayamāṇō hastī sthalam ārōhayati manuṣyān.

Note:— $Atman\bar{e}pada$  will have to be used in place of  $\bar{a}r\bar{o}hayati$ . Here  $manusy\bar{a}n$ , the karma found in the  $nyanta-pray\bar{o}ga$  is not found in the  $anyantapray\bar{o}ga$ .

तत्ति वक्तव्यम् It has, then, to be stated.

न वक्तव्यम् It need not be stated.

कस्मान भवति - आरोहन्ति हस्तिनं हस्तिपकाः, आरोहयमाणो हस्ती स्थल-मारोहयति मनुष्यान् इति ?

How is ātmanēpada prevented from ārōhayati here—ārōhanti hastinam hastipakāḥ, ārōhayamāṇō hastī sthalam ārōhayati manuṣyān?

एवं वक्ष्यामि - 'णेः' आत्मनेपदं भवति; ततः 'अणौ यत्कर्म णौ चेत्' -अण्यन्ते यत्कर्म णौ चेत्, णौ यदि तदेव कर्म भवति; ततः, 'स कर्ता' - कर्ता चेत् स भवति णाविति

I shall explain the sūtra thus:—Nēḥ is taken as one sentence meaning that ātmanēpada appears in nyanta-prayōga. Then Aṇāu yat karma ṇāu cēt is taken as the next sentence which means 'if only the karma in the anyantaprayōga is the karma in the nyantaprayōga.' Then Sa kartā is taken as the third sentence meaning 'if it becomes the kartā in the nyanta-prayōga.'

1. सर्वत्र प्रसङ्गः is another reading.

#### II

## यद्येवं कर्मकर्तायं भवति, तल कर्मकर्तृत्वासिद्धम्

If so, this becomes  $karma-kart\bar{a}$  and it is achieved by the  $s\bar{u}tra$  which enjoins karmakartrtva ( $Karmavat-karman\bar{a}$  tulyakriyah 3, 1, 87).

# कर्मकर्तृत्वात्सिद्धमिति चेद् यक्चिणोर्निवृत्त्यर्थं वचनम्

If it is achieved by karmakartriva, the sūtra is intended to prohibit yak and cin.

कर्मकर्तृत्वात्सिद्धमिति चेद् यिक्चणोर्निवृत्त्यर्थमिदं वक्तव्यम् । कर्मापिद्षष्टौ यिक्चणौ मा भूतामिति ।

If it is accomplished by karmakartriva, there is need for this sūira to prohibit yak and cin (i.e.) that yak and cin which have a chance on account of karmāpadēśa may be prohibited.

## न वा यक्चिणाः प्रतिषेधात्

It need not be on account of yak and cin being prohibited.

न वा एष दोषः This difficulty does not arise.

किं कारणम्? Why?

यक्चिणोः प्रतिषेधात् । प्रतिषिध्येते अत्र यक्चिणो - यक्चिणोः प्रतिषेधे हेतुमण्णिश्रित्र्ञामुपसङ्ख्यानम् इति ।

On account of the prohibition of yak and cin. Yak and cin are prohibited in the  $v\bar{a}rttika$  Yakcinōh pratiṣēdhē hētumaṇṇi-śribrūñām upasaṅkhyānam.

यस्ति न हेतुमण्णिच् तदर्थिनिदं वक्तव्यम्, तस्य कर्मापिदिष्टौ यक्चिणौ मा भूतामिति - उत्पुच्छ्यते पुच्छं स्वयमेव, उद्पुपुच्छत पुच्छं स्वयमेव

This has to be said for the sake of that which is not hētumannic, so that yak and cin may not happen in karmāpadēśa
with reference to it, as in utpucchyatē puccham svayam ēva.
udapupucchata puccham svayam ēva.

अत्रापि यथा भारद्वीजायाः पठन्ति तथा भवितव्यं प्रतिषेधेन - यक्चिणोः प्रतिषेधे णिश्रन्थिय्रन्थिब्र्ञात्मनेपदाकर्मकाणामुपसङ्ख्यानम्

Even here the pratisēdha should take the form as is read by  $Bh\bar{a}radv\bar{a}j\bar{\imath}yas:=Yak\text{-}cin\bar{o}h\ pratisēdhē\ ni\text{-}\acute{s}ranthi\text{-}granthi\text{-}brūñ\text{-}\bar{a}tman\bar{e}pada\text{-}akarmak\bar{a}n\bar{a}m\ upasankhy\bar{a}nam.$ 

Note:—1. The two vārttikas commencing with Yak-cin-pratiṣēdhē are read under the sūtro Na-duha-snu-namām yak-cināu (3, 1, 89).

Note:—2. The answer to the question that may arise that those two  $v\bar{a}rttikas$  need not read ni and this  $s\bar{u}tra$  may be read is given in the next sentence.

स चावर्यं प्रतिषेध आश्रयितव्यः

The pratisedha in that form is indispensably necessary.

### इतरथा हि यत्र नियमस्ततोऽन्यत्र प्रतिषेधः

Or there will be need to mention  $pratis\bar{e}dha$  in places other than those where there is niyama.

अनुच्यमाने ह्येतस्मिन्यत्र नियमस्ततोऽन्यत्र तेन यक्चिणोः प्रतिषेधो वक्तव्यः स्यात् - गणयति गणं गोपालकः, गणयति गणः स्वयमेव

If there is no nigrahana in the  $v\bar{a}rttikas$ , there will be need to prohibit yak and cin in places other than those which come under the purview of niyama, to secure Ganayati ganam  $g\bar{o}p\bar{a}lakah$  and ganayati ganah svayam  $\bar{e}va$ .

आत्मनेपदस्य च (Need of pratisēdha) of ātmanēpada too.

आत्मनेपदस्य च प्रतिषेघो वक्तव्यः, गणयति गणः स्वयमेव

There is need to mention the pratisēdha of ātmanēpada too to secure the form gaṇayati in Gaṇayati gaṇaḥ svayam ēva.

### आत्मनेपद्प्रतिषेधार्थं तु

Let this  $s\bar{u}tra$  be, then, read for the sake of  $\bar{a}tman\bar{e}pada$ - $pratis\bar{e}dha$ .

आत्मनेपद्मतिषेधार्थिमिदं वक्तव्यम् — गणयति गणः स्वयमेव This sūtra has to be read to prohibit ātmanēpada in Gaņayati gaṇaḥ svayam ēva.

इष्यत एवात्रात्मनेपदम् Atmanēpadam is wished for here. किमिष्यत एव, आहोस्वित् प्रामोत्यिप ?

Is it only wished for or does it have a chance to appear? इष्यते च प्रामोति च

It is both wished for and has a chance to appear.

कथम् ? How?

अणाविति कस्येदं णेर्महणम् ?

Which is referred to by the word anau?

यस्माण्णेः प्राक् कर्म वा कर्ता वा विद्यते

The ni before whose appearance karma or kartā was seen.

न चैतस्माण्णेः प्राक्कर्म कर्ता वा विद्यते

Neither karma nor kartā was seen before this ni came.

Note:—1. The roots of the tenth conjugation have no prayoga without nic and hence it is said that they take no kartā nor karma before nic appears after them.

Note:—2.  $K\bar{a}iyata$  reads here:— $Nityatv\bar{a}n$  nicah  $k\bar{e}val\bar{a}-n\bar{a}m$  cur $\bar{a}d\bar{i}n\bar{a}m$  prayög $\bar{a}bh\bar{a}v\bar{a}d$  anāu karmanössambhav $\bar{a}d$  nēr iti hētumannicō grahanam.

इदं तर्हि प्रयोजनम् - अनाध्यान इति वक्ष्यामि इति । इह मा भूत् स्मराति वनगुरुमस्य कोकिलः, स्मरयत्येनं वनगुरुमः स्वयमेवेति

This, then, is the prayōjana, that I may mention anādhyānē, so that ātmanēpada may not appear in smarayati in the sentence Smarayatyēnam vanagulmaḥ svayam ēva, which follows the sentence Smarati vanagulmasya kōkilaḥ.

एतद्पि नास्ति प्रयोजनम् । कर्मापदिष्टा विधयः कर्मस्थभावकानां कर्मस्थ-क्रियाणां वा भवन्ति । कर्तृस्थभावकश्चायम् ।

This, too, is not the prayojana. The vidhis relating to karma should refer to the state of existence of karma or to the action of karma. This is a case referring to the state of existence of kartā.

एवं तर्हि सिद्धे सित यदनाध्यान इति प्रतिषेधं शास्ति तद् ज्ञापयत्याचार्यो भवत्येवंजातीयकानामात्मनेपदम् इति

Since  $\bar{A}c\bar{a}rya$  reads the  $pratis\bar{e}dha$ -anā $dhy\bar{a}n\bar{e}$  when it is otherwise achieved, he suggests that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  may appear in similar cases.

किमेतस्य ज्ञापने प्रयोजनम् ?

What is the benefit from this  $j\tilde{n}\bar{a}$  pana?

पश्यन्ति भृत्या राजानम्, दर्शयते भृत्यान् राजा । अत्र आत्मनेपदं सिद्धं भवति  $Atman\bar{e}pada$  may be used in the word  $darśayat\bar{e}$  of the sentence  $Darśayat\bar{e}$   $bhrty\bar{a}n$   $r\bar{a}j\bar{a}$ , which is related to Paśyanti  $bhrty\bar{a}$   $r\bar{a}j\bar{a}nam$ .

III

#### आत्मनः कर्मत्वे प्रतिषेधः

Need for pratisēdha when ātman is karma.

आत्मनः कर्मत्वे प्रतिषेधो वक्तज्यः । हन्त्यात्मानं, घातयत्यात्मा इति If ātman is karma, there is need for pratisēdha to secure ghātayati in ghātayati ātmā when ātman is the object of hanti.

स तर्हि वक्तव्यः It, then, has to be mentioned.

## न वा ण्यन्तेऽन्यस्य कर्तृत्वात्

No, it need not be mentioned, since the  $kart\bar{a}$  in the  $nyanta-pray\bar{o}ga$  is one other than the karma in the  $anyantapray\bar{o}ga$ .

न वा वक्तव्यः It need not be mentioned.

किं कारणम्? Why?

ण्यन्तेऽन्यस्य कर्तृत्वात् । अन्यद्त्राण्यन्ते कर्मान्यो ण्यन्तस्य कर्ता On account of the kartā in nyantaprayōga being another. One is karma in anyantaprayōga and another is the kartā in the nyantaprayōga.

कथम् ? How?

द्वावात्मानौ - अन्तरात्मा शरीरात्मा च

There are two ātmans, the ātman inside and the physical body.

Note:—Antarātmā is, according to  $S\bar{a}nkhyas$ , the antah-karana and according to  $N\bar{a}iy\bar{a}yikas$ , the  $j\bar{\imath}va$ .

अन्तरात्मा तत्कर्म करोति येन शरीरात्मा सुखदुः से अनुभवति ; शरीरात्मा तत्कर्म करोति येनान्तरात्मा सुखदुः से अनुभवति इति

Antarātmā does that  $kriy\bar{a}$  which produces pain and pleasure to the physical body and the physical body does that  $kriy\bar{a}$  which produces pain and pleasure to the antarātman.

Note:—1. The same topic with reference to two  $\bar{a}tmans$  is found in the  $bh\bar{a}sya$  under the  $s\bar{u}tra$  Karmavat karman $\bar{a}$  tulyakriyah (3, 1, 87).

Note:—2. The expression  $\hat{S}ar\bar{\imath}r\bar{a}tm\bar{a}$  sukhaduḥkhē anubhavati is explained by  $K\bar{a}iyata$  thus:— $\hat{S}ar\bar{\imath}rasya$  acētanatvāt sukhaduḥkhahētubhyām  $\hat{s}ar\bar{\imath}ram$  sambadhyatē iti vyākhyēyam.

## खरिताञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले (1, 3, 72)

The prayojanas of reading the word svaritanitah, the two prepositions abhi and pra and the expression kartrabhiprāyē kriyāphalē are discussed here.

Ι

स्वरितञित इति किमर्थम्?

What for is the word svaritañitah read in the sūtra?

याति, वाति, द्राति, प्साति

(So that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations may not be used after the roots)  $y\bar{a}$ ,  $v\bar{a}$ ,  $dr\bar{a}$  and  $ps\bar{a}$ .

स्वरितञित इति शक्यमकर्तुम्

It is possible to omit the word svaritañitah from the sūtra.

इह कस्मान भवति याति वाति द्राति प्सावि इति

How then cannot  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  terminations appear here—after the roots  $y\bar{a}$ ,  $v\bar{a}$ ,  $dr\bar{a}$  and  $ps\bar{a}$ ?

कर्त्रभिपाये क्रियाफले इत्युच्यते । सर्वेषां च कर्त्रभिप्रायं क्रियाफलमस्ति । त एवं विज्ञास्यामः, येषां कर्त्रभिप्रायम् अकर्त्रभिप्रायं च क्रियाफलमस्ति तेभ्य आत्मने-पदं भवति इति । न चेषां कर्त्रभिप्रायं चाकर्त्रभिप्रायं च क्रियाफलमस्ति । तथाजातीयका खल्वाचार्येण स्वरिताञितः पठिताः ये उभयवन्तः येषां कर्त्रभिप्रायं च अकर्त्रभिप्रायं च क्रियाफलमस्ति

The expression kartrabhipraye kriyaphale is read in the sattra. The fruit of the action intended by the karta is found with reference to every root. Hence we think that, if a root is capable of having reference both to the fruit of the action intended by the karta and to the fruit of the action intended by one other than the karta, it takes atmanepada terminations when it has reference to the fruit of the action intended by

the  $kart\bar{a}$ . These roots  $(y\bar{a}, v\bar{a}, dr\bar{a} \text{ and } ps\bar{a})$  do not have reference to the  $kriy\bar{a}phala$  intended both by the  $kart\bar{a}$  and  $non-kart\bar{a}$ . It is only those roots which have reference to the  $kriy\bar{a}phala$  intended both by the  $kart\bar{a}$  and  $non-kart\bar{a}$  that are read with  $svarit\bar{e}t$  and  $\tilde{n}it$ .

Note:—1. Kāiyaṭa reads here:—Idam ātmanēpadam samvidhānavṛttibhyō dhātubhyō bhavati iti kēcid vyācakṣatē....Anyē tvāhuḥ, svārtham yaḥ kriyām ārabhatē tatra ātmanēpadam, parārthārambhē tu parasmāipadam.

Nāgēśabhaṭṭa explains the same thus:—Sarvāvayavaka-kriyāpravṛttyanukūlavyāpāra ēva saṁvidhānaśabdavācyaḥ...
Svārthatva-parārthatva-ubhayavivakṣāvatām dhātūnām svārtha-tvavivakṣāyām taṅānāu iti sūtrārthaḥ.

Note: -2. From this it is evident that, according to  $Mah\bar{a}bh\bar{a}syak\bar{a}ra$ ,  $svarita\tilde{n}itah$  in the  $s\bar{u}tra$  is unnecessary.

 $\Pi$ 

अथ अभिप्रग्रहणं किमर्थम्?

What for, then, are read abhi and pra?

स्वरितिञतः कर्त्राये क्रियाफले इतीयत्युच्यमाने यमेव सम्प्रत्येति क्रियाफलं तत्रैव स्यात्, छुञ् - छुनीते, पूञ् - पुनीते; इह न स्यात् यज् - यजते, वप् - वपते । अभिश्रहणे पुनः क्रियमाणे न दोषो भवति । अभिराभिमुख्ये वर्तते, प्र आदिकर्मणि । तेन यं चाभिषेति यं चाभिषेप्यति यं चाभिष्रागात् तत्र सर्वत्राभिभुख्यमात्रे सिद्धं भवति । If the sūtra is read without abhi and pra thus—Svaritanitah kartrāyē kriyāphalē - ātmanēpada will appear only in those cases where the fruit of the action immediately goes to kartā as in  $lun\bar{\imath}t\bar{e}$  (from the root  $l\bar{u}\tilde{n}$ ) and  $pun\bar{\imath}t\bar{e}$  (from the root  $p\bar{u}\tilde{n}$ ) and not in yajalē (from the root yaj) and in vapatē (from the root vap). If, on the other hand, abhi and pra are read, there will be no difficulty. Abhi suggests ābhimukhya (the state of pointing towards) and pra suggests ādikarman (the act commencing with). Then ālmanēpada will have chance to appear everywhere whether the fruit of the action immediately goes to the  $kart\bar{a}$ , will go to the  $kart\bar{a}$  in future or went to the  $kart\bar{a}$  in the past.

III

कर्त्रभिपाये कियाफले इति किमर्थम्?

What for is read kartrabhiprāyē kriyāphalē?

पचन्ति भक्तकराः, कुर्वन्ति कर्मकराः, यजन्ति याजकाः

Otherwise ātmanēpada will appear in forms pacanti, kurvanti and yajanti in the sentences pacanti bhaktakarāḥ (cooks cook) kurvanti karmakarāḥ (servants do the work) and yajanti yājakāḥ (rtviks perform the sacrifice).

कर्त्रभिप्राये कियाफले इत्युच्यमानेऽप्यत्र प्रामोति । अत्रापि हि कियाफलं कर्तारमभिपेति - याजका यजन्ति गा लप्स्यामह इति, कर्मकराः कुर्वन्ति पादिकम- हर्लप्स्यामह इति ।

It chances to come here even if the expression kartrabhiprāyē kriyāphalē is read. The fruit of the action reaches the kartā even here. Rtviks perform the sacrifice that they will get cows and servants do their work that they will get 25 per cent of the day's profit.

एवं तर्हि कर्त्रभिप्राये कियाफले इत्युच्यते, सर्वत्र च कर्तारं कियाफलमभिषेति । तत्र प्रकर्षगतिर्विज्ञास्यते - साधीयो यत्र कर्तारं कियाफलमभिषेति । न चान्तरेण यिं यिजफलं विषे वा विषक्षलं लभन्ते । याजकाः पुनः अन्तरेणापि यिंज गालभन्ते भृतकाश्च पादिकम् इति

When such is the case that the fruit of the action goes everywhere to the  $kart\bar{a}$ , the expression  $kartrabhipr\bar{a}y\bar{e}$   $kriy\bar{a}phal\bar{e}$  is read. It is given the special sense—where the fruit of the action goes to the  $kart\bar{a}$  only through that action and through nothing else. One does not get the fruit of yajana (the  $ap\bar{u}rva$  which leads him to Heaven after death) without yajana nor does one get the fruit of his ceremonial shave except from the shave. But rtviks get cows even without yajana and the wage-earners money even without doing the particular work.

Note:—The fruit of yajana and vapana is apūrva and they have no drstaphala.

# शेषात् कर्तरि परसमपदम् (1, 3, 78)

Two topics, one with reference to  $\pm \bar{e} \pm \bar{a}t$  and another with reference to  $\pm kartari$ , are dealt with here.

I-a

## शेषवचनं पश्चम्या चेदर्थे प्रतिषेधः

If the word śēṣa is followed by the fifth case-suffix, need for the pratisēdha (of parasmāipada) in karmakartṛ.

शेषवचनं पञ्चम्या चेदर्थे प्रतिषेधो वक्तव्यः - भिद्यते कुसूरुः स्वयमेव, छिद्यते रज्जुः स्वयमेव ।

If the word śēṣa is used in the fifth case, there is need to prohibit parasmāipada in karmakartṛprayōga as in the forms bhidya'ē and chidyatē in the sentences Bhidyatē kusūlaḥ svayam ēva (granary breaks itself open) and Chidyatē rajjuḥ svayam ēva (rope snaps itself).

एवं तर्हि शेषे इति वक्ष्यामि

If so, I shall read śēṣē in place of śēṣāt.

## सप्तम्या चेत्प्रकृतेः

(Pratiṣēdha) of prakṛti if it is in the seventh case.

सप्तम्या चेत् प्रकृतेः प्रतिषेधो वक्तत्र्यः - आस्ते शेते, च्यवन्ते, ष्लवन्ते If śēṣa is read in the seventh case, there is need to prohibit roots (which are anudāttēt and nit) from taking parasmāipada to secure the forms āstē, śētē, cyavantē and plavantē.

Note:  $-K\bar{a}iyata$  reads here:  $-Pratyayaniyam\bar{e}$  prakr $t\bar{i}n\bar{a}m$  aniyam $\bar{a}d$  anud $\bar{a}tta\dot{n}idbhyah$  parasm $\bar{a}ipadam$  api pr $\bar{a}pn\bar{o}ti$ .

# सिद्धं तूभयनिर्देशात्

Accomplishment of the object through the mention of both.

सिद्धमेतत् This (the object) is achieved.

कथम् ? How ?

उभयनिर्देशः कर्तव्यः । शेषात् शेषे इति वक्तव्यम्

Mention of both should be made. Both śēṣāt and śēṣē have to be read.

#### II

कर्तृत्रहणिनदानीं किमध स्यात्? What for is kartari read?

कत्प्रहणमनुपराद्यर्थम् Reading of kartari is for kr with anu, parā etc.

अनुपराद्यथमेतत् स्यात् - इह मा भूत् अनुक्रियते स्वयमेव, पराक्रियते स्वयमेव इति

This is intended with reference to kr with anu,  $par\bar{a}$  etc., so that  $parasm\bar{a}ipada$  may not appear in  $anukriyat\bar{e}$  svayam  $\bar{e}va$  and  $par\bar{a}kriyat\bar{e}$  svayam  $\bar{e}va$ .

### I--b

1 सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते ।

The object is accomplished; but the  $s\bar{u}tra$  has to be modified.

यथान्यासमेवास्तु Let the sūtra remain as it is.

ननु चोक्तं शेषवचनं पञ्चम्या चेद्थे प्रतिषेधः इति

Oh, it was said that, if  $\dot{s}\bar{e}\dot{s}\bar{a}t$  is read, there is need for the pratisedha in  $karmakartaripray\bar{o}ja$ .

नैष दोषः । कर्तरि कर्मव्यतिहारे इत्यत्र कर्तृश्रहणं प्रत्यास्यायते, तत्प्रकृत-मिहानुवर्तिष्यते शेषात् कर्तरि कर्तरि इति ।

This defect can be avoided. The word kartari in the sūtra Kartari karmavyatihārē is found unnecessary and it is taken here by anuvrtti, so that this sūtra may be read Śeṣāt kartari kartari parasmāipadam.

किमिदं कर्तरि कर्तरि इति

What is meant by kartari kartari?

कर्तेव यः कर्ता तत्र यथा यात्, कर्ता चान्यश्च यः कर्ता तत्र मा भृद् इति So that it  $(parasm\bar{a}ipada)$  may appear only when  $kart\bar{a}$  is  $kart\bar{a}$  and not where both  $kart\bar{a}$  and something else are  $kart\bar{a}$ .

## अनुपराभ्यां कृत्रः (1, 8, 79)

किमर्थमिद्मुच्यते ? What is the need for this sūtra?

## परसौपदप्रतिषेधात कुञादिषु विधानम्

Pratiprasava of parasmāi pada with reference to krñ on account of parasmāi pada-pratisēdha.

1. It is preferable to have the text from sidhyati to the end before largerahanam idanim kimartham syat.

परस्मैपद्रतिषेधात् कृञादिषु परस्मैपदं विधीयते । प्रतिषिध्यते तत्र परसौपदं स्वरिताञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले आत्मनेपदं भवति इति ।

Parasmāipada is enjoined with reference to kṛñ etc. since it was prohibited. It is prohibited by the sūṭra Svaritañitaḥ kartrabhiprāyē kriyāphalē which enjoins ātmanēpada.

अस्ति प्रयोजनमेतत् ! Is this the prayojana?

किं तहींति? What then?

# तत्रात्मनेपद्प्रतिषेधोऽप्रतिषिद्धत्वात्

Need for the pratisēdha of ātmanēpada there, on account of its not being prohibited.

तत्र आत्मनेपदस्य प्रतिषेधो वक्तव्यः

There is need to prohibit ātmanēpada there.

किं कारणम्? Why?

अप्रतिषिद्धत्वात् ; न हि आत्मनेपदं प्रतिषिध्यते

Since it is not prohibited. For ātmanēpada is not prohibited.

किं तर्हि? What then is done?

परसौपदमनेन विधीयते Parasmāipada is enjoined by this.

# न वा द्युतादिभ्यो वावचनात्

No, on account of the mention of  $v\bar{a}$  with reference to  $dyut\bar{a}di$ .

न वैष दोषः This difficulty does not arise.

किं कारणम्? Why?

द्युतादिभ्यो वावचनात् । यदयं द्युतादिभ्यो वावचनं करोति तद् ज्ञापयत्याचार्यो न परस्मैपदिवषये आत्मनेपदं भवतीति ।

On account of the anuvrtti of  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  with reference to  $dyut\bar{a}di$ .  $Ac\bar{a}rya$  suggests that  $\bar{a}tman\bar{e}pada$  does not set in where  $parasm\bar{a}ipada$  comes, since he makes the anuvrtti of  $v\bar{a}vacana$  in  $Dyudbhy\bar{o}\ lu\dot{n}i$ . (1, 3, 91)

Note:  $V\bar{a}vacan\bar{a}t$  in the  $bh\bar{a}sya$  means on account of the anuvrtti of the word  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  (from the  $s\bar{u}tra$   $Vibh\bar{a}s\bar{a}karmak\bar{a}t$  1-3-85).

## आत्मनेपद्नियमे वा प्रतिषेधः

Or pratisēdha near ātmanēpadaniyama.

आत्मनेपद्नियमे वा प्रतिषेधो वक्तव्यः । स्वरितज्ञितः कर्त्रभिष्राये क्रियाफले, आत्मनेपदं भवति, कर्तर्थनुपराभ्यां कृञो न इति

Or the pratisēdha should have been mentioned near ātmanēpadaniyama, (i.e.) near the sūtra Anudāttanīta ātmanēpadam
(1, 3, 12). The sūtra Svaritanītuh kartrabhiprāyē kriyāphalē
should be read after it and after it Kartaryanuparābhyām kṛnō
na should have been read.

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते ।

The object is accomplished. But the sūtra is modified.

यथान्यासमेवान्त Let the sūtra remain as it is.

ननु चोक्तं तलात्मनेपद्पतिषेधोऽप्रतिषिद्धत्वादिति

Oh, it was said that there is need for the pratisēdha of ātmanēpada on account of its being apratisiddha.

परिहृतमेतद् न वा द्युतादिभ्यो वावचनादिति

It was answered thus: -Na vā dyutādibhyō vāvacanāt.

अथवा इदं तावद्यं प्रष्टव्यः - स्वरित्ञितः कर्त्तभिप्राये क्रियाफले आत्मनेपदं भवतीति परस्मैपदं कस्मान्न भवति ।

Or he is to be questioned thus:—Why does not parasmāipada appear where ātmanēpada appears on the strength of the sūtra Svaritanītah kartrabhiprāyē kriyāphalē?

आत्मनेपदेन बाध्यते It is set at naught by ātmanēpada.

यथैव तह्यात्मनेपदेन परस्मैपदं बाध्यते, एवं परस्मैपदेनापि आत्मनेपदं बाधिष्यते Just as parasmāipada is set at naught by ātmanēpada, so also will ātmanēpada be set at naught by parasmāipada.

# बुधयुधनशजनेङ्प्रद्रुसुभ्यो णेः (1, 3, 86)

बुधादिषु येऽकर्मकास्तेषां प्रहणं किमर्थम्?

What for is the mention of intransitives among budhādis?

सकर्मकार्थमचित्तवत्कर्तृकार्थं वा

For the sake of sakarmakas or acittavat-kartrkas.

Note:—Acittavatkartrka is that which has for its kartā one not endowed with reason.

# अणावकर्मकाचित्तवत्कर्तकात् (1, 3, 88)

# अणावकर्मकादिति चुरादिणिचो ण्यन्तात्परसोपदम्

Mention of parasmāipada after the nyanta of curādi-nic with reference to the sūtra Aṇāvakarmakāt...

अणावकर्मकादिति चुरादिणिचो ण्यन्तात्परस्मैपदं वक्तव्यम् । इहापि यथा स्यात्, चेतयमानं प्रयोजयति - चेतयति

Mention of parasmāipada after nyanta of curādinic after the sūtra Anāvakarmakāt..., is necessary so that the form cētayati in the sense of cētayamānam prayējayati may be secured.

यदि तर्हि अत्रापीष्यते अणिमहणिमदानीं किमथ स्यात्?

If it is desired even here, what is the need for the word anau in the  $s\bar{u}tra$ ?

अकर्मकग्रहणमण्यन्तिवशेषणं यथा विज्ञायेत

So that the word akarmaka may be taken as the viśēṣaṇa of anyanta.

अथाकियमाणेऽणिप्रहणे कस्याकर्मकप्रहणं विशेषणं स्यात ?

To whom will the word akarmaka be the viśēṣaṇa, if aṇāu is not read?

णेरिति वर्तते, ण्यन्तविशेषणं स्यात

There is the anuvitti for the word  $n\bar{e}h$  (from the  $s\bar{u}tra\ Budha...$ ) and it will become the  $viś\bar{e}sana$  of  $n\bar{e}h$ .

तत्र को दोष: What will be the harm then?

इहैव स्यात् चेतयमानं प्रयोजयित - चेतयित । इह न स्यात् आसयित शाययित

Parasmāipada will appear only in cētayati in the sense of cētayamānam prayōjayati and it will not appear in āsayati and śāyayati.

## सिद्धं त्वतस्मिन् णाविति वचनात्

It is accomplished by reading atasmin nāu.

सिद्धमेतत् This (the object) is accomplished.

कथम् ? How?

अतिसम् णौ योऽकर्मकस्तत्रेति वक्तव्यम्

It must be mentioned that it comes with reference to that which is akarmaka in non-hētumaņ-nic.

Note:— $K\bar{a}iyața$  reads here:— $Tacchabd\bar{e}na$  hētumaņ-ņij nirdi $\acute{s}yat\bar{e}$ .

सिध्यति । सूत्रं तर्हि भिद्यते ।

The object is accomplished. But the sūtra has to be modified. यथान्यासमेवास्त Let the sūtra remain as it is.

ननु चोक्तम् अणावकर्मकादिति चुरादिणिचो ण्यन्तात् परसैपदवचनमिति Oh, it was said that mention of  $parasm\bar{a}ipada$  is necessary after the nyanta of  $cur\bar{a}di$ -nic with reference to the  $s\bar{u}tra$   $An\bar{a}vakarmak\bar{a}t$ ...

नैष दोषः This difficulty does not arise.

अणाविति कस्येदं णेर्प्रहणम् ? To which ni does ni in anēḥ refer ?

यसाण्णेः प्राकृ कर्म कर्ता वा विद्यते

To that ni, before which there was karma or kartā.

न चैतसाण्णेः प्राक् कर्म कर्ता वा विद्यते

Karma or kartā did not exist before this ņi came.

## न पादम्याङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवद्वसः (1, 3, 89)

पादिषु घेट उपसङ्ख्यानम् Addition of dhēṭ with reference to pādis.

पादिषु घेट उपसङ्ख्यानं कर्तव्यम् - घापयेते शिशुमेकं समीची

Addition of the root  $dh\bar{e}t$  to the  $p\bar{a}di$  list is necessary, so that the form  $dh\bar{a}pay\bar{e}t\bar{e}$  may be secured in the sentence  $dh\bar{a}pay\bar{e}t\bar{e}$  sisum  $\bar{e}kam$  samīcī (two does allow one young to suck).

Note:—The word samīcī should be taken as the nominanative dual.

# **छाटि च क्लपः** (1, 3, 93)

किमर्थश्चकारः ? What for is the word ca?

स्यसनोरित्येतदनुकृष्यते

Only will then syasanoh be taken here by anuvrtti.

यदि तर्हि नान्तरेण चकारमनुवृत्तिभवति 'द्युच्चो छुङि ' इत्यत्रापि चकारः कर्तव्यः विभाषेत्यनुकर्षणार्थः । अथ इदानीमन्तरेणापि चकारमनुवृत्तिभवति इहापि नार्थश्चकारेण । एवं सर्वे चकाराः प्रत्याख्यायन्ते ।

If there will be no anuvrtti without the word ca, there will be no anuvrtti to the word  $vibh\bar{a}s\bar{a}$  in the  $s\bar{u}tra$   $Dyudbhy\bar{o}$   $lu\bar{n}i$  and hence  $cak\bar{a}ra$  has to be read there. If anuvrtti is resorted to there even without  $cak\bar{a}ra$ , there will be anuvrtti here too without it. All  $cuk\bar{a}ras$  of this kind are thus set at naught.

FOURTEENTH ĀHNIKA ENDS
(First adhyāya, third pāda ends)

VOLUME IV ENDS



### (i) INDEX OF SŪTRAS

### Number refers to page

अचश्च 42-47 अणावकर्मकात्....322-323 अनुदात्तङित आत्मनेपदम् 259-272 अनुपराभ्यां कृत्रः 319-321 अपृक्त एकाल्प्रत्यय 68-72 अर्थवद्...80-98 अवाद्रः 287 असादो द्वयोश्च 123--4 असंयोगाल्लिट् कित् 12-13 आङ उद्गमने 285 आङो दोनास्यविहरणे 278 आङो यमहनः 284 आम्प्रत्ययवत्...306-308 **इको झ**ल् 16-20 इतरेतरान्योन्य...277 इद् गोण्याः 110-111 इन्धिभवतिभ्यां च 13-14 उचैरदात्तः, नीचैरनुदात्तः 47-51 **उद्धिभ्यां तपः** 283–284 उदोनुध्वंकर्माण 281 उपदेशेऽनुनासिक इत् 215-221 उपाद्यमः खकरणे 289 उपान्मन्त्रकरणे 281-283 **ऊकालोऽच्**... 33-42 एकविभक्ति...77-79 **एकश्रुति...6**0-63 क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च २७१-२८१ कर्तरि कर्मन्यतिहारे 272-276 कृत्रदितसमासाश्च 98-99 त्राम्यपशुसङ्घेषु 190-192 गाङ्कुटादिभ्यः....1-9

गोस्त्रियोः...103-108 चुदू 229-232 छन्दसि पुनर्वस्वाः, विशाखयोश्च 125 जात्याख्यायां....119-123 जरजौ...309-315 **त्यदादी**दि....187-190 तत्युरुषः....72-73 तद्शिष्यं...119 तस्य लोपः 232-240 तस्यादित....54-60 तिष्यपुनर्वस्वोः...125-8 तृषिमृषि ... 32 दाणश्च....288-289 देवब्रह्मणोः…65 न क्त्वा सेट् 25-30 न गतिहिंसार्थेभ्यः 276-277 न पाद्मि...323 नपुंसकं...184-5 न विभक्तौ तुसाः 227-9 न सुब्रह्मण्यायां 63-4 नानोर्ज्ञः 289 प्रथमानिर्दिष्टं 73-77 प्रोपाभ्यां...308 पिता मात्रा 185-7 पुमान् स्त्रिया 180 पूङः क्त्वा च 30-2 पूर्ववत्सनः 297-फल्गुनी....124-5 **बुधयुघ...**.321**–**322 भ्रात्<u>यु</u>दौ...180-4 भुजोऽनवने 309

भूबादयो घातवः 193-215

मृडमृद....14-5

यथासङ्ख्यम्...240-252

रलो व्युपधात्...32-3

लिङ्सिचौ...22-4

खुक् तद्धित**खुकि** 109-110

लुटि च क्लपः 324

छुपि युक्तवद्...111-116

व्यक्तवाचां...285-287

विपराभ्यां जेः 277-278

विशेषणानां...116-119

**बृद्धो यूना---1**78-179

**श्वशुरः श्वश्र्**वा 185-7

शदेः शितः 290-297

रेाषात्कर्तरि परसौपदम् 318-319

स्री पुंवच 179-180

स्थाघ्वारिच 24-5

**खरितञितः...**315-317

**खरितात्...**65-7

स्वरितेनाधिकारः 252–8 .

**समः क्ष्णुवः** 308

समबप्रविभ्यः स्थः 281

समस्तृतीयायुक्तात्...287-288

समाहारः खरितः 51-3

समो गमि.. 284-285

सरूपाणां...129-178

सार्वधातुकमपित् 9-12

हस्वो नपुंसके ..99-102

**हलन्यम्** 221-226

हलन्ताच 20-22

### (ii) INDEX OF VĀRTTIKAS

अचश्चेन्नपुंसक... 44 अज्यहणं संयोगाच् .... 47 अणिजोः...68 अणिजोः...णे...69 अणावकर्मकादिति...322 अतिप्रसङ्गो .... क्ङिति 246 अद्वन्द्व....] 88 अधिकरणगतिः....176 अधिकार $oldsymbol{\cdots}$ ज्ञानार्थे तु 254अधिकारः प्रतियोगं....252 अधिकारपरिमाण....254 अधीयान...249अन्यत्रापि तद्विषय...187 अन्यत्राभिधेयस्य 114 अन्यनिर्देशस्तु....254 अन्वयव्यतिरेकाभ्यां....201

अनन्तर इति चेत्... 237 अनन्तरे प्छुतो....25 अनर्थकं तु 16 अनवक्तिसि...248 अनवनकौटिस्ययोः 309 अनुबन्धलोपे...अप्रसिद्धिः 235 अनेकराफेषु....192 अनेकान्ते....237 अनोर्ज्ञ:...289 अप्रत्यय इति चेद्...95 अपिन्ङिदिति...11 अपृक्तसंज्ञायां....68 अप्राप्तेर्चा 78 अभिधानं-162अमुष्यत्यन्तः....64 अर्तिश्च...285

अर्थतश्चेत्...दोषः 243 अर्थवत्ता नोपपद्यते...88 अर्थवत्समुदायानां...85 अर्थवति...82 अर्थातिदेशात्...121 अव्ययप्रतिषेधः....99 अवयव....विधिप्रसङ्गः 230 अवयवग्रहणात् सिद्धम् 230 अवाद्रः...287 अविनाशोऽनेकात्म्यात् 177 अविशेषेण 66 अवे तृस्रोः २४८ अशिष्टव्यवहारे अशिप्य एकशेषः...158 अशिष्यं वा 122 अस्ति च वैरूप्यम् 170 अस्मद: ...122 असादो नाम...121 अस्ति....199 अस्ति...युगपत् 16<del>1</del> असरूपाणां ... सिद्धम् 181 असावित्यन्तः....64 आकार आख्याते....63 आकृतिवाचित्वात्....185 आकृति...चाजप्यायनः 162 आगमेः क्षमायाम् 279 आङः स्थः प्रतिज्ञाने 281 आङि नुप्रच्छयोः 280 आङो दोऽव्यसनिकयस्य २७४ आत्मनः कर्मत्वे प्रतिषेधः  $314\,$ आत्मनेपदानियमे वा--321आत्मनेपद्रप्रतिषेधार्थे तु 312 आत्मनेपद्वचनं नियमार्थम् 261 आत्मनेपदस्य च 312आत्मनेपद्विधि ... ग्रहणेषु 244 आशिपि नाथः 280 इकः कित्त्वं $\cdots 16$ 

इच कस्य $\cdots 24$ इड्डिथौ ह्यग्रहणम् 31 इस्वं कित्सन्नियोगेन 27 इत्संज्ञायां सर्वप्रसङ्गः...217 इतरथा कि 238इतरथा हि तत्र प्रतिषेधे... 274 इतरथा हि ताभ्यां...299 इतरथा हि तत्र नियमः....312 इतरथा हि सर्वेप्रसङ्गः....310 इतरेतराश्रयं च....209 इति वा वचने--110इतीन्द्रचद्विषयः 177 इतो लोपे...प्रतिषेधात् २३३ इद् गोण्या न 110 इद्रथीभावात्...225 इन्धेः छन्दो.... 13 इन्धेः संयोगार्थः...13 इर उपसङ्ख्यानम् 230 ईयसो बहुवीहौ 104 उचनीचस्य 49 उत्तरार्थम् २७६ उद ईहायाम् 281 उदुपधात् 30 उपसर्गग्रहणम् २७१ उपसर्गपूर्वनियमे...293 उपसर्गादस्यति....285 उपसर्जनहस्वत्वे च 102 उपाद् देवपूजा...करणयोः 281 उपाद्....पथिषु 282 उभयदर्शनाच 162 ऋदुपधेभ्यः....12 ऋदित्वं...18 एकविभक्तौ 78 एकशेषनिर्देशाद्वा 224 एकान्तस्तत्र...236 एकेन...अनुपपन्नः 161 एकेन...न्यय्रोधप्रयोगः 161

एङ:...प्रतिषेधः 245 कृत्वा च विग्रहात् 29 क्त्वायां कित्प्रतिषेधश्च 8 क्यष आत्मनेपद्वचनं....265 क्रियाव्यतीहारे 272 क्रियावचने .... 199 क्रियावचनो घातुः 198 क्रियाविशेषक उपसर्गः 203 कर्तरि चात्मनेपद्विषये...268 कर्तृकर्मणोश्च....248 कपि च 106 कर्तार च $\cdots 268$ कर्मकर्तृत्वात् सिद्धम्....311 कर्मव्यातिहारादिषु...274 किद्तिदेशात् 28 किरते:...279 कुटादीनाम्····8 कृञादिषु तु 303 कृते भवेत् 16 क्रभ्वोः क्त्वाणमुळौ २४८ खलगोरथ...251 खलतिकादिषु...119 गुणयोश्चेत्....52 गुणवचनवद्वा 176 गोटाङ्...103 गोण्या इत्त्वं....111 ङित्किद्यचने....1 चुञ्चपचणपोः...229 घञादिषु... 247 ङसिङसोः...250 चोदनायां....उपाधिवृत्तेः 167 चोदनासु च तस्यारम्भात् 169 श्रापकान्न परोक्षायाम् 26 ज्ञायते चैकोपदिष्टम् 163 ज्योतिषामुद्रमने 285 जाग्रोऽगुणविधिः 7 जात्याख्ययां...120

जादिशब्देन...123 णिळोपस्तु...19 णेरात्मनेपद ..309 त्यदादितः...187 त्रयाणां हि विकारनिर्देशः 35 तच्छीलादिषु...247 तत्र तुसानां प्रतिषेध: 234 तत्र प्रत्ययनिममे .... तत्र भवः...249 तत्र हेतुमण्णिचः....305 तत्नात्मनप्रतिषेधः... तत्रासरूपः...236 तत्पुरुष...72 तत्रासर्वद्रव्यगतिः 166 तत्नकवचनादेशे...120 तथा च लिङ्गवचनसिद्धिः 168 तद्वद्विदेशे....4 तिद्धतिञ्जिकि...प्रतिषेधः 109 तद्धितछुकि ...परत्वात् 109 तद्विषयं च 187 तस्य दोषो ..250 द्रव्याभिधानं व्याङिः 168 द्रव्याभिधाने....166 द्रतादिषु चोक्तम् 40 द्रुतायां तपरकरणे....39 द्वन्द्वे च 106 द्विवचनबहुवचन....157 दम्भेई ल्यहणस्य 21 दर्शनं वै हेतुः 186 दर्शनं हेतुरिति....186 दीर्घप्छुतयोस्तु 38 दीर्घाणां नाकृते....18 दीर्घाणां तु प्रसज्यते 17 दीर्घारम्भात् 16 दीर्घी मा भूत् 24 देवब्रह्मणाः...60 देवब्रह्मणोः...65

ध्माधेटो:...251 धर्मशास्त्रं... 164 धातोश्च...200 न चैकं...आदित्यवद्....176 न चेकं...युगपत् 169 न प्रत्यय इति 96 .न पिन्ङिद्ति...11 नपुंसकहस्वत्वे...99 न वाकर्मकस्य....289 न वा ण्यन्ते...314 न वा तादर्थात् 74 न वा द्युतादिभ्यः....320 न वा द्रीनस्य...115 न वा निर्दिश्यमान...253 न वः प्रत्ययेन...89 न वा यक्चिणोः...311 न वा छिङ्गाभावात् 100 न वा सेट्त्वस्य $\cdots 30$ न सेडिति 25 नाप्रतिषेधात् ?? निगृहीतिः 29 नित्यत्वाह्यादेशस्य...294 नित्यमिकत्वं ....31 निपातस्यानर्थकस्य 94 निष्ठायामवधारणात् 26 नैकं...एकशेषे 165 नैकार्थ्यम् 157 नैकार्थ्यं...आनर्थक्यम् 157 प्रकरणे च सर्वसम्प्रत्ययार्थः 242प्रकृत्यर्थनियमे • • 266 प्रत्ययार्थस्य 200 प्रत्यर्थे शब्द....160 प्रतिषेधः पूर्वस्य च २५० प्रतिषेधो हसादीनाम् ... 276 प्रथमभावग्रहणं च 209प्रथममध्यम $\cdots 156$ प्रथमानिर्दिष्टं 73

प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययात् 184 प्रयोजनं द्विगु 79 प्रातिपदिकप्रतिषेधः....?25 प्लुतश्च विषये 25 पदार्थादन्यस्य 84 परस्परोपपदाच १७७ परसौपद्वतिषधात्...319 परस्य च...188 परिभाषा 262 परिमाणग्रहणम् 197 पाठेन घातु-194पादिषु घेट उपसङ्ख्यानम् 323 पित्करणं ...229 पुनर्वसु...125 पूङः क्त्वानिष्ठयोः 30 पूर्वपदस्य च 104 पूर्ववत्सन इति 299 पूर्वशेष....189 पूर्वस्यात्मनेपद्....302 पृथगनुबन्धत्वे....6 पैलादिषु---69 ब्राह्मणवत्सा-...182 भ्रातपुत्र...शब्दनिवेशः 185 भ्रातपुत्र...सिद्धम् 186 भवतीति चेद् $^{\,2}$ भाववचने....प्रतिषेधः 208 भाववचनो घातुः 204 भावो हि....लोपः <sup>235</sup> भूयसि प्राग्वचनम् 255भूवादीनां वकारः....193 भूवादिपाठः....214 मात्रार्थे वा...110मनुष्यद्धपि । 19 यञ्....प्रतिषेधः 102 ्यञ्---सिद्धम् 102 यस्य विधौ 74 यावतां....न्याच्यः 160

यावतां ...अभिधानम् 160 यावतिथोऽल्....255 युष्मदस्मदो....251 योगाभावाच्च 115 रलः क्त्वासनोः....33 रेण तुल्यं सुधीबनि 27 रोपघेतोः 249 लकारस्य....223 लविधानाद्विहित 🗼 261 **छिङ्गवचन**सिद्धिः....170 लिङ्ग....विव**क्षा**....171 खुपोऽदर्श**न**ः।15 व्यर्थेषु च मुक्तसंशयम् 170 वचनप्रामाण्याद् 69 वर्णस्य अर्थवद्....92 वस्वर्थम् 28 वाक्यप्रतिषेध...83 वा नामधेयस्य 64 वा लिप्सायाम् 282 विकरण...नियमाप्राप्तिः 261 विकरणेभ्यः प्रतिषेधः 259 विनाशे प्रादुर्भावे...169 विपराभ्यां...277 विभक्ती तवर्गः...227 विशेषणानां....117 वेशोयश $\dots$ 250वैरूप्यविग्रहो 178 श्रदेः शितः... ३९० शप उपलम्भने 28। शिक्षेर्जिज्ञासायाम् 279 शिष्टप्रयोगाद्...215 राषवचनं च 268 रोषवचनं पञ्चम्या चेद्....318 षष्ट्यन्तयोः...76 स्यान्तस्योपोत्तमं च 64 स्वराद्यन्तोपसृष्टात् 308 स्वराद्यपसृष्टात् ३०८

स्वरानुबन्धज्ञापनाय च 214 +वरितपर...59स्वरितस्य अर्द्धह्रस्व....57 स्वरितात् 65 स्वरितोदात्ताच 59 स्वरितोदात्तार्थं च 58 स्वाङ्गकर्मकाच 278, 283, 284 सङ्ख्या...अनिर्देशः 242 संज्ञा...अनुचारणार्थः 242 संज्ञाकरणे...3 संज्ञासमास...नियमार्थम् 241सङ्ख्याप्रयोगे....121 सङ्घातार्थवत्वाचः...92 **सङ्घातन**...199 सङ्घादिषु....२४१ सनि झल्यहणं....27 सप्तम्या चेत्...318 समः क्ष्णुवः...308 समानाधिकरणत्वात्...117 समास उत्तरपद्स्य 116 समासग्रहण उक्तम् 98 समाहारोऽचोः...51 समुदायोऽनर्थक 82 समोऽकूजने 279 समो गमादिषु 284 सर्वेत सन्नन्ताद्...5 संस्यानप्रसवौ लिङ्गम् 173 संस्त्याने--173सहयुक्ते तृतीया.... सामर्थ्याद्धि पुनर्भाव्यस् 17 सामान्यविशेष....189 सिद्धं त्वच्समुदायस्य 52 सिद्धं त्वतस्मिन्...323 सिद्धं त्वपवादन्यायेन 235 सिदं तु... ग्रहणप्रतिषेधात् 234 सिद्धं तु तपरनिदेशात् 39 सिद्धं तु पद...72

सिद्धं तु अन्वय....90 सिद्धं तु...प्रत्ययः 209 सिद्धं तु प्रसज्यप्रतिषेधात् 4 सिद्धं तु पूर्वस्य...303 सिद्धं तु...कार्यातिदेशात् 5 सिद्धं तु यस्य विधौ...75 सिद्धं तु लकारनिर्देशात् 223 सिद्धं तु लडादीनां ... 292 सिद्धं तु व्यवसितपाठात् 237 सिद्धं तु व्यवसितान्यत्वात् 222 सिद्धं तु समास…74 सिद्धं तु समसङ्ख्यत्वात् 35 सिद्धं तु समानश्क्रमवचनात् 50 सिद्धं तूपदेशने...219

सिद्धं त्ययनिर्देशात् 318 सिन्धु...251 सुत्यापराणामन्तः 64 सुब्रह्मण्यायां ... 63 सुब्लोपे च 97 स्च्याद्यर्थम् 111 हस्वता...110 ह्रस्वादिविधिः...43 हस्वादिषु सम....34 ह्रस्वार्थम् 16 हरते:...280 हरिवह्योः...276 हरीतक्यादिषु...118 हलन्ये सर्वप्रसङ्गः 221

### INDEX OF PARIBHĀṢAS, NYĀYAS ETC.

अकृतकारि शास्त्रम् 17 अन्तरेणापि वतिमतिदेशो गम्यते 3 अन्यन वर्णग्रहणे जातिग्रहणम् 71 अनन्तरा प्राप्तिः प्रतिषिध्यते 78 अननुबन्धग्रहणे न सानुबन्धकस्य 197 न हि गोधा सर्पन्ती सर्पणादहि-अपवादन्यायः 235 अपि काकः इयेनायते 81 अवयवे कृतं लिङ्गं...304 असिद्धं बहिरङ्गमन्तर्रे 102 उक्तार्थानामप्रयोगः 113, 158 एकार्था समुदायाः 154 औपदेशिकस्य प्रतिषेधः नातिदेशिकस्य कार्यकालं संज्ञापरिभाषम् 262 कुम्भीधान्यन्यायः 230, 231

क्रिमाक्रिमयोः...273 कृतकारि शास्त्रम् <sup>18</sup> ताद्रथात् ताच्छव्द्यम् 74 अनन्तरस्य विधिर्वा...271,275,290 न ह्युपाधेरुपाधिर्भवति, विशेषणस्य वा विशेषणम् 220भेवति 267, 268 न हि भुक्तवान् पुनर्भुङ्के 17 नान्तरीयकत्वाद् बहुवचननिर्देशः <sup>66</sup> नान्यत् पृष्टे नान्यदाख्येयम् 212 नान्यार्थे प्रकृतमन्यार्थे भवति 267 नानुबन्धकृतमनेकाल्त्वम् 239 नानुबन्धकृतमनेजन्तत्वम् 239 नोत्सहते प्रतिषिद्धा....275 प्रत्येकं वाक्यपरिसमाप्तिः 67 मङ्गलादीनि...शास्त्राणि प्रथन्ते <sup>198</sup>

यच नाम सहेतुकं तन्न्याय्यम् 239 रूपनिर्महः शब्दस्य नान्तरेण लौकिकं प्रयोगम् 145 लघ्वर्थं संज्ञाकरणम् 42, 56 लोकोऽवश्यं लोकेषु प्रमाणम् 159 व्यपदेशिवद्भावोऽप्रातिपदिकेन 106

व्याख्यानतो विशेषप्रतिपात्तः...238, 252, 256 विकरणेश्यो नियमो बलीयान् 293 विप्रतिषेधे परं कार्यम् 12 वैषम्यात् सङ्ख्यातानुदेशो न प्राप्नोति 35 शिष्टप्रयोग उपास्यः 215

### (iv) INDEX OF IMPORTANT WORDS IN MAHĀBHĀŞYA TEXT

अनुकरणम् 286

अक्षाः 91, 202 अक्षौ 152 अकृतकारि 17 अग्नीषोमीयः 169 अणुता 50 अत्रभवन्तः 128 अतिदेशः ३, 4 अतिप्रसङ्गः 247 अधिकारगतिः 257 अन्तर्दन्तकेन 49अन्तर्वर्तिनी 86 अन्तरातमा 314 अन्नार्थी 66 अन्यपदार्थत्वात् 153 अन्वयः 201 अन्वयात् 90 अन्वयी 201अन्वर्थग्रहणम् 56, 60, 61, 112, 121 अन्ववसर्गः 50

अन्वाख्यानम् 57

अनन्त्यत्वात् 43

अनर्थकः 82

अनर्थकम् 16

अननुबन्धकः 197

अनिर्देश: 242, 245

अनुबन्ध्य: 169 अनुमान: 198 अनुवाकम् 217 अनेकशफेषु 192 अनेकान्तः 236 अनेकाल्त्वम् 239 अनेजन्तत्वम् 236 अनैकात्म्यात् 177 अप्रधानम् 75 अप्रसिद्धिः । अपवादः 44, 235 अपवादन्यायेन 235 अपाये 155 अपायिनः 171 अपृक्तसंज्ञायाम् 68 अभिधानतः 210 अभिधयविशेषणेन 267 अभिनिर्वृत्तानाम् 263 अभिसंबन्धः 1, 19, 47 अर्थतः 211 अर्थवत्ता 202अर्थवत्समुदायानाम् 99

अर्थवन्तः 92

अर्थस्त्री 184

अर्थात् 232 इन्द्रवत् 165 अर्थातिदेशः 121 इष्टवाची 13 अर्थासम्प्रत्ययात् 153 ईडिः 204 अर्धहस्वम् 54 इंहा 198 अल्पीयांसः 252, 255 उक्तार्थानाम् 161 अलिङ्गम् 100 उचारणसामर्थात् 235 अब्यपवर्गगत: 163, 164 उत्कालितपुंस्काः 189, 191 अवकाश: 19, 20, 266 उत्सर्ग: 235 अवधारणम् 26 उद्देशः 216, 217 . अशिष्टव्यवहारे 288 उदकान्तः 21 अशिष्यः 158 उदाहरणम् 240 असम्प्रत्ययः 3 उपचरन्ति 273 उपजायंत 201 असर्वद्रव्यगतिः 166 **उपातिष्ठ**ति 281, 282 अहि: 268 आकृतिः 177 उपतिष्ठत 281, 282 उपदेशः 216-218 आचार्यः 27, 55, 69, 86, 159, 163, 168, 181, 193, उपदेशनम् 219 उपन्यासः 13, 91, 93, 155, 177, 202 196, 208, 257, 313 उपपद्विशेषणम् 267 आचार्यप्रवृत्तिः 10, 37, 38, 81, 86,97,225,227,231,239,264 उपसङ्ख्यानम् 295 आणवयति 208, 214 उपसर्गेकृतम् <sup>203</sup> आतिदेशिकम् 28 उपाधिः 220, 221 आतिदेशिकेन 9 उपाधिवृत्ते: 167 आतिदेशिकस्य 27, 77, 78, 108 उपायिनः 171 आतिष्ठत 281 उपोद्धलकम् 164 उभयगतिः <sup>274</sup> आदिग्रहणम्, 194 उरुणकाः 191 आद्तियवत् । 76 आदेशः 2 उरुता 50 आन्तर्यम् 240, 246 उष्ट्रमुखः ३४ एकत्वम् 201 आनन्दः 270 आम्रान् <sup>89</sup> एकशपनिर्देशः 224 एकशेपशंब्दाः 154 आमिश्रीभृतम् 54 एकान्तः 236, 238, 239 आयोमिः 50 एकार्थः 157, 202 आरम्भणम् । 69, 176 आलम्भनम् 169 ओदनम् 211आविष्टलिङ्गा 118, 172 औपदेशिकम् 9 औपदेशिकस्य 27, 28, 78, 108 इतरेतराश्रयम् 209, 262, 263

क्रिया 198 क्रियाप्रधानम् <sup>100</sup> क्रियाव्यतिहारे 272 क्रियावचने 211**झामाः** 162 कर्तृत्वम् 201कर्तृसाधनः **2**08 कर्मसाधनः <sup>207</sup> करभः 178, 180 करोति: 204 कल्पे 179 कंसपात्र्याम् 211 कामचारः 46 कार्यम् 257 कार्यातिदेशात् 5, 260 कार्वापणम् 178 कार: 257, 258 कारको 182, 183 कालकाः 52 कालभेदात्  $^{40}$ काळान् 205काञ्यपः 32 किञ्चित्कराणि  $^{4\, ext{l}}$ किशोरः 178, 180 कुक्टः 280 कुम्भीधान्यः 230 कुल्याः 267 कुस्लः 208, 268 कृतकारि  $18\,$ कृतरम्थः 17 केशचड्युः 229केशचणः 229 कोविदारान् <sup>89</sup> खण्डः 170 खरमुखः 34गङ्गे 57, 58, 66

गर्भः 198 -

गरीयसी 133गुणभूतस्य  $^{224}$ गुणवचनानाम्  $176\,$ गुणविवक्षा  $^{172}$ गोघा 268 गोबलीवर्दम्  $^{189}$ गोभूतम् 169गोमन्तौ 183 घोषग्रहणम् 250 ङित्किद्वचने 1 चक्रकमन्यवस्था <sup>296</sup> चित्रगुः 1 चेष्टा 198 चोदनासु 169छन्दः शास्त्रेषु 55 छन्दोविषयः 14ज्ञापयति <sup>69</sup>, 97 **ज्ञापकम्** 62 त्रेखर्यम् 53 तत्कारी 65 तद्वेषी 65 तद्धितवृत्तयः <sup>289</sup> तन्त्रम् 62,65ताच्छब्द्यम् 34, 73, 74तुल्यजातीयः  $10,\,15$ तृणोलपम् <sup>189</sup> द्यावा 162द्रव्यम् 169 द्रव्याभिधानम् 185 द्रव्याभिधाने 162 द्रतायाम् 39 द्यर्थता 159 दाडिमानि 82दारुण्यम् 50 दुलि: 180, 181 द्यापचारः <sup>204</sup>, 277 दोषः 269, 275, 307

दोषा: 211 प्रयोजनम् 6, 8, 9, 16, 18, 19, 23, धर्मशास्त्रम् 164 25, 41, 47, 48, 56, 57, 71, धातु…आदेशः 222 75, 79, 94, 104, 115, 120, न्यङ्कवः 191 159, 181, 185, 188, 189, 191 न्याच्यः 160 197, 214, 232, 257, 261, 268 न्यासे 246 प्रवृत्तिविशेषाः 211 न्यासेन 42 प्रसज्यप्रतिषेधः १६, १८ नड्ढयति 214 प्रसज्यप्रतिषेधात् 4, 11 **नित्याः 2**09 प्रसव: 173, 174 नित्यसम्बन्धात् 89 प्राथम्यम् 211 · निमित्तम् 302 प्राथमकल्पिकः 73 नियतविषयाः 187 प्रादुष्यात् 169 मोक्षणम् 169 नियम: 15, 45, 46, 85, 94, 95 नियमम् 41 प्रक्षन्यग्रोधी 161 नियमात् 266 पक्तिः 200 नियमार्थम् 241, 261, 307 पचित 201 **निर्देशः** 20, 33, 223 **पचनम्** 200 निर्छुठितः 198 पठति 201 निवर्तकः 254 पर्जन्यवत् 18 पर्युदासः 7, 11, 98, 207 प्रकर्षगतिः 223, 286, 288, 317 प्रकरणम् 202 परिभाषायाः 48 प्रकारे 213 परिहारी 153 प्रकृत्यर्थनियमे 266, 269 पाकः 200 पाटलिपुत्रकाः 257 प्रकृतम् 267 **प्रकृता:** 95 पाणिना 211 प्रख्याविशेपात् 163 पानीयम् 267 पादा: 91, 202 प्रत्यक्षलक्षणम् 159 प्रत्ययनियमे 265, 269, 270 पारतन्त्रयेण 124 पारिभाषिक्याः 60, 61 प्रत्यर्थम् 132, 160 प्रत्याख्यायते 41 पिता 186 प्रतिशा 166 पिपीलिकाः 278 पुत्र: 186 प्रतिविधयम् 252 पुरुषान् 205 प्रतिषेधः 2, 9, 11, 12, 24, 27, 28, पुष्यकाः 52 44, 106, 139, 259, 290, 299, पूर्वनिपातः ३६ 303, 305, 314, 321 पूर्वविप्रतिषेधाः 258 प्रथमभावग्रहणम् 210 पूर्वसंज्ञा 41 . **प्रयोग**म् 144

मुण्डः 170

यत्नेन 56 पृथिवी 162 यथान्यासम् २1, २19, २9२, 305, 319 पैतृकम् 280 युक्तवद्भावः 113, 117 ब्रह्मदत्तवत् 4 योगः 13, 41, 118, 123, 124, 257 ब्राह्मणवत्सा 182, 183 ब्राह्मणीवत्सः 182, 183 योगम् 181 योगविभागः 270 बदरपिटके 48 रथाङ्गानि 93 बर्कर: 178, 180 राजन्ते 49 वर्कराः 191 रोहित: 180, 181 बल्बजः 93 लघीय: 42, 75 बह्रथ: 202, 204 बह्वर्थता 159 **लक्षणम** 214 **लक्षणेन** 217 बाह्यः 194 **लघीयसी** 133 **भ्राता** 186 भवेधशब्दः 197 लाघवकृतः 📆 भवति पचति 206 लिङ्गवचनानि <sup>170</sup> लोकतः 253 भारद्वाजीयाः 31, 311 लोप्यलोपिता 130भाव्येते 2 भाववचनः 205 लोहकंसः 48 **लौकिकम्** 144, 151 भाववचनत्वम् 209 भाववचने 211 व्यञ्जनम् 49 व्यतिरेकः 201 भावविकाराः 211 व्यतिरेकात् 90 भिद्यते 67,72 व्यपदेशिवद्भावेन 106 भुक्तवान् 17 व्यपवर्गाभावात् 226 मथुरायाम् 169 मन्दबुद्धेः 57 व्यभिचरति 203 व्यर्थेषु 170 माणवकम् 279**मात्कम्** 280 व्यवधानम् 12 मार्वम् 50 व्यवस्थायाम् २१३ महिषीरूपम् 184 व्यवसितपाठः 237, 238 माङ्गलिकः 193 व्यवसिताः 222 न्यवहितत्वात् 261, 293 माता 186 माषशम्बद्यः 178 व्याकरणम् 55 माषाः 91, 202 **व्याडिः** 168 मांसार्थी 66 वकारः 193 मीमांसको 152 वचनप्रामाण्यात् २३३ मुक्तसंशयम् 170 वचनानि 205

विचप्रच्छयोः 43

वहति 214 वर्णव्यत्यये 92 विषः 204, 316 वर्तमानकालत्वम् २०५, २०६ -बरटा 180, 181 वस्त्रान्तः 21 वहिः 276 वाक्यपरिसमाप्तिः 67 वाचनिकानि 175 वाचानिकी 157, 158 वाचोयुक्तिः 83, 206 वाजप्यायनः 163 वार्तम् 155 विक्लित्तिः 201 विकरणेभ्यः 259 विनइयेत् 169 विप्रतिषेधेन 12

विपादिकाम् 278 विभक्त्यर्थप्रधानम् 100

विभिन्नार्थेषु 178 विरूपप्रतिपत्तिः 133 विरूपाणाम् 162 विलम्बितायाम् 39

विवृतावर्णः 246 विशसनम् 169 विशेषः 265

विशेषणम् 202, 220, 221 विषम: 13, 91, 93, 155, 202

वृत्तज्ञः 238 वृत्तिविशेषः 237

बुषः 2४0 वैयाकरणैः 173 वैधेयः 260

वैरूप्यम् 170 वैषम्यात् 243, 244

**श्वशुरः** 186 श्वा 280

शब्दतः 210

राब्दनिवेशात् 160

शब्दस्री 184 शब्दाः 209 शरीरात्मा 314

शाटकः 263

शाटकान्तम् 289

शालयः २६७ शास्त्रम् 219

शिष्टप्रयोगात् 215 शिष्टव्यवहार: 288 शुद्राभीरम् 189

शोणः 187 स्रोम 169

**खरियष्यते** 103, 257

खराः 49 खसा 186 स्वातन्त्रयेण 124 खाभाविकानि 175 खाभाविकी 157

सङ्कीणीं 218 सङ्घातभक्तः 293 सङ्घातार्थवस्वात् 92

सङ्घातेन 199 संज्ञाकरणम् २, 42, 55-57, 75

संपर्यतिकिया 273 संवृतावर्णः 246 संहितया 193 सत्त्वगुणाः 171 सदाचार्यः 183

सम्बन्धिशब्दाः 207 संस्त्यानम् 173, 174 समसङ्ख्यम् 241

समानशब्दानाम् 194 समुदायः 82

समुदायशब्दाः 154 सर्वप्रसङ्गः 217, 221 सरूपनिवृत्तिः 133

सरूपाणाम् 162

साङ्काश्यकेभ्यः 257

साधनम् २०६

**साधने** 195

सानुबन्धकस्य 197

**सापेक्षः 22**3

सामान्यशब्दाः 91, 202

सामानाधिकरण्यम् 200, 205

सामिप्यात् 49

सारूप्यम् 155

साहचर्याद् 34, 155

सुब्रह्मण्यायाम् 58, 63

सुवर्णकारः 283

सुवाक् 44

सुहृत् 55

सूत्रशाटकवत् 263

सूत्रात् 194

हस्तद्क्षिणः 218

हस्तवामः 218

**हीयते** 201

हेमः 187

### (v) INDEX OF IMPORTANT WORDS IN ENGLISH SCRIPT

Atharvavēda 218

Bhattojidiksita 53, 195

Bhīmasēna 195, 198

Haradatta 54

Kāiyaṭa 1, 48, 67, 73, 81, 112, 114,

133, 142, 146, 150, 154–156, 167–

169, 171, 179, 184, 198, 205, 208,

210, 219, 221, 223, 224, 230, 241, 243, 244, 252, 261, 273, 276, 279,

287, 288, 303, 313, 315, 316, 318.

Kātyāyana 193

Mahābhāşyakāra 95, 103, 123, 125,

126, 129, 156, 193, 202, 272, 277.

Nāgeśa 22, 23, 51, 57, 65, 95,

Nāgōjibhatṭa \ 101, 108, 122, 123, 127, 130, 142, 154, 155, 156, 168,

160 170 178 105 109 902 905

169, 170, 178, 195, 198, 203, 205,

214, 222, 224, 225, 246, 258, 266, Yaj

270, 271, 280, 288, 305, 316.

Nāiyāyikas 314

Padamañjarī 54.

Pāṇini 81, 111, 225, 227,

Rāmabhadradīksita 54.

Rāmāyaņa 204.

Rgvēda 202.

Śabdakāustubha 54, 195.

Sānkhyas 314

Śrīnivāsayajvan 54.

Sūtrakāra 27, 61, 69, 95, 97, 125, 270, 272, 277.

Svarasiddhāntacandrikā 54.

Vārsyāyani 211.

Vārttikakāra 86, 103, 123, 129, 139,

I41, 156, 162, 174, 182, 208, 258,

272, 277.

Yajurvēda 218.



### **OPINIONS**

## LECTURES ON PATAÑJALIS MAHĀBHĀŞYA

Volume I

Sachivottama Sir C. P. Ramaswami Ayyar,
Bhaktivilas, Trivandrum.
9th November, 1944.

I have perused with intense interest your Lectures on Patanjali's Mahabhashya. The developments of Sanskrit Grammar, not only as a branch of the Science of words and sounds, but of the philosophical concepts underlying all languages, have attracted my attention during many years. I am very grateful to you for the scholarly and at the same time lucid exposition of the basic ideas of the Mahabhashya which will be of special value to persons like myself who have no professional competence adequately to explore the originals dealing with such a complicated subject.

P. K. Acharya, M.A., Ph.D., D.Litt., I.E.S., Head of the Sanskrit Department. Allahabad University, Allahabad. 17th November, 1944.

I congratulate you upon your industry and scientific manner of scholarship exhibited in this publication.

> M. HIRIYANNA, Retd. Professor of Sanskrit, Mysore,

Lakshmipuram, Mysore City, 18-11-1944.

I have read several portions of it. The Preface is quite interesting and informative; and your exposition of the first three  $\bar{a}hnikas$ , the portion included in the present volume, is full and illuminating. The book will be of great value to students of higher  $Vy\bar{a}karana$  and I trust that it will help to extend the study of this subject in our Universities.

PAREEKSHIT TAMBURAN,
Prince of Cochin,
Palace No. 16, Tripunittura, 25—11—1944.

Dear Vice-Chancellor,

... May I request you to be good enough to convey my high appreciation of this interesting work (Patanjali's Mahabhashya) to the author, Vidyaratna Professor P. S. Subrahmanya Sastri.

Yours sincerely, (Sd.) RAMA VARMA.

#### VIDHUSHEKHARA BHATTACHARYA,

Harishchandrapur, Malda,

Bengal, 8—1—1945.

... Undoubtedly it will prove very helpful to those for whom it is meant. University students with your book in their hands will certainly bless you very much. Let me hope that it will soon be completed.

#### DR. S. MUKHERJEE, M.A.

Docteur-es Lettres (Paris) Vedantatirtha Sastri etc. Mayurbhanj, Professor of Sanskrit and Head of the Department of Sanskrit, Benares, Hindu University.

### Benares, 12th April, 1945.

... The text of the Mahābhāṣya is quoted in original and explained in English. In the course of the explanation all matters and discussions which arise out of the text have been considered and lucidly dealt with, the opinions of Kāiyaṭa and Nāgeśabhaṭṭa being copiously drawn upon for the purpose.

A knowledge of the Mahābhāṣya is like the acquisition of a kingdom and the learned author has certainly made the road very smooth. The results of researches on the historical data concerning Pāṇini, Kātyāyana and Patañjali have been embodied in an excellent introduction which students will find very useful. If the learned author pushes his lectures on the conclusion of the Mahābhāṣya, he will have done a great service to Sanskrit scholarship. His grasp of the subject is masterly, his style is good and his explanations lucid. . . .

### The Visva-Bharati, Shantiniketan=May - July, 1945.

The book under review is the mellowed fruit of laborious research and scholarly analysis by a Professor who has had evidently the advantage of drawing upon the accumulated research work of scholars, Eastern as well as Western. In achieving his end the author has furnished in the book unmistakable evidences of his independent critical understanding, avoiding alike undue submissiveness to the verdict of accredited Western authorities and unhealthy conservatism in sticking to the good old indigenous tradition. In the face of conflicting interpretations, our author has maintained his own ground in and through his incisive analysis and exposition. . . .

### Adayar Library Bulletin-1945.

... The author is a teacher of many years' experience and a great authority both in Sanskrit and Tamil. His contributions to scholarship through his many publications have established a name for him among Orientalists. ... The present volume... is meant primarily for the use of advanced students of Universities. Yet it has a far wider appeal... Through this work Prof. Subrahmanya Sastri has opened up the gates of a vast region to the modern world that has till now been denied access to it through the difficulty of the language... We heartily congratulate the Professor on his accomplishing this great task; we welcome this publication and we eagerly await the completion of the work.

#### The Hindu, 4-2-1945.

... The text of the bhashya with the lectures based on its commentories and super-commentories will be found very useful by all types of students of Vyakarana.

#### Volume II

JULES BLOCH,

Retd. Professor, College-de-France, 15-3-53.

Dear Dr. Subrahmania Sastri,

May I express you the pleasure with which I found just yesterday your lectures on Mahābhāṣya (II) waiting for me... It is indeed a very good boon you are conferring on younger scholars in pursuing this detailed translation of the Mahābhāṣya, this too a much wanted help... Now you have had the patience and courage... to start that tremendous task; let me congratulate you and pray that you may go forward in good health and spirits till the end...

### The Hindu, 10-1-1954.

... Dr. Sastri's rendering in this volume is simple and direct... All modern students, of advanced grammar in Sanskrit particularly the Mahabhashya will no doubt find in this publication valuable guidance and help to understand the most difficult text of Mahabhashya...

#### Volume III

The Hindu, 2—10—1955.

... To translate the Mahabhashya is not an easy task. It requires, in addition to sound scholarship, a good deal of courage, patience and perseverance. Dr. P. S. Subrahmanya Sastri is a versatile scholar and possesses the requisite qualities mentioned above... He deserves to be congratulated by all lovers of Sanskrit especially of sastra on this stupendous work...

REV. HIDEO KIMURA,
Professor of Indic Studies,
Ryukaku University,
Kyoto, Japan.

Nizam's Guest House, Poona 4, 15—2—56.

Dear Sir.

I have been interested especially in your work 'Lectures on Patañjali's Mahābhāṣya', the three volumes of which I have got through 'Poona Oriental Book House'. Therefore I am very eager for the completion of this your valuable and exhaustive publication early.



## BOOKS BY DR. P. S. SUBRAHMANYA SASTRI

- 1-2 Lectures on Patañjali's Mahābhāṣya Vols. I and II (āhnikas 1-6).
- 3-4 Do. Vol. III (āhnikas 7-9), Vol. IV (āhnikas 10-14).
- 5-12 Do. Vols. V to XII (āhnikas 15 to 85), (to go to press)
  - 13 Mahābhāṣyaprakāśikā—āhnikatrayam (Do.).
  - 14 History of Sanskrit Literature in Tamil.
  - 15 History of Sanskrit Language in Tamil.
  - 16 Tonivilakkū (Tamil rendering of Dhvanyālōka).
  - 17 A study of Kālidāsa's Kumārasambhava Canto 1.
  - 18 Knots in Vālmīki-Rāmāyaņa (in press):
  - 19 Comparative Grammar of the Tamil Language.
  - 20 Tolkāppiyam-Eļuttatikāram-with Tamil Commentary.
  - 21 Do. with English Commentary.
  - 22 Tolkāppiyaccollatikārakkurippu.
  - 23 Tolkāppiyam—Collatikāram—with English Commentary.
- 24-26 Do. Porulatikāram-with English Commentary (3 parts).
  - 27 Tirukkural-Arattuppāl with Bālar-urai.
    - 28 Do. Poruțpal and Kāmattuppāl. Do.
    - 29 Tamilmolinūl.
    - 30 Historical Tamil Reader.
    - 31 An Enquiry into the Relationship of Sanskrit and Tamil.
    - 32 History of Grammatical Theories in Tamil and their relation to Grammatical literature in Sanskrit.
    - 33 Sanganūlhaļum Vaidikamārggamum.
    - 34 Vāsukivaļļuvam (A' Drama in Tamil), (Adaptation of Tirukkuraļ-Kāmattuppāl).
    - 35. Synopsis of the Indian Systems of Philosophy (to go to press).



Nos. 1, 2, 14, 15, 18, 23, 30 are Annamalai University Publications.

No. 31 is Travancore University Publication.

Nos. 21, 24, 25, 26, 32 Published in the Journal of Oriental Research, Madras.

Nos. 16, 20, 27, 29, 33 Published under the patronage of the Mathadhipatis of Tiruppanandal Mutt.

No. 28, Published by the Kāmakōṭi Publishing House, Madras.

No. 34, Published in the Journal-Tiruvalluvar, Tiruchirapalli.